टेनी मखलूक़-
विचित्र प्राणी

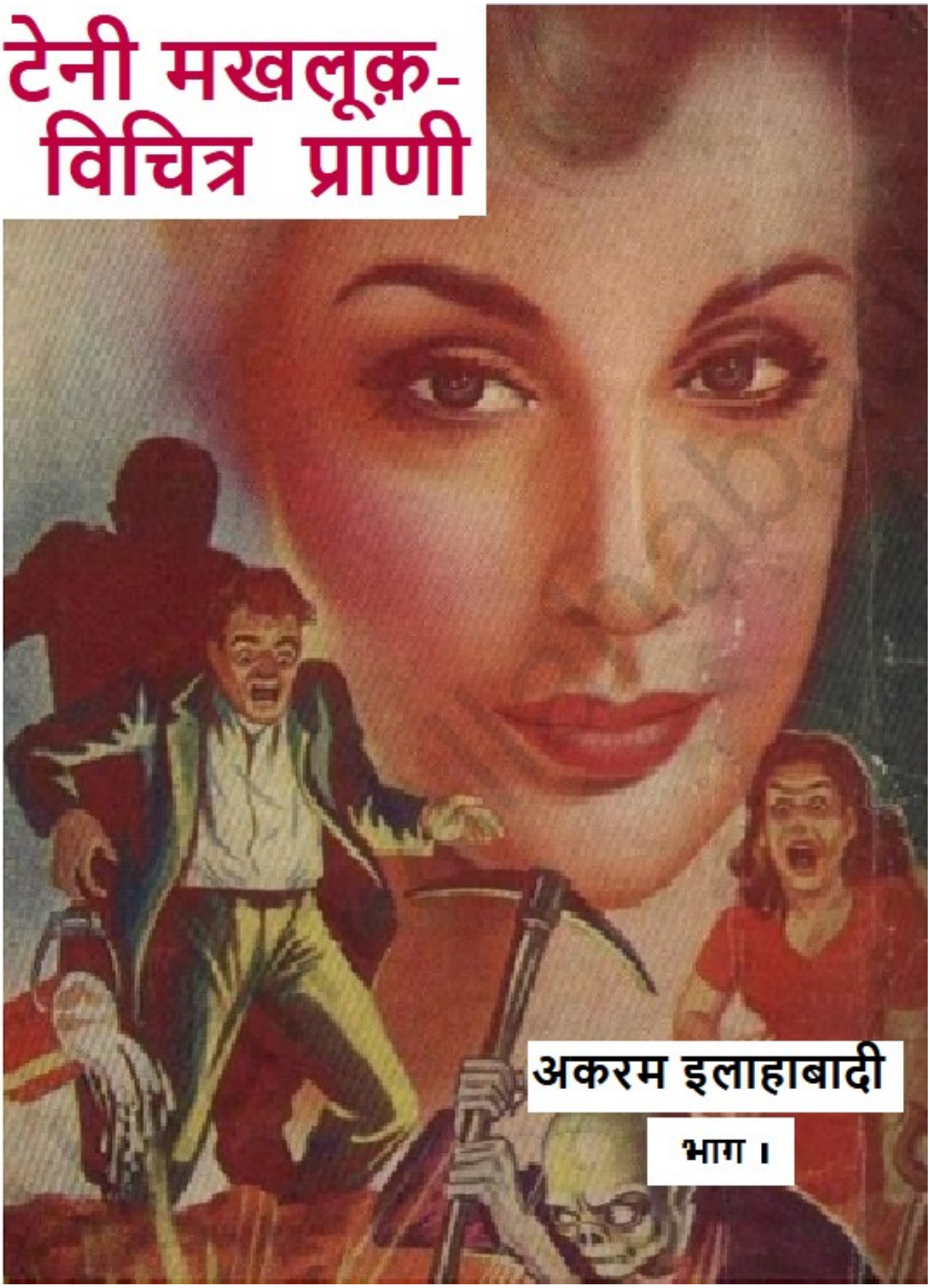

अकरम इलाहाबादी

भाग ।

टेनी मखलूक़-
विचित्र प्राणी

डिटेक्टिव सर्कल सीरीज़

अकरम इलाहाबादी की सबसे लंबी कृति

विचित्र प्राणी

दो भाग में

फरहत पब्लिकेशन्स मुंबई - इंडिया

विचित्र प्राणी

सभी अधिकार पब्लिशर के पास सुरक्षित हैं।

इस नॉवेल में आने वाली सभी घटनाएँ, जगहें और किरदार मनगढ़ंत हैं। उनसे कोई भी समानता सिर्फ़ इत्तेफ़ाक है। पब्लिशर, पब्लिशर और प्रिंटर ऐसी किसी भी समानता के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं।

इस नॉवेल को दोबारा छापने, ट्रांसलेट करने या किसी भी मकसद के लिए इस्तेमाल करने के लिए पब्लिशर से लिखकर परमिशन लेना ज़रूरी है, नहीं तो लीगल एक्शन लिया जाएगा।

प्रिंटर : ---- मुंबई इंडिया

टेनी मखलूक़-

विचित्र प्राणी

---- **अकरम इलाहाबादी**

4

संपादकीय

जासूस पंजा का गोल्डन जुबली इश्यू आपके सामने है। अकरम साहब, मैंने और ऑर्गनाइज़ेशन के मेंबर्स ने ज़रूर कुछ बहुत बढ़िया पेश करने की कोशिश की है। हम अपने मकसद में कामयाब हुए या नहीं, यह तय करना आपका काम है।

हो सकता है कि आपने पहले कभी किसी जासूसी मैगज़ीन के अंदर के पन्नों की तस्वीरें न देखी हों, इसलिए आपको यह तस्वीरों वाली मैगज़ीन देखने में पहले से कहीं ज़्यादा मज़ेदार लगेगी।

नॉवेल टैनि - मख़लूक़ (विचित्र प्राणी) का यह जुबली इश्यू उन लोगों की पुरानी इच्छा पूरी करेगा जो लंबे समय से डॉ. सलाज़ार की रचनाएँ पढ़ने के लिए उत्सुक थे। आपने पहले भी साइंस फिक्शन पढ़े होंगे, लेकिन अकरम साहब ने जिस तरह से इसे पेश किया है, वह तारीफ़ के काबिल है। एटॉमिक पावर साइंस की सबसे नई खोज है, लेकिन अकरम साहब का यह नॉवेल इससे कहीं आगे जाता है। अकरम साहब ने इस टॉपिक को छुआ है जिस पर अब तक न तो साइंटिस्ट्स ने ध्यान दिया है, और न ही किसी भाषा के किसी नॉवेल में इसका अंदाज़ा लगाया गया है। यह वह मंज़िल है जहाँ हमारे साइंटिस्ट्स एक न एक दिन ज़रूर पहुँचेंगे। सलाजार की पर्सनैलिटी भी इस सीरीज़ के पिछले नॉवेल्स से ज़्यादा बड़ी है।

5

विचित्र प्राणी

भाग I

अकरम अल्लाहाबादी

6

घबराहट???

डॉक्टर कोगते अपनी नीली फिएट को निशात महल के कंपाउंड के जालियों वाले गेट तक इतनी धीरे से ले गए कि दरबान आसानी से बंद दरवाज़ा पूरी तरह से खोल सके ।

पठान दरबान के अभिवादन का जवाब इशारे से देते हुए, डॉक्टर रंग-बिरंगे फूलों के बीच से चलते हुए महल के पोर्टिको में घुस गया, जिधर नवाब सूलत जंग, दोनों हाथ पीठ के पीछे बांधे, निचले हॉल के बड़े मेहराबदार दरवाज़े से पोर्टिको की सीढ़ियों तक बेचैनी से परेड कर रहे थे।

" डॉक्टर , मैं कब से आपका इंतज़ार कर रहा हूँ। " उसने बिना नमस्ते किए आगे बढ़ते हुये , डॉक्टर का हाथ पकड़ कर कहा।

"कमाल है," डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा। "आपका फ़ोन मिलते ही मैं तुरंत यहाँ आ गया,"

"ठीक है साहब , मैं ही उल्लू का पट्ठा हूँ, बस... चलो, अंदर आओ, आओ," नवाब, ने कहा, और विचलित मन से डॉक्टर का हाथ पकड़े हुए, और महल के अंदर की ओर चल दिये ।

"आप काफ़ी परेशान लग रहे हैं," डॉक्टर ने गंभीरता से कहा।

" परेशान, काश कोई और भी शब्द होता, आप उसका भी इस्तेमाल कर सकते। मेरा मतलब है, आप अभी मेरी हालत के बारे में क्या जानते हैं?" सूलत जंग ने कहा, उसकी आवाज़ में झुंझलाहट आ गई। वह अक्सर गुस्से में या दिमागी तौर पर परेशान होने पर ऐसा करता था।

7

" तो क्या मामला इतना गंभीर है? --डॉक्टर ने हमेशा की तरह आम एंग्लो-इंडियन भाषा में बात की।

"तो यानि ..... नवाब साहब कहना चाहा ।

"यह, यानी, क्या बला है , आखिर ? डॉक्टर को टोक ही देना पड़ा। वह नवाब से पहले भी बेतकल्लुफ़ थे, लेकिन इस "यानि" से चिढ़ना उनकी भी आदत बन गई थी।

"मेर तकिया कलाम है यार , जानते तो हो " नवाब ने कुछ धीमी आवाज़ में कहा।

"आखिर बेबी को क्या हुआ है ?" डॉक्टर ने गंभीरता से पूछा।

"अगर मुझे यह पता होता, तो मैं MBBS होता, तुम नहीं।" डॉक्टर भी सूलत जंग के जवाब से हैरान रह गए, लेकिन उन्होंने बुरा नहीं माना, बस मुस्कुराते रहे।

"चलो इस तरफ चलते हैं, पहले इस तरफ," सूलत जंग ने एक तरफ मुड़कर कहा।

"लेकिन बेबी का कमरा इस तरफ है।" डॉक्टर रुका और बोला।

"यानि कि मैं जो कह रहा हूँ।" सूलत जंग का लहजा पूरी तरह गंभीर था, इसलिए बिना कुछ कहे, डॉक्टर उनके पीछे कॉरिडोर से होते हुए एक अच्छी तरह से सजे हुए, ऊँची छत वाले ड्राइंग रूम में चले गए।

वह अंदर गए । सूलत जंग डॉक्टर को बैठने की जगह दिए बिना ही सोफ़े पर बैठ गया था। उसकी साँस फूल रही थी। डॉक्टर भी सामने वाली सीट पर लापरवाही से बैठ गया, यह सोचकर कि बैठने की इजाज़त माँगना ज़रूरी नहीं है।

"मेरे पास सिर्फ़ पंद्रह मिनट हैं। उसने अपनी कलाई घड़ी देखी और कहा,

"पहले आपको मेरी जांच करनी चाहिए।"

"आपका?" डॉक्टर चौंक गया, "लेकिन आपने बेबी के लिए बुलाया था।"

"यही तो मुझे तय करना है। वैसे, तुम्हें क्या लगता है, क्या मैं किसी भी तरह से पागल दिखता हूँ?" सूलत जंग ने एक अजीब सवाल पूछा।

8

"बिलकुल नहीं ।

"आप फिर से देख लीजिये ।"

" आखिर बात क्या है?" डॉक्टर हैरान था।

"शायद उस कमबख्त को देखने के बाद, जब तुम वापस आओगे तो मुझे तुम्हारी जांच करनी पड़ेगी," सूलत जंग ने गंभीरता से कहा।

"मेरे पांच मिनट बीत चुके हैं।" डॉक्टर ने फिर से घड़ी की ओर देखा।

"मुझे लगता है कि मैं पागल हो गया हूँ और मुझे लगता है कि... और यह आपको तय करना है कि कौन कितना पागल है।" सूलत जंग ने हमेशा की तरह, अभी-अभी हुई बातचीत को फिर से शुरू किया।

"आप मेरा समय बर्बाद कर रहे हैं, मुझे बहुत से मरीज़ देखने हैं।"

"बिल्कुल नहीं, डॉक्टर, बिल्कुल नहीं। वह पूरी तरह से सीरियस है। मुझे नहीं लगता कि वह दिखावा कर रही है या कुछ ...मैं इसकी तुलना एक्टिंग से नहीं कर सकता।"

"शायद आपने कसम खा ली है कि आप खुलकर बात नहीं करेंगे?" डॉक्टर का लहजा विरोध करने वाला था।

"तो, मई डीयर डॉक्टर, सुनो । उसके सिर पर कल से एक "चाँद का राजकुमार" सवार हो गया है ।"

" चाँद का राजकुमार?" डॉक्टर ने इस बात को ऐसे लिया जैसे कोई मज़ाक हो।

"मैं एक-एक शब्द सही कह रहा हूँ, आजकल की कमबख्त लड़कियाँ... कैसा ज़माना आ गया है। डॉक्टर, कितना अच्छा होता अगर लोग लड़कियों को जन्म न देते।

"तुम फिर से बहक रहे हो।"

"ओह, मैं तो बस कह रहा था। खैर, आप मेरी आदत जानते हैं। मैं हमेशा डिटेल में बात करता हूँ।

"उफ़, कुछ और आगे भी तो बोलो।"

"हाँ, मैं कह रहा था कि पता नहीं उसे कोई सपना आया था या किसी भूत ने बहकाया था, पर कल से ही वह लंबी-लंबी, ठंडी साँसें ले रही है। देर रात तक चाँदनी में खड़ी होकर

चाँद को देखती रही। सुबह वह कहती है कि मैं एक चकोरी हूँ। चकोरी का मतलब है वह छोटी, बेवकूफ चिड़िया। --नवाब सूलत जंग ने डॉक्टर को समझाने की कोशिश की।

"मुझे पता है, तुम जारी रखो।"

"और यह पागलपन नहीं है कि उसने कल से न कुछ खाया है, न पिया है? अगर आप उससे पूछें, तो वह अजीब लव लेटर, लव पोएम और क्या क्या पढ़कर जवाब देती है। भगवान इन पागल शायरों को खत्म करे, और उनमें से कई मर चुके हैं, और जो ज़िंदा हैं, उनकी कब्रें भी किसी चंडूखाने में बन जाएंगी ।

"फिर आप बहक रहे हैं।

"इसका मतलब है कि मैं मूर्ख हूं।

"नवाब साहब," "इस समय मेरे पास बहुत कम समय है।" डॉक्टर के लहजे में, बोरियत के साथ-साथ एक विनती भी थी।

"खैर , वो न जाने किस तरह की कविता और अरबी फारसी में पड़ती है ।"

"अच्छा होगा कि मैं आपसे सुनने के बजाय खुद बेबी को देख सकूं।" तभी डॉक्टर ने नवाब को टोका।

नवाब साहब को होश आया और उन्होंने कहा,
"हाँ, हाँ, और नहीं, तो फिर आपको क्यों बुलाया है? " नवाब साहब सोफे से उठ खड़े हुए। डॉक्टर उनके साथ थे।

जब वे महिलाओं के हॉल में घुसे, तो उन्होंने गुलाम गर्दीश पार किया और कुछ कमरों से गुज़रे। वे एक कमरे में पहुँचे जिसका दरवाज़ा रेशम के पर्दे से ढका हुआ था। जब वे दरवाज़े पर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि दरवाज़ा अंदर से बंद था।

10

वह बंद था या शायद भिड़ा हुआ था। डॉक्टर अभी भी नवाब साहब के पीछे थे। जैसे ही नवाब साहब ने डरते हुए हाथ बढ़ाकर दरवाज़े का हैंडल अपनी ओर खींचा, डॉक्टर अपनी हंसी रोक नहीं पाए।

" तो फिर आ गयी कमबख्त -- तभी, , अंदर से एक कड़कती आवाज़ आई, और उसी समय, कटलेट से भरी एक प्लेट नवाब सूलत जंग की ऊँची नाक से टकराई, जिससे वह दो टुकड़ों में टूट गई और कई टुकड़ों में फ़र्श पर बिखर गई।

: यानि कि यह कैसी मूर्खता है... उस टक्कर से नवाब साहब झुँझला गए ।

"मुझे बहुत अफ़सोस है, डैडी, मैं समझी, आया आई है । -वह माफ़ी मांगते हुए दरवाज़े के पास आई और अपने रूमाल से अपने पिता का चेहरा पोंछने लगी ।

" आपने देखा? -सूलत जंग अपनी बेटी की माफ़ी पर ध्यान देने की बजाय डॉक्टर की तरफ़ मुड़े ।

डॉक्टर ने अपना रूमाल मुँह पर रखा हुआ था और अपनी हँसी रोकने की कोशिश कर रहा था, लेकिन जैसे ही उसने उसे देखा, लड़की का मूड खराब हो गया। वह गुस्से से लाल हो गई।

"तो आप ने डॉक्टर को भी बुलाया? आखिर आप मेरे बारे में क्या सोचते हो?" उसने रोते हुए कहा।

"पागल...100 परसेंट पागल, नवाब सूलत जंग को भी गुस्सा आ गया।

"पागल होंगे आप, मैं पूरी तरह से ठीक हूँ। देखिए, डॉक्टर," उसने डॉक्टर से विनती भरे लहजे में कहा।

"लेकिन...

"बेबी ठीक कहती है नवाब साहब , आप अपने कमरे में जाइये।

11

"क्या? नवाब साहब, अपनी आँखें फाड़ कर चीखे - , मतलब मैं पागल हूँ, यानि कि आप भी ---।"

"प्लीज़, नवाब साहब, "--यह कहते हुए डॉ. ने नवाब साहब को आँख मारी और उनका मतलब समझकर वे नरम पड़ गए।

"सच ... सच में... मेरा मतलब है, मुझे चला जाना चाहिए । ये आज कल की लड़कियां । खुदा ही बचाए । जो बाप लड़की को जन्म देता है, उस पर श्राप है। श्राप।" नवाब साहब की ज़ोरदार आवाज़ दूसरे से तीसरे कमरे तक सुनाई दे रही थी। और डॉक्टर मुस्कुराते हुए बेबी के कमरे में दाखिल हुए।

"डॉक्टर, दरअसल, डैडी को --... नवाबज़ादी ने कुछ कहना चाहा ।

"वहम हो गया है - --

डॉक्टर ने अपनी बात पूरी की। ---वे बूढ़े हो गए हैं, इसलिए उनका दिमाग थोड़ा कमजोर हो गया होगा। "

डॉक्टर एक खाली कुर्सी पर बैठ गए। ये लोग भी लकीर के फकीर हैं। ज़माना काफी आगे बढ़ा है, कहाँ से कहाँ पहुँच गया है , और ये जहां थे वहीं हैं । इंसान की अब अपनी इस दुनिया से आगे

दूसरी दुनियाओं के बारे में सोचने लगा है। और देखो, अमेरिकी तो रॉकेट से चांद पर भी जाने वाले हैं। ---डॉक्टर, जो खुद से बड़बड़ा रहा था, यहीं रुक गया और उसकी शक्ल को ध्यान से देखने लगा। आखिरी बात सुनकर वह चौंक गया।

"क्या चाँद पर जाने वाले है ?" उसने हैरानी और खुशी से भरे लहजे में दोहराया।--"क्या यह संभव है, डॉक्टर? क्या यह सच में हो सकता है?"

"क्यों नहीं ?" साइंस ने क्या कुछ नहीं कर दिखाया है "

"ओह " और वह किसी विचार से खुश होकर उछल पड़ी । फिर अचानक वह गंभीर हो गई और धीरे-से बोली -- "क्या आप मुझ पर एक एहसान कर सकते हैं?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं --- डॉक्टर का अंदाज़ सहानुभूति वाला था।

"प्लीज़ मेरे लिए भी टिकट बुक कर दीजिए। मैं भी वहाँ जाना चाहती हूँ।

" क्यों?" डॉक्टर ने नकली हैरानी से पलकें झपकाते हुए कहा।

"आह... आप नहीं समझ सकते, डॉक्टर, कोई नहीं समझ सकता। डैडी भी नहीं समझ पाए, इसीलिए उन्हें लगता है कि मैं पागल हूँ।" बोलते-बोलते उसकी आवाज़ भारी हो गई। और डॉक्टर अंदाज़ा लगाए बिना नहीं रह सके कि उसकी आवाज़ में न तो दिखावा था और न ही पागलपन, उसकी आवाज़ में पागलपन का कोई निशान नहीं था, और फिर भी वह कुछ अजीब कह रही थी। डॉक्टर को गंभीरता से उसकी ओर ध्यान देना पड़ा।

"और कम से कम मैं तुम्हें पागल नहीं समझूंगा, बेबी। और तुम जानती हो कि डॉक्टर के पास कोई भी मरीज़ अपने राज़ नहीं रख सकता। ---डॉक्टर का लहजा नरम और हिम्मत बढ़ाने वाला था। लेकिन मरीज़ की बात सुनकर उनका मुंह खुला का खुला रह गया।

"मै बीमार नहीं हूँ।

"प्यार भी एक बीमारी है, बेबी। क्या तुम्हें चाँद के राजकुमार से प्यार नहीं हो गया है ?

13

"...आप...आपको कैसे पता चला?"

"कुछ डॉक्टर बीमार की शक्ल देखकर बता देते हैं। ----डॉक्टर मुस्कुराया।

"तो प्लीज़ मेरी मदद करिये । भगवान के लिए। ---वह उनसे इंग्लिश में रिक्वेस्ट करने लगी। डॉक्टर भी उसके मूड के हिसाब से कभी हिंदी तो कभी इंग्लिश में उससे बात करने लगे।

"आप पहले मुझे पूरी कहानी बताओ, शायद मैं कुछ कर सकूं।

"प्लीज़, क्या आप मुझ पर यकीन करेंगे?" उसने एक बार फिर डॉक्टर को भरोसे से देखते हुए पूछा।

"क्यों नहीं?" उसने सावधानी से चारों ओर देखते हुए कहा। डॉक्टर ने गंभीरता से उसकी ओर देखा।

14

"मैं चाँद की दुनिया में गई थी । --उसने पूरी गंभीरता से बात की।

"कैसे गयी थी ?" डॉक्टर ने अपनी मुस्कान दबाते हुए पूछा।

" पैदल ही । वह झुंझला गयी । अगर यही पता होता, तो चली ना जाती।

"तो फिर ?"

"वहाँ, एक बड़े और सुंदर महल के दरवाज़े पर, चाँद का राजकुमार मेरा इंतज़ार कर रहा था। डॉक्टर, मैं क्या कहूँ, वह कितना अजीब और सुंदर महल था...राजकुमार --" और जैसे ही उसने राजकुमार बोला, उसकी आँखें खुशी से बंद हो गईं।

"अरे।"

इक बार तो रुख से हटा दे चिलमन ,
जेरे दीवार खड़े कब से दुआ करते हैं ॥

"बेबी...? डॉक्टर की आवाज़ सुनकर वह चौंक गई।

"ओह... डॉक्टर... मैं अपनी सोच में फिर से वहीं पहुंच गई थी । और मैं आप से सच कहती हूं, अगर आप भी उस दिन वाली जन्नत को देखोगे, तो तुम डॉक्टरी भूल जाओगे और हातिम ताई का तीसरा सवाल रटते फिरोगे ।

"ठीक है, ठीक है, मुझे रहने दो, तुम अपना बयान जारी रखो।"

"वह दुनिया अजीब थी, मैंने वहाँ ऐसे अजूबे देखे जिनकी लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। क्या आप यकीन करोगे अगर एक आदमी को बंदर की तरह कूदते, एक बिल्ली को शेर की तरह दहाड़ते और एक चूहे को घोड़े की तरह चलते हुए देखो? डॉक्टर, मैंने वहाँ लोमड़ियों को मंत्रियों से भी ज़्यादा अच्छे से बहस करते सुना है।" वह यही कहती रही और डॉक्टर के सीधे-सादे और गंभीर चेहरे को सवालिया नज़रों से देखती रही।

डॉक्टर चुपचाप उसकी बातें सुन रहा था, अपनी ठुड्डी को दोनों हाथों की हथेलियों पर टिकाए हुए।

15

"डॉक्टर, क्या आपने कभी मंचू-सान के एडवेंचर्स पढ़े हैं?

"शायद," डॉक्टर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

"मैंने अपनी आँखों से इससे भी ज़्यादा अद्भुत घटनाएँ देखी हैं।"

"तुम तो चाँद के राजकुमार की बात कर रही थी ?"

"हाँ, उसने मुझसे कहा कि वह मुझे पसंद करता है और इसीलिए उसने मुझे फ़ोन किया...फिर हमने कई घंटे साथ बिताए। उसकी बातें, उसके हाव-भाव, उसकी हर हरकत। क्या बताऊँ डॉक्टर, वो क्या था... मैं बस पंख लगाकर उड़ जाना चाहती हूँ। उसने मुझसे दोबारा मिलने का वादा किया है, लेकिन कौन जानता है, ग़ालिब के अनुसार,

"कौन जीता है तेरी जुल्फ के सर होने तक,

"तो, तुम वहां कैसे पहुंची?"

"मुझे तो पता भी नहीं। मुझे बस इतना याद है कि मैं पिछली रात क्लब से वापस आई और थककर अपने बिस्तर पर लेट गई, और डैडी कहते हैं कि मैं अगली सुबह अपने बिस्तर पर ही उठी ।

"यह सचमुच एक दिलचस्प सपना था।"

"डॉक्टर, वह सपना नहीं था," नवाबज़ादी अचानक भड़क गईं। "देखिए, । यह जानने के लिए कि सपना है या नहीं , मैंने अपनी उंगली को दांतों से काटकर घायल कर लिया है।"

और डॉक्टर ने देखा कि उसके एक हाथ के अंगूठे के पास वाली उंगली के सिरे पर सच में दांत के घाव थे। वह सोच में पड़ गया।

"मैं उसके बिना नहीं रह सकती। अगर वह मुझे नहीं मिला तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। म म --मैं....

16

"होश से काम लो , बेबी। डॉक्टर का लहजा बदल गया। उसे नवाब सूलत जंग की बात पर दिल से यकीन हो गया ।

"होश... ? होश किसे कहते हैं,

"बेबी ,पागल हो गयी हो " डॉक्टर ने चेतावनी भरे लहजे में कहा।

"मुझे पता है आप भी डैडी की तरह पागल हो गए हो जो एक अच्छी लड़की को पागल समझ रहे है। मुझे किसी की हमदर्दी नहीं चाहिए। आप जाओ। ---वह खड़ी हो गई, लेकिन इससे पहले कि वह आगे बढ़ पाती, दरवाज़ा खुल गया और नवाब सूलत जंग फिर से अंदर आ गए।

"अब बताओ, क्या मैं तुम्हारे लिए भी डॉक्टर बुला लूँ?" सूलत जंग ने डाक्टर को कहा ,

डॉक्टर ने जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप उठा और सूलत जंग के साथ बाहर आ गया, और लड़की ने सिर हिलाते हुए, अंदर से दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया।

"यह कुछ खास नहीं है, अक्सर ऐसा होता है कि कोई सपना किसी के दिमाग में इस तरह बैठ जाता है कि वह उसके पीछे पागल हो जाता है।" कुछ देर तक इसे सच मानकर, अपने पागलपन में डूब जाता है -- "डॉक्टर सूलत जंग से बात करने लगे।

"क्या तुमने उसकी चोट लगी उंगली नहीं देखी?"

"मैंने देखा है, लेकिन कुछ सपने बहुत गहरे होते हैं, जिनमें भले ही इंसान को लगे कि उसने अपनी आँखें खोली हैं, लेकिन वह जाग रहा है, फिर भी यह सिलसिला खत्म नहीं होता, और अगर ऐसा कोई सिलसिला किसी वजह से मेमोरी सेल्स में अटक जाता है, तो दिमाग उसे लंबे समय तक एक घटना मानता रहता है।" डॉक्टर ने सलाह दी,

"तो फिर क्या किया जाना चाहिए?"

"और एक साइकोलॉजिस्ट से सलाह लें। मैं उसे मेंटल हॉस्पिटल भेजना पसंद करूंगा।"

17

"मुझे भी नहीं लगता कि उसकी हरकतें नकली हैं।" नवाब सूलत जंग बहुत दुखी हुए।

वह सोच में डूबा हुआ बोला।

"इसमें कोई दिखावा नहीं है। ऐसा लगता है कि उसके दिमाग पर इसका असर हुआ है।"

"क्या आपके नज़रिए से कोई और मामला ऐसा रहा है? मेरा मतलब है..

"ठीक उसी तरह के तो नहीं, लेकिन ऐसे मामले ज़रूर हुए हैं, जहाँ कुछ मरीज़ों के मन पर लंबे समय तक कोई भ्रम, कोई घटना या कोई सपना थोपा गया हो।"

"मैं नहीं चाहता कि वह अपने पागलपन के लिए मशहूर हो जाए ।

"तो, प्राइवेट ट्रीटमेंट लो, लेकिन किसी साइकोलॉजिस्ट के साथ। यह किसी नर्वस कमजोरी का रिएक्शन नहीं है, वरना मैं खुद ही इससे निपट लेता।"

"खैर , इतनी तकलीफ क्या कम है? नवाब सूलत जंग ने डॉक्टर को दरवाज़े पर छोड़ते हुए कहा।

डॉक्टर के जाने के बाद भी, वह बहुत देर तक वहीं खड़े सोचते रहे, जब तक कि उनकी बेटी की आवाज़ ने उन्हें चौंका नहीं दिया। वह अपने कमरे में बहुत उदास आवाज़ में गा रही थी।

"हम तो तुम्हारे हो चुके ....।"

☆☆☆

18

अच्छी सलाह

उसी हफ़्ते, एक शाम, तीन बुज़ुर्ग आदमी ग्राहम हाउस के बरामदे में कुर्सियों पर बैठकर बहस कर रहे थे।

प्रोविंशियल यूनिवर्सिटी के डिपार्टमेंट के प्रोफेसर रशीदी ने टेबल पर अपना हाथ पटकते हुए, कांपती हुई आवाज़ में कहा, "मैं इसे 100 परसेंट नकली कहता हूं।"

"अगर यह किसी साइकोलॉजिकल एक्सीडेंट का नतीजा था, तो सब घटनाओं में इत्तेफ़ाक होने का कोई सवाल ही नहीं उठता।-- मेडिकल कॉलेज के डॉ. ख्वाजा ने भी प्रोफेसर रशीदी का समर्थन किया।

"लेकिन क्या ऐसा फिर से हो सकता है?"

"अब ज़रा सोचिए। अगर यह सिर्फ़ एक सपने के याद आने की बात है, तो अलग-अलग जगहों पर रहने वाली अलग-अलग लड़कियाँ, जो एक-दूसरे से अनजान थीं, अपने माता-पिता या दोस्तों को सिर्फ़ एक ही तरह की कहानियाँ क्यों सुनाती हैं ? उनके दिल और दिमाग पर सिर्फ़ एक ही चाँद का राजकुमार क्यों सवार है? कोई रेस हॉर्स राइडिंग क्यों नहीं है? ऐसा भी नहीं है कि वे एक-दूसरे से मिली हों या एक-दूसरे की कहानियाँ सुनी हों। उन्होंने एक-दूसरे की कहानियाँ भी नहीं सुनी हैं।" ---यह तीसरी आपत्ति इंस्टिट्यूट ऑफ़ नेचुरल रिसर्च के एक इन्वेस्टिगेटर डॉ. ग्राहम की थी।

"आखिरकार, हमें कुछ तो करना ही होगा।" प्रोफेसर रशीदी ने कहा, उनके चौड़े, सांवले चेहरे पर गहरी गंभीरता के निशान थे। "यह शहर के पांच बड़े आदमियों की पढ़ी-लिखी बेटियों का मामला है।"

"और हैरानी की बात है कि सभी युवा काफी पढ़ी-लिखी और नयी सोच वाली लड़कियां हैं," डॉ. ख्वाजा ने भी चिंता भरे लहजे में कहा।

"वे सब यह भी नहीं चाहते कि इन घटनाओं को पब्लिक किया जाए। और फिर, यह बस एक अजीब तरह की हालत है। बाकी सभी संकेतों और हालात में, ये लड़कियां बिल्कुल समझदार, विनम्र और गंभीर लगती हैं। उन्हें पागलखाने में भी नहीं रखा जा सकता।"

"खैर, मैंने पहले कभी ऐसे मामले न देखे हैं और न सुने हैं," डॉ. ख्वाजा ने कहा, अपनी सिगरेट को टेबल के बीच में रखी ऐशट्रे में रगड़ते हुए और उसे दूर रखते हुए कहा ।

"कम से कम मैंने ऐसे मामले पहले कभी नहीं देखे या सुने थे।"

"रुको, ---डॉ. प्रोफेसर रश्दी कुछ सोचते हुए चौंक गए।

वे सब उनके चेहरे की ओर देखने लगे।

"आप लोग हिप्नोटिज्म के बारे में क्या सोचते हैं?"

"हिप्नोटिज्म! --सब सोच में डूबे हुए थे। --हमें इसके बारे में कुछ नहीं पता। -डॉ. ख्वाजा ने कहा।

"शायद। शायद।" डॉ. ग्राहम ने एक बूढ़े गिरगिट की तरह अपनी गर्दन हिलाई ।

प्रोफेसर रशीदी ने कहा, "हो सकता है कि कोई अनजान व्यक्ति इन सभी लड़कियों को एक ही तरह से अलग-अलग हिप्नोटाइज़ कर रहा हो।"

"अगर ऐसा है, तो यह सिर्फ़ हमारी समस्या नहीं है," डॉ. ख्वाजा ने कहा।

"मैं नवाब सूलत जंग से माफ़ी मांगूंगा। वो जाने और उनका काम ---प्रोफेसर रशीदी खड़े हुए।

डॉ. ख्वाजा ने भी इसका सपोर्ट किया। और लगभग डॉ. ग्राहम का भी यही ख्याल था। वह पिछले पांच-छह दिनों से इन घटनाओं पर सोच-विचार कर रहे थे। शहर की पांच बड़ी और जानी-मानी हस्तियों ने डॉ. ग्राहम और प्रोफेसर रशीदी से अलग-अलग मुलाकात की थी और उन्हें अपनी लड़कियों के बारे में ये अजीबोगरीब घटनाएं बताई थीं। फिर, डॉ. ख्वाजा को साथ लेकर दोनों ने अलग-अलग समय पर और अलग-अलग इन लड़कियों की जांच की। उनसे बात भी की और इन कोशिशों का नतीजा यह हुआ कि वे खुद भी कन्फ्यूज हो गए कि इस पर यकीन करें या नहीं।

कई तरीके आज़माने के बाद भी, उसे इन लड़कियों की समझदारी पर शक नहीं हो रहा था, लेकिन चांद के राजकुमार का यह लॉजिक उसके लिए नया और हैरान करने वाला था, यहाँ तक कि समझ से बाहर भी। और आज वे इस झगड़े का फैसला करने के लिए डॉ. ग्राहम के बंगले पर जमा हुए थे, लेकिन उन्हें क्या पता था कि बंगले के अहाते का गेटकीपर, जिसे अपनी मीटिंग के बीच किसी को न आने देने की हिदायत दी गई थी, एक अखबार के रिपोर्टर को नहीं रोक सका ।

यह रिपोर्टर पिछले चार-पांच दिनों से उनका पीछा कर रहा था, उनकी हरकतों पर नज़र रख रहा था। ज़ाहिर है, शहर के बड़े लोगों की कभी-कभी रहस्यमयी हरकतें नए-नए स्टंट ढूंढ रहे एक प्रेस रिपोर्टर की नज़रों से ज़्यादा देर तक छिपी नहीं रह सकती थीं। उसने दरबान को पांच रुपये का नोट दिया और अहाते की दीवार फांदकर अंदर आ गया। जब वे तीनों अपनी बातचीत में बिज़ी थे, वह बरामदे से चिपका हुआ ज़मीन पर बैठा था, दोनों पैर पत्रकार फैलाए हुए था, और अपनी रिपोर्ट बुक में उनकी बातचीत के नोट्स ले रहा था।

21

डॉ. ख्वाजा और प्रोफ़ेसर रशीदी में से किसी ने भी सीढ़ियों से उतरते समय नीचे देखने की नहीं सोची। वे अपनी धुन में सिर झुकाए तेज़ी से चलने के आदी थे, और जब तक वे जगह से निकलकर बाहर खड़ी अपनी कारों में नहीं बैठे, दरबान मन ही मन सौ बार ली गई पाँच रुपये की रिश्वत को कोस रहा था। वह दुआ कर रहा था कि अगर आज उसे नौकरी बच गई, तो वह फिर कभी रिश्वत नहीं लेगा। लेकिन जब सब चले गए और किसी ने बंगले के अंदर से भी आवाज़ नहीं दी, तो उसने राहत की साँस ली और अपनी जेब से पाँच रुपये का नोट निकाला। उस पल, उसे लगने लगा कि यह कागज़ का टुकड़ा बहुत सुंदर है। उसने उसे मुट्ठी में भींचा और अपनी अंदर वाली जेब में रख लिया।

☆☆☆

22

मुलाकाती

"आप कहाँ चले ?"

सुपरिटेंडेंट खान ने बाथरूम से निकलते हुये सार्जेंट बाले को टोका। वह सुबह का अखबार लापरवाही से टेबल पर फेंकते हुए जा रहा था।

"मैं इस अखबार के ऑफिस से अपने दो आने लेने जा रहा हूं।"

"क्या हुआ?" खान ने तौलिए से अपने बाल सुखाते हुए पूछा।

"बकवास - अगर अखबार बेचने के लिए अच्छी खबरें नहीं मिलतीं, तो बंडल खबरें तलाशने लग जाते हैं।"

बाले ने चिढ़े हुए ग्राहक जैसा चेहरा बनाकर जवाब दिया।

"मुफ़्त में, कोई चपरासी गर्दन पर हाथ रखकर तुझे बाहर का रास्ता दिखाएगा।"

"बाले साहिब अपने समय के फिरौन के रूप में प्रसिद्ध हैं।"

"ऐसी क्या खबर है आखिर ?"

"लड़कियों की बंडल खबर । चाँद का राजकुमार, वगैरह।"

"लेकिन लॉन्गफेलो कह रहा था कि उसने उसे और उन लड़कियों को देखा था और उसने डॉ. ख्वाजा, प्रोफेसर रशीदी और डॉ. ग्राहम के बीच बातचीत सुनी है।"

"हाँ. आप भी बिना मालिक के ऊँट की बात कर रहे हैं. यह कैसी बात है?

"अच्छा, भाड़ में जाओ, मुझे नाश्ता करना है।"

"मैं अपनी दवन्नी मिलने के बाद ही नाश्ता करूंगा। यह मेरी पसीने की कमाई है।"

"अच्छा , ठीक है, चले जाओ, मेरा दिमाग मत चाटो।"

23

"अरे, तुम खुद ही छेड़ें और , खुद ही हट जाओ," बाले ने हिजड़े की तरह हाथ हिलाते हुए कहा, जिससे खान हंस पड़ा। और घूंसा पड़ने की नौबत नही आई , क्योंकि बाले कमरा छोड़कर ड्राइंग रूम में चला गया, इससे पहले कि ऐसा होता।

वह ड्राइंग रूम में दीवार पर लगे शीशे में अपनी टाई ठीक कर रहा था और बालकनी की तरफ जा रहा था, तभी दरवाज़े पर गुलाम रसूल से टकराते-टकराते बचा। वह चाय की एक ट्रे ला रहा था।

"देखकर नहीं चालते , बेवकूफ़। बाले उस पर बरस पड़ा । ---अभी मेरा सूट खराब हो जाता,

लेकिन गुलाम रसूल उसका जवाब देने की बजाय, उम्मीद के उलट मुस्कुराया , उसे मुस्कुराते हुए देखकर बाले का माथा सिहर उठा।

"क्या बात है, बरखुरदार? बाले ने धीरे से अपना हाथ उसके कंधे पर रखा।

"एक लड़की मिलने आई है। --उसने राज़ वाले लहज़े में कहा। क्योंकि उसे खान से इंस्ट्रक्शन मिले थे कि बाले साहब को उनके विज़िटर्स के लिए परेशान करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

"लड़की? ? सुभान अल्लाह, । उसने सिर हिलाया और उत्सुक स्वर में पूछा।

"आप मुझसे क्या पूछ रहे हैं ?" । साहब से मिलना चाहती है " गुलाम रसूल ने उससे कहा।

"ज़रूर कोई बेवकूफ़ लड़की होगी, उससे कहिए सर, सुबह सवेरे ऐसे चौखटे देखना पसंद नहीं करते वे सूखे होते हैं।"

लेकिन जवाब देने के बजाय गुलाम रसूल मुस्कुराते हुए अंदर चले गया और बाले ने पर्दे के पीछे से झाँका। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। सुबह-सुबह ऐसी ही एक ऐसी शक्ल ?

24

उसे देखना कोई बुरी किस्मत नहीं थी, लेकिन लाल फ्रॉक और सफेद गरारा पहने, हल्के लाल दुपट्टे में लिपटी वह लड़की खिले हुए लाल गुलाब जैसी लग रही थी। बाले ने अपनी ज़िंदगी में ऐसी खूबसूरत लड़की कभी नहीं देखी थीं। उसके सिर और पैरों को देखते हुए, जब उसकी नज़र उसके गोरे, सुडौल पैरों में सुनहरे सैंडल पर पड़ी, तो उसके सिर में खुजली होने लगी। वह पीछे हटा और बाहर आ गया। उसके कदमों की आहट सुनते ही लड़की डर के मारे खड़ी हो गई।

"आप... क्या आप खान साहब हैं?" वह हकलाई।

"हाँ, प्लीज़?" बाले ने कहा, उसकी आवाज़ गंभीर थी। और उसे बैठने का इशारा किया।

वह खुद उसके सामने बैठ गया।

"मैंने सुना ही , ऐसी बहुत सी बातें हैं जो दूसरों को नहीं पता, आपको पता होता है?"

"तुमने सही सुना। हम रोशन खमीर बन गए हैं... आई एम सारी, रोशन ज़मीर या कुछ ऐसा ही बन गए हैं ।"-- बाले का लहजा अभी भी गंभीर था।

"क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं? आखिर हम लोग पैदा ही इसी काम के लिए हुये हैं ।

"जी ?" उसने कहा, बाले की बात में थोड़ा सा व्यंग्य महसूस करते हुए बोली ।

"शायद आपको पता नहीं है कि हर पुलिसवाला जन्मजात नौकर होता है।"

"यह मेरे लिए बहुत बड़ा एहसान होगा, लेकिन मेरी आपसे एक गुज़ारिश है, ।"

" गुज़ारिश नहीं , ऑर्डर करें। मेरे लिए इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

" आप मुझे शर्मिंदा कर रहे हो। --वह थोड़ा झेंप गयी , और उसके ऐसा करने पर, बाले का दिल चूहे के पिंजरे में फंसे नए चूहे की तरह धड़कने लगा।

"आपने साफ़-साफ़ बिना किसी संकोच के कहिए ।"

"क्या आप वादा कर सकते हैं कि आप किसी और को नहीं बताएंगे?"

"यह सीना ," उसने अपनी छाती थपथपाते हुए कहा। "यह हज़ारों राज़ों का कब्रिस्तान है, मैडम। आप शौक से फरमाईए ।"

उसके जवाब से कुछ हद तक संतुष्ट होकर, वह आगे झुकी, और खुशबूदार परफ्यूम की खुशबू बाले के नथुनों में घुसने लगी।

"मैं चाँद तक पहुँचने का रास्ता जानना चाहती हूँ।" उसने धीमी, गंभीर आवाज़ में कहा, और उसके सवाल ने बाले को कुछ सेकंड तक सन्न होने पर मजबूर कर दिया।

"क्या तुम सच में सीरियस हो? ---बाले ने हैरान होकर पूछा।

"काश आपको पता होता कि मैं कितनी सीरियस हूँ। मेरी ज़िंदगी और मौत इसी एक जवाब पर निर्भर है। --उसने दर्द भरे लहज़े में कहा।

और सुबह के अखबार की अजीब उथल-पुथल, नई और रोमांचक हेडलाइन और पूरी कहानी बाले के दिमाग में किसी अच्छी तरह देखी गई फिल्म की तरह घूमने लगी।

"तो लॉन्गफेलो? ठीक ही था --और सोचते हुए वह मुस्कुराया।

"तो तुम चाँद की दुनिया में जाना चाहती हो?" बाले ने सनसनी खेज लहजे में पूछा।

"हाँ, वह जल्दी से बोली।

"शायद चाँद के राजकुमार से मिलने के लिए?"

"हां तुम्हें कैसे पता?"

"हम ल्कोग किसी जाम जमशेद जी से कम नहीं हैं। हम सब कुछ जानते हैं।"

"तो फिर आपको इसका रास्ता भी पता होगा?"

"हाँ। क्यों नहीं? आप चौपाटी के समुद्र में सीढ़ी लगा के चढ़कर चाँद तक जा सकते हैं। वहां पहुंचना क्या मुश्किल है।

"समुद्र पर एसीढ़ी कैसे लगेगी भला ? वो तो कोई और रास्ता था " लड़की ने मासूमियत से पूछा।

"धत तेरे की। बाले बुदबुदाया।-- यह लड़की है या अखरोट?"

"क्या कहा आपने?"

"मैंने कहा , जाओ और डूब जाओ, तुम सीधे वहाँ पहुँच जाओगे," बाले ने मुँह बनाते हुए कहा।

"क्या कोई और रास्ता नहीं है?"

"दूसरा रास्ता मरघट से होकर जाता है, आप वहाँ से भी जा सकती हैं ।

"शायद आप मेरी मदद नहीं करना चाहते?"

"मैं तुम्हारी मदद सिर्फ़ आगरा या बरेली के पागलखाने में भेजकर ही कर सकता हूँ।

" वैसे, आप किस खुशनसीब माता-पिता की औलाद हैं?"

"न सुनें , मुझे लगा था कि आप दूसरों की तरह बेरहम नहीं होगे?"

"नहीं, मैं बिलकुल रहमदिल हूँ, लेकिन चाँद के राजकुमार से पहले तो मेरी मुलाक़ात ही नहीं हुई ।--

27

"अगर ऐसा हुआ, तो मैं इसकी पूंछ पकड़कर समुद्र में फेंक दूंगा।"

" शट अप -- वह खड़ी हो कर चीखी ।

"गुलाम रसूल - बाले ने नौकर को बुलाया और वह तुरंत आ गया।

"मेम साहिब को चाँद की दुनिया का रास्ता बताओ।"

"चाँद की दुनिया का?" गुलाम रसूल हैरानी से उसका रूप देखने लगा।

"ओह, अलो, बाहर निकलो," वह ज़ोर से चिल्लाया, लेकिन गुलाम रसूल की तरफ से कोई जवाब न मिलने पर, लड़की खुद ही भन्नाई हुई बाहर निकल गई।

गुलाम रसूल ने बाले से कहा, "मालिक ने कहा था , 'उसे बैठा दो, वह नाश्ते के बाद आ रहे है।'"

क्या बात है?’ पीछे से खान की आवाज़ ने उसे चौंका दिया।

"वह लड़की।" बाले ने दरवाज़े की तरफ़ इशारा किया। लड़की जा चुकी थी ।

"वह मुझसे मिलने आई थी।- कहाँ चली गई? "

"चाँद की दुनिया में.

" क्या मतलब है?"

"वह आप से चाँद का रास्ता पूछने आई थी।मैंने उस बता दिया ,

"हम्म-

"एक चौपाटी , दूसरा श्मशान"

"तो क्या वह उन लड़कियों में से एक ... .?"

"नहीं, वह छठी या सातवीं लग रही थी।"

"उल्लू , इसे रोकना था।"

28

आपने शायद चाचा जान ग़ालिब की यह कविता नहीं सुनी होगी,

"कौन रुकता है तेरी जुल्फ के सर होने तक ---"

"तुम्हारी बेवकूफ़ी ने मुझे तंग कर दिया है, बाले ।"

" तंग --? आप पहले जितने चौड़े हो, उतने ही हैं । आपका अनुमान गलत है।"

" कम से कम उससे कुछ तो पूछना चाहिए था।"

"मैंने पूछा और पता चला कि वह भी मून प्रिंस के पागलपन का शिकार थी।"

"आजकल किस तरह की नस्ल उभरने लगी हैं?

बाले ने कहा, "मुझे लगता है कि यह सिर्फ इन पांच या छह लड़कियों की बात नहीं है, हो सकता है कि और भी कई लड़कियां इस पागलपन का शिकार हों।"
और लॉन्गफेलो की रिपोर्ट के अनुसार, ये सभी लड़कियां पढ़ी-लिखी हैं, अच्छे परिवारों से हैं, और खास तौर पर लिबरल और खूबसूरत हैं।

"मुझे इसी बात पर शक है, बाले साहब, चाँद के उस राजकुमार उल्लू के पट्ठे पर।

"लगता है कि चीज़ें ठीक नहीं चल रही हैं।"

"लेकिन ऐसे मामलों में पुलिस के शामिल होने का सवाल ही नहीं उठता। यह पर्सनल चॉइस का मामला है। हेल्दी रहना या बीमार रहना हर इंसान का अधिकार है। प्यार करना या रिजेक्ट होना।"

"मैं अब भी चाहूंगा कि आप ऐसी दूसरी लड़कियों को ढूंढें जो इसी तरह के पागलपन से परेशान हैं।

"कितनी खुशी की बात है। मुफ़्त का झंझट --।"

"अगर अभी नहीं, तो किसी समय हमें इसमें दखल देना होगा, क्योंकि हो सकता है कि कोई चालाक व्यक्ति किसी खास मकसद से उन्हें पागल करने के लिए हिप्नोटिज्म का इस्तेमाल कर रहा हो।

"यह बात कुछ हुई , लेकिन तुम्हारी शुतुरमुर्ग जैसी पत्रकार की रिपोर्ट के अनुसार, लड़कियाँ चाँद के सिर्फ़ एक राजकुमार को जानती हैं। एक जवान लड़की के लिए, वह किसी भी काल्पनिक व्यक्ति से ज़्यादा सुंदर और आकर्षक है।"

"और वह आकार किसी हिप्नोटिस्ट का भी हो सकता है, या बस उसकी एक मेंटल इमेज भी हो सकती है।

"यह विनम्र और वफ़ादार अर्ज़ करेगा कि किसी भी फटे में अपनी टांग नही घुसेड़नी चाहिए ।

पुलिस को तो बिलकुल भी अधिकार नहीं है।

"मैं अपनी ज़िम्मेदारियों को तुमसे ज़्यादा ज़रूरी समझता हूँ, जो मैं कहता हूँ वो करो।
"ओह, बेटे सार्जेंट बाले, किसी लड़की में दिलचस्पी लेने का यही नतीजा होता है।" बाले ने अपना कान पकड़ते हुए यह बात कही।

"इस भांडपन से काम नहीं करेगा, मैं आपसे जवाब तलब करूंगा ।

"तो सवाल पूछिए?"

"सूअर , जाओ उस लड़की को ढूंढो," खान ने बाले से नाराज़ होकर कहा, लेकिन उसने चारों ओर देखा। पीछे सिर्फ़ गुलाम रसूल खड़ा था।

"लेकिन यह तो गुलाम रसूल है। गुलाम रसूल, मालिक एक सुअर मांगता है। वह गुलाम रसूल की ओर मुड़ा और मीठी आवाज़ में बोला।

"यह मज़ाक आपकी बेवकूफ़ी का बोझ हल्का नहीं करेगा। आपने वह मौका गँवा दिया है जो आपके पास आया था।""

मैं इसे हिंद महासागर के नीचे से भी ढूंढ लूंगा।

"तो तुम मेरा दिमाग क्यों चाट रहे हो? चलो, शायद अभी रास्ते में कहीं मिल जाए , जाओ देखो ।"

" चलो, बेटे सार्जेंट। यह भी पुलिस की ड्यूटी है। सूत या कपास - बाले बड़बड़ाता हुया बाहर निकल गया

30

"तुम वहाँ खड़े होकर मेरा चेहरा देख रहे हो? जाओ और मेरे कपड़े निकालो ।" खान को भी गुलाम रसूल पर गुस्सा आया। उसका मूड खराब होता देख, वह भीगी बिल्ली की तरह वहाँ से खिसक गया।

☆☆☆

31

प्रतिक्रिया

हालांकि खान के निर्देश बाले को एक बेमतलब का खेल लग रहे थे, लेकिन इस अनजान चांद के राजकुमार की दुश्मनी भरी छवि उसके दिमाग में पहले से ही एक खास जगह बना चुकी थी। किसी भी अच्छे स्वभाव वाली लड़की के लिए किसी काल्पनिक अस्तित्व

के पीछे पागल होने का कोई सोचा-समझा कारण नहीं था। और फिर लॉन्गफेलो ने रिपोर्ट में यह भी लिखा था कि ऐसी सभी लड़कियां बाकी सभी मामलों में पूरी तरह से समझदार, पढ़ी लिखी और अच्छे व्यवहार वाली थीं।

हालात जो भी रहे हों, इसमें कोई शक नहीं कि ज़िंदगी में उनके साथ इससे ज़्यादा हैरान करने वाली या अजीब चीज़ें कभी नहीं हुई थीं। बात पूरी तरह समझ से बाहर थी, लेकिन अगर कोई चीज़ इस पर सोचने लायक बना सकती थी, तो वह खान का हिप्नोटिज़्म का इशारा था, और उन्हें अलेक्ज़ेंडर डुमा के ब्लैक मैजिक की याद आ गई, जिसमें एक जिप्सी ने, हिप्नोटिज़्म की एक प्रक्रिया के ज़रिए (जो उसकी आँखों के आकर्षण का नतीजा था, जो उसे जन्म से विरासत में मिली थी), पेरिस की कई सबसे खूबसूरत औरतों को अपना शिकार बना लिया था, और अगर ऐसा कुछ सच में मुमकिन होता, तो ऐसा हो सकता था।

यह सब सच था, लेकिन फिर भी वह इन अच्छी लड़कियों के अजीब और पागलपन भरे बर्ताव को सीरियसली लेने को तैयार नहीं था। कभी-कभी उसे यह भी शक होने लगता था कि कुछ लड़कियों में कोई आम और जानबूझकर की गई शरारत हो सकती है। ये प्रोग्रेसिव लड़कियाँ उस ज़माने के प्रोग्रेसिव माता-पिता की संतान थीं, और उनसे कुछ भी असंभव नहीं था।

सुपरिटेंडेंट खान को खुद इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, क्योंकि ऑफिशियली पुलिस का ऐसी प्राइवेट घटनाओं से कोई लेना-देना नहीं हो सकता था। अगर उनका किसी डिपार्टमेंट से कोई कनेक्शन होता भी,

यह किसी सरकारी साइकेट्री इंस्टीट्यूट या मेंटल हॉस्पिटल से हो सकता था, और यह तब मुमकिन था जब ऐसी लड़कियों के माता-पिता, बदनामी के डर को एक तरफ रखकर, सरकारी नेचुरल साइकोलॉजिकल ट्रीटमेंट की मदद लेते थे। सिर्फ़ शक होने पर पुलिस को इन मामलों में दिलचस्पी लेने का कोई कारण नहीं मिलता था, जब तक कि ऐसी

लड़की ने कोई क्रिमिनल या सज़ा वाला काम न किया हो। फिर भी, बाले का सिर इसमे घुसा जा रहा था।

लंच के बजाय पर्शियन डेयरी में खाना खाने के बाद, उसके दिमाग में एक नया आइडिया आया। उसका हाथ टेलीफोन के डायल पर गया। वह अपनी यह नई ट्रिक आज़माना चाहता था। जैसे ही उसने नंबर डायल किया, दूसरी तरफ मॉर्निंग पोस्ट ऑफिस से टेलीफोन ऑपरेटर की धीमी और लचीली आवाज़ सुनाई दी।

"हेलो, आप कौन हैं? क्या चाहते हैं? लड़की की आवाज़ उसके कानों में गूंजी। बाले का जी चाहा कि लड़की को यह कहकर जवाब दे कि वह आपके लिए खुद को कुर्बान करना चाहता है, लेकिन बातचीत एक अखबार के ऑफिस से हो रही थी और पुलिस को भी अखबार वालों से सावधान रहना पड़ता है। उसने अपनी आवाज़ को काफी नरम और मीठा बनाने की कोशिश करते हुए कहा।

:" वो देखिये मिस ।

" येस ग्रेगरी, ग्रेगरी फ्राम मॉर्निंग पोस्ट "लड़की ने अपना नाम बताया

“ क्या ? गिर गई ? वह मॉर्निंग पोस्ट से गिरि ? कब ?”

"कौन?" ऑपरेटर ने हैरानी से पूछा।

"गोरी --बाले ने बेवकूफी भरे लहजे में जवाब दिया।

"यू स्टुपिड , ।-- दूसरी तरफ से लड़की की नापसंदगी भरी आवाज़ आई।

"अरे, बुरा मत मानिए ।" बाले टेलीफ़ोन पर ही लहरें लेने लगा - "कितनी अच्छी होंगी आप ?

“ शटअप, --लड़की ने डांटा।

"बहुत अच्छा, मिस गॉर्गी। प्लीज़, प्लीज़, अपने क्राइम रिपोर्टर, मिस्टर लॉन्गफेलो को लाइन पर बुला दीजिये ।

और लड़की ने बिना जवाब दिए ऑफिस वाली लाइन में फोन लगा दिया।

"यार, तुम एक दिन बड़े जूते खाओगे। दूसरी तरफ से एक आवाज़ सुनाई दी।-- वो लॉन्गफेलो था

"अरे, यह कौन मिस है?"

"तुमने इस लड़की को क्यों छेड़ा?"

"मैंने उससे कुछ नहीं कहा। वैसे, क्या तुम उसके ठेकेदार हो?"

"वह बहुत गरम हो रही थी और अगर मैंने उसे यह बताया: कि ये एक पुलिस सार्जेंट कि हरकत है तो

एडिटर से कह कर वो आपकी मालिश करवा सकती है ।"

" अबे रहे ऊँट के ऊँट । बेटे, लंबे दोस्त , तुम शौक से उसे मेरा नाम बताओ और यह भी, "उसे बताओ कि वह जब चाहे पर्शियन डेयरी में मुझसे मिल सकती है।"

"क्या मतलब ?"

"मेरा मतलब है, वह खुद समझ जाएगी और फिर तुमसे विनती करेगी, किसी से न कहना।"

" तुम इंसान हो या शैतान?

"बको मत , मुझे बताओ, तुम को कैसे पता चला कि मैं ही फोन कर रहा हूँ?"

"ऑपरेटर के साथ इस तरह की बातचीत और कौन कर सकता है?"

"आज तुम बहुत समझदार हो गये हो।"

"इसमें क्या शक है?"

34

"अच्छा, यह बताओ, क्या तुमने खुद उन लड़कियों को देखा है जिन पर चाँद का राजकुमार सवार है?"

"मैंने उनमें से कुछ को देखा है, कुछ को नहीं।"

"तो ऐसी सिचुएशन बनाओ कि वे सब एक ही समय पर एक जगह इकट्ठा हों।

"भाई सार्जेंट, मैं पहले से ही बहुत बिज़ी हूँ।

"तुम पूरी तरह से पागल हो। और क्या मैं मदारी का तमाशा कर रहा हूँ ?"

" मगर मेरे लिए ऐसा करना फिलहाल मुमकिन नहीं है।

"मेरे ख्याल में उनमे से किसी को भी यह पता नहीं होगा कि उसके अलावा कोई और लड़की भी किसी मून प्रिंस से प्यार करती है, और उन्हें एक जगह इकट्ठा करने से अमेरिकन फ्रीस्टाइल कुश्तियों का मज़ा आ जाएगा।"

" यानि किसी लड़की को पता नहीं होगा कि कोई दूसरी लड़की भी उसी राजकुमार से प्यार करती है।
यानी वे आपस में लड़ेंजीआई ।"

"आखिर देर बाद समझ गए ।

35

" लेकिन इससे क्या फ़ायदा होगा?

"अगर यह हिप्नोटिज्म का असर होता, तो तुरंत पता चल जाता, और अगर यह लड़कियों का ग्रुप शरारत कर रहा होगा , तो इसका पता चल जाएगा।

"शरारत?"

"हाँ भाई, तुम इस दुनिया में पैदल क्यों आए हो? आजकल की लड़कियाँ अपने माँ-बाप को परेशान करने के लिए अजीब-अजीब शरारतें करने लगी हैं।"

"इसलिए नवाब सूरत जंग कह रहे थे कि लड़कियों को जन्म देना मूर्खता है" लॉन्गफेलो ने कहा।

"और तुम जैसे लड़कों को पालना बेवकूफी है।

"फिर चोट की , मैं किसी दिन तुम्हारा मार्केट ठंडा कर दूँगा।"

"ठीक है, बस, ज़्यादा बात मत करो। हाँ, मैं उसे एक ऐड भेज रहा हूँ। इसको छाप देना ।

" लगता है , किसी जाल में फंसाओगे? "

"अरे, बिल्कुल नहीं। यह काम की बात है।"

"और जो लेने के देने- पद गए तो ?

"मैं हानि लाभ का जिम्मा मेरा ।"

"मैं ऐसी ज़िम्मेदारी नहीं लेता।"

"अरे, रेगिस्तानी जहाज, मैं तुम्हें ज़िम्मेदारी नहीं दे रहा हूँ, मैं तुम्हें बिज़नेस पार्टनर बना रहा हूँ।

"तो आप कौन सा बिज़नेस कर रहे हैं?"

"यह इस विज्ञापन से पता चलेगा।

"अच्छा भेजो "

36

भारी मन से यह कहते हुए लॉन्गफेलो ने फोन रख दिया और कुछ सोचते हुए खड़े हो गए।

****

जैसे ही उसने बंगले के बरामदे में कदम रखा, उसे हालत अच्छे नहीं दिखे । गुलाम रसूल चाय की ट्रे लेकर अंदर से बाहर आ रहा था, और उसके चेहरे के भाव से लग रहा था कि वह पक्का डांट खाकर आया है।

"क्या बात है? बाले ने उसे टोकते हुए गंभीरता से पूछा। "क्या मार पड़ी है? "

"वे बहुत गुस्से में हैं। आपको कई बार पूछा है। --गुलाम रसूल ने मुझे बताया।

" जल तू जलाल तू , भाई को संभाल तू, -- वह बड़बड़ाते हुए कमरे में दाखिल हुआ।

"इधर आओ। खान की आवाज़ सुनकर वह चौंक गया।

"ओह, मैं?" बाले ने मासूमियत से पूछा।

"हाँ, यह देखो। तुम्हारी बुद्धि ने क्या गुल खिलाया है।

बाले आगे बढ़ा और टेबल पर पड़े एक खुले लेटर को देखा। उसकी आँखें हैरानी से फैल गईं।

"अरे, सच में? वह बड़बड़ाया -

वो लेटर एक लड़की ने लिखा था और लेटर कुछ ही वाक्यों में लिखा था। यह खान के नाम था। लिखने वाली का नाम ग़ज़ाला था और उसने सुसाइड कर लिया था। लेटर में लिखा था:

खान साहब !

कोई और रास्ता न मिलने पर, मैं इसी उम्मीद में आपके पास आई थी ।

कि आप मेरे प्यार को निराशा से बचाएंगे, लेकिन आपने मुझे वही रास्ता भी बताया जो मैंने आखिरकार अपने लिए तय किया था। अब मैं उसी पर चल रही हूं। इस लेटर के बाद, आपको मेरी बॉडी खोपा झील में मिलेगी। इसे मेरे माता-पिता को देते समय, भगवान के लिए उन्हें यह मत बताना कि मैंने ऐसा क्यों किया, नहीं तो उन्हें बहुत सदमा लगेगा।

_____ ग़ज़ाला -------मुहम्मद रफ़ी खान बहादुर

"तो ये बात है? बाले खान का चेहरा देखने लगा। खान उसके अजीब व्यवहार से हैरान था।

"क्या बात है?" उसने खुद ही सवाल किया --"आखिरकार, आप ने एक मासूम लड़की की जान ले ली।"

" क्या बक रहे हो ?

"मैं बक नहीं रहा, मैं सच का साथ दे रहा हूँ। आप आदमी नहीं हो, अमीर अमरी हो पूरे ।

"मैं तुम्हारा भेजा हिला दूँगा , ये क्या बकवास लगा रखी है?

“ वाह वाह , सही कहूँ तो बकवास । अब क़यामत के दिन वह आपका हाथ पकड़कर आपसे सौ बार खुदकशी करवाएगी , तब मज़ा आयेगा ।

"तुम्हारा मतलब क्या है, कहना क्या चाहते हो , सुअर?"

" बेजुबान सुअर क्या कहेगा? मिस्टर बाले इस मज़लूम की वकालत कर रहे हैं।"

"मैं अभी तुम्हारे दिमाग को ठिकाने लगता हूँ ।"

"मैं तो डंके की चोट पर कहूँगा कि इस लड़की की आत्महत्या का कारण एक पुलिस अधीक्षक है ।

38

आपने उसे प्यार में निराश करके ऐसा करने पर मजबूर किया, हालांकि ताली एक हाथ से नहीं बजती। आप ने पहले उसे अपने प्यार का इजहार किया दिया होगा फिर धोखा दिया होगा।

" क्या बक रहे हो ?

"आज मैं सोहराब मोदी की तरह सारे डायलॉग बोलूँगा । आज मुझे मौका मिला है । भगवान इस बेचारी सीधी-सादी लड़की पर रहम करे जिसने आपको मर्द समझकर आप से मुहब्बत की और आप ने ----।

" बाले --" बकवास नहीं --

"मैं उसके माता-पिता को भी बता दूँगा कि आपकी बेटी का दिल एक बेरहम, चालीस साल के सरकारी साधु ने तोड़ दिया है। बाले पीछे की ओर हटाता हुया बकता रहा ।-- काश उसने मुझ पर ध्यान दिया होता।"

"गुलाम रसूल"--. खान चिल्लाया. --बाहर से दरवाज़ा बंद कर दो. आज मैं तुम्हारे दिमाग के सारे कीड़े झाड़ दूंगा. -खान उसकी तरफ़ बढ़ा.

"आप इस हालत में बहुत देवदास लग रहे हैं। -- बाले दरवाज़े पर आ गया था

लेकिन उसी समय, दरवाज़े पर दस्तक हुई और गुलाम रसूल चिल्ला उठा ---

" रऊफ खान है साहब ।"

" अंदर बुलाओ और तुम्हें तो अभी समझूंगा," उसने बाले को घूरते हुए कहा।

रऊफ अंदर आया। जैसे ही उसने बाले को देखा, उसने बुरा सा मुँह बनाया। आजकल, उनमें खटपट थी ।

रऊफ ने खान को नमस्ते करने के बाद बताया, "लड़की की बॉडी खोपा झील से बरामद कर ली गई है और उसे पोस्टमॉर्टम थिएटर ले जाया गया है।"

39

" ताजमहल की तरह इस का खान महल बनाना चाहिए था।" बाले ने फिर कहा, लेकिन खान ने सुना नहीं.

" आप फोटो लाए हैं?

"हाँ. ये रहा . र--ऊफ़ ने अपनी जेब से एक कार्ड के साइज़ का फ़ोटो निकाला और ख़ान को दिया. ख़ान ने उसे ध्यान से देखा. फिर उसने फ़ोन रिसीवर उठाया और नंबर डायल करना शुरू कर दिया.

"हेलो। हां, मैं सुपरिटेंडेंट खान बोल रहा हूं। देखिए, आपकी बेटी की बॉडी खोपा लेक से मिली है।' खान ने फोन पर किसी से कहा।

"बॉडी? ग़ज़ाला की?-- रिसीवर पर सिर्फ़ दो शब्द सुनाई दिए और फिर चुप हो गया। खान को सिर्फ़ दूसरी तरफ़ किसी के हाथ से रिसीवर गिरने जैसी आवाज़ सुनाई दी।

"शायद बेचारी बेहोश हो गई।

कौन?" रऊफ ने पूछा।

"खान बहादुर - शायद वह अपनी बेटी की मौत की खबर सुनकर बेहोश हो गए। वह कल सुबह से उसके गायब होने के बारे में फोन पर बात कर रहे थे।" यह कहकर वह बाले की ओर मुड़े।

"क्या यह वही लड़की है?" खान ने फोटो उसकी ओर बढ़ाया, और जैसे ही बाले की नज़र उस पर पड़ी, वह अपना सिर पकड़कर सोफे पर गिर पड़ा।

"हे भगवान, यह वही है, तो क्या सच में इस ने -- बाली के गले में शब्द अटक गए थे।

"हाँ. और तुम इसके लिए ज़िम्मेदार हैं.

40

"हम्म... मैं ?" बाले ने आश्चर्य से पूछा।

"क्या तुमने उसे डूबकर मरने की सलाह नहीं दी थी?"

"लेकिन मुझे क्या पता था कि वो सचमुच --

"ओह, अगर वह इतनी कंट्रोल में होती, तो वह यहाँ क्यों आती? क्या आप उम्मीद कर सकते हैं कि खान बहादुर रफ़ी की पड़ी लिखी बेटी से ऐसी उम्मेद कर सकते थे वो ऐसे ही हमारे पास आएगी और हमारी मदद मांगेगी?"

"मुझे तो यह भी नहीं पता था कि वह कौन था।"

"और तुम्हें पता लगाने की ज़रूरत नहीं समझी। तुम्हारी अपनी बेवकूफ़ी ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि तुम अपनी अक़ल खोते जा रहे हो।"

"बिलकुल नहीं । ये सच है कि मैंने इसे कोई अहमियत नहीं दी, और सच ये भी है कि उस समय उसके पागलपन ने मुझे चिढ़ा दिया था।"

"अब अगर केस को कानून के हवाले कर दिया जाए तो आप जानते हैं कि उसकी मौत के लिए किसे दोषी ठहराया जाएगा।

"उसके पागलपन पर"

"मुझ पर । और उसके लिए अधिकारियों को संतुष्ट करना कितना मुश्किल है। शायद आप इसकी कल्पना भी नहीं कर पाएंगे।"

"मुझे माफ़ करिए । मुझे लगा कि यह मज़ाक है, लेकिन आप पर कोई भी इल्ज़ाम नही आने दूँगा ।"

"तुम्हारी ये वफ़ादारी मुझे कानूनी जवाबदेही से नहीं बचा सकती। उसकी आत्महत्या को सही ठहराने के लिए एक चिट्ठी पेश करनी होगी, जो सार्जेंट बाले के नाम से नहीं, बल्कि सुपरिंटेंडेंट खान के नाम से हो। और क्योंकि इस लड़की ने यह पागलपन किया है या इसका जो भी कारण हो।

41

"ये शुक्र है कि उसने अपने माता-पिता को इस बारे में कुछ नहीं बताया था। ऐसे में, उसकी आत्महत्या सीधे तौर पर इस लेटर और फिर मेरी दी गई सलाह से जुड़ी है, जो आपकी गैर-ज़िम्मेदारी का नतीजा है।"

"लेकिन यह भी कहा जा सकता है कि वह इस तरह के पागलपन का शिकार थी।"

"ऐसा नहीं हो सकता।" आप इसे कैसे साबित कर सकते हैं? जब सिर्फ़ आप ही इसे जानते हैं और कोई भी इसे देखने वाला नहीं है?

"तो क्या यह लेटर पेश किए बिना मामला सुलझाया नहीं जा सकता?

"कानून के रक्षक के तौर पर मैं कानून के साथ धोखा नहीं करूंगा। मुझे यह लेटर आज जमा करना है।

"बाप रे, बुरे फंसे ?"

" तुम नहीं फंसे हो, मैं फंसा हूं, बेवकूफ - मेरे खिलाफ और पता नही इस चिट्ठी से क्या क्या शक पैदा होगा।"

"मैं... मैं सच में शर्मिंदा हूँ। प्लीज़ मुझे बस कुछ दिन दीजिए ताकि मैं कुछ सबूत दे सकूँ जिससे सब कुछ साफ़ हो जाएगा।

"मैं कोई बेवकूफ नहीं हूं जो आपकी कोशिशों का इंतज़ार करूं, लेकिन मुझे लगता है कि जैसे आपने अभी इस लेटर से गलत नतीजा निकाला है, वैसे ही दूसरे लोग, और खासकर हमारे विरोधी, इसका फ़ायदा उठाएंगे और मुझ पर बहुत गंदगी फैलाएंगे।

"अब अगर आप ने कुछ और कहा तो मैं भी आत्महत्या कर लूंगा। - बाले की आवाज़ लगभग लड़खड़ा गई थी।

"इससे कुछ नहीं होगा। कम से कम मैं चाहता हूँ कि तुम इस घटना से सीखो और भविष्य में कोई बेवकूफी न करो।"

"जो ऐसा करे लानत है उस पर, लेकिन इसकी जवाबदेही ?"

"मैं किसी न किसी तरह भुगत लूंगा। तुम अब जा सकते हो।"

खान की इन बातों से बाला को ज़िंदगी में पहली बार सच में दुख हुआ। उसकी एक छोटी सी गलती खान का अच्छा नाम खराब कर सकती थी। रऊफ वहीं था। रऊफ और वह

दोनों चुप चाप बाहर आ गये , बाले सिर झुकाए, किसी गहरे विचार में खोया हुया चल रहा ठा ।

" हद पार करने का नतीजा देख लिया ?

"प्रिय रऊफ भाई, हमें कुछ करना चाहिए।"

" किसी लड़की के साथ किसी कैफ़े में जा कर झक मारो , तुम और क्या करोगे?

"अरे भाई, बड़ी मूंछ, संजीदगी में भी मैं कम खतरनाक नहीं हूँ।"

"हाँ, हाँ, मैंने बहुत देखा। --रऊफ ने उस पर और पानी चढ़ाना शुरू कर दिया।--

"अरे, तुम ने हम को , इस बाले साहब को क्या समझ रखा है ?"

"अगर कुछ दमखम है तो कुछ करके दिखाओ। बेकार में खान साहब की पोजीशन खतरे में डाल दी

"खान, खान साहब को कुछ नहीं होगा। और अगर तुम मेरा साथ दोगे, तो शायद बहुत अच्छा होगा।

"मुझे क्या करना चाहिए?" रऊफ ने गंभीरता से पूछा।

"इधर मूंछ, अरे नहीं कान लाओ"

और कुछ देर फ़्लर्ट करने के बाद, वे दोनों मुस्कुराए। बाले ने वहाँ से एक टैक्सी पकड़ी और वे अपनी अनजान जगह की ओर निकल पड़े।

****

"आपने मुझे बुलाया था?" खान ने DCP के ऑफिस में घुसते ही फॉर्मल ग्रीटिंग के बाद पूछा।

"हाँ -खान बहादुर रफी की बेटी की आत्महत्या के बारे में --डीसीपी ने उत्तर दिया. .

मुझे पता है आप क्या सोच रहे हैं, लेकिन मैं खुद आपको कुछ समझाने की हालत में नहीं हूँ। ----खान के जवाब ने DCP को चौंका दिया।

उन्हें लगा कि खान इस घटना के बाद कोई सफाई या वजह बताएगा, लेकिन उस समय खान का लहजा भी हमेशा की तरह अलग था।

" क्या आप चाहते हैं कि इस लेटर के हिसाब से आपके खिलाफ एक्शन लिया जाए?"

"अगर आपको ज़रूरी लगे तो आप ऐसा कर सकती हैं।

"मिस्टर खान, मुझे लगता है कि आपको होश नहीं है। -- DCP देश पांडे का मूड खराब हो गया।

"मुझे खेद है, सर, लेकिन मैंने पहले ही कहा है कि मैं इस समय कोई सफाई नहीं पेश करूंगा।

"क्या यह कोई निजी मामला है? --DCP का लहजा फिर नरम हो गया। असल में, वह खान, वह अपने टैलेंटेड सबऑर्डिनेट के साथ सख्त नहीं होना चाहता था।

"मेरे निजी मामले कभी किसी से जुड़े नहीं होते, चाहे वे कितने भी नाजुक मामले क्यों न हों।

"लेकिन इस लेटर का सब्जेक्ट आपके इन्वॉल्वमेंट को दिखा रहा है।"

"अगर आप मुझ पर भरोसा करते हैं, तो समझ लीजिए कि इस पत्र का मुझसे कोई लेना-देना नहीं है।"

"तो यह पत्र आप तक क्यों पहुंचा? और फिर लिफाफे पर आपका नाम और पूरा पता क्यों मौजूद है?

मैं फिर से कहूंगा कि मैं इस समय कोई भी सफाई न देने के लिए मजबूर हूं। अगर आपको इस पर भी मुझ पर भरोसा नहीं है, तो आप मेरे खिलाफ कोई भी ऑर्डर जारी कर सकते हैं। -----खान ने ठंडे और सीधे लहजे में कहा और DCP किसी गहरी सोच में डूबे हुए बस उनके चेहरे को देखते रहे।

इंटेलिजेंस डिपार्टमेंट के डिप्टी कमिश्नर का ऑफिस बिल्डिंग के दूसरे फ्लोर पर था, जहां अक्सर गहरी खामोशी रहती थी, और उस समय, उन दोनों के बीच कुछ मिनटों की खामोशी ने कमरे के माहौल को और भी सुन्न कर दिया था। जैसे दो हाड़-मांस के इंसान अपनी जगह पर बेजान और बेसुध बैठे हों। फिर, सोचते हुए, DCP चौंक गए। शायद वह किसी नतीजे पर पहुंच गए थे।

खान की नज़रें अभी भी टेबल पर रखे कांच के पेपरवेट पर टिकी थीं।

"खान साहब, मैं आपको इस बारे में एक्सप्लेनेटरी रिपोर्ट या क्लैरिफिकेशन देने के लिए एक हफ़्ते का समय देता हूँ। मुझे पता है कि इस लेटर से बाहर के लोग, या कम से कम कुछ लोग, आपके बारे में किस तरह का शक फैलाना शुरू कर देंगे। लेकिन मैं इस इन्वेस्टिगेशन के नाम पर कार्रवाई को एक हफ़्ते से ज़्यादा नहीं रोक सकता।" DSP ने अपनी दरियादिली दिखाई।

"मैं आपकी हमदर्दी के लिए शुक्रगुजार हूं। वैसे, अगर मैंने इस लेटर के बारे में आपको बता देता तो अखबार और पब्लिक मुझ पर शक नहीं करते , लेकिन मैं सिर्फ अपनी बेवकूफी छिपाने के लिए झूठ नहीं बोलना चाहूंगा।"

"बेवकूफी?" DCP ने हैरान और सवालिया लहजे में पूछा।

"आपने मुझे एक हफ़्ते का समय दिया है।" खान मुस्कुराया।

45

"ओह, ठीक है, यही बात है।

खान अब खड़ा हुआ और अलविदा कहने के लिए हाथ मिलाने के बाद, कमरे से बाहर चला गया। बाहर, इब्राहिम गलियारे से गुज़र रहा था। खान को देखते ही उसने ध्यान दिया।

"बाले कहाँ है?" खान रुका और उससे पूछा।

मिस्टर इब्राहिम ने विनम्रता से जवाब दिया, "मैंने उसे कल से नहीं देखा है।"

" कहाँ गया आखिर ? खान चिंता से बुदबुदाया। ---जाओ, पता करो। कहीं, कुछ , ऐसा नहीं। --उसने खुद सिर हिलाया और कहा---जाओ, पता करो।

ये कह कर वह आगे बढ़ गया और इब्राहिम सोचता रह गया कि आज साहब को क्या हुआ।

46

प्रोफेसर टैमलोट. एम ए डी पाम

तीन-चार दिन में ही प्रोफेसर टैमलोट ने अखबारों में अपने ज्योतिषी का विज्ञापन दे दिया। कृष्णा बाज़ार के लोग खुद हैरान थे कि मोहल्ले में यह नया जीव कौन है। अभी तीन दिन पहले ही मद्रास से आए इस प्रोफेसर ने न्यू इंडिया लॉज का पूरा पिछला हिस्सा किराए पर लिया था और उसी दिन शाम तक उसके चौड़े पिछले दरवाज़े पर प्रोफेसर टैमलोट, M.A.D. पाम, चीन, जापान, बर्मा और असम रिटर्न लिखे बड़े-बड़े बोर्ड लगा दिए गए थे, जिन पर शैतानों की मनगढ़ंत तस्वीरों के साथ-साथ जंतर-मंतर के ठगों की मनगढ़ंत तस्वीरें भी बनी हुई थीं। और अगले दिन से मोहल्ले के अच्छे लोगों का मनोरंजन प्रोफेसर के काले रंग के, मूंछों वाले असिस्टेंट से होने लगा, जिसने अपने आधे नंगे काले शरीर पर कमर से नीचे सिर्फ़ मद्रास की धोती पहनी हुई थी और जिसकी दोनों नंगी बांहों पर पीतल के सांप पड़े हुए थे। हर आदमी को पाँच-पाँच रुपये बाँटकर, प्रोफेसर टैमलोट के आज के ज़माने के जादूगर होने की दर्जनों मनगढ़ंत कहानियाँ आस-पास के मोहल्लों में फैला दी गईं। इन पाँच रुपयों का अपने आप में जादुई असर था और कृष्णा बाज़ार में अफ़वाहें फैल गईं कि यह जादूगर पूरे मोहल्ले को पागल कर सकता है। उसके कैरेक्टर की तरह, उसकी पर्सनैलिटी भी लोगों के बीच चर्चा में थी, क्योंकि उन्होंने अभी तक उसका रूप नहीं देखा था। हालाँकि, यह अफ़वाह ज़रूर गर्म थी कि वह बहुत, बहुत भयानक और डरावना आदमी था और किसी के सामने नहीं आता था।

****

47

और आज तो , आस-पास के लोग सच में इन परंपराओं पर विश्वास करने लगे , जब सुबह से ही प्रोफेसर के दरवाज़े के पास तीन-चार मोटरबाइक रुककर जा चुकी थीं। जब ऐसे लोग उनके पास आ रहे थे, तो वह ज़रूर कोई इज्जतदार आदमी होंगे।

"अरे भाई पहलवान," न्यू इंडिया लॉज के बगल वाली बिल्डिंग के एक गुजराती कपड़ा व्यापारी ने प्रोफेसर के काले नौकर को पुकारा, जिसके हाथ में बर्फ का एक सिल का टुकड़ा था।

"क्या बात है?" उसने गहरी, भारी आवाज़ में रुकते हुए पूछा।

गुजराती ने उससे गोपनीय स्वर में पूछा, " क्या सचमुच कोई महान पुरुष है ?"

"तो, तुम को क्या पिद्दी का बच्चा नज़र आ रहा है ?" नौकर ने बिगड़े हुए स्वर में अपनी सफेद दाँत दिखाते हुए पूछा।

"तुम ही फोकट में गुस्सा होता है , मेरा भी खुद का एक काम है ," उसने सावधानी से चारों ओर देखते हुए कहा।

"तुमको कोई शर्म नहीं है, ब्रदर , तुम आदमी हो या हिजड़ा?' नौकर बिगड़ गया

: अरे वाह , बुरा मन गए , इधर तो ब्रदर , फ्रेंड यार बोलता हम को , क्या समझा ?

" अरे , तुम हमारा फ्रेंड, यार ? -- हमको पचास रुपया उधर मनगता , अगले साल इसी तारीक को लौटा देगा

"रुपए--? उसकी आवाज़ अटक गयी ।--पहलवान, सुबह से दो पैसे का बिकरी भी नहीं हुया। इस धंधे में रुपया कहाँ रखेला है?" गुजराती अब घबरा गया।

"ये -- ? हमारा दोस्त ? , लानत है, ऐसे दोस्त पर , क्या दोस्त के साथ भी ऐसा ही होता है? नौकर ने कहा।

और यह कहकर ज़मीन पर थूका। फिर बर्फ़ का टुकड़ा अपने दूसरे हाथ में लेते हुए उसने पूछा,

"ठीक है, अब अपना मकसद बताओ, व्यापार की बात - व्यापार की बात व्यापारी जैसी होती है ।"

"वो... भाई, वो , वो दुकान का मालिक है। वो व्यापार मे हेराफेरी करता । बस, उसका मगज फिरा देना है। अगर साले का बिज़नेस चौपट हो गया, तो तुम्हें पाँच रुपये हम देगा ।

"शर्म आनी चाहिए ब्रदर , शर्म --- प्रोफेसर साहब कोई ढाई पैसे वाला मदारी नहीं हैं। वो बड़े बड़े मामले डील करते हैं। तुम हमारा कीमती समय बर्बाद किया ।

"मगर सुनो, पहलवान।"

"अब अगर ज़्यादा बोलोगे तो यह बर्फ का सिल तुम्हारे सिर पे दे मारेंगे। हमारा हाथ गला जा रहा है और तुम मसखरी कर रहे हो। ---------यह कहकर नौकर उसे घूरता हुआ आगे बढ़ा और गुजराती उसे अजीब नज़रों से घूरता रह गया ।

जैसे ही वह न्यू इंडिया लॉज, मॉडल नंबर 55 के पिछले दरवाज़े पर पहुँचा, तो बाहर एक नई, शानदार ब्यूक, को खड़ा देखकर उसके कान खड़े हो गए। दरवाज़े पर ही एक औसत हाइट का, चीनी जैसा दिखने वाला, आदमी खड़ा था।

"यह शानदार आदमी कौन है? नौकर उसके पास रुका और धीरे-धीरे पूछने लगा

"कोई आदमी नहीं, बल्कि एक जवान लड़की है।"

"अकेली?

"नहीं, ड्राइवर स्टीयरिंग व्हील पर सो रहा है।"

"खुदा खैर करे । यह कहकर वह बर्फ का टुकड़ा पकड़े हुए अंदर चला गया।

एक चौड़े, मेहराबदार रास्ते से गुज़रने पर, एक ऊँचा दरवाज़ा था जिस पर रेशमी पर्दा लगा था, जिसके अंदर एक बड़ा, चौकोर कमरा था, जिसमें एक सोफ़ा सेट और कुछ एक्स्ट्रा कुर्सियाँ थीं, और

49

दीवारों पर अजीब और अनजान लिखावटें लिखी हुई थीं। जैसे ही उसने इस कमरे में कदम रखा, उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। हल्के गुलाबी रंग की साड़ी पहने एक खूबसूरत जवान लड़की सोफे पर बैठी बेचैनी से करवटें बदल रही थी। उसका रंग गोरा था, उसका चेहरा गोल था, शाम ढलते ही उसके गाल गुलाबी हो गए थे, और उसकी आँखें आकर्षक और मनमोहक थीं। वह इस सांवले, आदमी को अचानक अंदर आते देखकर चौंक गई।

"आप प्रोफेसर तालबोट को मिलने आई हो?" " काले आदमी ने धीरे से पूछा, जिससे उसका डर कुछ कम हुआ।

"ह... हाँ. वह मुश्किल से बोली.

" लंबी मूंछ।------ अचानक कमरे में एक आवाज़ गूंजी और वह काला आदमी चौंक गया।

फिर उसने बुरा सा मुँह बनाया और गर्दन उठाकर कहा।

--------"फरमाइए आका ।

50

"हमको सोब खबर रहता की कौन कए कु आता , तुम बीच में टांग नको घुसेड़ो ।

 "बहुत खूब आक़ा ।" नौकर ने जवाब में अदब से सिर झुकाया, और लड़की हैरानी से इधर-उधर देखने लगी कि वह किसके सामने इतनी तमीज़ दिखा रहा है।

"मिस कून जी, आप अंदर आइए। और काली मूंछ , मेम साहब को रास्ता दिखाओ। -- इस आवाज़ के साथ, काले मूंछ वाले ने स्वागत के अंदाज़ में दोनों हाथ ऊपर उठाए। लड़की खड़ी हो गई।
नौकर ने लड़की को एक दरवाज़े की तरफ़ चलने का इशारा किया, जिस पर एक काले परदे पड़े थे ।

वह काफ़ी निडर और बेखौफ़ लग रही थी, वरना ऐसे अनजान माहौल में वह हिचकिचाती। नौकर ने पर्दा हटाया और जब वह अंदर गई, तो उसने देखा कि अंधेरे कमरे से एक धुंधली नीली रोशनी फैल रही है, जो उसकी छत से आ रही थी। बीच में एक चौड़ी मेज़ थी, जिस पर एक बड़ा चीनी का कटोरा रखा था और उसमें से पीले रंग का धुआँ छत की तरफ़ उठ रहा था। और उसके सामने, एक बहुत ऊँची, गोल कुर्सी पर, एक अजीब सी शख़्सियत ऐसे धँसी हुई बैठी थी जैसे वह इसी कुर्सी का कोई हिस्सा हो। उसने सिर पर अलिफ़ लैला फ़िल्मों के किसी अरब मंत्री की तरह काली पगड़ी पहनी हुई थी, और उस पर एक सफ़ेद मोनोग्राम था, जो शायद हाथीदांत की हड्डियों या चमकदार प्लास्टिक का बना था। यह मोनोग्राम एक खोपड़ी और क्रॉसबोन्स थी। यह खोपड़ी के आकार का था। उनके सामने टेबल पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक अलग-अलग तरह की खोपड़ियों की एक लाइन लगी हुई थी। इनमें इंसानी खोपड़ियों से लेकर गधे की

खोपड़ियों और उल्लू की खोपड़ियों तक शामिल थीं। प्रोफेसर टैमलोट की नाक तोते की चोंच की तरह आगे की ओर मुड़ी हुई थी, और उनकी भौंहें नाक के ऊपर से माथे तक काली पगड़ी में गायब हो गई थीं। उनकी मूंछें पतली और नीचे लटकी हुई थीं, जैसे डॉ. फू मांचू की, और उनकी दाढ़ी उनके निचले होंठ के बीच से ठुड्डी पर शुरू होकर गिलहरी की पूंछ की तरह नीचे की ओर लटक रही थी ।

51

वह हिचकिचाते हुए बैठ गई।

"बैठिए ।" उसने लड़की को अपने सामने कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। और वह थोड़ी देर के लिए झिझकी फिर बैठ गई।

“ आप.... प्रो टामलोट ? लड़की ने झिझकते हुये पूछा , लड़की कन्फर्म करना चाहती थी।

" जी , प्रो टामलोट, "तुम्हें... तुम्हें वाइस प्रेसिडेंट टैमलोट से कोई प्रॉब्लम है? मैडम - मैं , प्रोफेसर टैमलोट, M.A.D. हस्तरेखा - चीन, जापान, बर्मा, असम, आई एम सारी, भारत वापसी नहीं - न्यूमरोलॉजी के मास्टर, हस्तरेखा विज्ञान, पामिसटरोलॉजी के बाप ,

"पामिसटरोलॉजी?" लड़की ने हैरानी से पूछा।

"यह एक नई तकनीक है। हस्तरेखा विज्ञान का सुपर रहस्य विज्ञान... और... और एस्ट्रोलोजी ---।"

इस तरह की बातचीत सुनकर लड़की उसे अजीब नज़रों से देखने लगा।

"डोंत माइंड , मेरी भाषा पर ध्यान मत दीजिए। हम मद्रास के लोग ठीक से हिंदयसतानी नहीं जानते ।"

"ओह ओह ," लड़की ने कहा, शायद उसके रूप से डर गई थी। फिर बोली --

"आप क्या कर सकते हैं?" लड़की ने मुद्दे पर आते हुए उससे पूछा।

"अरे, ये का बोला ? हम क्या नहीं करने को सकता ? क्यों बे काली मूंछें ?" उसने टेबल के दाईं ओर

आखिर में खड़े काले रंग के नौकर से कन्फर्मेशन मांगा।

" इसमें क्या शक है आक़ा , - नौकर सिर झुकाते हुये बोला

“ तुम्हारा मगज फिरेला है , इधर शक का क्या काम है"

लड़की उनकी बातचीत पर हंस पड़ी और उसका डर गायब हो गया।

"हमारा प्रोफेसर सब कुछ कर सकता मैडम। धरती से आसमान तक, चाँद से सूरज तक, पूरब से पश्चिम तक, पश्चिम से पूरब तक, उनके क्लाइंट हैं।"

"हम अपना तारीफ नहीं मांगते। गेट औट, बाहर निकलो," प्रोफेसर ने उस को डांटा और उसे घूरा। और वह सिर झुकाकर चुपचाप बाहर चला गया।

"हमको खबर है, आप यहां काए कु आए , रुको, बताता है।"

यह कहकर उसने अपनी जादू की छड़ी उठाई, जो बस एक काले रंग का लकड़ी का रोल था, और उसे कटोरे पर घुमाने लगा। लकड़ी के कटोरे से उठने वाला धुआँ हर पल और तेज़ होता गया, और देखते ही देखते, टेबल पर पड़ी खोपड़ियों में से एक उल्लू की खोपड़ी उछलने लगी।

"ओह, तुम्हारे साथ भी यही हुआ," प्रोफेसर ने लकड़ी हाथ में पकड़ते हुए कहा।

"यही क्या ?" हैरान लड़की ने पूछा।

" यही वही , उसको क्या बोलता क्या कहेगा, अंग्रेजी में लव , हिंदी में प्रेम और दोनों में... और उर्दू में मुहब्बत "

"जी ," लड़की ने कहा, "मैं इस बारे में आपसे कुछ मदद माँगना चाहती हूँ।" लड़की कुछ शर्मा सी गई ।

"पहले सीधा हाथ से हमारी कंसल्टिंग फीस के पचास रुपये ढीला करो , फिर मैं तुम्हें आगे बताऊंगा। ---प्रोफेसर ने अपनी प्रोफेसर वाली अकड़ दिखाई ।

और जो लड़की एक लग्ज़री ब्यूक कार में आई थी, वह पचास रुपये के लिए क्या सोचती , उसने अपने पर्स से पचास रुपये निकालकर टेबल पर रख दिए और उम्मीद भरी नज़रों से उसकी तरफ देखा।

"अब बैठ जाओ और साँप सूंघ लो।"

" क्या मतलब है?" लड़की ने चौंक कर पूछा।

"ओह, आप इतना भी नहीं समझने सकता , मैडम। इसका मतलब , आपको बस चुप चाप बैठ जाने को मांगता ।" लड़की बिना जवाब दिए अपनी सीट पर पीछे हट गई। और प्रोफेसर ने अपना गला साफ किया।

और तरह-तरह की आवाज़ें निकालने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे कोई पागल आदमी अपने अजीब तरीके से अलग-अलग जानवरों की भाषा बोलने की कोशिश कर रहा हो।

आँखें बंद करके उसने अपनी आवाज़ ऊँची की और ज़ोर से गुर्राते हुए अपना सिर हिलाया।

"ऐ अफ़रासियाब, खाना खराब , फादर हाजीरा , रोशन जबेयरा , गाढ़ा खमीर, मालिका ए बहार , ख्वाजा उमर अय्यर, शौहर नामदार , सर सर सर ...
... सर सर सर ...म्हतर कुरान - तीन पैर, दो हाथ , एक पूंछ, या बाबा, हराम मूंछें, या बाबा, हराम मूंछें, या बाबा, हराम मूंछें। छह, सात, आठ, नौ, दस। मिस्टर तमलोट,.... येस ।

उसी समय, उसने अपनी आँखें खोलीं। लड़की गंभीरता से उसकी अजीब हरकतों को देख रही थी, लेकिन आखिरी शब्दों पर, टेबल के दूसरी तरफ खड़ी काली मूंछ वाले का चेहरा पीला पड़ गया। उसने धीरे से कुछ बड़बड़ाता हुया वहाँ से हट गया।

" पकड़ा गया, मैडम. आपका मामला पकड़ा गया. प्रोफेसर लगभग अपनी सीट से उछल पड़े. दुनिया का सबसे अद्भुत केस. अद्भुत केसों का ग्रैंड मास्टर "--.

"मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा- लड़की ने उलझन भरे लहजे में कहा।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"अफरोज

अखरोट... ओह, क्या खूबसूरत नाम है। प्रोफेसर ने कहा ,---आप गहरी सांस लो ।

" व्हाट? लड़की अचानक बिगड़ कर खड़ी हो गई।

" अगर इतना खूबसूरत न होता, तो भला चाँद का शहजादा ---- उसने बात करना बंद कर दिया और जैसे ही चाँद का शहजादा नाम उसके मुंह से निकला, लड़की के चेहरे का एक्सप्रेशन बदल गया, कहाँ तो वह गुस्से में थी।

और कहाँ वो एक दम से मोम हो गई।

" आप सब कुछ जानते हैं , जरूर जानाते हैं , -- वह फिर से सीट पर बैठ गई और विनम्र स्वर में बोली।

"बेशक, लेकिन मैं तुम्हें नहीं बताऊँगा।"

"भगवान के लिए, मुझ पर दया करो, नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगा।"

"तुम एक सपने में उससे मिल था , है ना?"

ये झूठ है। वह सपना बिल्कुल भी सपना नहीं था। यह तय करने के लिए कि वह सपना था या हकीकत, मैंने राजकुमार की उंगली से गिरी अंगूठी चुरा ली और उसे अपनी साड़ी के किनारे से बांध लिया। यह वही अंगूठी है।ये देखो , यह वह अंगूठी है जो प्रिंस की उंगली से गिरी थी।

यह कहते हुए, उसने प्रोफेसर को विचित्र, चमकदार लाल अंगूठी दिखाई। उसने उसे अपने हाथ में लिया और बहुत ध्यान से देखा। वह सच में एकदम नई थी।

यह एक रिंग जैसा स्ट्रक्चर था। जिस मेटल से इसे बनाया गया था उसमे एक नाग सुनहरा था, लेकिन यह हल्की रोशनी में और शायद अंधेरे में और भी ज़्यादा चमकता था। इसका रंग याकूत कि तरह लाल था , और यह चपटा थोड़ा था। और यह रिंग के फ्रेम से ठीक उसी तरह जुड़ा हुआ था, जैसे किसी समुद्री मकड़ी ऑक्टोपस ने अपनी बाहें चारों तरफ फैला दी हों और नाग उनके बीच उसका उठा हुआ सिर हो। और इस पर बिल्कुल इंग्लिश लेटर S जैसा निशान था।

"अच्छा, क्या तू को इसका पूरा चौखटा याद है?"

"चौखटा , ये क्या है ?

"हाँ, वो क्या है, चौखटा यानी फ्रेम ,चेहरा , , उसका रूप"

"ओह," लड़की ने प्यारी आवाज़ बेदम थी -- "कितना सुंदर था वो ।" इस बात पर लड़की के मन में बेखुदी का भाव आ गया। शायद वह इस अनजान चांद के राजकुमार के लिए इमोशनली पागल हो रही थी।

"और हमसे भी ज़्यादा?" प्रोफेसर ने अपनी गिलहरी जैसी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए पूछा। और लड़की इस बात पर जोर से हंस पड़ी।

उसी समय, कदमों की आहट सुनाई दी और नौकर फिर से आ गया।

" अब क्या है?

"एक मुलाकाती है "

" गोली मारो , अरे, हम अभी फ्री नहीं हुए हैं।"

"वह बहुत दूर से आई है।"

"आई ,... है --- तब ... तो, जरूर बैठने को बोलो " यह कहते हुए, उसने फिर से लड़की से कहा।

"जी मैडम, आप वहां कैसे गईं थी , हम कु सच सच बताओ ? सच-सच पूरा ।"

56

"" मुझे कुछ नहीं पता। यह एक हफ़्ते पहले की बात है जब मैं एक रात अपने बिस्तर पर सोई थी और थोड़ी देर बाद मेरी आँखें खुलीं। मैंने उस समय खुद को एक अजीब दुनिया में पाया। हमारे माहौल से बिल्कुल अलग, अलिफ़-लीला की कहानियों से भी अजीब। यह एक बड़ा शानदार महल था, जिसमें सीढ़ियों पर कदम रखते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैं कोई सुंदर लैला हूँ। सीढ़ियों के दोनों तरफ़ हाथ बाँधे काले गुलाम खड़े थे और वह खुद मेरा स्वागत करने के लिए सीढ़ियों पर वो प्रिंस आया।

"तुम्हारा मतलब है चांद का राजकुमार?" प्रोफेसर ने गंभीरता से पूछा। "क्या?"

"हाँ, उसने कहा कि चाँद पर उस का राज है।"

"और जब तुमने अपनी आँखें खोलीं, तो तुम अपने बिस्तर पर था ?"

"हाँ. लड़की ने अपना सिर झुका लिया.

"और तुम्हारा मतलब है कि मैं तुम्हें उससे फिर से मिलवाऊं?

"मैं तुम्हें इनाम दूंगा। एक हज़ार, दो हज़ार, पांच हज़ार।"

"आपका काम हो जाएगा। आप परसों दो बजे आ जाइए, लेकिन यह अंगूठी अभी हमारे पास रहेगी, आपको परसों मिलेगी। हमें इससे आपके लिए रास्ता निकालना होगा। -- प्रोफेसर ने कहा

"लेकिन इसे हिफ़ाज़त से रखेंगे , ताकि यह खो न जाए," लड़की ने उसके वादे से प्रभावित होकर खुश स्वर में कहा।

प्रोफेसर ने जवाब दिया, "आप मुझ पर भरोसा कर सकती हैं, मैडम।"

"मैंने किया।"

"करिए -- साथ ही, उस ने लड़की को जाने की इजाज़त भी दे दी।

****

57

"कौन है?" खान ने फ़ोन उठाते हुए कहा। वह अभी-अभी ऑफ़िस से लौटा था।

और वह अपने कोट की सिर्फ़ एक आस्तीन उतार सका था । उसने बाले को चार-पांच दिनों से नहीं देखा था। और बाले ने ऐसा ज़िंदगी में पहली बार किया था। कभी-कभी वह किसी प्राइवेट प्रोग्राम के लिए एक-दो दिन के लिए गायब हो जाता था, लेकिन खान को उसकी कमी इतनी महसूस कभी नहीं हुई थी जितनी इन दिनों हो रही थी। पता नहीं क्यों, उसे लगने लगा कि उसने पछतावे में शहर छोड़ दिया है। और यह सोचकर, उसे खुद पर अफ़सोस हुआ कि वह उस दिन इतना सख़्त और रूखा क्यों था। वह उसे एक ज़िद्दी बच्चे के तौर पर जानता था जो कभी बड़ी बातों पर ध्यान नहीं देता था और कभी छोटी-छोटी बातों से असर डाल लेता था। उसने बंगले में गुलाम रसूल और ऑफ़िस में स्टाफ़ को हुक्म दे रखा था कि अगर बाले उसे फ़ोन करे या उसके बारे में कोई खबर मिले, तो उसे तुरंत बताया जाए। फिर भी, इसी सोच से प्रेरित होकर, उसने रिसीवर उठाने में इतनी जल्दी दिखाई कि उसके कोट की एक आस्तीन एक हाथ में ही रह गई।

"मैं प्रोफेसर टैमलोट, MAD पाम, चीन, जापान, बर्मा, असम, रिटर्न बोल रहा हूँ। --दूसरी तरफ से एक गहरी, भारी आवाज़ आई, लेकिन बाले ने कितनी भी बार आवाज़ बदलकर उसे फोन किया , वह खान के लिए किसी भी रंग में नहीं छिप सका। खान के चेहरे पर संतुष्टि की लहर फैल गई, लेकिन उसने अपने लहजे में किसी भी तरह का भाव नहीं दिखाया।

"आप कहां से बोल रहे हैं, दालमोंठ ?"

" नहीं तालमोट , मंगल ग्रह से । अगले हफ़्ते चांद की दुनिया से बात करने का प्लान है।"

"तुमने मुझे बहुत परेशान कर दिया, सूअर कहीं के - तुम कहाँ गायब हो गए थे ?" इस बार, खान की आवाज़ में एक खोए हुए बेटे के लिए पिता का प्यार भरा हुआ था।

"बस इसी चक्कर में। और आपको यह सुनकर खुशी होगी कि मेरी स्कीम सफल रही।

"स्कीम? कौन सी ? कैसे?

"इन सभी पागल, या यूँ कहें कि हिप्पा-टाइज्ड लड़कियों को एक करने के लिए।

"ओ तो प्रोफेसर टैमलोट यही झक मार रहे थे। "

"सब किए पर राख डाल दिए , यानि कि बाला साहेब का यह सारा खून और पसीना कि कीमत .....इतनी कड़ी मेहनत.....?"

"नहीं, मुझे भी डेली मॉर्निंग न्यूज़ में छपे विज्ञापनों पर कुछ शक था। लेकिन, अब इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। -----खान ने उसे टोकते हुए कहा,

"मैं अपनी प्रोफ़ेसरशिप के लिए आपसे दो हज़ार एक सौ निन्यानवे रुपये सत्रह आने और तेरह पैसे की सैलरी लूंगा।"

"न्यू न्यू इंडिया लॉज के मालिक गुलज़ार हैं - और मुझे पता है कि तुम ने इसे एक चबन्नी भी नहीं दी है, लेकिन इस आदमी ने ज़रूर तुम्हारे सब नखरे सहे होंगे ।"

"यह लो, सवाल गेहूँ , जवाब चना । यहाँ जंतर मंत्र फैलाने में कितना खर्च आया, जानते हैं ? सिर्फ़ सात हज़ार में मैंने एक बड़ी मूंछों वाला अबीसीनियाई गुलाम खरीदा है।

"तो, रऊफ़ भी तुम्हारे साथ है। अच्छा, बताओ, तुमने क्या तीर मारा ?

:"पिछले ढाई दिनों में मैं ग्यारह लड़कियों से मिला हूँ जो इसी भ्रम से जूझ रही हैं, लेकिन उनके बयानों से ऐसा कोई सुराग नहीं मिलता जिससे यह शक हो कि वे किसी भूत-प्रेत के असर में आ गई हैं। बिस्तर पर लेटे हुए, उन्होंने चाँद के राजकुमार का सपना देखा और जब उनकी आँखें खुलीं तो वे अभी भी बिस्तर पर थीं।"

"लेकिन सपने का असर इतना ज़्यादा नहीं हो सकता था कि लड़कियां पागल होकर सुसाइड कर लें। और फिर अलग-अलग जगहों पर रहने वाली ज़्यादा खूबसूरत और ऊँचे समाज की लड़कियां ही एक जैसी खूबसूरती कैसे देख सकती थीं?"

"बात तो कुछ अपने पल्ले भी नहीं पड़ी । और अगर यह हिपनोटिज्म का मामला नहीं है, तो

हमारी खोपड़ी का भी ऊपरवाला ही रखवाला है। ऐसी बातें कभी न देखीं, न सुनीं।"

"इसके आगे सोचना नामुमकिन है। वैसे, इन लड़कियों की आगे की जांच से इस मामले पर कुछ रोशनी पड़ सकती है।"

"तो मैंने इसका इंतज़ाम कर लिया है। मैंने इन सभी लड़कियों को परसों का एक ही समय दिया है। इस तरह वे सभी एक ही जगह इकट्ठा होंगी।

"लेकिन मैं इन मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं लेना चाहता।" खान का रूख स जवाब बाले को मिल गया।

"क्यों?

"अगर लड़कियों को चांद के राजकुमार या सूरज के देवता से प्यार हो जाए, तो हमें क्या ?

"आपने भी अभी कहा कि अब इसकी ज़रूरत नहीं है, मतलब पहले थी। मतलब, आप पहले भी इंटरेस्टेड थे। आप पहले भी इंटरेस्टेड थे और अब नहीं हैं?' बाले ने पूछा।

"हाँ। उस समय तुम्हारी बेवकूफ़ी की वजह से मेरे बारे में जो गलतफ़हमियाँ पैदा हुई थीं, वे अब दूर हो गई हैं।

"यह कैसे?" बाले ने आश्चर्य से पूछा।

"आपको शायद यह भी नहीं पता होगा कि ग़ज़ाला के अलावा तीन और लड़कियों ने आत्महत्या कर ली है।"

"कब?

"अगले दिन

"तो क्या यह बीमारी अब इतनी खतरनाक हो गई है?

"और इन्हीं घटनाओं ने ग़ज़ाला की आत्महत्या को भी कन्फ़र्म किया। मुझे कहना पड़ा कि किसी लड़की ने फ़ोन पर मुझसे ऐसी बातें कही थीं, जिन्हें मैंने मज़ाक समझा और चाँद पर जाने के लिए

डूबकर मरने की सलाह दी थी।"

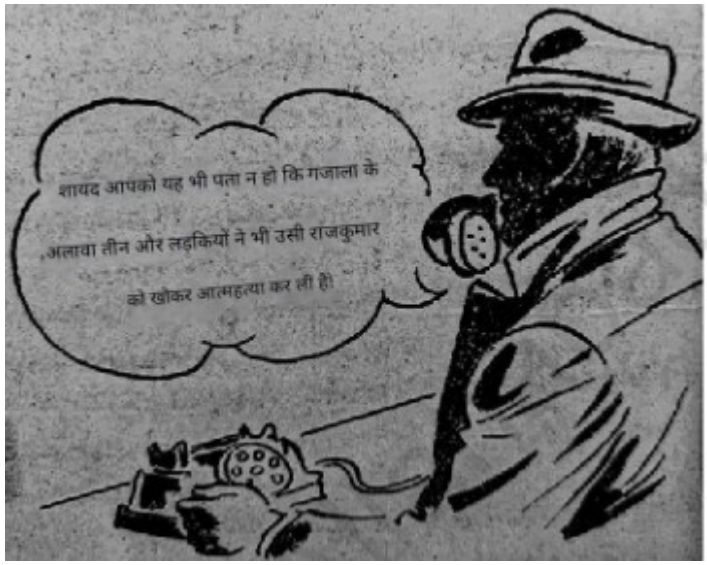

" लेकिन इस तरह तो बाकी केस में भी आप पर इल्ज़ाम लगता है?"

" नहीं , इन लड़कियों ने जो चिट्ठियां छोड़ी हैं, उनमें सुसाइड की वजहें अलग-अलग हैं। उनमें से हर एक ने अपने मनगढ़ंत लवर को एड्रेस किया है और उसके अलग होने पर रोई है और उससे ब्रेकअप किए बिना, प्यार में पक्की रहकर, डूबने कर नरक में चली गई है।

" नरक ? आप प्यार करने वालों की बेइज्ज़ती कर रहे हो।

"अगर इस पागलपन और इमोशनल बेतुकेपन को प्यार कहते हैं, तो इस पर सौ बार लानत है ।

"आप पिछले जन्म में ज़रूर शहर के सख्त जज रहे होगे।"

"ठीक है, अब बकवास बंद करो और सीधे यहाँ आओ।"

"लेकिन वो लड़कियाँ?"

"जहन्नुम में डालो इनको । मैंने पहले ही कह दिया है कि मुझे अब इन मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं है।

"लेकिन अगर वे भी आत्महत्या कर लें तो?"

"तो आपको अपने सिर पर धूल डालकर उनकी शोकगीत पढ़नी चाहिए। हमें इन निजी मामलों की चिंता नहीं करनी चाहिए।

"आज आप बिल्कुल बदले हुए लग रहे हैं। आपका पहले कभी ऐसे मूड नहीं देखा ।

"कह जो दिया , मुझे इस तरह की लड़कियों से कोई हमदर्दी नहीं है।"

"कृपया अपने फ़ैसले पर फिर से सोचें। मैं मस्का लगाने के लिए हाजिर हो रहा हूँ।

"मुझे अपने फैसले बदलने की आदत नहीं है।

"फिर मैं आत्महत्या कर लूंगा । मेरा मानना है कि ये लड़कियां बेगुनाह हैं और किसी हिपनोटाईज करने वाले गिरोह का शिकार हैं, आप थोड़ा सिरियस होईए ।

"बाले" खान थोड़ा जोर से बोले

"आप न सही , मैं बिल्कुल सीरियस हूँ। क्या आप इस बात को भी इग्नोर कर रहे हैं कि हिप्नोटिज्म के केस अभी भी हो सकते हैं? हो सकता है कि कोई इन मासूम लोगों पर अपनी शक्तियों का एक्सपेरिमेंट कर रहा हो।

"ठीक है, तुम जैसा चाहो करो , अगर मेरे दखल की ज़रूरत हुई तो मैं आ जाऊँगा।" खान ने आखिरकार बाले की ज़िद मान ली। उसकी आखिरी बात खान की झुंझुलाहट tको कुछ हद तक दबाने में कामयाब रही। खान ने रिसीवर नीचे रखा और दीवार घड़ी की तरफ देखते हुए दूसरे कमरे में चला गया।

☆☆☆

विमान हवा में लटका

शहर से दूर, प्लैटोन्मा पहाड़ों के बीच एक पक्की सड़क पर, जो घने जंगलों में फैली हुई थी, एक लंबी नीली क्राउन फोर्ड कार रात में तेज़ी से चल रही थी, शांत और अंधा कर देने वाले अंधेरे में। इसकी खिड़कियों पर मोटे नीले कांच लगे थे, और इसकी हेडलाइट्स ट्रांसपेरेंट और नीली थीं।

सड़क जितनी साफ़ और शांत दिख रही थी, उतनी ही शांत थी, और वैसे भी, आधी रात को शहर की सड़कें पूरी तरह शांत ही थीं। अगर कुछ ट्रक या बैलगाड़ियाँ गुज़रती भी थीं, तो वे रात में शायद ही इस तरफ़ आती होंगी। गहरे अंधेरे में, पेड़ों की चोटियाँ पश्चिमी आसमान में नीचे के तारों को चूमती हुई दिख रही थीं। दाईं ओर, कुछ समतल मैदानों और घाटियों के बाद, मीडियम ऊँचाई की पहाड़ियों की एक लाइन थी, और बाईं ओर, प्लैटोन्मा का मैदान, जिसमें छतरी जैसी जंगली झाड़ियाँ उगी हुई थीं, मानो सेना के सैनिक दुश्मन को मारने के लिए सही मौके का इंतज़ार कर रहे हों।

सड़क के एक मोड़ पर, कार एक ढलान पर मुड़ गई। यहाँ कोई रास्ता या सड़क नहीं थी, बस एक पठार का हिस्सा था जिसमें दूर तक खड़ी चट्टानें थीं। नीली कार ने झटका महसूस करते हुए धीरे-धीरे चलना शुरू किया। फिर, लगभग दो फर्लांग की दूरी तय करने के बाद, वह खुली और आम सतह से थोड़ी ऊँची जगह पर रुक गई। कार का दरवाज़ा खुला और एक लंबा आदमी सबसे पहले आगे की सीट से उतरा, जिसने गर्म लबादा पहना हुआ था। उसने अपने हाथों में काले दस्ताने भी पहने हुए थे। उसका चेहरा पीला और चौड़ा था, और उसके सिर पर अज़रबैजानियों जैसे बालों वाली एक गोल टोपी थी। ठंडी हवा चल रही थी।

ठंड महसूस करते हुए उसने एक सिसकी भरी और कार का पिछला दरवाज़ा खोला। दरवाज़ा खुलते ही अंदर से एक छोटा सा तख्ता निकलकर ज़मीन पर गिरा। फिर तख्ते से कुछ काला सा नीचे सरका और उसके पीछे एक आदमी था, जिसे अंधेरे में कोई नहीं पहचान पाता। उसने लंबे काले बालों वाला एक चोगा पहना हुआ था। उसके पैर टेढ़े-मेढ़े और अंदर की ओर मुड़े हुए थे। अपने छोटे कद और चौड़े कंधों के साथ, वह बहुत डरावना लग रहा था, पेंगुइन की तरह चल रहा था, जैसे कोई गोरिल्ला चल रहा हो।

"ये लो, यहाँ जमा दो इसे ," उसने बालों वाली टोपी वाले आदमी से भारी, भारी आवाज़ में धीरे से कहा। उसने लगभग पाँच फ़ीट चौड़ी और आठ से दस फ़ीट लंबी एक चिकनी चट्टान की ओर इशारा किया। यह काली मशीन में शायद पहले से चक्के लगे हुए थे जिसकी वजह से उसको ला कर फिट करने में ज़्यादा समय नहीं लगा । लंबा आदमी कार के फ्रेम से टिका, अपनी जेब से एक सिगार निकाल, और इग्निशन से उसे चालू करने लगा, जबकि गोरिल्ला जैसा आदमी मशीन के कुछ हिस्सों को घुमाने लगा।

"ठीक है सब ," वह बुदबुदाया। और फिर उसने मशीन को ढकने वाला काला खोल हटा दिया।

यह एक छोटे न्यूक्लियर रिएक्टर जैसा कुछ था, जिसमें फ्रीक्वेंसी रिंग्स का एक ग्रिड था। फिर उसने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी को देखा। घड़ी का बेज़ल और डायल अंधेरे में चमक रहे थे। उस समय, घड़ी में 12:50 बज रहे थे।

बस पाँच मिनट में छोटे पैरों वाले आदमी ने कहा, "सिर्फ पाँच मिनट और ," और अपनी जेब से एक अखरोट निकाला और चाकू से उसे तोड़ना शुरू कर दिया। वह बेंच पर पैर फैलाकर बैठ गया ।

"लेकिन अगर वह रेंज से बाहर हुया तो?" लंबे आदमी ने पास आकर पूछा।

"जिस चीज के बारे में तुम्हें पता नहीं है वहाँ अपनी टांग जबरदस्ती मत घुसेड़ो । तुम्हें इसकी पहुँच का पता नहीं है, और जो स्टैन्डर्ड है , उससे ज़्यादा ऊँचा नहीं उड़ सकते," गोरिल्ला जैसे आदमी ने जवाब दिया। और फिर माहौल में एक ऐसी शांति छा गई जो कुछ देर पहले जैसी ही शांत थी, जैसे कोई शहर शांत सो रहा हो।

और जंगल में हवा की फुसफुसाहट और झाड़ियों में जंगली खरगोशों के कूदने की हल्की सरसराहट के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था।

पाँच मिनट बीत गए, लेकिन उसने दोबारा अपनी घड़ी की तरफ देखा भी नहीं था कि आसमान में एक आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा। और पश्चिम के अंधेरे से, आसमान में एक लाल और एक हरी रोशनी उड़ती हुई दिखाई दी। इसके साथ ही, एक तेज़ उड़ते हुए पैसेंजर प्लेन की आवाज़ भी आई।

"अब तैयार हो जाओ," छोटे कद के आदमी ने अपने साथी से धीमी लेकिन गहरी आवाज़ में कहा और खुद मशीन के पीछे चला गया। मशीन के पीछे एक स्टील का मेन बोर्ड था, जिस पर कई स्विच और बटन थे, और उसके ठीक नीचे डायनेमो जैसा कुछ था। जैसे ही एक स्विच दबाया जाता , मशीन से लगातार सीटी जैसी आवाज़ निकलती और खाली हवा के सन्नाटे में फैल जाती। और अचानक, मशीन के ऊपर निकले हुए दो सिलेंडरों के ऊपरी हिस्सों के बीच, एक तेज़ आवाज़ के साथ एक आसमानी बिजली की लहर पैदा हुई जो बाहरी झटके ले रही थी और हर झटके के साथ, मशीन की गूंज और तेज़ होती सुनाई दे रही थी। उड़ती हुई प्लेन की रोशनी अब और करीब आ गई थी और आसमान की धुंधली परछाइयों में, एक मीडियम साइज़ के पैसेंजर प्लेन की काली आउटलाइन हवा में तैरती हुई दिखाई देने लगी। छोटे कद के आदमी ने दांत पीसकर एक बटन ज़ोर से दबाया। हवा में एक चौंकाने वाली चटकने की आवाज़ फैली और उसके साथ, मशीन की रंगीन सुइयों में से एक से एक इलेक्ट्रिक गोला बना, जो सिगरेट के धुएं के गुबार जैसा था, और यह तेज़ी से ऊपर उठा और फैल गया, और रंगीन सुई की नोक पर नाचने लगा। उसी समय, ऐसे कई गोले बने, फैले और रंगीन सुइयों के ऊपर घूमने लगे। जब वे एक-दूसरे से टकराते, तो दोनों की टक्कर से बनी तीसरी तेज़ रोशनी आँखों को चौंधिया देती।

लंबे आदमी और उसके साथी ने काला चश्मा पहना हुआ था। जैसे ही प्लेन ऊपर से उड़ा, छोटे आदमी ने तीसरा बटन दबाया, जिस पर इंग्लिश में "ब्लो" लिखा था। जैसे ही उसने उसे दबाया, चमकती हुई आसमानी रोशनी के गोले आसमान में उठने लगे। बंदूक से निकली गोलियों की तरह, ये गोले आसमान तक पहुँचे और प्लेन के चारों ओर फैल गए। एक के बाद एक, वे मोटे होते गए। प्लेन की स्पीड अचानक धीमी हो गई और वह हवा में स्थिर हो गया।

तभी मशीन में नीचे से टिक-टिक की आवाज़ आई। फिर मशीन के किनारे लगी एक छोटी गोल स्क्रीन से एक पतली सीटी की आवाज़ आई। और वे दोनों चौंक कर सीधे खड़े हो गए।

" तुम्हारा काम खत्म हो गया, सैलून। वापस आ जाओ, ---आवाज़ बहुत नरम मगर हुक्म देने वाली थी ।

"ओ के , सर " छोटे आदमी ने जवाब दिया, और टिक-टिक की आवाज़ फिर से बंद हो गई। छोटे आदमी ने कोई स्विच दबाया जिससे नीले गोले उड़ने बंद हो गए। लेकिन प्लेन के चारों ओर बने गोले वापस नहीं आए। फिर उसने सारे स्विच बंद कर दिए और मशीन शांत हो गई।

अब दूसरा आदमी आगे आया। वह मशीन को उसी तरह वापस ले गया और कार के पास वापस आ गया। फिर उसे अंदर रखा और फिर ब्लू क्राउन मोटर उसी तरफ़ वापस जाने लगी जिस तरफ़ से आई थी।

****

सुबह-सुबह शहर से हज़ारों लोग बसों, मोटरबाइकों और टैक्सियों में सड़क से एरोड्रम नंबर 1 की तरफ़ जा रहे थे। सुबह के अख़बारों में आज एक अजीब ख़बर छपी थी।

ऐसी अजीब बात जो अब तक किसी ने न सुनी थी और न देखी थी। और ऐसी हैरान करने वाली और सनसनीखेज खबर को अपनी आँखों से देखने के लिए लोगों की भीड़ अपने घरों से निकल पड़ी थी। सरकारी अमला पहले ही उस जगह पहुँच चुका था। यह हैरान करने वाली घटना एरोड्रम नंबर 1 (कासरवाली) से पाँच मील पीछे अमरुल के पठार जैसे सुनसान इलाके में हुई। सबअर्बन हाईवे नंबर 1 पर मोटर कारों की लाइनें चल रही थीं और कासरुल के पास, मिलिट्री की गाड़ियाँ और ऊँचे पद वाले पुलिस अधिकारियों की गाड़ियाँ सड़क पर खड़ी दिख रही थीं।

हालांकि पैन अमेरिकन एयरलाइंस का जेटलाइनर, जो ज़मीन से करीब 2,000 फीट की ऊंचाई पर आसमान में मंडरा रहा था, लोगों को दूर से दिखाई दे रहा था, फिर भी पास से देखने पर यह काफी शानदार लग रहा था।

यह प्लेन हवा में कैसे लटका हुआ है?

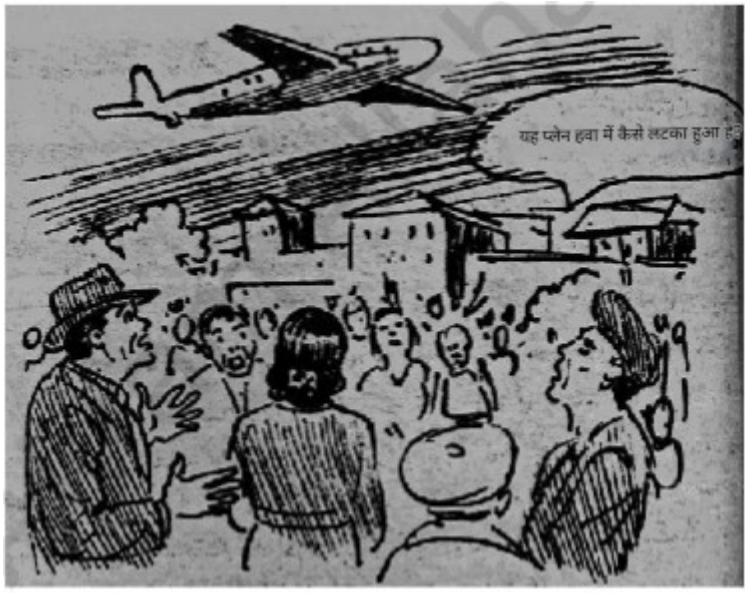

लोग इस अद्भुत दृश्य देखने के लिए उत्सुक थे।

इस अजीब घटना ने न सिर्फ़ आम लोगों को हैरान कर दिया, बल्कि उन साइंटिस्ट्स को भी हैरान कर दिया जो इस नज़ारे को अपनी आँखों से देखने आए थे। वे हैरान थे कि इतना भारी एयरक्राफ़्ट कैसे हवा में स्थिर हो सकता है। - ये कैसे लटक गया ? सब एक दूसरे को पूछ रहे थे

प्लेन इस तरह हवा में कैसे लटका रह सकता है ? अगर किसी अविश्वसनीय साइंटिफिक तरीके से पृथ्वी की ग्रैविटेशनल फ़ोर्स को किसी हिस्से में खत्म भी कर दिया जाता, तो सबसे पहले, स्पेस में फंसी चीज़ पर आस-पास की हवाओं का असर होना ही था। दूसरा, पृथ्वी के उस हिस्से में रहने वाले जीवों पर इसका कोई असर नहीं होता। पृथ्वी के किसी हिस्से की ग्रैविटेशनल फ़ोर्स के खत्म होने का मतलब था कि उस पर मौजूद जीव भी ऊपर उठकर स्पेस में लटक जाते, लेकिन न तो ऐसे कारण समझ में आ सकते थे जिनसे उड़ते हुए प्लेन का इस तरह हवा में अटक जाना कोई साइंटिफिक चमत्कार हो, या अगर होता भी, तो कम से कम यह मौजूदा साइंटिस्ट्स की ताकत से बाहर होता।

दोपहर 10 बजे तक भीड़ अमरील के सुनसान पठारी मैदानों में जमा रही।

लोग आपस में तरह-तरह की बातें कर रहे थे और बार-बार हवा में उड़ते प्लेन को हैरानी और उत्साह से भरी आँखों से देख रहे थे।

घटनास्थल की फ़िल्में और तस्वीरें पहले ही ले ली गई थीं। मिलिट्री एकेडमी ऑफ़ साइंस के सीनियर अधिकारियों ने भी इसकी तस्वीरें ले ली थीं और फंसे हुए प्लेन के अंदर का नज़ारा बेहतर ढंग से देखने के लिए इंडियन एयर फ़ोर्स के ट्रेनिंग डायोसीज़ की मदद का इंतज़ार कर रहे थे। प्लेन से रेडियो कॉन्टैक्ट करने की कई कोशिशें की गईं, लेकिन हर बार प्लेन तक संपर्क नहीं हो पाया। फंसे हुए प्लेन से कोई सिग्नल, मदद के लिए कोई कॉल या कोई सिग्नल भी नहीं मिला। एयरफ़ील्ड के ग्राउंड स्टाफ़ और सिग्नलमैन के बयान के मुताबिक, कल रात ठीक 12:40 बजे निज़ामाबाद एयरपोर्ट से मिले रेडियो मैसेज में बताया गया कि पैन अमेरिकन एयरवेज़ का यह प्लेन उस समय इसी एयरफ़ील्ड से गुज़र रहा था। असामान्य रेडियो मैच एक्सचेंज के मुताबिक, प्लेन के क्रू और यात्री सभी सुरक्षित थे। प्लेन को निज़ामाबाद से गुज़रने के बाद करोली एयरपोर्ट पर फ्यूल भरने के लिए रुकना था। ग्राउंड स्टाफ़ को वायरलेस से पहले ही जानकारी मिल गई थी। ये घटना 12 बजकर 40 मिनट से 1 बजे के बीच हुई।

ठीक 1 बजे, करोली के स्टाफ को प्लेन के समय पर न पहुंचने की चिंता हुई, उन्होंने उसे ढूंढा और उस समय प्लेन अमरुल के ऊपर हवा में मंडराता हुआ दिखा।

ठीक 10 बजे एयर फ़ोर्स एकेडमी के कैडेट्स डिकोटा लेकर उड़ते हुए पहुंचे।

एकेडमी के डिप्टी ऑफिसर कमांडिंग ने उन्हें सूरज की रोशनी से रिफ्लेक्ट होने वाले सिग्नल का इस्तेमाल करके प्लेन को चेक करने का निर्देश दिया, लेकिन पहली लैंडिंग के बाद वायरलेस पर पहले ज़ीरो-ज़ीरो कोड से भेजी गई जानकारी इन मिलिट्री साइंटिस्ट के लिए पूरी तरह से हैरान करने वाली थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि प्लेन के आस-पास के एटमॉस्फियर में डिटेक्टेबल न्यूक्लियर वेव्स घूम रही थीं और उनसे टकराने का मतलब था खुद को खत्म करना।

दूसरे डकोटा ने तीन-चार एयर डाइव के बाद जो दूसरी रिपोर्ट दी, वह भी हैरान करने वाली थी। उसने कहा कि ट्रांसपेरेंट खिड़कियों से अंदर देखने पर उसने पाया कि पैसेंजर अपनी सीटों पर पत्थर की मूर्तियों की तरह बिना हिले-डुले बैठे थे। प्लेन के इंजन बंद थे और सब कुछ शांत और बिना हिले-डुले लग रहा था।

इन खबरों पर सबके दिमाग में जैसे कोई बात आ गई हो। पुलिस वाले तो बस फॉर्मल तौर पर आए थे। इन बातों का इन से कोई लेना-देना नहीं था, न ही वे इन्हें समझ पा रहे थे। वे अपनी डायरी में ऊपर-ऊपर से घटना की रिपोर्ट लेकर चले गए। जो लोग यह अजीब घटना देखने आए थे, वे भी लौटने लगे थे। अब वहां सिर्फ अमेरिकन कॉन्सुल, मिलिट्री एयर एकेडमी के ऑफिसर और करोली एयर क्रू के कुछ लोग ही बचे थे। उनमें से एक डिकोटा ने वायर विंच से लटके हुए प्लेन को खींचकर लाने का प्लान बनाया , लेकिन इस का नतीजा और भी उल्टा हुआ। जैसे ही वो विंच की हुक उस प्लेन के पास न्यूक्लियर तरंगों की रेंज में पहुंची, डिकोट को खुद इतना ज़ोरदार झटका लगा कि अगर चालाक पायलट ने तुरंत उस विंच को अलग ना कर दिया होता तो डिकोटा का हाल भी वैसा ही होता । विंच भी हवा में लटक गई थी ।

69

" अब क्या होगा? --इसका पायलट, हवा में लटकी इस विंच को हैरानी भरी नज़रों से देखते हुए, नीचे उतर आया।

☆☆☆

रहस्यमय चमक

न्यू इंडिया लॉज के पीछे प्रोफेसर टैमलोट के आधे अंधेरे हॉल में, ग्यारह लड़कियां अलग-अलग कुर्सियों पर बैठी थीं और प्रोफेसर के आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थीं। उनमें से ज़्यादातर चुप थीं और जो पहले ही किसी विज़िट से एक-दूसरे से बात कर चुकी थीं, वे बातचीत में बहुत सावधान थीं। शायद उनमें से हर कोई समझ गई थी कि दूसरी किसी और मकसद से प्रोफेसर के पास आई है और कोई भी किसी को अपना असली मकसद बताने को तैयार नहीं थी। उनमें से कुछ ने एक-दूसरे से यहां आने का कारण भी पूछा, लेकिन असली मकसद टाल दिया गया। किसी ने कुछ बताया, किसी ने कुछ और। उन्हें इस जगह पर इकट्ठा हुए आधा घंटा हो गया था। वे सभी पढ़ी-लिखी और मॉडर्न लड़कियां लग रही थीं, जो खाते-पीते परिवारों से थीं। कुछ ने महंगी साड़ियां पहनी थीं और कुछ ने सलवार, या गरारा और फ्रॉक पहनी हुई थीं, जिनके कंधों पर जॉर्जेट या शिफॉन के दुपट्टे थे। वे बातचीत में काफी पोलाइट और तमीज़दार लग रही थीं, लेकिन उनमें से एक भी ऐसी नहीं थी जो अपनी सुंदरता की तारीफ़ करने में एक-दूसरे से कम हो। इसीलिए जब एक लड़की कुछ जवाब देकर मुँह फेर लेती, तो दूसरी का चेहरा ऐसा हो जाता जैसे कह रही हो, "हूँह , मैं तो तुम्हें अपने पैर का जूता भी नहीं समझती।"

अब प्रोफेसर टैमलोट इतने लंबे समय में इन के सामने सिर्फ़ एक बार आए थे और उन्हें इंतज़ार करने का निर्देश देने के बाद, वह अंदर अपने कमरे में चले गए थे। जब घबराहट कंट्रोल से बाहर होने लगी, तो लड़कियों में से एक खड़ी हो गई।

"प्रोफेसर?" वह चिल्लाई , जिस पर प्रोफेसर के काले, गोल-मटोल कर्मचारी ने तुरंत जवाब दिया।

"बस थोड़ा और इंतज़ार करें, मिस। वह आपके अपने लोगों के काम में बिज़ी हैं," उसने प्यार से जवाब दिया। लेकिन उसी समय, अंदर से आई एक आवाज़ ने उसे चौंका दिया।

" काली मूंछ , "आवाज़ तो प्रोफेसर की थी।

" कमबख्त , मुझे सांस भी नहीं लेने देता।" काला आदमी बड़बड़ाया और अंदर चला गया।

"तुम अपना गला क्यों फाड़ रहे हो? मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया था कि मुझे ये बेतुके नाम पसंद नहीं हैं। अगर तुमने मुझे दोबारा इस नाम से पुकारा, तो मैं तुम्हारी सभी पोलपट्टी इन लैंडिईन के सामने खोल दूंगा और तुम्हें इतनी हाई हील्स के सेंडल पड़ेंगे कि सारी जासूसी हवा हो जाएगी ।"

"अरे, आर नमक हराम , भूल गए कि मैंने तुम्हें एक अरब व्यापारी से सात हजार दिरहम में खरीदा था।"

" तो तुम यूं नहीं मानोगे?

" ठीक है बाबा, चलो मान लेते हैं, पहले जल्दी से बाहर जाकर फ़ोन करो। खान साहब अभी तक क्यों नहीं आए? तब तक मैं उनमें से एक आध को अपनी बातों में उलझाता हूँ ।

बिना जवाब दिए, काली मूंछ वाला बाहर चला गया । उसके जाते ही प्रोफेसर ने टेबल पर स्प्रिंग वाली बेल बजाई, जिसे सुनते ही एक आदमी अंदर आया।

"तेजुमिल, नंबर 1 मेम साहब को अंदर भेजो," प्रोफेसर ने उसे आदेश दिया।

"सर, मेरा नाम तेज मल है।" आने वाले ने विरोध किया।

" तुमने ताज महल क्यों न रख लिया ? चलो जो दफा हो जाओ , यहाँ से ।"

और प्रोफेसर का मूड खराब देखकर वह बिना कुछ कहे दूसरे दरवाज़े से हॉल जैसे कमरे में चला गया। वह खुद वापस नहीं लौटा, लेकिन जैसा कहा गया था, उसने वहाँ पहली सीट पर बैठी लड़की को अंदर भेज दिया।

"आप मिस मूँह फट लाल है?" प्रोफेसर ने उसे कुर्सी देते हुए पूछा।

" मुफ़्त लाल “लड़की बैठ गई

" अपना मुँह खोलो।"

लड़की ने बिना किसी हिचकिचाहट के बात मान ली।

" अं करो आँ ,------- उसने कहा और ऐसी आवाज निकाली जैसे उसके गले में कुछ अटक गया हो।

लड़की ने इस आदेश का पालन किया।

" म्याऊ करो म्याऊ"

" क्या मज़ाक है. --लड़की बिगड़ गई ।

" मैं आपकी नाक की आवाज़ टेस्ट कर रहा हूँ।"

"क्या आप ज्योतिषी हैं या डॉक्टर?"

" मिस, मुंहफट लाल ..!!

73

" मुफ़्त लाल,प्लीज "

"आई एम सारी । मेरी भाषा ऐसी है । हाँ, चाँद की यात्रा पर जाने से पहले ऐसी मेडिकल जाँच भी ज़रूरी है।"

" चाँद की सैर? --लड़की चौंक गई, --तो क्या तुम सच में...?

"सवेंट पैर सेंट सचमुच , अब गहरी गहरी सांस लो।"

लड़की ने फिर से निर्देशों का पालन किया।

"ऐसा नहीं, मुंह फैला कर, कुत्ते का माफिक ।"

"क्या?" लड़की फिर से परेशान हो गयी।

प्रोफेसर ने धीरे से कहा, "ब्रेथ टेस्ट के लिए लँग टेस्ट की ज़रूरत होती है।"

लेकिन अब उसे लग रहा था कि वह ऐसी बेकार की बातों में ज़्यादा समय नहीं लगा

सकता और अगर खान नहीं आया तो क्या होगा। लेकिन ठीक ही हुया । काले के मेकअप में रऊफ उसी समय अंदर पहुँच गया।

" साहब , पुलिस ने छापा मारा है। "

74

" पुलिस?" प्रोफेसर उछल पड़े। "मैडम, चांद का चमकना फूल स्टॉप – पुलिस आ गई है।" यह कहते हुए वह अपनी सीट से उठे और अंदर भागे। रऊफ के डायलॉग ने उन्हें पूरी स्कीम समझा दी थी, लेकिन उसी समय खान सादे कपड़ों में अंदर आ गया। उसके पीछे इंस्पेक्टर डिसूजा और इब्राहिम यूनिफॉर्म में थे। पुलिस को देखकर लड़कियां डर के मारे खड़ी हो गईं।

"आप लोग कौन हैं? आप यहाँ क्यों इकट्ठा हुए हैं?"

"हम प्रोफेसर से अपनी किस्मत के बारे में पूछने आए थे।"

" फराड है साला ।--- खान ने कहा - आप लोग भी अपना बयान देने पोलिस स्ताक्षण चलिए , -- खान ने अपनी योजना के अनुसार लड़कियों को घेरा । उनको उम्मीद थी कि पुलिस जांच कक्ष के माध्यम से इन लड़कियों के हालात के बारे में और विस्तार से पता चल सकेगा।

उस ने कहा, "हम धोखेबाज़ नहीं हैं, ऑफिसर। हम आपको आपकी सात पुश्तों का हाल बता सकते हैं।"

और प्रोफेसर बाहर आये।

"और मैं तुम्हारे चौदह पुश्तों को रोशन कर दूंगा।"

लेकिन खान ने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि दरवाज़े की तरफ़ से आवाज़ आई और जैसे ही उसने मुड़कर देखा, उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। अचानक, पूरे कमरे में एक तेज़ रोशनी फैल गई, जैसे बादलों में बिजली चमक रही हो। यह इतनी तेज़ थी कि वह ज़्यादा देर तक अपनी आँखें खुली नहीं रख सका। उसी समय, उसने कुछ लड़कियों की चीखें सुनीं, लेकिन जैसे ही वह पास गया, उसे लगा जैसे आवाज़ें बहुत दूर से आ रही हैं। फिर उसकी नज़रों पर गहरा अंधेरा छा गया।

75

जब उनकी आँखों से पट्टियाँ हटाई गईं, तो शाम का अंधेरा छा गया था। वे सब हॉस्पिटल के एक ही वार्ड में थे, सिवाय सुपरिटेंडेंट खान के, जिन्हें अलग रखा गया था। खान ने अपनी आँखें खोलीं, एक बार इधर-उधर देखा, और फिर बंद कर लीं। आँखों के स्पेशलिस्ट, डॉक्टर, डॉ. पटेल, उनके सिरहाने खड़े थे।

"क्या आप देख सकते हैं, खान साहब?" उसने आगे झुकते हुए पूछा।

"मेरी आंखों में थोड़ा दर्द महसूस हो रहा है," खान ने आंखें बंद करके कहा।

" अच्छा हुआ आप लोग उसे इतनी जल्दी यहाँ ले आए, वरना उसे अपनी आँखों की रोशनी पूरी तरह जाने का डर था।------ डॉक्टर ने उसे बताया। उसी समय, DCP देशपांडे भी अंदर आ गए। खान ने एक बार फिर अपनी आँखें खोलने की कोशिश की, तभी उसने DCP की आवाज़ सुनी। वह डॉक्टर से उसका हाल-चाल पूछ रहे थे।

"अभी कोई खतरा नहीं है," डॉक्टर ने जवाब दिया। "यह बेहतर हो जाएंगे , फिर सब ठीक हो जाएगा। कुछ घंटे आँखों में दवाई लगाओ।"

खान ने उसकी बातें सुनीं और वैसे भी वह विभाग में अपनी कड़ी मेहनत के लिए जाना जाता था। उसने अपनी आँखें खोलीं और दर्द को नज़रअंदाज़ करते हुए DCP को देखकर मुस्कुराया। उसने देखा। DCP आया और उसके बिस्तर के पास खड़ा हो गया।

" बहुत बढ़िया रहे , खान साहब।-- डीसीपी ने कहा।

"लेकिन डॉक्टर, बात क्या थी?" खान ने डॉक्टर से पूछा।

" मल्टी पावर रेडियम रेंज का असर आप और आपके साथियों पर हुआ था।

76

"सिर्फ़ दो घंटे और अगर इसकी जांच नहीं की गई होती, तो आप हमेशा के लिए अंधे हो गए होते।"

" लेकिन यह कैसे हुआ? ---खान बड़बड़ाया, और फिर दोपहर की घटनाएँ उसके दिमाग में किसी देखी हुई फ़िल्म के सीन की तरह घूमने लगीं।

" न्यू इंडिया लॉज के मालिक ने पुलिस हेडक्वार्टर को फोन किया था और जब हम वहां पहुंचे तो आप, सार्जेंट बाले और आपके आदमी पीछे वाले हॉल में फर्श पर बेहोश पड़े थे।

"सिर्फ हम लोग ?" खान ने पूछा।

"क्यों? क्या कोई और भी था?" डीसीपी ने हैरानी से पूछा।

" ग्यारह लड़कियाँ। -- खान ने जवाब दिया।

" लड़कियाँ? वहाँ? --DCP ने पूछा।

खान ने कहा, "हां, उसी अजीब पागलपन का शिकार, जिसकी वजह से चार लड़कियां पहले ही आत्महत्या कर चुकी हैं।"

" हे भगवान, यह क्या अलिफ़ लीला है? हमें तो वहां कोई और नहीं मिला।" वो हैरान हो गया

" मुझे भी कुछ समझ नहीं आ रहा, लेकिन अब इसे सिर्फ़ साज़िश नहीं माना जा सकता। वो चमकती हुई रोशनी ज़रूर इस चेन की एक कड़ी रही होगी। वो लड़कियाँ गायब हो गई हैं। ----खान ने परेशान होकर कहा। साथ ही, उसने पूरी घटना DCP को बताई।

" क्या आप इस पर विश्वास कर सकते हैं, डॉक्टर? ---डीसीपी ने खान को अजीब तरह से देखते हुए डॉक्टर से पूछा।

" भगवान जाने, --डॉक्टर ने दोनों हाथ उठाए , -------लेकिन अगर वह रोशनी ऐसी थी कि उस पर नज़र टिक ही न सके, तो मुझे लगता है कि भारत में मल्टी-पावर रेडियम किरणों का कोई रिफ्लेक्टर होना नामुमकिन है। मैंने सिर्फ़ एक अमेरिकन साइंटिफिक जर्नल में इसके संभावित आविष्कार का ज़िक्र पढ़ा था किसी डॉक्टर

जेलजार का , बहुत अच्छे से याद है। असल में, इसकी इंटेंसिटी और पावर बिजली जितनी ही होती है, और मैंने इन लोगों का इलाज बिजली के असर को खत्म करने के लिए उसी फ़ॉर्मूले से किया है।"

"क्या आपके पास वह मैगज़ीन है?"

"मैगज़ीन नहीं, लेकिन आर्टिकल की कटिंग मेरी फ़ाइल में सेव होगी।"

खान ने कहा, "मुझे बस कुछ घंटों के लिए यह दीजिए।"

"बिल्कुल ," डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

" ऐसे लोग कौन हो सकते हैं जो वास्तव में इस तरह के शानदार आविष्कार को बना सकते हैं? -- डीसीपी बुदबुदाते हुए सोचने लगे।

" सच जो भी हो, यह आम सोच वाले लोगों का काम नहीं हो सकता। और कम से कम भारत में तो अभी तक कोई साइंटिफिक दिमाग नहीं है जो इस इन्वेंशन की कल्पना भी कर सके। ---डॉक्टर ने अपनी राय दी।

" और फिर इन लड़कियों का क्या? --डीसीपी ने खान से पूछा।

" इस तरह, चांद के राजकुमार के सपने की कहानी भी सच होनी चाहिए।------ खान ने यह कहकर DCP की उलझन और बढ़ा दी।

" मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।यह अजूबों की दुनिया है। साइंटिस्ट और प्रोफेसर ही कुछ समझ गए तो समझ गए। --DCP देशपांडे झुँझला से गए।

"ये सचमुच अजीब घटनाएँ हैं।" डॉक्टर भी सोच में पड़ गए।

" अगर दुनिया में ऐसी घटनाएं होने लगीं तो पुलिस हैरान रह जाएगी।-- DCP ने अपनी बात दोहराने की आदत के मुताबिक गंभीरता से कहा, "देखो, उस प्लेन वाली घटना जो हवा में लटक गया ।"

"हाँ, वह घटना भी समझ से परे है।" डॉक्टर भी सहमत हो गया।

" लेकिन लड़कियों का गायब होना?' खान का लहजा अभी भी सोचने वाला था। उसे जहाज़ के ज़िक्र में कोई दिलचस्पी नहीं थी। ----ओर वो सपना ? वह बुदबुदाया।

"अभी तो आँखें खराब हुई हैं, अब दिमाग भी खराब हो जाएगा। हमने ऐसी सनकी लड़कीयोण का ठेका नहीं ले रखा है " -------डीसीपी अपने असिस्टेंट को समझाते हुए लग रहे थे।

" अगर यह क्रिमिनल्स है , तो पुलिस का मामला है , ये भला क्या बात हुई , एक नेचुरल लाइट, आसमानी बिजली जैसे, ओह ---. यह कहकर टहलता हुया वह बाहर चला गया.

खान ने डॉ. पटेल की ओर मुस्कुराते हुए कहा, "डॉक्टर, आपके पास बहुत साइंटिफिक नॉलेज है।"

डॉक्टर ने कहा, "शायद आपको पता न हो कि साइंस मेरा पसंदीदा सब्जेक्ट है। इंडिया में इसे ज़्यादा अहमियत नहीं दी जाती, इसलिए मैं इसे पर्सनल हॉबी मानता हूँ।"

" तब आपसे मुझको बहुत सारी उपयोगी सलाह मिल सकेगी।"

"आप मुझसे जब चाहें कुछ भी पूछ सकते हैं।"

"काश कुछ ....," लेकिन खान हैरानी से बोलते-बोलते रुक गया, जैसे उसे कुछ याद आ गया हो।

"मेरे दूसरे साथी कहाँ हैं?" उसने डॉक्टर से पूछा।

"उसके बगल वाले वार्ड में क्यों?"

" सार्जेंट बाले ।-- यह कहते हुए, खान अपने बिस्तर से कूद गया और जल्दी से अपने जूते पहने, जो उसने एक तरफ रखे थे, लंगड़ाते हुए वार्ड की तरफ चल दिया। डॉक्टर हैरानी से उसकी हरकत देख रहा था।

☆☆☆

79

लव केन्सल

" केटी डार्लिंग, --- बाले ने बैले डांसर निरोमा फर्नांडीज के बंगले के बरामदे में कदम रखते हुए गुनगुनाया। हाल ही में उसकी दोस्ती मिलिट्री कॉन्ट्रैक्टर के जवान, हैंडसम लड़की से हुई थी। केटी का पूरा नाम मिस डोरिया केटी फर्नांडीज था, लेकिन उसे केटी

कहलाना पसंद था। वह पिछले महीने उस दिन बॉलरूम में एक डांस में बैले डांसर से मिली थी , और तब से वे बहुत करीब आ गए थे। शायद ज़िंदगी में पहली बार, उसे सच में लगा कि यह लड़की उसके दिल और दिमाग पर कब्ज़ा कर सकती है। वह बहुत खूबसूरत थी, लेकिन उसका कैरेक्टर भी मज़बूत था, और पुलिस सार्जेंट, जो हर दिन नई लड़कियों के साथ फ़्लर्ट करने के लिए बदनाम था, को उसे काबू करने में दो हफ़्ते लग गए थे। शायद वह बाले पर भरोसा नहीं करती, लेकिन जब उसने खुद उसे साफ़-साफ़ बताया कि वह पहले भी दर्जनों लड़कियों से अलग-अलग लेवल पर प्यार कर चुका है, लेकिन वह इसके बारे में पूरी तरह सीरियस है, तो उसने भी उस पर भरोसा किया और मान लिया कि वह उसे पसंद करती है। फर्नांडीज खुद वेस्टर्न समाज की फैन थी और रंग, नस्ल और धर्म के भेदभाव से आज़ाद थी ।उसके माँ बाप ने न तो उस जवान लड़की की पसंद पर कोई एतराज़ किया और न ही खुद को इस एतराज़ के लायक समझा। बल्कि, यह जानते हुए कि केटी को यह पुलिस सार्जेंट पसंद है, उन्होंने बाले के साथ बहुत नरमी और प्यार से पेश आना शुरू कर दिया। बस एक ही कमी थी कि अगर उन्होंने इतनी खूबसूरत और संस्कारी लड़की से शादी करने का फैसला भी कर लिया, तो उन्हें एक भारी-भरकम ससुर के बारे में भी सोचना पड़ता, जिसके साथ टेबल पर बैठने पर वह बाले के आधे ही लगते।

उसने आज केटी के साथ सिनेमा जाने का वादा किया था। वे दोनों एक हफ़्ते पहले मिले थे।

80

उसने वार्नर ब्रदर्स की नई फ़िल्म हाई एंड माई देखने का प्लान बनाया था। कई दिनों से उसे न तो खाली समय मिला था और न ही कहीं मौज-मस्ती करने का मौका। और आज उसने तय किया था कि कम से कम आज की शाम वह केटी के साथ पेरिस की शाम की तरह बिताएगा और ऐसे में अगर खान से लेकर राज्य के गृह मंत्री तक सब उसे बुला भी लें, तो भी वह उससे नहीं मिलेगा।

क्योंकि उसे पक्का यकीन था कि केटी बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रही होगी, केटी अपने कमरे में थी, ठीक वैसे ही जैसे वह थी, नैनी ने बाहर बच्चे से कहा था कि बाबा कल से बहुत बेचैन हैं। और अब, अपनी मासूमियत का बखान करते हुए, जब वह उसके कमरे

में दाखिल हुआ, तो उसकी पहली उम्मीदें टूट गईं। क्योंकि केटी ने बहुत बेपरवाही से देखते हुए, यह कहते हुए मुँह फेर लिया, "यह तुम हो।"

"तो क्या तुम मेरे फरिश्ते का इंतज़ार कर रही थी ?" बाले ने शिकायत भरी नज़रों से उसकी तरफ देखा और पूछा।

" इंतज़ार ? हाए , क्या मज़े हैं इंतज़ार तेरे में ----केटी ने कहीं से सुनी सुनाई कविता की हिंदुस्तानी में मिट्टी पलीद की ।

" वाह, वाह, क्या लंगड़ी शायरी है , कोई जवाब नहीं।- बाले ने ताली बजाई

"यह शायरी हमारी नहीं है " केटी रूठने लगी। " तुम्हारी इंडियन पोइट का है किसी का ।

" शायरी किसी का भी हो, ये क्या कम है कि तुम हमारा इंतज़ार कर रही थीं । "

" तुम्हारा ? ओह, बेवकूफ़।-- वो मुंह दूसरी तरफ कर के बोली।

लेकिन बाले के लिए, उसका ये "बेवकूफ़" कहना और खुलकर बात करना बिल्कुल अनएक्सपेक्टेड था।

"अपने शब्द वापस लो, केटी डार्लिंग।" बाले ने ठंडे स्वर में विरोध किया।

"तुम एक बेवकूफ, तुम हज़ार बेवकूफ ।" वह नाराज़ हो गई।

81

"अरे, तुम्हें क्या हुआ?" बाले ने हैरानी से पूछा।

"मिर्ज़ा गैल्ब का गाना हुया है । ओह, दिल ए नादां तुझे हुआ क्या है ?" उसने दिल पर हाथ रखते हुए कहा और उसे इस तरह सीरियसली बात करते देख, बाले के सिर में

झुनझुनी होने लगी। क्या वह उसका मज़ाक उड़ा रही है, नहीं तो यह बकवास और फिर सीरियसनेस।

"आज मूवी का प्रोग्राम है और तुमने अभी तक अपने कपड़े नहीं बदले?"

" हमें छह दिल नहीं होना । हम किधर भी नहीं जाऊंगा।-------एक तरह से कहा जाए तो उसने पीछा छुड़ाने वाले लहजे में कहा ।

क्या बात है? मुझे कुछ बताओ,

"हमेरा टूमेरा लव केंसल।" उसने बिना उसकी तरफ देखे कहा।

"कैंसल! क्या कैंसल हुआ? क्या खेल तमाशा है?"

"हमने अपना प्रामिस वापस ले लिया।"

"आज तुम कैसी बात कर रही हो, केटी? दिमाग तो ठीक है ?"

" आई डोंट नो , आई डोंट नो- मुझे नहीं पता... ऊऊऊ ---केटी ने भोंडे से अंदाज में अंग्रेजी का एक मूर्खतापूर्ण गीत गाया ------- हू इज़ ही ... बट.. ही लूज मी ... ई... ई।

"क्या कोई पेंच ढीला है?" बाले ने उसके चेहरे को घूरा और पूछा

"बाले डियर," केटी का लहजा अचानक बदल गया। और बाले को लगा कि अब तक

शायद वो सिर्फ मजाक कर रही थी ।

" बोलो " --उसने कहा.

"तुम हमको कितना मोहब्बत करता ? "

" इंडिया से इंग्लैंड तक"

"नो जोक ," उसने रोते हुए कहा।

" अच्छा , बहुत बहुत करता , बस ? बाले ने भी उसी के लहजे में जवाब दिया।

" हमरे लिए तुम क्या करने सकता ?

" जो भी कहो

"तुम बहुत वंडरफूल है डियर ।"

" मतलब तो बताओ अपना ।"

"हमें एक राजकुमार से लव हो गया है।"

" भेजा तो नहीं फिर गया तुम्हारा ? "

"हम सच्ची बोलता तुम को ।"

"अच्छा, कौन है वो उल्लू का पट्ठा ?"

" हम किधर ढूंढेगा उसको ?

बाले ने एक लंबी, ठंडी सांस ली और कहा, "नरक में ।" वो झुँझला गया ।

"व्हात दो यो दो मेन? ?" वह बिगड़ कर खड़ी हो गई।

"मैं इस कमीने की खाल खींचकर उसमें भूसा भर दूँगा ।"

तमेरा जैसा तो उसका किता सरवेंट है , तुमने क्या समझता अपने को ? " उसे भी गुस्सा आ गया।

" तो जाओ, मरो उसी के साथ" ---बाले भी मुंह बनाकर खड़ा हो गया।

"ओ गोड , जाने को सकता तो तुम को काहे कु बोलता , " उसने छत की तरफ देखते हुए कहा "हमको उसके पास पहुंचा दो , हम मर जाएगा उसके विदाउट "

और बाले की आँखें हैरानी से चौड़ी हो गईं यह देखकर कि प्रार्थना करते समय सच में उसकी आँखों में आँसू आ गए थे और उसकी आवाज़ इमोशन से काँप रही थी। वह उस तरह की लड़की नहीं थी, लेकिन अचानक एक ख्याल ने उसे झकझोर दिया। उस ख्याल से जैसे नींद से चौंक गया हो।

"अरे, क्या वह मून प्रिंस नहीं है?"

" वंडरफल। तुम क्या जानता उसको ?" वह दौड़ी और बाले को गले लगा लिया। "हम तेरा हाथ जोड़ता , हमें उसका पता दो, हम क्या करके भी उधर पहुँच जाएगा "

" हाँ, हाँ, हम आपको ज़रूर बताएँगे। -- बाले ने अपने लहजे में कोमलता भरते हुए कहा:

"कब?"

" आज शाम को "

" नहीं अभी , ओह, अब वह बच्चों की तरह पैरों पर उछलने लगी।

“ सुबहान तेरी कुदरत " , बाले अपना सिर पकड़कर बुदबुदाया। --अपने मामले में भी टाँग घुस गई ।

बोलो डियर,” उसने उसका कॉलर थाम लिया ।

“ठीक है, मैं तुम्हें शाम को खुद वहाँ ले चलूँगा, बस , अब ठीक ?”

84

" प्रामिस ? इस लड़की ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

" श्योर -- बाले ने ज़बरदस्ती की गंभीरता दिखाते हुए कहा। और वह अपना फेल्ट हैट लेकर, सिनेमा टिकट को चार टुकड़ों में मोड़कर अपनी जेब में रख कर बाहर आ गया। उस समय उसे केटी के बारे में एक अजीब सी फीलिंग आ रही थी। उसने उस पर भरोसा किया था कि वह दूसरी लड़कियों से अलग है, लेकिन आज, जिन पत्तों पर वह टिका था, वही उड़ने लगे, इसका एक उदाहरण सामने आया। उसे उस अनजान ताकत पर बहुत गुस्सा आ रहा था जो शहर की लड़कियों को चुन-चुन कर पागल कर रही थी। और आज उसकी केटी को भी। लेकिन चलते-चलते वह फिर रुक गया और सोचने लगा। शायद केटी का भी वही हाल होगा जो दूसरी लड़कियों का हुआ। वह कहाँ गायब हो गई, उन को कौन ले गया? कोई बुरी ताकत या कोई स्वर्ग का देवता?

घटनाएँ इतनी हैरान करने वाली थीं कि हर सोचने वाला हैरान था। सुपरिटेंडेंट खान जैसे वर्ल्ड-क्लास आदमी भी, जिनकी एक्सपर्टीज़ सबसे मुश्किल मामलों में भी मानी जाती थी और जिनकी समझ और सूझबूझ पर पुलिस डिपार्टमेंट को गर्व था, इस मामले पर कोई राय नहीं बना सके। जिस आदमी के बारे में कहा गया था कि उसने सात समंदर की गहराई में छिपे क्रिमिनल को बाहर निकाला, जो प्रेस और पब्लिक दोनों की नज़रों में छाया था। उन्होंने कोई भी राय देने से मना कर दिया था, यह कहते हुए कि पुलिस गायब लड़कियों को ढूंढने की कोशिश करेगी और उन्हें खुद इस मामले में कोई दिलचस्पी नहीं है।

लेकिन इस एतराज़ का कोई फ़ायदा नहीं हुआ। अगले ही दिन, शहर के अमीर और असरदार लोगों की ग्यारह बेटियों के रहस्यमयी तरीके से गायब होने और चार लड़कियों के सुसाइड का केस ऑफिशियली CID डिपार्टमेंट को कारणों की जांच के लिए सौंप दिया गया।

इन रोमांचक और हैरान करने वाली घटनाओं के बावजूद, ज़्यादातर लोगों का ध्यान सस्पेंडेड प्लेन पर ही था, जिसका कोई हल समझ नहीं आ रहा था। कल शाम कुछ मिलिट्री साइंटिस्ट को लेकर एक खास अमेरिकन चार्टर्ड प्लेन यहाँ पहुँचा, और पिछले तीन दिनों से भारतीय सैनिकों और

एकेडमी के साइंटिस्ट्स ने भी अमरुल इलाके में अपना स्टडी कैंप लगा लिया था। और आज सुबह से ही अलग-अलग देशों और हाई-एल्टीट्यूड एविएशन कंपनियों के साइंटिस्ट्स कैरोल एयरपोर्ट पर पहुंचने लगे थे। वे सब अपने समय के इस अनोखे अजूबे को अपनी आंखों से देखने आए थे। और अभी तक कोई भी इस प्लेन के बहुत करीब नहीं जा पाया था। लटका हुआ प्लेन न तो अपनी जगह से हिला था, और न ही उसमें सवार यात्रियों को ज़िंदगी के कोई निशान दिखे थे।

इसे मार गिराने का एक प्रपोज़ल भी सोच में था, लेकिन इसके अंदर बैठे पैसेंजर्स की जान का सवाल सामने आ गया और प्लेन को किसी तरह सेफ़ ज़मीन पर लाने या उस तक पहुँचकर अंदर बैठे लोगों को निकालने के अलावा कोई दूसरा ऑप्शन नहीं दिख रहा था। और इन प्रपोज़ल्स का लागू होना भी मुमकिन नहीं था क्योंकि कास्मोटेक वेव्स के रिंग से गुज़रे बिना उस तक पहुँचना नामुमकिन था और इस रिंग से गुज़रना सुसाइड से कम नहीं था। डकोटा की विंच का हवा में लटकना , खतरे का इशारा अभी भी मिल रहा था।

अखबार इस बारे में अंदाज़ों से भरे हुए थे। देश-विदेश के साइंटिस्ट तरह-तरह के अनुमान बना रहे थे, लेकिन अभी तक कहीं से कोई पक्का कमेंट नहीं आया था। शहर में हुए इन अजीब हालातों के बीच पिछले हफ़्ते अखबारों का इस्तेमाल दो सौ परसेंट बढ़

गया था। और आम लोगों और अमीर लोगों के बीच दिन-रात चर्चा का टॉपिक इन लड़कियों के गायब होने से ज़्यादा, लटका हुआ प्लेन था।

बाले , रऊफ, इंस्पेक्टर फैयाज, डिसूजा और खान के सभी करीबी साथियों और जान-पहचान वालों को पता था कि खान ने न तो इस मामले में कोई दिलचस्पी दिखाई थी और न ही इस विषय पर कोई कमेंट करने को तैयार थे।

खान ने उन्हें यह कहकर टाल दिया था कि प्लेन उल्टा हो या सीधा, पुलिस का इससे कोई लेना-देना नहीं है। और जब पुलिस का इससे कोई लेना-देना नहीं था, तो बेकार दिमाग खराब करने का क्या मतलब था? बात तो ठीक थी, लेकिन उस दिमागी सोच का क्या जो हर दिमाग में हलचल मचा रही थी। आज प्लेन है, कल उससे भी बड़ी चीजें आसमान में लटकी दिख सकती थीं। और क्यों और कैसे भी हो, ज़्यादातर दिमाग यह तय नहीं कर पा रहे थे कि यह कोई कुदरती आफ़त है या किसी अजीब और अनजान ताकत का काम। और अगर इसे किसी अनजान और बहुत बड़ी ताकत का प्रदर्शन माना जाए, तो इसका मतलब था कि वह ताकत इस शहर के आस-पास कहीं मौजूद थी। ऐसे में, उसके होने का शक ही किसी के लिए कम डरावना नहीं था। वह कमाल जिससे बड़े-बड़े साइंटिस्ट भी बहुत ज़्यादा हैरान थे। वह ताकत कौन सा अंधेरा नहीं कर सकती थी?

मौके पर पहुंचे और ज़मीन से और उड़ान से यह नज़ारा देखने वाले अमेरिकी साइंटिस्ट्स ने जो राय दी, वह उम्मीद से परे थी। कोई चिंता जताने के बजाय, वे इस नतीजे पर पहुंचे कि अगर इतने वज़न के इस अजीब और अनोखे ट्रांसफर का कोई साइंटिफिक फ़ॉर्मूला पता चल जाए, तो उसकी मदद से हम धरती की ग्रेविटी से बचकर एक सस्पेंडेड स्पेस स्टेशन बनाकर आसानी से मंगल और चांद पर पहुंच सकते हैं। लेकिन सवाल यह था कि यह सब क्यों और कैसे हुआ? और किसी के पास इस सवाल का जवाब नहीं था।

यहां पहुंचने पर अमेरिकी मिशन लीडर और टॉप साइंटिस्ट किर्टलैंड पेरोट की इंटेलिजेंस ने भी जवाब दे दिया। वे अपने साथ जो इलेक्ट्रॉनिक मशीनें और मैग्नेटिक और न्यूक्लियर ग्रैविटी को खत्म करने वाले दूसरे मॉडर्न साइंटिफिक इंस्ट्रूमेंट लाए थे, वे बेकार साबित हुए। न तो इलेक्ट्रॉनिक वेव्स इस प्लेन तक पहुंच पाईं और न ही मैग्नेटिक इंस्ट्रूमेंट्स कुछ

कर पाए। दोपहर तक, रशियन और जर्मन साइंटिस्ट्स की एक छोटी टीम भी स्पेशल प्लेन्स में आ गई थी और अमरुल के मैदान भर गए थे।

87

और वे खाकी टेंटों से आबाद दिखने लगे, जहाँ दर्जनों जीपें और दूसरी गाड़ियाँ खड़ी और चलती हुई दिखाई दीं।

इन साइंटिस्ट्स को रहने और खाने-पीने की जगह देने के अलावा, शहर उनकी प्रैक्टिकल ज़रूरतों को भी पूरा करने की पूरी कोशिश कर रहा था और अचानक यह अजीब घटना पूरी दुनिया के ध्यान का सेंटर बन गई। लेकिन इस सारी उथल-पुथल में, प्रांत की सीक्रेट पुलिस के इंचार्ज, डिटेक्टिव सुपरिंटेंडेंट खान, अपना ध्यान सिर्फ़ इन लड़कियों के केस पर लगा रहे थे, हालाँकि उनके करीबी असिस्टेंट भी सोच रहे थे कि वह इन घटनाओं में कोई खास दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं। सिर्फ़ इसलिए कि डिपार्टमेंट के हिसाब से केस उन्हें इन्वेस्टिगेशन के लिए सौंप दिए गए हैं, उनका ध्यान सिर्फ़ फॉर्मैलिटीज़ तक ही सीमित है।

88

अजीब अनुभव

जब बाले खान के बंगले में घुसा, तो केटी के बारे में सोचते हुए गुलाम रसूल ने उसे दरवाज़े से ही वापस भेज दिया और कहा, "सर, आप डॉ. पटेल की प्राइवेट लैब में गए हैं। आपको वहीं बुलाया गया है।"

डॉ. पटेल की लैब और बंगला दोनों ही बाले के जाने-पहचाने थे। खान कार ले गया था, इसलिए वह अपनी मोटरसाइकिल पर वापस आया और एक्सीलेटर दबाया।

लैब के दरवाज़े पर डॉ. पटेल के असिस्टेंट ने जैसे ही बाले का नाम सुना, उसे गाइड किया।

" डॉक्टर और सुपरिटेंडेंट दोनों अंदर हैं।" --- उसने एक कमरे से होते हुए दोहरी दीवारों वाले एक बड़े कमरे की ओर इशारा किया। यह कमरा मैग्नेटिक ऑब्ज़र्वेटरी के स्टाइल में बना था, जिसमें दोहरी दीवारें थीं और दोनों के बीच की जगह चारों तरफ से घिरे पत्थर के गलियारे जैसी थी। इस बड़े कमरे का दूसरा दरवाज़ा पीछे से था। जब बाले ने उसे खोला और अंदर कदम रखा, तो उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इतना अंधेरा था कि वह अपना हाथ नहीं बढ़ा पा रहा था, लेकिन कमरे के एक कोने में एक छोटा सा लैंप जल रहा था। शायद एक छोटा केरोसिन लैंप, जिसकी रोशनी का दायरा मुश्किल से एक फुट के डायमीटर तक ही सीमित था। उसकी लौ बहुत पतली थी। डॉक्टर और खान बाले को एक छोटी सी मशीन पर झुकी हुई दो काली परछाइयों जैसे लगे।

क्या मुझे टॉर्च जलानी चाहिए? --उन्होंने बाले की आवाज़ सुनी।

"इतने बेवकूफ़ मत बनो. यहाँ रोशनी की कोई ज़रूरत नहीं है."

इस मिट्टी के लैंप के ठीक सामने इस मशीन का करीब 16 इंच चौकोर फ्रेम था, जो पूरी तरह से सफेद था। डॉक्टर ने एक बार इस मशीन के कुछ हिस्सों को घुमाया और फिर एक बार लोहे की एक रॉड, जिसमें मरकरी जैसी कोई चीज़ चमक रही थी, फिर तांबे जैसी, इस लैंप में डाल दी। फिर कुछ सेकंड बाद उसने इस सफेद फ्रेम का पिछला हिस्सा खोला और अंदर से एक प्लेट निकाली। वह उसे इस धुंधले लैंप के पास ले आया। यह प्लेट, जो

सफेद भी थी, उस पर लाइनें थीं, सतह पूरी तरह से सादी थी। बस इसके दोनों सिरों पर पतली , पतली लेकिन चमकदार लाइन बन गयी थी। ।

"हवा का प्रेशर और नैचुरल बॉयेंसी मूवमेंट एकदम नॉर्मल हैं।"

खान ने पूछा, “फाइन लाइन्स का क्या?”

लेकिन डॉक्टर ने मशीन में प्लेट लगाते हुए कहा, "ये रेडियो तरंगें हैं जो ग्रह के चारों ओर तैर रही हैं। मुझे इन पर प्रयोग करना है।"

90

"अब वह अंगूठी निकालो," डॉक्टर ने खान से कहा।

बाले अंगूठी का नाम सुनकर चौंक गया और जब खान ने अपनी जेब से वही अंगूठी निकालकर डॉक्टर को दी, जो इत्तेफाक से या बाले की समझदारी कहिए, बाले ने अफरोज से ले ली थी और जिसे वह न तो लौटाना चाहता था और न ही वापस मांगने की नौबत आई । खान ने यह अंगूठी उससे अस्पताल में ही ले ली थी ।

लेकिन वे तीनों तब चौंक गए जब लिफ़ाफ़े से निकलते ही अंगूठी इतनी तेज़ी से चमकने लगी जैसे कोई लो-वोल्टेज वाला नीला बल्ब जला दिया गया हो। वे रोशनी में यह चमक बिल्कुल नहीं देख पा रहे थे, लेकिन इसका मेटल ज़रूर अनजान और चमकदार लग रहा था। डॉक्टर ने एक पल सोचा और लैंप बंद कर दिया और यह देखकर हैरान रह गए कि अंगूठी की चमक और भी तेज़ हो गई थी। डॉक्टर घबरा गए और उसे और आगे रख दिया और कुछ कदम पीछे हटकर उसे ध्यान से देखा। अंगूठी का सिर घूम रहा था। पिछले कुछ दिनों में अजीब हालात से पाला पड़ा था , और यह उनके लिए एक नई बात थी।

रिंग का बीच का लाल घेरा अंगारे जैसा दिखने लगा और चारों तरफ ऑक्टोपस के तने जैसी फैली पंखुड़ियां ऊपर उठने लगीं। डॉक्टर हैरानी और डर के मारे दीवार से दूर हट

गए और खान और बाले दो कदम पीछे हटकर दुनिया के इस आठवें अजूबे को देखने लगे। और उस पल, बाले की सांस लगभग रुक गई जब उसने इन ऑक्टोपस के तने जैसी पंखुड़ियों को चारों तरफ घूमते देखा और बीच के लाल घेरे की चमक बार-बार कम और तेज होने लगी। फिर एक बार इन घूमती पंखुड़ियों के सिरे से एक जैसी रोशनी का गोला निकला और कमरे की छत की तरफ गरजने वाली लहर की तरह फैलने लगा। उसके बाद, दूसरा, फिर तीसरा और इसी तरह, इस घेरे से आसमानी रोशनी के छोटे-छोटे गोले निकले और ऊपर की ओर उड़ते और फैलते रहे। कुछ ही सेकंड में, प्रकाश में उस कमरे को देख सकते थे।

कमरा चमकदार नीली रोशनी से भरा हुआ दिखने लगा, क्योंकि अब ये गोले छत तक बढ़ गए थे और लगभग एक फुट के व्यास के हो गए थे, या यूँ कहें कि वे उतना ही फैल गए थे, जितनी उन्हें फैलने की जगह थी। और सारे गोले इकट्ठा होकर चमकदार नीली रोशनी की एक पट्टी बन गए। डॉ. पटेल और खान और बाले खुद इस हालत में थे, जैसे उन्हें साँप सूंघ गया हो? क्या उन्हें साँप सूंघ गया था? वे इस अजीब दृश्य को किसी जादुई सपने की तरह हैरान आँखों से देख रहे थे। उसी पल, लाल रोशनी एक बार ज़ोर से चमकी और गोलों की रोशनी की इस पट्टी में एक दरार दिखाई दी। उन्हें इस रोशनी में बना गैप पूरे अंग्रेजी अक्षर S जैसा लग रहा था। इसी बीच, रोशनी ने फिर से अपनी चमक बढ़ाई और फिर नीली रोशनी की इस पट्टी में एक दरार दिखाई दी। यह अंग्रेजी अक्षर A था। और फिर तीसरी, चौथी, पाँचवीं, छठी और जैसे ही खान ने छठी दरार देखी। वह उछल पड़ा और पागलों की तरह चिल्लाया।

" सलाज़ार,” लेकिन डॉ. पटेल यह चौंकाने वाला नज़ारा बर्दाश्त नहीं कर सके। खान ने उन्हें ज़मीन पर गिरते और बेहोश होते देखा। और बाले की आधी जान ऊपर और आधी नीचे अटक गयी थी, उनकी आँखें हैरानी से चौड़ी हो गईं।

" रो रो रो रोशनी, “ --डॉक्टर के मुंह से टूटे-फूटे शब्द निकले और खान की टॉर्च तुरंत चमक उठी। वह जल उठी। लेकिन नतीजा और भी हैरान करने वाला था। मैकेनिकल ऑब्ज़र्वेशन मशीन आप से आप फट गई और उसके चिथड़े उड़ गए। खान ने ज़मीन पर गिरकर खुद को बचाया। बाले पहले ही ज़मीन पर गिर चुका था , नहीं तो दोनों में से

कोई एक बुरी तरह घायल हो जाता। और फिर उन्हें पता भी नहीं चला कि क्या हो रहा है।

डॉ. पटेल के आदमी आए और उन्हें छत के मलबे के नीचे से बाहर निकाला।

92

पुलिस ने डॉ. पटेल की लेबोरेटरी ऑब्ज़र्वेटरी को चारों तरफ से घेर लिया था, और अंदर, दो बड़ी दीवारों वाले एक अंधेरे कमरे में, खुद डॉ. पटेल, सुपरिंटेंडेंट खान और सार्जेंट बाले कमरे में हर चीज़ और गिरी हुई छत के मलबे को देख रहे थे। उनके हाथों में छोटे पोर्टेबल इलेक्ट्रिक लैंप थे। इस कमरे की छत लगभग 10 डायमीटर के घेरे में गायब थी और उसमें से नीला आसमान झाँक रहा था।

तीनों में से किसी को भी ज़्यादा चोट नहीं आई क्योंकि गिरने पर वे कमरे की दीवार से दब गए थे। बाले दीवारों के पास था, लेकिन जब उसे होश आया तो वह एक टेबल पर खड़ा था जो गिर गई थी। खान का सिर दीवार से टकराने से दर्द कर रहा था और डॉक्टर की पीठ पर एक मैकेनिकल ऑब्ज़र्वेशन मशीन का लकड़ी का फ्रेम पड़ा था। होश में आते ही खान की पहली नज़र अपनी छत पर पड़ी, जिसका डायमीटर लगभग दस फ़ीट था, और उस पल उसके मन में पहला ख्याल यह आया कि आसमान की लहरों का घेरा भी छत जितना ही चौड़ा था। तो क्या छत टूटकर गायब हो गई? बल्कि, वह सीन कुछ ऐसा था जैसे साबुन के डिब्बे से बाल गुज़र रहे हों। छत एक गोले के आकार की थी! बीच का कटा हुआ हिस्सा नीचे गिरकर मलबे में बदल गया। वह कुछ देर तक हैरानी से उसे देखता रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि एक छोटे से रिंग से पैदा हुई वे अद्भुत लहरें इतनी अजीब और शक्तिशाली कैसे हो सकती हैं कि वे स्टील की सलाखों, पत्थरों और कंक्रीट की छत को खीरे की तरह काट सकती हैं। आज का दिन समझदारों के ताबीज़ के किसी चैप्टर से कम नहीं था। जब उसने डॉक्टर को हिलाया तो वह भी होश में आया, उसने अपना सिर हिलाया और उसकी पहली नज़र छत पर पड़ी।

"वह, यह क्या हुया ?" छत गिर गई।

और जब खान जैसा बहादुर और समझदार जासूस और डॉ. पटेल जैसा अनुभवी इंसान इस घटना से हैरान थे, तो बाले क्या करता ?

उसका दिमाग बहुत देर तक कुछ सोच नहीं पाया।

93

" कितनी शर्म की बात है, यह चीज़ आखिरकार छत तोड़कर बाहर चले गई।"

" वो अंगूठी? अचानक डॉक्टर को एक आइडिया आया। और खान भी इस सवाल से चौंककर इधर-उधर अंगूठी ढूंढने लगा। शायद छत गिरने की आवाज़ से डॉक्टर के असिस्टंट को खबर मिल गई थी। उसने तुरंत कुछ पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया और अंदर भागा।

तब तक डॉक्टर, खान और बाले भी ठीक हो गए थे । डॉक्टर ने तुरंत उसे एक पोर्टेबल लैंप लाने को कहा और खान अपनी टॉर्च की मदद से उस रहस्यमयी अंगूठी को ढूंढने लगा, बाले को इंस्ट्रक्शन दिया कि पास के किसी स्टेशन से तुरंत कुछ पुलिस को बुलाए ताकि बाहर सर्विलांस रखा जा सके। बाले इस सर्विलांस का मकसद नहीं समझ सका, लेकिन यह कोई एक्सप्लेनेशन मांगने का मौका नहीं था। उसने बिना किसी हिचकिचाहट के ऑर्डर मान लिया। पुलिस स्टेशन ज़्यादा दूर नहीं था। पुलिस वहाँ से पाँच मिनट में आ गई। खान ने इन लोगों को बस इतना इंस्ट्रक्शन दिया कि जब तक मैं न कहूँ, किसी को भी इस बिल्डिंग या इसकी जगह से बाहर न निकलने दिया जाए। जिन लोगों को डॉक्टर के असिस्टंट ने मदद के लिए बुलाया था, उन्हें भी रोक दिया गया। उन्हें खान के इंस्ट्रक्शन के हिसाब से उन सब को प्रयोगशाला के बाहर बैठा दिया गया ।

कमरे में रखी हर एक चीज़ को एक-एक करके हटा दिया गया। उन्होंने मलबे की भी तलाशी ली, लेकिन उन्हें अंगूठी नहीं मिली। शक होने पर, उसकी बारीक धूल को ध्यान से छाना गया, लेकिन वह नहीं मिली । फिर, लैब के बाहर सभी लोगों की तलाशी लेने के बाद, उन्हें भेज दिया गया। इस दौरान बाले पूरी तरह चुप था। उसे खान की हरकतें बिल्कुल समझ नहीं आ रही थीं, और वैसे भी, डॉक्टर-- पुलिस की घेराबंदी और तलाशी का मकसद नहीं समझ पा रहा था। इस सब अफ़रा-तफ़री में दो घंटे बीत गए। जब वह थककर आया तो डॉक्टर के लैब के ऑफिस में बैठ गया।

डॉक्टर ने खान से पूछा, "आप ये तलाशी क्यों ले रहे थे?"

" मुझे शक था कि कोई हमारा पीछा कर रहा होगा और उन्होंने शायद इस मौके का फ़ायदा उठाया होगा और उस ने अंगूठी गायब कर दी है।

"और हो सकता है वह अंगूठी अपने आप छत तोड़ आकर निकल गई हो ?" बाले बोला । -

-" अगर ऐसा होना होता, तो बहुत पहले हो चुका होता। --खान ने कहा। "यह मेरी बेवकूफी थी कि मुझे यह इस जगह पर इसका प्रयोग किया ।"

" क्यों?"

"देखा नहीं , मेरी सारी मैग्नेटिक अट्रैक्शन मशीनें बेकार हो गई हैं। '

" तो आखिर ये क्या बला थी ?" बाले ने बच्चों जैसे हैरानी से पूछा।

" मुझे यकीन नहीं होता कि दुनिया में कभी कोई ऐसा साइंटिस्ट हुआ है जो इलेक्ट्रॉनिक फोर्स को भी पैरालाइज़ कर दो।" डॉक्टर बुदबुदाया।

"क्या यह बल एटम से ज़्यादा शक्तिशाली है?"

" बेशक - साइंस ने अब तक आखिरी पार्टिकल को तोड़कर 93 एटम खोजे थे, लेकिन लेटेस्ट साइंटिफिक रिसर्च में एटम को भी तोड़ दिया गया है और आपको यह जानकर हैरानी हो सकती है कि

95

"एटम के इस सबसे छोटे कण में भी यूनिवर्स का मोशन सिस्टम पाया गया है।"

" इसका क्या मतलब है?' खान, डॉ. पटेल की थ्योरी को समझ नहीं पाए, इसलिए उन्होंने इसका जवाब मांगा।

" जैसे ग्रह सूरज के चारों ओर घूमते हैं, वैसे ही इस सबसे छोटे कण, एटम में, कई इलेक्ट्रॉन एक प्रोटॉन के चारों ओर घूमते पाए गए हैं।

"यानी, मोशन का सिस्टम सबसे छोटे पार्टिकल से लेकर यूनिवर्स के अनंत विस्तार तक एक है।"

"बिलकुल ।"

" और इस थ्योरी के अनुसार, एटम की और खोज की जा सकती है। इलेक्ट्रॉनिक एनर्जी के लिए '

"यह एक अजीब फ़ॉर्मूला है: सिर नीचे, टांगें ऊपर," बाले ने अजीब सा कुछ कहा ।

"काफी अजीब बात है - साइंस में ज़्यादातर चीज़ें इसके उलट लगती हैं। ----डॉक्टर मुस्कुराया।--- जैसे, साइंस के प्रिंसिपल्स के हिसाब से, सबसे बड़ी पावर सबसे छोटे कण में छिपी होती है, और कम से कम आप इस ज़माने में एटॉमिक फोर्स के बारे में तो अंदाज़ा लगा ही रहे हैं।

" तो क्या एटम छोटा है? --लड़के ने एक बेवकूफी भरा सवाल पूछा।

"ऐसा कहा जाता है कि खोजा गया सबसे छोटा कण एटम है।"

" तो फिर इलेक्ट्रॉन?

डॉक्टर ने कहा, "अभी तक इस बारे में सिर्फ़ अंदाज़े ही लगाए जा रहे हैं। एटम को तोड़कर खोजा गया है, लेकिन उसकी पावर का अभी तक पता नहीं चला है या उसके मिलकर इस्तेमाल का कोई तरीका अभी तक नहीं बनाया गया है।"

" और मेरा मन हैरान है कि जब इलेक्ट्रॉनिक एनर्जी के फ़ॉर्मूले अभी भी अधूरे हैं, तो इससे ज़्यादा फ़ोर्स कैसे बनाया जा सकता है? यह इस ज़माने के इंसान की समझ से बाहर है।

"क्या इलेक्ट्रॉन को भी तोड़ा जा सकता है?" खान ने डॉक्टर की जानकारी में दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

" क्यों नहीं, अगर उन्हें तोड़ा जाए तो उनमें से ऊँट के अंडे निकलेंगे। और अगर उन्हें कुचला जाए तो हाथी के बच्चे निकलेंगे। --बाले से नहीं रहा गया । वह इस सूखी, बेकार बातचीत से बहुत बोर हो रहा था।

"चुप हो जाओ, गधे," खान ने उसे डांटा।

" साइंटिस्ट भी अभी तक यह नहीं सोच पाए हैं कि उनके आगे भी कुछ है या उन्हें तोड़ा जा सकता है। -- डॉक्टर ने कहा।--" इस बारे में आखिरी थ्योरी यह है कि सृष्टि की पहली नींव बुनियाद इस से आगे नहीं है।

" गधा चुप नहीं रहेगा. आप लोग न जाने कौन सी दुनिया की बात कर रहे हो.- बाले फिर बोला

" अगर तुम चुप नहीं रह सकते तो बाहर जाओ। ---खान गुस्सा हो गया।

" अब चुप हूँ बिलकुल । -- यह कहकर बाले कुर्सी के दूसरी तरफ मुड़ा और बैठ गया।

डॉक्टर उसकी इस हरकत पर मुस्कुराए।

"लेकिन आप इस बारे में और क्या कहने वाले थे?" खान ने डॉक्टर से पूछा।

"मेरा असिस्टंट मैग्नेटिक ऑब्जर्वर से निकाली गयी आखिरी प्लेट के साथ आ रहा है, इससे यह पता चल जाएगा।"

और उसी समय डॉक्टर का असिस्टेंट भी आ गया। उसके हाथ में कागज़ में लिपटी एक छोटी सफ़ेद प्लेट थी, जिसके चारों ओर लकड़ी का फ्रेम था। और खान ने उसे ध्यान से देखा, और उस पर अनगिनत बारीक खरोंचें थीं। डॉक्टर उसे बहुत देर तक देखता रहा। उसके चेहरे पर हैरानी और उत्सुकता के निशान थे।

" क्या तुमने देखा? --उसने खान से कहा। उसने उन बारीक खरोंचों की ओर इशारा किया।

" हाँ, --लेकिन खान को कुछ समझ नहीं आया।

" इस चुंबकीय शक्ति के चिथड़े उड़ा दिए हैं इस अजीब शक्ति ने ।"

"यानि उस रिंग से उठने वाले तरंगों के घेरे?"

"हाँ। मेरा यकीन करो, ये लहरें जिस भी चीज़ पर रिफ्लेक्ट होती हैं, ये गोले जिस भी चीज़ पर रिफ्लेक्ट होते हैं, उसे धरती की ग्रैविटी भी अपनी ओर नहीं खींच सकती।" डॉक्टर का लहजा और भी हैरान होता जा रहा था।

"खुदा ही बचाए ," वह बुदबुदाया।

" ये.... ये ...ये कहीं क्वांटम एनर्जी की खोज तो नहीं है… ये ?

" खुदा ही जाने -- ये -- कुछ ही घंटों में दुनिया तबाह कर सकती है --डॉक्टर बड़बड़ा रहा था , उस की हैरानी कितनी बढ़ रही थी, क्योंकि वह इस बात पर कि वह अपने मन को कंट्रोल नहीं कर पा रहा है। खान को तब झटका लगा जब उसने डॉक्टर को बेहोश होते देखा।

98

वह उसको पकड़ने के लिए दौड़ा। बाले को अभी तक समझ नहीं आया था कि ये किस तरह की बकवास है। लेकिन जब उसने बेहोश हो रहे डॉक्टर को यह कहते सुना कि यह शक्ति कुछ ही घंटों में पूरी दुनिया को खत्म कर सकती है, तो उसके कान खड़े हो गए और पहली बार उसे खान और डॉक्टर के बीच इस बातचीत की अहमियत का एहसास हुआ।

खान का दिमाग तेज़ी से कई घटनाओं में घूम रहा था। पढ़ी-लिखी और समझदार लड़कियों का पागलपन, चांद के राजकुमार का सपना, लड़कियों का सुसाइड और यह कमाल की अंगूठी। लेकिन अचानक उसके ख्याल कहीं और भटक गए। वह उसी पल

खड़ा हो गया। डॉक्टर को पानी के कुछ छींटों से होश आ गया और वह अपनी कमज़ोरी पर शर्मिंदा होकर बैठ गया।

उससे वादा लेने के बाद कि वह इन सभी घटनाओं और उन पर अपने विचारों को डॉ. सीक्रेट रखेगा, खान ने उससे दोबारा मिलने का वादा किया और बाले को अपने साथ लेकर चला गया। खान खुद तेज़ी से गाड़ी चला रहा था और बाले हैरान था कि वह अपनी आदत के उलट खान इतनी तेज़ी से कार क्यों चला रहा है ।

रहा है। जब इससे रहा नहीं गया , तो बोल ही उठा ।

"ऐसा लगता है कि ख़ुदकुशी करने का इरादा है । "

" इस वक़्त चुप बैठो।"

" नहीं बैठूंगा, मैं लेटा हूं, मेरी पीठ अकड़ गई है।" वह सीट पर पीछे की ओर झुक गया। खान ने कुछ नहीं कहा।

"मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूं।"

"क्या "

"वे अंगूठी कहां गायब हो गए?"

' मुझे शक है कि कोई और रहस्यमयी आदमी भी हमारा पीछा कर रहा है। जब हम वहाँ थे तो शायद आपने ध्यान नहीं दिया होगा, --लेकिन तुम बाद में आए, इसलिए आपने उसे नहीं देखा होगा। ----खान ने बोलते बोलते बात करना बंद कर दिया।

"एक सफ़ेद विदेशी आदमी जिस ने भूरे रंग की जैकेट पहनी हुई थी , है ना?"

" हाँ. क्यों? क्या तुमने भी देखा है? "

बाले ने कहा, "मैंने ऐसे ही एक आदमी को लैब के बाहर सड़क के किनारे खड़ा देखा, जो पर्ल एंड कंपनी का बोर्ड पढ़ रहा था।"

खान ने कहा, "मुझे नहीं पता , पर मुझे क्यों शक है कि अंगूठी गायब कर दी गई है। यह अपने आप गायब नहीं हुई।"

" कौन ऐसी अजीब चीज़ छोड़ जाएगा, जिसकी खोज पूरी दुनिया को पता चल जाएगी?

नहीं, अगर हमारा शक सही भी हो, तो भी इस बात के पब्लिक होने की उम्मीद कम है। नतीजे जो भी हों, हालत बहुत पेचीदा और एक तिलिस्म की तरह

हैरान करने वाले हैं । कोई भी उनकी तह तक जाए बिना अपना मुँह नहीं खोलना चाहेगा।

"तो क्या आपको लगता है कि कोई तीसरा भी है?"

" हां, अंगूठी या उसके डिवाइस से जुड़ी कोई भी ताकत इतनी छोटी नहीं हो सकती कि चोर की तरह आकर उसको ले जाएं। डॉक्टर के मुताबिक, जिस अनजान इंसान ने इतनी बड़ी साइंटिफिक चीज़ बनाई...उसके पास पावर है तो ऐसी बेवकूफी नहीं दिखाता ।"

"आप किसी शक्ति के आगे सरेंडर कर रहे हैं।"

" और मुझे शक है कि वह शक्ति सलाजार न हो ।

" सलाजार? --बाले उछल पड़ा। उसको प्रकाश के गोले में दिखाई देने वाले वो अक्षर याद आए और वो हैरान रह गया।

" हाँ। हमने तो इस ज़िंदा इंसानी बनावट के रहस्यमयी जीवन का सिर्फ़ वो पहलू देखा था जो बिना मांस के दिखाई देता था, जिसमें वो अपनी साइंटिफिक ताकत को किनारे रखकर पागल हो रहा था और अपने विश्वास के फ़ॉर्मूले के फेल होने की बची हुई प्रक्रिया को मिटाने के तरीकों की तलाश में इंसान बन रहा था। और जिस ज्ञानी को हम अमेरिका में छोड़ आए थे। उसने अपना मकसद हासिल कर लिया था। ज़रूर अब उनका ध्यान अपने साइंटिफिक पैशन पर वापस आ गया होगा।

" तो क्या आप उन्हें इतना बड़ा साइंटिस्ट मानते हैं?"

"नहीं, मुझे लगता है कि उसकी असली पर्सनैलिटी को जानने वाला कोई भी नहीं है , डाक्टर पांडे वाला वो केस याद नहीं , जिसमें इंसानों में बंदरों को दोमाग और बंदरों में इंसान का दिमाग बादल कर एक भयानक एक्सपेरिमेंट किया था। सलाज़ार में दुनिया की सबसे बड़ी साइंटिफिक ताकतों को भी चैलेंज करने की कमाल की काबिलियत है।"

" हे खुदा ! बाले के मुंह से धीरे से यही निकला।

" लेकिन पिछली बार उन्होंने अमेरिका में आपसे वादा किया था कि अब वे हमारे देश की ज़मीन पर पैर नहीं रखेगा।

" हम पक्के तौर पर नहीं कह रहे हैं कि यह वही है, लेकिन मेरा दिल कह रहा है कि यह वही है। वह यहाँ क्यों है? वह क्या कर रहा है? यह तभी पता चलेगा जब हम कम से कम इतना तो जान लेंगे कि वह कहाँ है और किस हैसियत से है ?"

" और यह पता लगाना आसान नहीं है।"

" आसान? क्या ऐसे इंसान तक पहुंचना कोई खेल नहीं है जिसके पास इतनी डरावनी साइंटिफिक ताकतें हों? अगर वह सलाजार है, तो अब उसे ढूंढना बहुत मुश्किल है।

"मैंने साफ़-साफ़ देखा कि इन गोलों में अल्फाबेट के अक्षर सलाजार बना रहे थे।" बाले ने कहा।

" मैंने भी इसे देखा, और हो सकता है कि यह घटना हम सबके लिए एक छोटी सी चुनौती या चेतावनी हो , लेकिन मैं अभी भी 100 परसेंट यह नहीं मानता कि यह वही सलाज़ार है। हो सकता है कि कोई और हो। कोई अलग और ज़्यादा समझ से बाहर की शक्ति भी होगी।"

" इसकी पुष्टि कैसे की जा सकती है?"

"मेरे दिमाग में एक स्कीम है।"

" वह क्या है?"

" सलाजार की एक कमज़ोरी

"तुम्हारा मतलब खूबसूरत औरत से है?"

"हाँ, लेकिन जिसकी खूबसूरती बहुत अच्छी हो और पर्सनैलिटी आकर्षक हो।"

" तो चलिए, यह इस बात का भी टेस्ट होगा कि हमारा शक सही है या नहीं।

और अगर यह गलत निकला, तो खैर नहीं । हम एक बार के लिए सलाज़र से दरियादिली और उदारता की उम्मीद कर सकते हैं, लेकिन अगर इस पर्दे के पीछे कोई और शख्सियत है, तो भगवान ही इसका नतीजा जानता है।

102

" अब मैं भी कुछ सोच रहा हूँ। -बाले ने अपनी समझदारी दिखाई।

"बोलो ?"

"सोचिए कि इस अनजान चांद के राजकुमार से प्यार करने वाली सभी लड़कियां आम लड़कियों से ज़्यादा खूबसूरत और आकर्षक थीं। कम से कम, मेरा दिल तो उनमें से हर एक से बारी-बारी से प्यार करना चाहता था।"

"मेरे दिमाग में भी यही बात घूम रही है।"

"लेकिन आप इन घटनाओं में कोई दिलचस्पी नहीं ले रहे थे।"

"मैं किसी भी चीज़ पर अपनी नज़रें बंद नहीं रखता।"

"तो क्या पीछे भी आँखें हैं?"

खान ने उसे बहस करते हुए देखा तो डांटा, "सीरियस भी रहा करो ।"

"अच्छा, अपने और क्या गौर किया ?"

" उनमें से कोई भी लड़की चार दिवारी वाले माहौल की नहीं है। वे सभी उदार सोच वाले, अमीर माता-पिता के प्यारे बच्चे हैं।

"तो उस से क्या हुआ?"

"तुमने अपना दिमाग चोर बाज़ार में बेच खाया है? इतनी सी बात समझ में नहीं आती।

" लेकिन आज़ाद सोच वाले और बिगड़े हुए बच्चों को ही क्यों ?" बाले ने पूछा।

" वह जो भी हो, शहरी जीवन में उसकी पैठ ज़रूर रही होगी। और मुझे यह पता है।

मैं पहले ही कह चुका हूं कि ये सभी लड़कियां कभी न कभी किसी क्लब या एंटरटेनमेंट वेन्यू पर ज़रूर जाती थीं, जहां उनके दोस्त अभी भी उनका इंतज़ार कर रहे हैं।"

" ओह, तो इसका मतलब है कि वह रहस्यमयी चीज़ शहर के हाई-एंड एंटरटेनमेंट वेन्यू या क्लब में ज़रूर पहुंची है ।

"वह ज़रूर वहाँ पहुँचा होगा। और वहीं से उसने इन लड़कियों को चुना होगा ?"

"कुछ कुछ समझे ।"

" और अब आप कहेंगे कि हमें पता लगाना चाहिए कि ऐसा खास व्यक्ति कौन है। जो पिछले कुछ सालों में अलग-अलग जगहों पर देखा गया है।"

" वापस आई अक्ल तुम्हारी "

"लेकिन क्या आप डॉ. पटेल के बयान के अनुसार खोजी गई इस अद्भुत शक्तिशाली शक्ति को इन लड़कियों के गायब होने का कारण मानना चाहते हैं?"

"पक्का नहीं कहा जा सकता। हो सकता है कि सिर्फ़ वही एक लड़की किसी तरह उससे जुड़ी हो, लेकिन आप कहते थे कि उसकी बात भी उसी तरह की थी। फ़र्क सिर्फ़ इतना था कि उसने उस चांद के राजकुमार की उंगली से गिरी अंगूठी चुरा ली थी।"

"हाँ।

" तो, इन लड़कियों की बताई सारी कहानियाँ एक हैं, और यह सीरीज़ भी एक है।"

"बस अब इसी लाइन पर चलते रहो।"

"मैं आगे कैसे बढ़ूं? आगे तो कार का डैशबोर्ड है।"

"धत्त तेरे की , फिर वही बकवास"

" ज़िंदगी बकवास के बिना अधूरी है। देखिये , गंभीरता और पागलपन में, बहुत थोड़ा सा फर्क है "

" और अगर यह फर्क आपके .....।"

"बाले साहब का सिर कोई रबर की गेंद नहीं है। अरे, लेकिन आप जा कहाँ रहे हो?"

' इस सीरीज़ की एक और अद्भुत कड़ी मिलाने के लिए , जिसने पूरी दुनिया को चौंका दिया है।"

104

" और वह भी रेगिस्तान की ओर, यानी...

"बस, अपनी शायरी रहने दो। और थोड़ा चुप बैठो ।"

" कुंवारा बाप की लोरी सुनाऊँ , अर्ज़ किया है .....”

" चुप नहीं रह सकते? कुछ समझा भी करो "

" बस, इतनी सी बात , लो बिलकुल चुप ।--। यह कहकर बाले ने अपना मुँह बंद किया और डैशबोर्ड पर रेडियो चालू कर दिया। ऑल इंडिया रेडियो का कोई म्यूज़िशियन शास्त्रीय गायन कर रहा था । और उसकी, "आ यें यें यें यें यें ..." ने खान का दिमाग और भी खराब कर दिया।

"तुम चुपचाप नहीं बैठोगे, प्यारे बाले ?" खान ने उसे ऐसे डांटा जैसे वह कोई पिता हो।

" आयें , अरे, यह इंकलाब ज़िंदाबाद किया ? बाले ने आँखें घुमाईं और खान को देखने लगा ।

"यह एक भयानक घूंसे की शुरुआत है।"

"ताजुब है , घूंसा भी ऐसे ही आ जाएगा , बिना बुलाये ? आपको ज़रूर कुछ हुआ होगा।"

"ज़रा उधर देखो," खान ने उसे अनदेखा किया और खिड़की से दूर कैरोली ने एयरपोर्ट के आगे आसमान की ओर इशारा किया। नीचे, कैरोली के दाएं-बाएं, ऊंचे, घुमावदार पेड़, हरी पत्तियों से लदे हुए, उगे हुए थे, और इस सूखे एयरफील्ड के निशान दूर से हल्के-हल्के दिखाई दे रहे थे।

" पेड़ों के ऊपर खुदा की महिमा का नज़ारा है। और क्या फरमाते हैं जी ?

"उल्लू , मैं तुमसे आसमान की ओर देखने के लिए कह रहा हूं।"

"ओह, आसमान में एक मुर्गे का अंडा - बाले ने खिड़की से बाहर सिर निकाला -- यह तो होवर प्लेन है।"

' यही है वो प्लेन

" इस का केस भी 100, 150 अद्भुत केसों में रखने लायक है। ---बाले ने मुड़कर कहा, लेकिन क्या आपने उन्हें करीब से देखा है?"

"मैंने अभी तक इसके बारे में सिर नहीं खपाया था।"

"और न ही भविष्य में इस तरह के झमेले में खपाएंगे ।"

" नहीं, अब इरादा बदल गया है. अब तक, मैंने इसे सिर्फ़ साइंटिस्ट्स की दिलचस्पी का मामला समझा था, लेकिन डॉ. पटेल के बयान ने मुझे कुछ अलग महसूस कराया। मैं समझ गया कि यह कुछ ऐसा था जिसका मैं इंतज़ार कर रहा था।"

" मैंने सुना है कि भगवान जिस इंसान को सज़ा देते हैं, उसे जीते जी साइंटिस्ट बना देते हैं। शायद आप भी...

" बस एक ही कमी थी कि मैं साइंटिस्ट नहीं बना। वैसे, मुझे इस सब्जेक्ट में दिलचस्पी है।

" बिल्कुल।लोग कहते हैं कि हर आदमी जिससे कोई शादी नहीं करता, वह एक साइंटिस्ट है।"

"अब तुम्हारा समय आ रहा है।"

"आप उस उड़ते हुए प्लेन के बारे में कुछ कह रहे थे?" बाले तुरंत सीरियस हो गया।

" क्या तुम को डॉ. पटेल की बात याद है, "धरती की ग्रेविटी भी उस चीज़ को नहीं खींच सकती जिस पर सर्कल रिफ्लेक्ट होते हैं।"

"लेकिन डॉक्टर साइंस के एक्सपर्ट नहीं हैं।"

" मुझे इसी बात का शक है। उनका साइंटिफिक ज्ञान बहुत बड़ा है, यहाँ तक कि बहुत ज़्यादा। शायद आपको पता नहीं है कि प्रोटो-एनर्जी शब्द और इसकी पोटेंशियल पावर के बारे में यह कहावत कि इसकी लहरें ग्रेविटी को भी खत्म कर देती हैं, मैंने आज तक

किसी से नहीं सुना, और न ही दुनिया के किसी देश के किसी साइंटिस्ट ने इस एनर्जी का नाम लिया है।--

खान ने कहा, "मैं साइंटिफिक टॉपिक पर सभी मैगज़ीन पढ़ता रहता हूं।"

"डॉ. पटेल? तो क्या उनकी पर्सनैलिटी भी कुछ रहस्यमयी है?"

" बेशक, आप किसी आई स्पेशलिस्ट से इतनी ज़बरदस्त साइंटिफिक जानकारी की उम्मीद नहीं करेंगे।

" पक्का नहीं पता। यह तो वही बात हुई , खोदा पहाड़ निकला चूहा ।

"ये क्या बात हुई?"

"यह कुछ उल्टा हो गया है। लेकिन आप डॉ. पटेल को छोड़कर ऐसे भाग गए हैं जैसे आप उनसे छुटकारा पाना चाहते हैं।"

" अगर मेरा शक गलत नहीं है, तो वे हमें अमारोल के दुनिया के साइंटिस्ट की स्टडी

कैंप में मिलेंगे ।”

"वह प्लेन अभी भी फंसा हुआ लग रहा है।"

"कोई भी इसे नीचे नहीं ला सकता सिवाय उसके जिस किसी ने इसे हवा में स्थापित किया है।"

"और क्या होगा अगर कल वह उसी तरह अपना गरीबखाना बनाए, गरीबखाना हवा में?"

" शायद ऐसी असाधारण शक्ति के लिए यह असंभव नहीं है।

"मैं कल दो हज़ार फुट की सीढ़ी का ऑर्डर दूंगा।"

"क्यों?

"हम वहां से नीचे कैसे उतरेंगे?"

"शेख चिलियों की तरह बात मत करो।"

"चिली में यूरोपियन मूल के लोग रहते हैं, शेख जी नहीं ?"

" बस अब अपनी चोंच बंद रखना, और हां, बातचीत के दौरान कहीं भी ऐसा कुछ मत कहना, जिससे किसी को भी शक हो सकता है कि हमारे पास इस बारे में कोई जानकारी है।

"मैं खुद को उल्लू का पट्ठा ही दिखाऊंगा, बिलकुल गधा । " बाले ने आराम से कहा।

"ठीक है, वो तो तुम हो ही ।" खान मुस्कुराया।

" बोलचाल की भाषा में, पट्ठा का मतलब "शिष्य" होता है। बाले ने फिर फिकरा कसा

"चुप रहो," खान ने कहा और अपनी कार नई बनी कच्ची सड़क पर डाल दी, जो अमरुल के प्लैटोनमा सेक्शन से होकर साइंटिस्ट्स के स्टडी कैंप तक जाती थी। कुछ मिलिट्री गार्ड सड़क के मोड़ पर थे, जो आम लोगों को अंदर नहीं जाने दे रहे थे। दूर पीले और खाकी रंग के टेंटों का एक बेतरतीब झुंड दिख रहा था, जहाँ कई जीप और दूसरी कारें खड़ी थीं। कुछ मिलिट्री वाले भी घूम रहे थे और कुछ अजीब दिखने वाली मशीनें भी ऊँचाई पर लगी हुई दिख रही थीं। जब मिलिट्री गार्ड्स ने देखा कि खान और बाले की कार के गुज़रते ही उनके साथ तैनात पुलिस वाले अटेन्शन हो रहे हैं, तो वे भी अदब से पीछे हट गए।

☆☆☆

अध्ययन शिविर

खान ने अपनी कार कैंप के पास रोकी और एक झाड़ी के पास रुक गया। उस समय कैंप में बहुत चहल-पहल थी। चहल-पहल थी। ऐसा लग रहा था जैसे अलग-अलग रंग और नस्ल के लोग कहीं जश्न मनाने आए हों।

कुल टेंट 25 थे, जिनमें 12 सफेद और 13 खाकी थे। सफेद टेंट विदेशी साइंटिफिक टीमों ने खुद दिए थे और खाकी टेंट इंडियन मिलिट्री एकेडमी ऑफ साइंस ने लगाए थे। इनमें रूसी और पोलिश साइंटिस्ट के साथ-साथ चीनी और भारतीय भी रह रहे थे। उनके साथ कनाडा और जापान के कुछ साइंटिस्ट भी थे। बाकी टेंट में अमेरिकी, फ्रांसीसी और ब्रिटिश साइंटिस्ट की टीमें, कोलंबो से दो सरकारी ऑब्जर्वर और पाकिस्तान और इटली के कुछ साइंटिस्ट थे। हर एक में वॉलंटियर की एक पोस्ट लगाई गई थी, जिसके साथ IAOC के मालवाहक ट्रक थे, जो ज़रूरत के हिसाब से शहर से सप्लाई लाते रहते थे। एयर डिपार्टमेंट की एक गाड़ी भी उनकी सेवा में लगाई गई थी। ये सभी सुविधाएं उन्हें सरकारी निर्देशों पर तुरंत दी गईं। इस अजीब घटना का नतीजा जानने के लिए इन सभी विदेशी देशों ने अपने साइंटिस्ट को लास्की वायरलेस से जोड़ा था, और कुछ समय के लिए बनाए गए टेलीफोन एक्सचेंज पर अखबारों से बार-बार पूछताछ वाले कॉल आ रहे थे। लेकिन चार दिन बाद भी नतीजा ज़ीरो था।

वह प्लेन अभी भी 1,000 फीट की ऊंचाई पर हवा में मंडरा रहा था, और साइंटिस्ट्स की इन सभी टीमों की किसी भी तरह का वायरलेस लिंक बनाने या उस तक पहुंचने की सारी कोशिशें बेकार गईं।

तमाम टीमों ने कोशिश की थी, लेकिन फेल हो गए थे। और कल सुबह-सुबह रशियन साइंटिस्ट भी अपनी एक नई कोशिश करने वाले थे, जिसके लिए खान और बाले ने दूर से जो मशीनें देखी थीं, उन्हें एक ऊँची चट्टान पर लगाया गया था। जब खान और बाले ,

अपने सादे सिविलियन कपड़ों में, टेंट से नीचे उतरने लगे, तो उन्होंने कुछ टेंट के सामने कुछ विदेशी साइंटिस्ट को आपस में बात करते देखा। अपने अलग-अलग विचारों और अलग-अलग नस्लों के बावजूद, वे अपने मकसद में एक थे, और उनकी अचानक हुई मुलाकात में यह फर्क करना मुश्किल था कि वे पहले एक-दूसरे से अनजान रहे होंगे। खान की आँखें किसी और को ढूंढ रही थीं, और बाले इन रूखे दिमाग वाले साइंटिस्ट के रूखे चेहरों को देखकर बोर हो रहा था। वह कहीं बैठकर बोरियत का उतना समय बिताना चाहता था, जितना खान को इस बिना सिर पैर वाले काम के लिए चाहिए था। लेकिन जब खान खुद इस अनजान काम में इतना बिज़ी था, तो उसकी हिम्मत कैसे होती, लेकिन अचानक उसकी आँखों की उदास झीलें, जिनमें शहर एक शांत शाम को जम्हाई ले रहा था, एक नई चमक के साथ ज़िंदा हो गईं। वह रुका और इस खूबसूरत लड़की को देखा, जो अभी-अभी एक टेंट से बाहर आ रही थी। अमेरिकी फैशन के रंग की छाया में, उसका लाल और सफेद पतला शरीर, उसकी नंगी सुडौल पिंडलियां, भरी हुई बाहें और ऊँची एड़ी के सैंडल से झांकते उसके खूबसूरत सफेद पैर, जो उसके पूरे शरीर से ज़्यादा आकर्षक और सुडौल थे, बाले की रीढ़ की हड्डी में सिहरन पैदा किए बिना नहीं रह सके। और जैसे ही उसने अपना चेहरा उठाकर बाले की तरफ देखा, उसकी चौदह आँखें चमक उठीं। अगर शेख सादी ने काले तिल की तारीफ़ न की होती, तो बाले इस इटैलियन खूबसूरत लड़की की खूबसूरती पर एक पूरा दीवान लिखने का फैसला कर लेता। उसकी पतली, नुकीली नाक पर, उसकी उभरी हुई भौंहों पर घनी पलकें थीं, और उसकी आँखें, झील की तरह पारदर्शी, गहरी थीं।

पलकें हल्की भूरी थीं, बस इतनी कि भौंहें अंदर धंस जाएं। उसके बाल गहरे भूरे रंग के थे और उनके सिरों पर हल्का सुनहरा रंग था।

एक तो उसकी आग जैसी खूबसूरती और दूसरी उसकी भयानक जवानी, लेकिन उसने अपने साथ कितना बड़ा अन्याय किया था कि वह एक साइंटिस्ट थी। ऐसा लग रहा था जैसे हरे-भरे खेत पर पाला पड़ गया हो। बाले ने उसे अपनी साइंटिफिक रुचियों की तरह सूखा समझकर एक लंबी ठंडी आह भरी और मन ही मन दुनिया बनाने वाले को पुकारा। वह आगे बढ़ना चाहता था कि इस लड़की ने उसे टोक दिया। उसने उसे ऐसे

देखा और किसी ओरिएंटल लड़की की तरह शरमाने के बजाय, उसके चेहरे पर मुस्कान बिखर गई ।

वह मुस्करा रही थी।

"हेलो," उसने बाले से कहा, उसकी ओर बढ़ते हुए, और बाले अचानक से मिले "हेलो" पर उछल पड़ा।

"हेलो," मैं आपसे बात कर रही हूँ । उसने फिर कहा । बाले के नज़रिए से उसने साफ़ अंग्रेज़ी में बात की।

" हैलो, जी कहिए "

"मैं आपको पहचानने की कोशिश कर रही हूँ। शायद, शायद हम जिनेवा में न्यूक्लियर कॉन्फ्रेंस में मिले थे?"

"हाँ ?" बाले चौंका, लेकिन तुरंत उसकी नज़र खान पर पड़ी। जो मुड़ कर उसे घूरने लगा था ।

"हाँ, हाँ। उसने पीछा छुड़ाने के लिए कहा, हालांकि वह लड़की से पीछा छुड़ाना तो दूर उसका पीछा करना चाहता था , लेकिन सुपरिटेंडेंट खान को देख कर उसकी जान आधी आधी होकर दो टुकड़ों में बँट गई थी। काश उस समय उसका यह रूखा-सूखा बॉस कम से कम कहीं इधर उधर चला जाता। वह मन ही मन प्रार्थना करने लगा।

" ओह, तुम्हारे साथ कोई और भी है। खैर, बाद में मिलते हैं।" यह कहते हुए वह मुस्कुराई।

"बस एक मिनट, "बाले ने उसे टोका।

"कहो?" वह फिर रुकी। उसका लहजा नरम था और बहुत विनम्र नहीं था।

"मैं आपका नाम भूल गया " बाले ने लड़खड़ाते हुए कहा।

" ओह, मेरा नाम सिल्वाना डी कोबा है। और तुम्हारा .....?

बाले ने इस अचानक आए सवाल का जवाब नहीं सोचा था। और सोचने के लिए एक पल भी न मिला , जवाब देने के बजाय, उसने खान की तरफ देखा। खान का रूप देखकर ही उसके रोंगटे खड़े हो गए।

"क्या तुम भूल गई ? सब मुझे शकरकंद कहते हैं।"

"शकरचंद ?

"जी नहीं , शकरकंद । मुझे उम्मीद है कि हम फिर मिलेंगे।"

"हाँ, हाँ, आखिर तुम कैंप में ही तो रहोगे," उसने जाते हुए कहा, और बाले को भी खान के पीछे एक पालतू मेढ़े की तरह चलना पड़ा, फूल की जगह अपनी छाती पर एक पत्थर लिए हुए।

बस एक ही बात थी कि वह उसे अपने सींग से नहीं मार सकता था, वरना उसकी किस्मत चमक जाती।

‘वह कौन थी?’ खान ने चलते हुए बाले से पूछा।

"एक रहज़न , अक्ल व होश , ऊदीपोश, शैम्पेन फ़रोश --

"क्या वह शराब की एजेंट है?" खान ने हैरानी से पूछा।

" साइंटिस्ट है , लेकिन उसकी आँखों से शैम्पेन टपकती है ।

‘तुम उससे क्यों उलझ गए थे ?’ खान ने दुखी होकर पूछा।

"मैं कहाँ ? उसने दोनों कानों पर हाथ रखकर और सिर हिलाते हुए कहा। "मुझे देखते ही उसे मुझसे प्यार हो गया था। वह कह रही थी, 'डार्लिंग, जब हम जिनेवा में मिले थे।'"

" हाँ हाँ , ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम शायद शेक्सपियर ने आपकी ही शान में लिखा होगा ।

"आप इस पर यकीन क्यों करने लगे? अलखुश्क, वाअलखुश्क, अलखुश्कात ।"

जवाब में, खान ने उसे तीखी नज़रों से घूरा।

"इसका मतलब है 'खुशकों को हर चीज़ में खुश्क ही नज़र आता है । गुस्ताखी माफ़ करें।'"

"तुम बहुत बेकाबू होते जा रहे हो। "

अब वह मिलिट्री पोस्ट की तरफ़ चलने लगा, जो मशीनों वाली चट्टान से कुछ दूरी पर थी, लेकिन अचानक उसके कदम रुक गए। एक टेंट के दरवाज़े पर खड़े लोगों में से उसे एक चेहरा दिखा जिसे देखकर इनको भागकर दूसरे टेंट के पीछे छिपना पड़ा।

"जैकेट वाला वो आदमी।"

अब बाले की नज़र भी उस पर पड़ गई थी। वो खान का मतलब समझ गया था।

"हमें पता लगाना होगा कि वो कौन है।" खान ने अपनी नज़रें उसके चेहरे पर गड़ाए रखीं और कहा

"जिस तरह से वह बात करता है, उससे लगता है कि वह एक साइंटिस्ट है। देखो वह कितना बेतकुल्लफ़ी

से इन लोगों से बात कर रहा है।"

"यानि की क्या सभी बेतकुल्लफ़ लोग साइंटिस्ट होते हैं?" खान ने मुड़कर उसे टेढ़ी नज़रों से देखा।

"मेरा मतलब ये है कि...

"चुप रहो," खान ने कहा। फिर वह खुद बड़बड़ाया। "हमें किसी तरह इस सोसाइटी में शामिल होना पड़ेगा ।"

"मेकअप। बाले ने धीरे से कहा।

"लेकिन अब उसके लिए समय कहां है?"

"तो फिर मुझे इजाज़त दीजिए।"

"क्या करेंगे आप

"इस लड़की से मिलने के बाद मैं उनके साथ शामिल हो जाऊंगा।

"यहां भारतीय वैज्ञानिक भी हैं। वे आपकी दाल गलने नहीं देंगे।"

"मैं किसी तरह मैनेज कर लूंगा।"

"ठीक है, जाओ, लेकिन अगर भांडा फूट जाए तो तो कभी पता नहीं चलना चाहिए कि कि तुम CID से हो।

"इस माहौल में मुझे डॉ. पटेल के अलावा कोई नहीं जानता , और वह इस समय यहां दिखाई नहीं दे रहा है।

खान ने कहा, "हाँ, मैं गलत हो सकता हूँ, लेकिन मैं अभी भी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हूँ। तुम कम से कम एक घंटे तक इस आदमी पर नज़र रखो , और मैं तब तक वापस आ जाऊँगा।"

"अच्छा आप का जाना किस तरफ है?"

"मेकअप," खान ने छोटा सा इशारा किया, और बाले समझ गए कि उनका क्या मतलब है और उन्होंने बाय-बाय कहा और टेंट के पीछे की ओर चले गया ।

☆☆☆

दाल गल गई

थोड़ी देर बाद वह डेलोसी के टेंट से बाहर निकल रहा था। यहाँ किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया, न ही उसे शक की नज़रों से देखा। ये साइंटिस्ट अपने ही ख्यालों और काम में इतने खोए रहने के आदी लग रहे थे कि इधर उधर कोई ध्यान ही नहीं था । कभी-कभी तो उनमें से जान-पहचान वाले भी एक-दूसरे के पास से गुज़रते हुए एक-दूसरे को देखकर चौंक जाते थे। विदेशी साइंटिस्ट के लिए जो टेम्पररी एंट्री परमिट इमरजेंसी सिफ़ारिशों के तहत कैंसिल कर दिए गए थे, उनकी ज़्यादा सफ़लता से जाँच नहीं हो रही थी, न ही कोई ऐसी दिक्कत आई थी जिसके लिए ऐसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती। अगर किसी और देश में भी ऐसी कोई घटना होती, तो दुनिया के साइंटिस्ट को पढ़ने के लिए बुलाया जाता। इन सब साइंटिस्ट की सोच भी अजीब थी। वे या तो एक-दूसरे को पहचानते ही नहीं थे, या फिर इस तरह पहचानते थे कि सालों तक अनजान लोगों को भी जान-पहचान वाला समझते थे। असल में, इसकी वजह उनका किसी न किसी स्टडी में लगातार बिज़ी रहना था, जिससे वे अपनी काम के बाहर की दुनिया को भूल गए थे।

किसी ने बाले पर ध्यान नहीं दिया, या अगर दिया भी, तो बस ऐसे जैसे वे उसी कम्युनिटी के मेंबर हों, और वे अपनी कम्युनिटी के साथ तभी ज़्यादा करीबी रिश्ते बनाते थे जब उनकी कोई कॉमन मीटिंग होती थी या वे किसी साइंटिफिक टॉपिक पर बात कर रहे होते थे। सिल्वाना जल्द ही उसे मिल गई। वह एक झाड़ी के पास आराम कर रही थी, एक युवा अमेरिकन साइंटिस्ट से बात कर रही थी। बाले को देखकर, वह फिर मुस्कुराई।

"हेलो," उसने फिर कहा।

"हाय, आप कैसी हैं, मिस सिल्वाना?" बाले ने उनके पास आकर औपचारिक अभिवादन किया।

"आप शायद एक दूसरे को जानते होंगे?" उसने अमेरिकी वैज्ञानिक को बाले की ओर इशारा करते हुए कहा।

"शायद मैंने इसे कहीं देखा हो। वैसे, हम साइंटिस्ट्स के लिए खुद को भूलना नामुमकिन नहीं है," उस युवा अमेरिकन ने मुस्कुराते हुए कहा, जिसकी लंबी दाढ़ी से उसकी मेंटल या प्रैक्टिकल व्यस्तता पता चल रही थी।

आप डॉ. स्मिथ हैं, और आप डॉ.. डॉ.. वह बाले के नाम पर अटकने लगी।

"शकरकंद -- बाले मुस्कुराया और वाक्य पूरा किया।

"ओह, हाँ। भारतीय नाम असल में काफी अजीब होते हैं। उन्हें याद रखने के लिए आपको उन्हें एक से ज़्यादा बार रटना होता है ," सिल्वाना ने मज़ाकिया लहजे में कहा।

"एक से ज़्यादा मीटिंग में अपने आप याद रह जाते हैं ।--- अमेरिकन ने यह कहा और हंसते हुए बाले से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। बाले ने उसके चेहरे की तरफ देखा। उसमें किसी भी तरह का कोई इमोशन नहीं था। सिल्वाना के लिए भी, उसके चेहरे पर कोई किसी तरह की फीलिंग नहीं थी।

"आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा, डॉ. स्मिथ।"

"और मुझे भी। लेकिन एक भारतीय वैज्ञानिक के साथ तो और भी ज़्यादा, क्योंकि यह देश अब विज्ञान के क्षेत्र में उभर रहा है। --डॉक्टर ने विनम्रता से जवाब दिया।

"मेरे देश के लिए इन अच्छी भावनाओं के लिए धन्यवाद, -----बाले भी उनकी तरह गंभीर हो गया।

"डॉक्टर, क्या हम साइंस के इस कभी न खत्म होने वाले टॉपिक को थोड़ी देर के लिए छोड़कर शाम के इस सुहाने समय में किसी और चीज़ पर बात नहीं कर सकते?" सिल्वाना ने उनसे थोड़े ताने भरे लहजे में पूछा।

117

"अगर आपको इन पथरीले किनारों पर शामें अच्छी लगती हैं, तो आपको इस बारे में डॉ. शकरकंद से बात कीजिए , मैं एक रिपोर्ट बनाऊंगा, और फिर मैं आपसे मिलूंगा। ------ डॉ. स्मिथ उठे और अलविदा कहते हुए बोले, और बाले को लगा कि तब भी उनके चेहरे पर कोई इमोशन नहीं था, जैसे उन्हें इस खूबसूरत और जवान इटैलियन लड़की से ज़्यादा अपने काम में इंटरेस्ट था। सिल्वाना ने भी बिना किसी नाराज़गी के उन्हें जाने दिया और बाले मुस्कुराता रहा । उनके जाने के बाद, बाले और सिल्वाना अकेली रह गईं।

"चलो, यहीं थोड़ा घूमकर आते हैं।-- बाले ने टेंट के पीछे ऊँची चट्टानों की तरफ इशारा किया, क्योंकि वहाँ से कैंप में आते-जाते और कैंप में घूमते-फिरते लोग साफ़ दिख रहे थे। सिल्वाना को ज़रा भी तकलीफ़ महसूस नहीं हुई। वह मुस्कुराते हुए उसके साथ चली। बाले की इमोशनल हालत अंदर से अजीब होती जा रही थी। वह तो बस इस विदेशी सुंदरी के आकर्षण के करीब रहना चाहता था, लेकिन शायद आज उसकी किस्मत का सितारा बुलंद था। उसे उसकी दोस्ती और अपनापन भी मिल गया था। उसकी रगों में एक तरह का नशा तैर रहा था और वह इस पुलिस सार्जेंट को तलाक देकर इस साइंटिस्ट लड़की के साथ ज़िंदगी भर घूमना चाहता था। जब घूमते हुए उनके शरीर टकराते, सिल्वाना को कुछ महसूस होता या नहीं, बाले के शरीर में उसके दिल के हेडक्वार्टर से लेकर रीढ़ की हड्डी तक एक करंट दौड़ जाता। उसने तय कर लिया था कि अब की बार, अकेले में, वह इस नए साथ के लिए ऊपर वाले का शुक्रिया अदा करेगा।

"विज्ञान के किस पहलू में आपकी सबसे अधिक रुचि है?" सिल्वाना ने चलते हुए पूछा।

बाले के मुंह से निकला, "सेक्स", लेकिन उसने तुरंत अपनी जुबान बंद कर ली।

118

उसे डर था कि शायद उसे यह जवाब पसंद न आए, लेकिन वह मुस्कुराती रही।

सिल्वाना ने कहा, "यह कोई बड़ी समस्या नहीं है," और इसी विषय पर बहस शुरू हो गई।

"मैं इसे प्रकृति का रूटीन समझती हूं।"

"असल में, यह यहाँ यह एक बड़ी प्रॉब्लम है। --बाले ने बातें बनानी शुरू की । साथ ही, वह कभी-कभी सिर उठाकर कैंप की तरफ देखता। अपनी सारी इमोशनल बातों के बावजूद, ड्यूटी का एहसास उसके दिल और दिमाग से दूर नहीं था। वह आदमी अभी भी उसकी नज़र में था। वह अभी तक उस टेंट से बाहर नहीं निकला था जिसमें वह घुसा था।

"क्यों? क्या भारत में अलग-अलग तरह के लोग पैदा होते हैं?" सिल्वाना ने सीधे-सीधे पूछा।

"बात यह नहीं है, लेकिन हमारी पूर्वी सभ्यता ने इस समस्या को लोगों के लिए थोड़ा मुश्किल बना दिया था। ----बाले ने दार्शनिक तरीके से बात की। उनकी कुछ तारीफ़ें और कुछ बेवकूफ़ियाँ कभी-कभी उन्हें बच्चों की तरह चंचल बना देती थीं, लेकिन किसी गंभीर प्रदर्शन के मौके पर उन्हें पहचानना मुश्किल होता था। वह ज़रूरत के हिसाब से हर माहौल के हिसाब से ढल जाता था , जैसे कि वह उसका हिस्सा हों। उस समय, इस ज़िंदादिल पुलिस सार्जेंट को देखकर या उनके बात करने के तरीके से यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल था कि उन्हें इस तरह के विषय की कोई खास समझ नहीं है।

"लेकिन आजकल लोग काफी रियलिस्टिक हो गए हैं?" यह कहते हुए वह उसे हैरानी भरी नज़रों से देखने लगी।

"हाँ। मेरी तरफ़ देखो। कम से कम मैं अभी तुमसे यह कहने में नहीं हिचकिचाऊँगा कि आप मे बला की कशिश है।

"ओह, यह कुछ खास नहीं है।------ वह हँसी। अगर आपका मतलब सेक्स अपील से है, तो यह हर औरत की जवानी की विरासत है, और अगर यह मेरा कैरेक्टर है, तो मैं इसे अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के लिए ज़रूरी समझती हूँ --

कि आदमी दोस्त बनाये और खुद भी दोस्त बने । दोस्ती की नींव ही ज़िंदा रहने की हिम्मत देती है।" उसने अचानक साफ़ जवाब दिया।

"आपके विचार बहुत दिलचस्प हैं। -बाले इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सका।

"और आप भी कम दिलचस्प नहीं हैं, डॉक्टर," वह उसकी आँखों में देखते हुए हँसी, और बाले का दिल चाहता था कि वह उससे कहे, "डॉक्टर, यहाँ कौन उल्लू का पट्ठा है, हम आपके वजह से मरीज़ बने हैं, लेकिन भले ही डॉक्टर बनने के काबिल नहीं , फिर भी इस समय डॉक्टर बन गया।"

"आप कब तक यहां रहेंगी ?"

"जब तक यह नई समस्या हल नहीं हो जाती।

"और अगर यह पूरी ज़िंदगी में हल नहीं हुआ तो? --बाले ने अपने टोन में थोड़ा मज़ाकियापन डालते हुये कहा।

"तो ज़िंदगी भर ही सही ।" ------उसने भी उसी तरह कहा।

"आप यहां कौन से मिशन के साथ आई हैं?"

"मैं अमेरिकन मिशन के साथ आई थी लेकिन इंडिपेंडेंट हूँ। ---उसने कहा, चलते समय रास्ते में पड़े एक पत्थर से ठोकर खाकर गिर गई। लेकिन फिर वह अपना पैर पकड़कर खुद ही बैठ गई। शायद उसका अंगूठा घायल हो गया था। वह ज़मीन पर झुकी और उसे सहलाने लगी।

"ओह, ज़्यादा चोट तो नहीं लगी? बाले ज़मीन पर झुका और उसे सहारा देने लगा ।

"नहीं, ज़्यादा नहीं। --यह कहकर वह बाले का सहारा लेक खड़ी हो गई। उसके खुशबूदार, आधे सुनहरे, गहरे भूरे बाल, रेशम की लटों की तरह, बाले के के होंठों और

गालों पर गिर रहे थे। तो बाले ने उनको इस तरह चूम लिया कि सिल्वाना को इसका एहसास भी नहीं हुआ।

वह एक पैर पर थोड़ा लंगड़ाकर उसके सहारे चलने लगी। हर बार जब वह एक पैर पर थोड़ा लंगड़ाती

तो उसका सिर बाले की छाती से दाहिनी ओर टकराता। बाले का एक हाथ उसे सहारा देने के लिए उसकी कमर पर था और दूसरे हाथ से वह उसका हाथ पकड़े हुए था जिसे उसने बाला की गर्दन के पीछे रखा था। कभी-कभी उनके शरीर इतने पास आ जाते कि टक्कर से बाला के खुद के कदम लड़खड़ाने लगते। लेकिन सिल्वाना के चेहरे पर या उसके बात करने के तरीके में अब तक कोई इमोशनल लचीलापन नहीं था। लेकिन उसके एक सवाल ने बाला को चौंका दिया।

"क्या तुम्हें मेरे बाल पसंद हैं?" उसने चलते हुए उसकी तरफ देखते हुए पूछा। उसके चेहरे पर कोई बुरा भाव नहीं था। वह अभी भी मुस्कुरा रही थी, और ज़िंदगी में पहली बार, वह इस अजीब लड़की को समझ नहीं पाया जो बातचीत में इतनी शर्मीली, अपने व्यवहार में इतनी विनम्र और अपने तौर-तरीकों में इतनी तमीज़दार थी। भावनाओं का पूरा पहाड़ बालों तक ही सीमित था। सिल्वाना की अब तक की बातचीत का लहजा कैज़ुअल, दोस्ताना और कुछ हद तक अजीब था।

वह इतना खुला हुआ नहीं था लेकिन खुलापन अपने आप में पश्चिमी सभ्यता की एक खासियत थी, इसलिए इसे किसी तरह का रोमांस या इमोशनल गलती समझना समझदारी नहीं थी। बाले को उसके सवाल पर थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। वह चुप हो गया।

"लगता है आप सेक्सोलॉजी के एक्सपर्ट नहीं हैं, वरना आप इस तरह सच से दूर नहीं भागते, --सिल्वाना ने उसे एक और डायलाग मारा और बाले को लगा जैसे उस पर पानी का घड़ा डाल दिया गया हो।

"मुझे शर्म आ रही है, सिल्वाना, मैंने इमोशन में आकर उन बालों को चूम लिया।" उसने शर्माते हुए माफ़ी मांगी।

"मुझे कोई दिक्कत नहीं थी। शर्म कि क्या बात है ? -----उसकी आवाज़ बहुत पास से भी दूर से सुनाई दे रही थी। वह उस समय उसे एक शरारती बच्चे की तरह चिढ़ा रही थी, और इस ख्याल से ही उसका खुद पर काबू खो गया, उसे लगा कि कहीं वह उसकी भावनाओं से खेलने की कोशिश तो नहीं कर रही। उसने फिर कोई जवाब नहीं दिया।

"मुझे हैरानी है कि आप अभी क्या सोच रहे हैं? --वह बिना सोचे-समझे हंस पड़ी। "साइंटिस्ट सच में भोले होते हैं। बिल्कुल मासूम बच्चों की तरह।"

"हाँ?" बाले ने चौंक कर कहा।

“ये रहा मेरा टेंट आ गया , क्या तुम मुझे अंदर ले चलोगे ?” सिल्वाना ने सामने टेंट के दरवाज़े कि ओर इशारा करते हुए कहा। और बाले को एक बार फिर साइंटिस्ट्स की बेध्यानी पर यकीन हो गया कि उन दोनों को इस तरह चलते हुए देखकर भी, किसी ने उन पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। उनमें से किसी ने भी सिल्वाना से यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि वह लंगड़ा क्यों रही है। बाहर छह,सात लोग खड़े थे, बाकी लोग अपने टेंट में थे, या इधर-उधर घूम गए थे, और यह भी हो सकता था कि उनका सिल्वाना से जियाद संपर्क न हो।

इस टेंट में दो और बेड थे। और सिल्वाना के बेड और उनके बीच एक पर्दा लगा हुआ था। उस समय वे दोनों बेड खाली थे।

"अब ठीक है, तुम मुझे यहीं बिठा दो , मैं दवा लूँगी, अब ज़्यादा दर्द नहीं है।" उसने ये सारी बातें एक ही साथ कह दीं, जिसका मतलब था कि अब तुम जा सकते हो। जबबाले ने उसकी कमर में हाथ डालकर उसे सहारा देते हुए उसके बिस्तर पर बिठाना छह तो उनकी छाती लापरवाही से टकरा गईं। लेकिन क्या वह अंदर से बर्फ़ की तरह जम गई थी? उस पर इसका ज़रा भी इमोशनल असर नहीं हुआ, हालाँकि बाले का दिल उछलकर उसके गले में अटक गया। उसने बोझल मन से छुट्टी माँगी और बाहर चला आया । उसे अलविदा कहते हुए वह अब भी मुस्कुरा रही थी और उसने उम्मीद जताई थी कि हम फिर मिलेंगे।

जब वह जा रहा था, तो बाले को पता नहीं था कि उसके कदम कहाँ पड़ रहे हैं। आज वह एक ऐसी लड़की से बुरी तरह हार गया था जिसने उसे आज पहली बार देखा था और जो पहली नज़र में उसे एक ऐसी इच्छा लग रही थी जिसे पूरा कर पान नामुमकिन लग रहा था, लेकिन इत्तेफ़ाक से उसके इतने करीब होने के बाद भी वह यह नहीं समझ पाया था कि वह कैसी लड़की है, क्या है और इतनी जल्दी उसके इतने करीब क्यों और कैसे आ गई थी। वह भी इस तरह से कि इतने करीब होने के बावजूद ऐसा लग रहा था जैसे वह बहुत दूर हो।

इन्हीं ख्यालों में उलझा हुआ, वह टेंट के बीच से गुज़र रहा था, तभी उसके दाहिने गाल पर किसी चीज़ ने ज़ोर से मारा। वह ऐसे एक तरफ़ उछला जैसे उसे बंदूक की गोली लगी हो, लेकिन वह कागज़ का एक छोटा सा गोला था।

उसने चारों ओर देखा, और एक बड़े, मूंछों वाले सैनिक को एक टेंट की आड़ में खड़ा देखा, और बाले की नज़रों से यह छिपाना नामुमकिन था कि वह कोई और नहीं बल्कि रऊफ़ ही हो सकता है।

बाले ने चुपके से कागज़ का वो गोला उठाया, फिर वह बाहर निकल गया और लोगों की नज़रों से बचते हुए कैंप में चला गया।

123

बाले बिजली के खंभों में से एक के नीचे खड़ा हुआ और मुड़ा हुआ कागज़ खोलकर पढ़ने लगा।

इसमें लिखा था:

रऊफ का मेकअप बॉक्स छोटे खाकी टेंट में है । अंधेरा होने से पहले अपना मेकअप कर लेना। इस आदमी का कभी भी पीछा न छोड़ना । मुझे भी अपने करीब समझना । डॉ. पटेल यहीं हैं, उस से बच के रहना ।

एक नज़र में कागज पर लिखा पढ़ने के बाद, बाले ने लाइटर से उसे जला दिया और लंबे कदम उठाते हुए
आगे बढ़ गया।

☆☆☆

124

रोशनी जलने लगी

रूसी साइंटिस्ट ने अपने एक्सपेरिमेंट की सारी तैयारी पूरी कर ली थी और दूसरे साइंटिस्ट के फेल होने के बाद, कैंप में अब सबका ध्यान इनकी कोशिश पर था। अमेरिकी साइंटिस्ट और कनाडाई एक्सपर्ट टीमों को रूसियों से कोई खास उम्मीद नहीं थी, क्योंकि वे उनकी कोशिशों को आखिरी रास्ता मान रहे थे, लेकिन अफवाहें अभी भी

फैल रही थीं। लोग पहले से ही अपने-अपने अंदाज़े लगा रहे थे। रूसी साइंटिस्ट का रवैया बंद मुट्ठी जैसा था और किसी को नहीं पता था कि साइंस के फील्ड में उनकी काबिलियत कहां तक पहुंच गई है।

उस समय, डॉ. पैरट के टेंट में बहुत से लोग जमा थे और इस बात पर चर्चा हो रही थी कि सुबह क्या होगा। अमेरिकन प्रोफेसर कुछ कहने ही वाले थे कि डॉ. स्मिथ ने उन्हें टोक दिया जो अंदर आ गए। उनके साथ एक नया आदमी था। वह बहुत लंबा, हेल्दी, लेकिन अधेड़ उम्र का आदमी था। उसके चेहरे पर छोटी फ्रेंच-कट दाढ़ी थी। उसकी आँखें तेज़ थीं और पलकें थोड़ी सूजी हुई थीं। उसका चेहरा सांवला था और दूर से वह स्वर्गीय सम्राट जॉर्ज V जैसा दिखता था। उसकी पर्सनैलिटी आकर्षक और गंभीर थी। वह इस तरह से अंदर आया कि टेंट में मौजूद दूसरे लोग उसका स्वागत करने के लिए खड़े हो गए।

"माफ़ करना। मैंने तुम्हारे काम में दखल दिया," उसने अपनी चमकदार छड़ी को बगल में रख कर और अपने दस्ताने उतारते हुए कहा।

"कोई बात नहीं, हम नए मेहमान का स्वागत करते हैं," डॉ. पैरट ने आगे बढ़कर हाथ मिलाते हुए कहा।

"आप दक्षिण भारत के मशहूर साइंटिस्ट प्रोफेसर दाऊद से मिलिए ।"

डॉ. स्मिथ भी अधेड़ उम्र के एक हेल्दी और खुशमिजाज आदमी थे, उनकी पर्सनैलिटी उनके सर्कल में काफी प्यारी और इज्ज़तदार थी। बहुत नरम और प्यार भरी बातचीत उनकी खास आदतों का हिस्सा थी। वह अजनबियों से भी जल्दी फ्रैंक हो जाते थे और उन्हें अपना सच्चा दोस्त बना लेते थे। कुछ बिज़ी साइंटिस्ट जैसा चिड़चिड़ापन उनमें बिल्कुल नहीं था, हालांकि वह खुद भी दूसरों से कम बिज़ी नहीं थे।

"प्रोफेसर, आपका क्या ख्याल है ?

बैठते ही उन्होंने नए मेहमान से बातचीत शुरू कर दी। शायद वह होवरक्राफ्ट की बात कर रहे थे।

"यह?" --उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "पहले आप लोग मुझे अपने विचार बताएं, फिर मैं अपने ख्याल पेश करूंगा।" प्रोफेसर दाऊद ने कहा।

हम सब इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि किसी अनजान और अनोखी ताकत ने इस प्लेन के चारों ओर तरंगों का एक सुरक्षा कवच बना दिया है, जो इसे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव, एटमोस्फेरिक रेडियो तरंगों और ग्रह के दबाव से अलग कर रहा है...

"एयर-फ्रीज कर दिया गया है ।-- डॉ. पैरट ने कहा,

" लेकिन वह अनजान और अनोखी शक्ति क्या हो सकती है? कम से कम तुम्हें एयर-फ्रीज का तरीका तो पता होगा?" प्रोफेसर ने उससे पूछा।

"हम अभी यहां तक नहीं पहुंच पाए हैं, अगर हम पहुंच पाते तो अभी तक आसमान में एक शहर बना लेते।" डॉ. स्मिथ ने बीच में टोकते हुए जवाब दिया।

"लेकिन अगर आपके सुम्मा प्रोजेक्ट में न्यूक्लियर तरंगों के बारे में जानकारी है, तो आपके पास उनके असर को बेअसर करने का कोई फ़ॉर्मूला भी होना चाहिए?"

"आप सही कह रहे हैं, लेकिन हमारा विज्ञान इन तरंगों का पता नहीं लगा पाया है। एक बार एक डॉक्टर, ज़ार ने न्यूयॉर्क हेराल्ड में इस संभावना पर अंदाज़ा लगाया था,

"लेकिन इस बारे में अभी तक कोई जानकारी नहीं दी गई है।"

"तो डॉ. ज़ार?" प्रोफ़ेसर दाऊद ने हैरानी से दोहराया। "ये बुज़ुर्ग कौन हैं? मैं शायद उनका नाम पहली बार सुन रहा हूँ।"

"हम तो उसे जानते भी नहीं हैं। अखबार में उसका आर्टिकल पढ़ने के बाद हमने खुद उससे मिलने की कोशिश की, लेकिन पहले तो पता चला कि वह किसी से नहीं मिलता , और बाद में शायद हमारी कोशिशों से डरकर कहीं चला गया।------ डॉ. स्मिथ ने कहा।

"तो फिर वह सचमुच एक रहस्यमय व्यक्ति है।"

"ऐसा नहीं है कि साइंटिस्ट अक्सर अकेले रहते हैं, और सच कहूँ तो, कुछ साइंटिस्ट इतने सावधान रहते हैं कि वे कुछ एक्सपेरिमेंट में अपने भरोसेमंद असिस्टेंट को भी शामिल नहीं करते।

"क्या आपको कम से कम उनके आर्टिकल का टेक्स्ट तो याद है?" डॉ. डेविड ने पूछा।

"यह बहुत साफ़ नहीं था। डॉ. ज़ार ने लिखा था कि कॉस्मिक किरणें न्यूक्लियर हथियारों की रक्षा करती हैं।
एक तरफ, वे हवा की रेडियो तरंगों और सूरज के सीधे संपर्क के असर को रोकती हैं, और दूसरी तरफ, वे पृथ्वी के डायनामिक ग्रेविटी को अपने असर वाले इलाके में एटमॉस्फियर तक पहुंचने से रोकते हैं। ऐसे में, सतह पर उनका पता चलने पर, न्यूक्लियर तरंगों की पनाह पृथ्वी के ग्रेविटेशनल अट्रैक्शन के ऊपर नॉन-एयर स्पेस का एटमॉस्फियर बनाती है, जहां सब कुछ हो सकता है।-------- डॉ. पैरट ने कहा। --असल में, वह स्पेस में स्पेस स्टेशन बनाने के साइंटिस्ट्स के प्लान की बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस तरह स्पेस स्टेशन भी बनाए जा सकते हैं जो सभी तरह की आसमानी आपदाओं से सुरक्षित और स्थिर रहेंगे।"

किर्कवुड में उन्होंने आसमानी एयर फ्यूल स्टेशन और प्लेन के लिए एक पार्किंग स्टेज बनाने का भी प्रस्ताव रखा।--- डॉ. स्मिथ ने इसका हिंट दिया।

डॉ. दाऊद ने तारीफ़ करते हुए कहा, " तब तो इस आदमी का दिमाग़ सचमुच कमाल का था।"

"अब यह कहा जा सकता है, नहीं तो, यहां हुई इस घटना से पहले, ज़्यादातर लोग इसे किसी तरह का यूटोपिया, या नामुमकिन अंदाज़ा मानते थे। असल में, शिकागो यूनिवर्सिटी में एक मीटिंग में, कुछ साइंटिस्ट्स ने तो इसे एक बूढ़े आदमी का पागलपन भी कह दिया था।"---डॉ. पेरिट ने जवाब दिया।

"अब, क्या आप कुछ कह सकते हैं?" एक युवा वैज्ञानिक ने व्यंग्यात्मक लहजे में डॉ. दाऊद से पूछा।

"आप जैसे दुनिया भर में मशहूर साइंटिस्ट के सामने मेरी क्या पहचान है?" प्रोफेसर दाऊद ने अपनी निराशा ज़ाहिर की। "वैसे, मुझे लगता है कि यह ताकत न्यूक्लियर साइंस से कहीं आगे है।"

"आपका क्या मतलब है?" डॉ. पैरट ने चौंकते हुए पूछा।

प्रोफेसर दाऊद ने साइंटिस्ट से पूछा, "क्या आप मानते हैं कि यूनिवर्स में हज़ारों सूरज हैं और हर सूरज के आस-पास अनगिनत ग्रह हैं, जिसमें हमारा भी शामिल है?"

"यह एक जानी-मानी बात है।"

"तो कभी-आपने ये सोच कि ये ग्रह स्पेस में लटके हुए हैं, और क्यों एक ही दिशा में घूम रहे हैं ? ये सब एक तरफ लुड़क क्यों नहीं जाते ? ये किस ताकत से घूम रहे हैं? --- यह सवाल पूछकर वह इन साइंटिस्ट के चेहरे देखने लगे। हालांकि यह सवाल उनके लिए अजीब नहीं था। उन्होंने सोलर सिस्टम और रोटेशन सिस्टम की समस्याओं पर बार-बार स्टडी की थी, लेकिन जिस तरह से यह सवाल पूछा गया था वह नया था और इसने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया।

"यह सूरज का अट्रैक्शन है, जो उनके सिस्टम के रोटेशन में रुकावट नहीं डालता।

"लेकिन जब सूरज से उठने वाले लावा की लपटें धीमी हो जाती हैं और उसके धब्बे बड़े हो जाते हैं, तो क्या इस सिस्टम में कोई गड़बड़ी होती है? क्या उस समय इस सिस्टम में कोई गड़बड़ी होनी चाहिए?" प्रोफेसर दाऊद का सवाल उनके लिए अनएक्सपेक्टेड था।

"इसके रिएक्शन से ग्रहों का घूमना भी रुक सकता है। --एक साइंटिस्ट ने अपनी सीट पर बैठे हुए जवाब दिया।

"बिल्कुल बेकार," डॉ. पैरट ने मुड़कर उसे घूरा। "इससे ज़्यादा से ज्यादा इलेक्ट्रिकल वेव्ज़ फ़्रीज़ होंगी, लेकिन सिर्फ़ कुछ समय के लिए। जब सूरज लगातार इनएक्टिव रहने के बाद सांस लेता है, तो सांस लेने के इस छोटे से समय के लिए उसकी लपटें धीमी हो जाती हैं और धब्बे बन जाते हैं, और यह गैप एक या दो घंटे से ज़्यादा नहीं होता। इतने गैप में ग्रहों का ऑर्बिटल सिस्टम डिस्टर्ब नहीं हो सकता। सिर्फ़ इस मूवमेंट से पैदा होने वाले करंट का फ्लो या ग्रोथ ही इस समय के लिए रुक सकता है।" डॉ. पैरट ने बातचीत में हिस्सा लिया।

"मुझे लगता है कि इस बेकार की चर्चा के बजाय, हमें डॉ. दाऊद से पूछना चाहिए कि वह क्या कहना चाहते हैं," डॉ. स्मिथ ने उन्हें बीच में टोकते हुए कहा।

मैं बस यह कह रहा था कि वह बल जो इन ग्रहों को अंतरिक्ष में रख सकता है। क्या चीज़ है ?"

"सोलर रेडिएशन की ट्रांसपेरेंट धूल जो सोलर सिस्टम के किनारों तक फैलती है, उसमें स्पेस बाले ंस की ताकत और सूरज का सीधा अट्रैक्शन होता है। डॉ. पैरट ने जवाब दिया।

उसी समय, एक और आदमी टेंट में आया। उसने डॉ. पैरट को इशारा किया, जिस पर पैरट ने आँख मारी और फिर प्रोफेसर दाऊद की ओर मुड़ा।

"तो फिर कास्मिक धूल ही अन्तरिक्ष में संतुलन बनाए रख सकती है।

तो फिर इसकी थोड़ी सी मात्रा भी हवा में पैन अमेरिकन एयरलाइंस के प्लेन को संतुलन में रख सकती है।-- प्रोफेसर दाऊद यह कहते हुए मुस्कुराए। लेकिन इस तर्क पर काफी रिएक्शन हुआ।

"क्या? एक साइंटिस्ट कोने से हैरानी से उछल पड़ा। और फिर सब एक दूसरे की शक्लें देखने लगे।

"यह संभव है। ऐसा लगता है जैसे सब ने इस बात को मान लिया हो।

" बिल्कुल संभव है। एक और बोला ।

"लेकिन ठहरिए । इस कास्मिक धूल को कंट्रोल करने के बारे में क्या ख्याल है? क्या आप सूरज को एक डिब्बे में बंद कर सकते हैं?" ----डॉ. पैरट ने प्रोफेसर दाऊद से पूछा।

"बिलकुल नहीं लेकिन यह रेडियोएक्टिव धूल जो एटमॉस्फियर के ऊपर ज़रूर पहुँचेगी। एटमॉस्फियर में जाने वाला साइंटिस्ट अपने किसी भी तरीके से इसे निकालने में कामयाब हो सकता है, यह नामुमकिन नहीं है। प्रोफेसर दाऊद ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

"हमम, ... हो सकता है ।" डॉ. पैरट ने फिर से सोचना शुरू किया।

"प्रोफेसर, आपकी जानकारी बहुत कीमती है। हमें उम्मीद है कि आपका साथ हमारे लिए काम आएगा। --------डॉ. स्मिथ प्रोफेसर दाऊद की तारीफ़ करते दिखे।

"मैं कल रूसियों के एक्सपेरिमेंट के बाद ही और कुछ कह पाऊँगा। मैं इजाज़त माँगता हूँ। ---------प्रोफेसर ने उन सभी को देखा और इजाज़त माँगी।

"आप कैंप में ही रह रहे हैं, है ना?" डॉ. पैरट ने पूछा।

"हाँ, नौवां टेंट मेरा है।"

"तो फिर मैं कल आपसे ज़रूर मिलूंगा," डॉ. स्मिथ ने खड़े होकर हाथ मिलाते हुए कहा।

130

"प्रोफेसर दाऊद ने वैज्ञानिकों से विदा ली और चले गए।"

इस वक़्त रात के 9:30 बज रहे थे। प्रोफेसर के जाने के बाद डॉ. पैरट भी उठ गए।

"मुझे कुछ काम है, उम्मीद है आप मुझे माफ़ कर देंगे। -----यह कहकर वह भी बाहर चला गया, उसके पीछे वह आदमी भी चला गया जो चुपचाप अंदर आकर खड़ा हो गया था, जिसने डॉक्टर को इशारा किया था।

एक के बाद एक सभी लोग जाने लगे, और टेंट में सिर्फ़ तीन साइंटिस्ट रह गए।

डॉ. स्मिथ अपने ख्यालों में खोए हुए थे, जब वे टेंट के दरवाज़े से बाहर निकले तो उन्होंने अपने दाहिनी ओर खूंटे से बंधी रस्सी पर ध्यान नहीं दिया। वे उसमें उलझ गए और गिर गए।

"ओह, डॉक्टर," पास से एक नरम, लचीली आवाज़ आई, और किसी ने उसका हाथ पकड़ लिया। वह रस्सी पर झूल गया।

"धन्यवाद, मिस सिल्वाना," डॉक्टर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

"तुम इतने खोए हुए क्यों रहते हो?" उसने हंसते हुए कहा। उस समय, हल्के नीले रंग की इवनिंग ड्रेस में, वह किसी कयामत की तरह लग रही थी।

" कहाँ? मैं बस एक तरह से. बेखयाली में टकरा गया. डॉक्टर ने अपने आँसू पोंछे.

"अच्छा, चलो मैं तुम्हें अपने फ्रेंच दोस्तों से मिलवाती हूँ," उसने आराम से उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

डॉक्टर ने साफ़ और गंभीर लहजे में कहा, "मुझे फ़ैशनेबल फ़्रांसीसी लोग पसंद नहीं हैं।"

131

"आप तो बस पूरे पादरी हैं। -- उसने मज़ाकिया लहजे में कहा। "वे फ्रांस के साइंटिस्ट हैं।" उसने कहा।-- पेरिस की सुंदरियां नहीं। आप जैसे साइंटिस्ट कहीं के भी हों , हमेशा रूखे सूखे ही रहते हैं।" वह हंसते हुए बोली।

जवाब में, डॉक्टर मुस्कुराया और उसके चेहरे को देखा और फिर एक सख्त नज़र से उस बेयरे को देखना शुरू किया, जो हाथ में एक बड़ा सा ट्रे लिए हुए गुज़र रहा था। बेयरे ने पहले डॉ. स्मिथ को और फिर सिल्वाना को गुस्से से देखा और धीरे से कुछ बुदबुदाने लगा।

"उसे क्या दिक्कत हो सकती है?" डॉक्टर ने उसकी हरकतों को ध्यान से देखते हुए और सिल्वाना के साथ चलते हुए कहा।

सिल्वाना ने अपनी राय बताई कि इन भारतीयों को सड़कों पर पुरुषों और महिलाओं के बीच आम मुलाकातें पसंद नहीं हैं।

"आलू दो आने , टमाटर चार आने के और गोभी छह आने की। और कुछ नहीं।

132

ऐसी तैसी इस सुंदर नागिन की , --- वह बड़बड़ाता हुआ करीब से गुजरने लगा।

"ओह, बेयरा । --डॉक्टर उस पर चिल्लाया। --तुम्हें क्या हुआ है?"

"हम को ? हम को बोला साहब ?"

"हाँ, अभी तुम कुछ बोलता ... .जाता .. चलते हुये ।" डॉक्टर ने टुकड़ों में कहा।

"ओह, सर, हमको रकीबे रुसिया हुया है, ।"

"क्या?" "डॉक्टर,कुछ न समझा , सिल्वाना भी उसे उत्सुकता से देख रही थी।

"शायद वह कुछ रशियन के बारे में बात कर रहा है।" सिल्वाना ने इंग्लिश में अंदाज़ा लगाया।

"क्या तुम रशिया की बात करता ? --डॉक्टर ने उससे कन्फर्मेशन के लिए पूछा।

अरे, अपनी इस बढ़िया समझ पर कैसे न लानत भेजी जाये । जी हाँ, मैंने भी यही कहा था। फिर वह सिलवाना को अजीब सी नज़रों से घूरता हुआ आगे चला गया ।

"होगी कोई बात , हमें क्या ? चलो चलते हैं।" सिल्वाना ने डॉक्टर का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ खींच लिया, और वह अचंभित सा , उसके साथ हो लिया।

जिस टेंट में वे अंदर गए, उसमें उस समय सिर्फ़ दो लोग थे। उसके बगल में एक पार्टीशन था, जहाँ से किसी के बात करने की आवाज़ें आ रही थीं, आवाज़ डॉ. पैरट जैसी ही थी, इसलिए डॉ. स्मिथ थोड़ा चौंके, लेकिन फिर उन्होंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और उन दोनों से हाथ मिला कर एक कुर्सी पर बैठ गया । उसी समय बेयरा भी अंदर आया। उसने एक बार फिर सिल्वाना को घूरा, और अब उसे इस नज़र से देखकर सिल्वाना की भौंहें थोड़ी तन गईं। शायद वह सोचने पर मजबूर थी कि बेयरा मुझे ऐसे क्यों घूर रहा है, लेकिन पता नहीं क्यों उसके माथे की झुर्रियाँ फिर से गायब हो गईं। वह यह सब भूल गई और डॉ. स्मिथ में ज़्यादा दिलचस्पी लेने लगी। पहले उसने इन फ्रेंच साइंटिस्ट, गाइ ब्रुक्सेल्स और घनबारू से मिलवाया और फिर खुद डॉक्टर से बात करने बैठ गई।

फ्रेंच साइंटिस्ट शायद किसी बातचीत में बिज़ी थे, उन्होंने डॉ. स्मिथ से हाथ मिलाने और दोस्ताना तरीके से पूछने के अलावा बात नहीं की कि वे कैसे हैं। वे बेयरा ट्रे पकड़े हुए वहीं खड़े रहा ।

"अब तुम क्या मांगता ?" आखिरकार, वह झुंझुला गया और उससे पूछा।

"कॉफी लाने को है कि नहीं? बेयरे ने ऊंची आवाज़ में पूछा।

"कॉफी नहीं मांगता , थैंक यू, बेयरा। डॉक्टर ने खुद जवाब दिया और साथ ही उठ गया। उसने सिल्वाना से माफी मांगी और और बिना कुछ कहे चला गया । उसके बाद, सिल्वाना ने भी बेयरे की तरफ देखा । लेकिन बेयरा अभी भी वहीं खड़ा था , उसके कान पार्टीशन के पीछे हो रही बातचीत पर लगे हुए थे और उसे लगा कि एक आवाज़ कुछ जानी-पहचानी है लेकिन अचानक वह चौंक गया । टेंट के पूर्वी कोने के पर्दे बहुत हल्की सरसराहट के साथ झूलते हुए लग रहे थे। बेयरा ने जानबूझकर ट्रे को नीचे गिरा दिया। दोनों फ्रांसीसी अपनी बातचीत छोड़ कर हैरानी से देखने लगे और वह फर्श पर बैठ गया और टूटे हुए कांच के टुकड़े उठाने लगा। फिर, आगे की सफाई के लिए, वह बिखरे हुए टुकड़ों को उठाने के लिए टेबल के नीचे, फर्श को छूते हुए पहुंचा। और ऐसा करते समय, उसकी नज़र, जो फर्श के लेवल पर्दे की नीचे से दूसरे टेंट के अंदर तक पहुंची, पूर्वी कोने में टेंट की दीवार के पास छिपे हुये एक आदमी के बटलर किस्म के जूतों पर पड़ी। वह खड़ा हो गया और अपने इस नुकसान पर ज़ोर-ज़ोर से बड़बड़ाने लगा। उसके चेहरे से लग रहा था कि वह एक अजीब तरह का अधेड़ उम्र का आदमी है। ऐसा लग रहा था जैसे वह अफ़ीम या किसी और नशे में हो।

वह टूटे हुए कांच के टुकड़ों को ट्रे में रख कर वो बाहर आया,

लेकिन जब उसने दाईं ओर मुड़कर घूम आकर देखा तो सिल्वाना दिखाई दी , जो कुछ दूर एक पेड़ के नीचे खड़ी थी और सामने वाले टेंट के खुले दरवाज़े में देख रही थी। इस लड़की की रहस्यमयी पर्सनैलिटी शायद उस पल उसके लिए एक सवाल बन गई थी, वह बहुत धीरे-धीरे उसके पीछे गया और उसकी आँखों की सीध में देखा। सिल्वाना की नज़रें डॉ. दाऊद पर टिकी थीं, जो सामने वाले टेंट के खुले दरवाज़े से साफ़ दिख रहे थे। वह एक फोल्डिंग टेबल के सहारे कुर्सी पर बैठे थे और किसी से बात कर रहे थे।

इससे पहले कि सिल्वाना मुड़ पाती, बेयरा अपनी जगह से हिला , और टेंट की दीवार से सटकर रेंगने लगा। अंधेरे ने उसे दिखने से बचा लिया, कम से कम पहली नज़र में तो नहीं, लेकिन सिल्वाना ने मुड़कर पीछे नहीं देखा, या अगर देखा भी, तो कम से कम उसकी नज़र उस पर नहीं पड़ी, जो सफ़ेद कपड़े पहने, टेंट की सफ़ेद दीवार के पीछे छिपा था। बेयरा अब धीरे-धीरे दीवार के साथ-साथ फ़र्श पर रेंगने लगा । वह टेंट के पीछे की तरफ़ जा रहा था, लेकिन जैसे ही उसने मुड़कर देखा, उसे रुकना पड़ा। उसका शक सही निकला। इस टेंट के पूरब की तरफ़, उसने एक काले इंसान जैसे जीव को चलते हुए देखा। वह शायद अपना कान टेंट की दीवार से टिका रहा था। क्योंकि उसका सिर उससे चिपका हुआ लग रहा था। उसने अपने पैर ज़मीन पर टिकाए और उसे देखने लगा। यह हालत ज़्यादा देर तक नहीं रही। परछाई अपनी जगह से हटी और धीरे-धीरे अपने पंजों पर चलकर दूसरी तरफ़ से टेंट के सामने आ गई। दूर से, उसने रोशनी में उस परछाई को देखा जब वह एक लाइट के पोल के पास से तेज़ी से गुज़री। यह वही रहस्यमयी आदमी था जिसे डॉ. पटेल की लैब के बाहर बोर्ड पढ़ते देखा गया था। वह पैदल ही उनका पीछा करने लगा। उसी समय, होवरक्राफ्ट पर रोशनी डालने के लिए टीले पर लगाए गए लाइट रडार एक्टिवेट हो गए और बहुत से लोग अपने टेंट से बाहर निकलकर होवरक्राफ्ट को देखने लगे।

प्लेन अब वहाँ से गुज़रते हुए रडार लाइट में चमक रहा था। मानो उसके शरीर पर सफ़ेद पाऊडर छिड़का गया हो। और कई साइंटिस्ट अपनी दूरबीन लेने के लिए दौड़े, क्योंकि प्लेन के चारों ओर नाचती हुई चमकदार नीली किरणों के गोले अब साफ़ होने लगे थे।

इन किरणों का रंग हर कुछ सेकंड में थोड़ा बदलता रहता, कभी पीला, कभी हल्का लाल, कभी हरा दिखाई देता।

"हे भगवान, ये तरंगें न्यूक्लियर नहीं हो सकतीं," एक वैज्ञानिक चिल्लाया।

उस समय, प्रोफेसर दाऊद भी बाहर आ गए थे और उनके साथ दो और आदमी थे, शायद रूसी साइंटिस्ट। उनके चेहरे भरे हुए थे और बाल छोटे थे। लेकिन लटके हुए प्लेन के बजाय, प्रोफेसर दाऊद की नज़र तीसरे टेंट से निकल रहे चार आदमियों पर टिकी थी, जिनमें से एक डॉ. पटेल थे। डॉ. पटेल का पूरा ध्यान उस समय प्लेन के चारों ओर घूम रही रेडिएशन तरंगों पर था। लेकिन उस पल, वे सब हैरानी से चीख पड़े जब उन्होंने देखा कि रडार की पीली रोशनी इन नीले गोलों पर पड़ते ही उनसे दूर जलने लगी। हवा में ठीक उसी जगह से, जहाँ रडार की रोशनी इस तिरछी रेंज में घूम रहे गोलों से टकरा रही थी, एक सफेद धुआँ निकला और उनके देखते ही देखते, दोनों रडार मशीनें पीली लपटों में जलने लगीं। यह रोशनी अब धीरे-धीरे नीचे की ओर जलती हुई दिख रही थी और फिर पूरे रडार के बीच से धुआँ निकलने लगा।

"भागो, इस टीले से जितना दूर भाग सकते हो भागो। ---एक चीख सुनाई दी, लगभग सब चौंक गए और फिर बिना सोचे-समझे इधर-उधर भागने लगे। सफेद धुआं अब रडार मशीनों तक पहुंच गया था। अचानक, एक के बाद एक दो भयानक धमाके हुए और दोनों रडार मशीनों के परखच्चे उड़ गए। मिलिट्री गार्ड जो टीले से कैंप के दूसरी तरफ था।

वे पास ही थे, वे ज़्यादा दूर नहीं भाग सके, और उनमें से दो या तीन बुरी तरह घायल हो गए।

जिस चट्टानी टीले पर रडार मशीन लगी थी, उसका एक हिस्सा भी उड़ गया। अब दूर से सिर्फ़ प्लेन ही दिख रहा था, जिसके चारों ओर बादलों के टकराने से बिजली गिरने जैसी तेज़ लेकिन पतली नीली लहर एक गोले में दिखाई देती और फिर गायब हो जाती।

जब इन धमाकों के अलावा कोई और अजीब घटना नहीं हुई, तो साइंटिस्ट और दूसरे लोग जो इधर-उधर बिखरे हुए थे, अपनी-अपनी जगहों पर लौट आए। पाँच-पाँच, दस-दस के ग्रुप अलग-अलग जगहों पर जमा हो गए और आपस में इस नई चीज़ के बारे में अंदाज़ा लगाने लगे।

डॉ. पटेल भी चार-पांच आदमियों के बीच खड़े होकर इस अनोखी घटना के बारे में सोच रहे थे, लेकिन शायद उन्हें पता नहीं था कि पास में ही एक दूसरे ग्रुप में खड़े प्रोफेसर दाऊद के कान भी उसी तरफ थे।

"शायद आपने ध्यान नहीं दिया कि इन रेडियल सर्कल का रंग बैंगनी था। --डॉ. पटेल, डॉ. पैरट से कह रहे थे।

"बैंगनी?, फ्रांसीसी डॉक्टर गाइ ब्रुक्सेल्स ने हैरानी से दोहराया। यानी, सृष्टि के तत्वों का प्रतिबिंब?

"रिफ्लेक्शन भी इंद्रधनुष ही है जो हम अक्सर बारिश के दिनों में देखते हैं, यह एक अलग रूप है। --डॉ. पैरट ने उसे महानता और गर्व दिखाने वाली नज़रों से देखते हुए कहा।

डॉक्टर, डॉ. पटेल की आवाज़ हैरानी और चिंता में सुनाई दी। "क्या हम सूरज की किरणों की सीधी ताकत का इस्तेमाल कहीं कर सकते हैं?" उन्होंने पैरट से पूछा, और अगर कोई उन्हें जवाब देने के काबिल था, तो वह डॉ. पैरट थे। उन्हें अमेरिकी साइंटिस्ट में सबसे अनुभवी, जानकार और काबिल माना जाता था, लेकिन जब उन्होंने भी मना कर दिया, तो उन्होंने अपना सिर हिला दिया।

इसलिए दूसरों ने अंदाज़ा लगाने की हिम्मत भी नहीं की।

"मुझे लगता है कि यह नामुमकिन है।" दूसरे ग्रुप के एक साइंटिस्ट ने कहा। उसने ज़रूर डॉ. पटेल की बातें सुनी होंगी, और उनके जवाब पर सब उनकी तरफ़ मुड़े, और दोनों ग्रुप

एक हो गए। डॉ. दाउद, डॉ. पटेल के बगल में खड़े थे। जवाब देने वाला व्यक्ति प्रोफ़ेसर कोबोलोव्स्की नाम का एक अधेड़ उम्र का रशियन साइंटिस्ट था।

"इन सोलर किरणों से फ़ायदा उठाना एक बात है और उनकी एनर्जी चुराना दूसरी बात।-- डॉ. पैरट ने कहा ।

"तुम रूसियों ने भी कॉस्मिक बम बनाए हैं, है ना? वे क्या हैं? --एक अमेरिकी साइंटिस्ट ने एक रूसी प्रोफेसर का उसके बोल्शेविज्म के लिए मज़ाक उड़ाया।

"मेरे ऊपर आपके ताने का कोई असर नहीं हुआ।" प्रोफेसर मुस्कुराए। "लेकिन मैं अपनी सरकार के किसी भी मिलिट्री सीक्रेट पर रोशनी नहीं डाल सकता, सिवाय इसके कि यह पूरी तरह से अलग मामला है," प्रोफेसर ने अच्छे व्यवहार के साथ जवाब दिया।

"तो इसका मतलब है कि हम सब निकम्मे हैं," डॉ. पैरट ने फुफकारते हुए ऊँची आवाज़ में कहा।

"इस समय हम इसे सिर्फ़ दूर से ही देख सकते हैं, लेकिन शायद सुबह हमारी कुछ कोशिशों से इस बारे में कुछ पता चलेगा। ---रूसी प्रोफ़ेसर ने उम्मीद जगाई।

"हाँ, आप भी कोशिश कर सकते हैं। -----यह एक फ्रेंच साइंटिस्ट का एक और मज़ाक था, लेकिन रशियन साइंटिस्ट को फिर भी कोई फ़र्क नहीं पड़ा। वह मुस्कुराता रहा। उसी समय, मिलिट्री गार्ड्स के इंचार्ज मेजर आनंद टहलते हुए आए। उसने पास खड़े होकर, फ़ॉर्मल तरीके से सबका स्वागत किया।

"मेरे तीन आदमी घायल हो गए हैं। उन्होंने बताया।

"हमें खेद है, मेजर, लेकिन यह दुखद घटना अनपेक्षित थी।"

"अगर तुम लोग कल आखिरी एक्सपेरिमेंट में कुछ नहीं कर पाए, तो मैं अपनी कमांड को सुझाव दूंगा कि प्लेन को एंटी-एयरक्राफ्ट गन से मार गिराया जाए। --मेजर ने अपनी समझ के हिसाब से बहुत दमदार सुझाव दिया, लेकिन साइंटिस्ट बस मुस्कुरा दिए।

बेचारा मेजर जो कह रहा था, वह उसकी मिलिट्री सोच का प्रदर्शन था।

फिर वह खुद ही जवाब का इंतज़ार किए बिना, आगे बढ़ गया। थोड़ी देर बाद, मैदान फिर से साफ़ हो गया। लोग अपने टेंट में वापस चले गए। बड़ी चट्टान पर सिर्फ़ दो आदमी बचे थे, जिन्होंने रूसी मशीनों के पास एक छोटा टेंट लगाया था, और उड़ते हुए प्लेन को ध्यान से देख रहे थे। जैसे-जैसे समय बीता, इस सुनसान जगह पर गहरा अंधेरा छा गया। बस कुछ टेंट दिख रहे थे, थोड़ी रोशनी थी।

☆☆☆

रात का हंगामा

शहर के जॉर्ज टावर की गूंज, घंटा बजाते हुए, नींद भरी रात के सन्नाटे में शहर के बाहरी इलाकों तक पहुँच रही थी। और उस पल, साइंटिस्ट्स का कैरोल कैंप सोये शहर की तरह शांत था, लेकिन उसी पल, किसी ने टेंट के दरवाज़े का पर्दा खींचा और कोई बाहर आया, उसके पीछे एक आदमी और । दोनों गर्म कोट पहने हुए थे। एक बार इधर-उधर देखकर, वे लंबे कदमों से कैंप के आखिर में बने बड़े पार्क की तरफ चल पड़े। पार्क में

अंधेरे में कई गाड़ियाँ खड़ी थीं, और इस छोटे से मैदान का मिलिट्री गार्ड, जो कांटेदार तारों से घिरा हुआ था, एक छोटी लकड़ी की चौकी पर बंदूक लिए खड़ा था।

कार स्टार्ट होने की आवाज़ सुनकर वह चौंक गया। उसने अपनी बंदूक उठाई और पोस्ट से बाहर निकल गया। कार दरवाज़े पर रुकी। संतरी ने अंदर बैठे आदमियों के चेहरों पर अपनी टॉर्च की रोशनी डाली और पीछे हट गया। उसने शायद डॉ. पैरट को पहचान लिया था। लेकिन, वह डॉ. पटेल को नहीं पहचान पाया, जो उसके बगल में बैठे थे, और अब उसे यह जानने की ज़रूरत नहीं थी। कार डॉ. पैरट की सर्विस में थी। और संतरी को बस यह पक्का करना था कि कार गलत हाथों में न जाए।

उनकी गाड़ी कैंप की कच्ची सड़क पार करके एक पक्की सड़क पर आ गई। यहाँ भी सिर्फ़ चार लोगों की एक मिलिट्री एस्कॉर्ट पार्टी थी। उनमें एक जमादार, एक हवलदार और दो सिपाही थे। जब जमादार ने डॉ. पैरट की गाड़ी रोकी और उसका नंबर अपनी नोटबुक में लिखा, तो डॉक्टर मुस्कुराए और बस इतना कहा कि वह घूमने के लिए जा रहे हैं और जल्द ही लौट आएंगे।

और ज़ाहिर है कि एक मिलिट्री गार्ड को किसी साइंटिस्ट से इससे ज़्यादा सवाल पूछने का कोई हक़ नहीं था। उसकी ड्यूटी कैंप और कैंप में मौजूद दुनिया के बड़े देशों से आए साइंटिस्ट की सुरक्षा से जुड़ी थी। लेकिन उसी समय, भूरे रंग की बॉडी वाली एक और कार, कैंप के दूसरी तरफ से एक बिना इस्तेमाल वाले, ऊबड़-खाबड़ रास्ते से आ रही थी और इस जगह से लगभग एक फर्लांग दूर पक्की सड़क पर पहुँच रही थी। डॉ. पैरट ने अपनी कार शहर की तरफ मोड़ दी।

डॉ. पटेल चुपचाप बगल वाली सीट पर बैठे थे, किसी सोच में डूबे हुए।

"क्या आपके पास वह चीज़ है?" डॉ. पैरट ने डॉ. पटेल से पूछा।

"हमम... डॉ. पटेल ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"क्या आप सच में ऐसा मानते हैं?" डॉ. पैरट ने दूसरा सवाल पूछा।

"अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है तो मैं यहां से वापस जाने को तैयार हूं।

"अरे नहीं, नहीं। आप पूरी तरह से गलत हैं। मैं तो बस अपनी तरफ से ऐसे ही पूछ रहा था," डॉ. पैरट ने कहा, और उनका लहजा और भी नरम और दयालु हो गया।

डॉ. पटेल ने कार की खुली खिड़की से बाहर झाँकते हुए जवाब दिया, "यह साइंस के संभावित भविष्य का एक राज़ है जो पूरी दुनिया के सामने आ रहा है, जिसके सामने आने से पूरी दुनिया में हँगामा हो जाएगा।"

डॉ. पैरट ने कहा, "फिर आपको इसके लिए कुछ कैश मुआवज़ा मिल सकता है।"

लेकिन डॉ. पटेल इतने सोच में डूबे हुए थे कि उन्होंने डॉ. पैरट की बातें भी ठीक से नहीं सुनीं। चलती कार में फिर से एक लंबी खामोशी छा गई।

आखिरकार, उनकी कार शहर की सीमा में दाखिल हो गई। करीब आधा फर्लांग दूर, दूसरी कार भी उसके पीछे चल रही थी।

उस समय शहर के आस-पास की सड़कें सुनसान थीं। कुछ ही इक्का दुक्का कारें दिख रही थीं या पैदल यात्री।

डॉ. पैरट खुद कार चला रहे थे। उनकी कार और उनके पीछे वाली कार के बीच की दूरी अब कम हो गई थी, लेकिन डॉक्टर को इसका पता भी नहीं था। शायद वह अपनी कार एवरेज स्पीड से चला रहे थे।

डॉक्टर की कार अलग-अलग रास्तों से गुज़रते हुए मैनस्टन रोड पर एक शानदार बिल्डिंग के सामने रुकी। यह दो मंज़िला रिहायशी बिल्डिंग थी जिसके मेन गेट के पास यूनाइटेड स्टेट्स एम्बेसी का साइनबोर्ड लगा था। दरवाज़े पर खड़े नेपाली दरबान ने डॉक्टर की कार पहचान ली और दरवाज़ा खोल दिया। उस समय बिल्डिंग का ग्राउंड फ़्लोर और फ़र्स्ट फ़्लोर अंधेरा और उदास लग रहा था, लेकिन तीसरी मंज़िल के कमरों की खिड़कियों से रोशनी आ रही थी। कंपाउंड में डॉक्टर की कार रुकने की आवाज़ सुनकर, किसी ने ऊपर की खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला, नीचे देखा, और फिर वापस अंदर चला गया। इस समय तक, डॉ. पैरट और डॉ. पटेल कार से बाहर निकल चुके थे। वे बिल्डिंग के एंट्रेंस की सीढ़ियों पर चढ़ ही रहे थे कि उन्हें ऊपर से नीचे एक अधेड़ उम्र का गोरा आदमी, ग्रे सिल्क गाउन पहने हुए, आत दिखाई दिया ।

"हैलो कर्नल।-- उस ने डॉ. पैरट की ओर देखते हुए कहा।

"हैलो ," डॉ. पैरट ने मुस्कुराते हुए कहा।

"कर्नल? डॉ. पटेल ने हैरानी से डॉ. पैरट को देखा।

"ओह, शायद आपको पता नहीं कि यहां साइंटिस्ट को भी मिलिट्री टाइटल दिए जाते हैं और मेरा मिलिट्री टाइटल कर्नल है। कर्नल का ये मिलिट्री टाइटल भी ऑनरेरी है। --डॉ. पैरट ने डॉ. पटेल के मन की बात को अनसुना कर दिया।

"आप, क्या आप वही हैं जिनके बारे में हम बात कर रहे थे?" आने वाला खुद ही डॉ. पटेल से इंट्रोड्यूस होना चाहता था।

"बड़ी बेसब्री हैं।" डॉ. पैरट मुस्कुराए।

"जी हाँ। यही डॉ. पटेल हूँ और आप मिस्टर आर्थर वाइल्ड हैं। यूनाइटेड स्टेट्स के कॉन्सुल जनरल ---डॉ. पैरट ने उन्हें एक-दूसरे से मिलवाया।

कॉन्सुल जनरल ने डॉ. पटेल से बहुत गर्मजोशी से मुलाकात की।

थोड़ी देर बाद, वे दूसरी मंज़िल पर एक शानदार ड्राइंग रूम में बैठे थे, जिसके दरवाज़े पर सादे कपड़ों में एक गोरा आदमी टहल रहा था और पहरा दे रहा था। उसके हाथ में एक पिस्तौल थी, जिसे वह कभी अपनी जेब में डालता तो कभी निकाल लेता।

कॉन्सुल जनरल ने डॉ. पटेल से कहा, "अगर आपका फ़ॉर्मूला सच में काम का साबित होता है, तो मैं आपको अपनी सरकार की तरफ़ से बहुत बड़ा मुआवज़ा दूँगा। हम किसी के अधिकारों का उल्लंघन नहीं करते हैं।"

"इसे काम में लाना आपका काम है, मैं सिर्फ़ इसे साबित कर सकता हूँ की ऐसा संभव है । डॉ. पटेल ने कहा,

"ठीक है, लेकिन वह कहां है?"

"मैंने जो रिपोर्ट और फ़ॉर्मूला तैयार किया है, वह मेरी जेब में है, लेकिन पहले हमें फ़ैसला लेना होगा।" डॉक्टर ने कहा ।

"क्या इसके लिए एक मिलियन डॉलर काफी नहीं होंगे?"

"एक मिलियन डॉलर ! --डॉक्टर की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं।

"क्यों? यह बहुत बड़ी रकम है, क्या आपको कोई एतराज़ है?"

"एतराज़!" डॉ. पटेल ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा, "बिल्कुल नहीं।"

"तो ये रहा एक लाख रुपये का चेक जो मैं आपको अपनी तरफ से एडवांस के तौर पर दे रहा हूँ। बाकी रकम अगर ये फ़ॉर्मूला कामयाब रहा तो दे दी जाएगी। -- कॉन्सुल जनरल ने अपनी जेब से चेकबुक निकालते हुए कहा।

143

मुझे आप पर और आपकी सरकार पर भरोसा है। डॉक्टर मुस्कुराए।

और यहाँ कॉन्सुल जनरल ने उन्हें एक लाख डॉलर का चेक दिया और यहाँ डॉक्टर ने अपनी जेब से एक सीलबंद लिफ़ाफ़ा निकालकर उन्हें दिया। कॉन्सुल जनरल ने लिफ़ाफ़ा खोला और उसमें से कागज निकालकर ध्यान से देखने लगे।

डॉ. पैरट अब तक चुपचाप बैठे थे। फिर कॉन्सुल जनरल ने कन्फ़र्मेशन चाहने वाली नज़रों से डॉ. पैरट की तरफ़ देखा। डॉक्टर ने सिर्फ़ हाँ में सिर हिलाया।

कॉन्सुल जनरल ने वादा किया, "हम आपके फ़ॉर्मूले का इस्तेमाल करके एक स्पेस स्टेशन बनाने की कोशिश करेंगे और अगर यह एक्सपेरिमेंट सफल रहा, तो एक्सपेरिमेंट के नतीजे मिलते ही बाकी रकम आपको दे दी जाएगी।"

"अगर मेरे पास काफ़ी रिसोर्स होते, तो मैं खुद यहाँ इसका तजुरबा करता और आपको बताता।"

144

डॉ. पटेल ने भरोसा दिलाया, "अब, अगर मेरी ज़रूरत समझी जाए , तो मैं किसी भी समय जाने के लिए तैयार हूँ।"

"लेकिन वो अंगूठी जिस का ज़िक्र आपने डॉ. पैरट से किया था?"

"मैंने सबसे पहले इसे अपनी मैकेनिकल लैब में टेस्ट किया, जहाँ कोई इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड नहीं था। मैं पक्के तौर पर नहीं कह सकता कि यह यहाँ भी उसी तरह रिएक्ट करेगा। डॉ. पटेल ने कहा.

"मैं देखना चाहता हूं," कॉन्सुल जनरल ने कहा, "मुझे खुद साइंस में काफी दिलचस्पी है।"

"बेहतर है , ये रही।" यह कहते हुए जैसे ही उसने जेब में हाथ डाला, वह चौंक गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया। फिर वह घबरा गया और अपनी सारी जेबें और उनमें पड़े पर्स और दूसरी चीज़ें ढूंढने लगा, लेकिन उसे अंगूठी नहीं मिली।

"वह... वह कहाँ गायब हो गई?" डॉ. पटेल ने भारी आवाज़ में कहा।

"गायब हो गई?" डॉ. पैरट ने हैरानी से दोहराया।

"लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है कि वह कार में बैठते समय मेरी जेब में थी --- डॉ पटेल ने एक बार फिर अपनी जेबों में हाथ डालते हुए कहा।

"तो फिर, क्या अपने आप गायब हो गई?’ महान जनरल सर आर्थर वाइल्ड के मुंह से निकला

"दरवाजे पर कौन है?" डॉक्टर ने किसी ख्याल से चौंकते हुए पूछा।

सर आर्थर ने कहा, "मैंने डिप्लोमैटिक स्टाफ से एक सीक्रेट सर्विस सार्जेंट को बुलाया है, वह दरवाज़े पर पहरा दे रहा है।"

"सार्जेंट? डॉक्टर कराहते हुए उठा। और फिर, कुछ सोचते हुए, उसने जल्दी से दरवाज़ा खोल दिया।

वह दरवाज़े की तरफ़ दौड़ा, लेकिन हैरानी से चौंक गया। उस समय दरवाज़े पर कोई नहीं था।

"सर आर्थर, यहां कोई नहीं है," डॉ. पैरट ने वहां से चिल्लाकर कहा।

जवाब देने के बजाय, सर आर्थर ने तुरंत ट्राइपॉड पर रखा फ़ोन उठाया और अपनी गोद में रखकर नंबर डायल करना शुरू कर दिया। डॉ. पटेल, डॉ. पैरट के पीछे दौड़े। इतनी देर में, डॉ. पैरट तेज़ी से सीढ़ियाँ उतर रहे थे, लेकिन जैसे ही उन्होंने नीचे की सीढ़ी पर पैर रखा, बालकनी से उन्हें जो पहली आवाज़ सुनाई दी, वह पिस्तौल की गोली की थी, जिससे उन्होंने किसी को संघर्ष करते और आधे अंधेरे में ज़मीन पर गिरते देखा। गेटकीपर दूर से बाहर ज़मीन पर मुँह के बल पड़ा दिख रहा था और बाहर सड़क पर किसी के दौड़ने के कदमों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

जो आदमी कंपाउंड में गिरा था, उसके सीने में गोली लगी थी। उसने बिना टाई का भूरा कोट पहना हुआ था। उसकी पैंट भी उसी रंग की थी। उसकी सफेद शर्ट के सीने और ज़मीन पर खून के धब्बे थे। जब डॉ. पैरट उसका चेहरा देखने के लिए उसके ऊपर झुके, तो उसने हकलाते हुए डाक्टर से कुछ कहा और हमेशा के लिए चुप हो गया।

“आइए, डॉक्टर,” उसने डॉ. पटेल को आवाज़ दी और कंपाउंड के दरवाज़े की तरफ़ भागा, लेकिन अपनी आँखों से खून देखकर डॉ. पटेल के हाथ-पैर फूल गए। दरवाज़े पर पहुँचते ही वह रुक गया। उसी समय, लगभग सौ गज दूर, उसने देखा कि एक कार स्टार्ट होकर सड़क पर चल रही है, और उसमें गोलियों की आवाज़ गूंज रही थी। कार पर गोलियाँ ज़रूर चल रही थीं, लेकिन ड्राइवर उनकी टक्कर से बच निकला। जैसे ही कार बिजली की रफ़्तार से कंपाउंड के दरवाज़े के सामने से गुज़री, डॉक्टर स्टीयरिंग विंडो से एक काले दस्ताने वाला हाथ देखकर चौंक गया और धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा, नहीं तो गोली उसके सीने में जा धंसती। वह बस इतना देख सका कि कार में सिर्फ़ एक आदमी था, जो उसे सरकारी स्ट्रीट लाइट में भी एक काली परछाई जैसा लग रहा था।

उसने चलती कार से डॉक्टर को गोली मारकर डराने की कोशिश की थी, या शायद उसका इरादा उन्हें खत्म करने का था, लेकिन इस तरह की डरावनी घटना डॉ. पटेल के लिए नई थी। कंपाउंड के अंदर दरवाज़े से सटते ही वह कांपने लगे।

कोशिश बेकार ही थी , क्योंकि डॉ. पैरट को वापस लौटने और अपनी कार निकालने में कम से कम 5 , 8 मिनट तो लगते ही । उन्होंने दरवाज़े के पास बाहर औंधे मुँह पड़े गोरखा को भी देखा। वार सिर पर हुआ था, और वार से जो घाव लगा था, वह सिर पर किसी कुंद, चीज़ के गिरने का नतीजा लग रहा था।

शायद किसी ने दरबान के सिर पर पीछे से बिना उसकी जानकारी के वार किया था, और वार इतना ज़ोरदार था कि वह न तो खड़ा हो सका और न ही चीख सका। वह अभी भी बेहोश था और उसके सिर से बहुत खून बह चुका था।

ठीक उसी समय, एक परछाई कंपाउंड की दीवार से निकलकर सड़क पर आ गई और अंधेरे में वापस भागने लगी। फिर, एक मिनट बाद, अंधेरे में खड़ी एक कार की हेडलाइट्स तेज़ रोशनी में बदल गईं, और कार स्टार्ट होकर कंपाउंड के सामने से गुज़र गई, आगे वाली कार से ज़्यादा तेज़।

जिस कार पर डॉ. पैरट ने गोली चलाई थी, आधी रात को, सूनी सड़कों पर कर 50-60 की स्पीड से दौड़ रही थी और अगर सड़क पक्की और साफ न होती, तो शायद उसके इतनी स्पीड से दौड़ने से अब तक एक्सीडेंट हो जाता। कार में ड्राइवर के अलावा और कोई नहीं था। गहरे भूरे रंग का उसने कोट पहना हुआ था। उसके सिर पर गहरे भूरे रंग की फेल्ट हैट और हाथों में काले दस्ताने थे। उसका चेहरा फेल्ट हैट के झुके हुए अगले हिस्से और कोट के उठे हुए कॉलर से ढका हुआ था। सिर्फ बीच का हिस्सा कभी-कभी सड़क पर लगी सरकारी बत्ती की रोशनी से दिख जाता,

जिससे यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं था कि वह पीले या गोरे रंग का एक सेहतमंद आदमी था।

"ठीक है, अब कार को दाईं ओर मोड़ो। --------अचानक और उम्मीद से ज़्यादा तेज़ आवाज़ ने उसे चौंका दिया। शायद वह ऐसी अचानक घटना के लिए तैयार नहीं था। उसने अपना सिर थोड़ा घुमाकर देखने की कोशिश की, लेकिन उसे लगा कि पिस्तौल की ठंडी स्टील की नली उसकी गर्दन में किसी कील की तरह चुभ रही है। उसकी हिलने की हिम्मत नहीं हुई।

"आप कौन हैं?" उसने भारी यूरोपियन लहजे में इंग्लिश में पूछा।

"तुम्हें यह जानने की ज़रूरत नहीं है , वह अंगूठी कहाँ है?" कार की पिछली सीट पर अंधेरे में अदृश्य परछाई ने आदेश देने वाले लहजे में पूछा।

"अंगूठी? कैसी अंगूठी? अंगूठी तो औरतें पहनती हैं। --------काले ग्लव्स वाला आदमी गाड़ी चलाता रहा। उसकी तेज़ नज़रें सड़क के दोनों तरफ ऐसी जगह ढूंढ रही थीं जहाँ गाड़ी को अचानक रोका जा सके और अचानक निकला जा सके। बीच सड़क पर यह मुमकिन नहीं था, क्योंकि ऐसे में कोई दूसरी गाड़ी पीछे या सामने से आकर धक्का देकर कुचल सकती थी। फिर भी, उसने बंदूक की नोक पर गाड़ी वापस मोड़ ली थी और अब शहर के घनी आबादी वाले इलाके की तरफ बढ़ रहा था।

तब तक आधी रात हो चुकी थी, इसलिए सड़कें और इमारतें सब शांत थीं। आसमान में बेमौसम बादलों के झुंड थे, इसलिए आकाश में फैले टिमटिमाते तारों की हल्की रोशनी भी ज़मीन तक नहीं पहुँच रही थी। जैसे ही वे एक मोड़ पर पहुँचे, ड्राइवर ने अचानक स्टीयरिंग व्हील इतनी तेज़ी से घुमाया कि पीछे बैठा आदमी खुद पर काबू नहीं रख सका। जैसे ही उसने गाड़ी घुमाई, काले ग्लव्स वाले आदमी ने क्लच दबाकर ब्रेक मारते हुए गाड़ी रोक दी, और इससे पहले कि उस अनजान आदमी का रिवॉल्वर वाला हाथ फिर से उठ पाता, वह आगे की सीट से लुढ़का और उसके ऊपर चढ़ गया। जगह संकरी होने के कारण,

नीचे वाले को संभलने का मौका नहीं मिला और काले दस्ताने पहने आदमी के हाथ उसकी गर्दन तक पहुंच गए।

अंधेरे में वह अभी तक उसका रूप ठीक से नहीं देख पाया था, लेकिन वह आदमी काफी ताकतवर और फुर्तीला लग रहा था। इस खतरनाक पल में उसकी समझ काम कर रही थी। उसने अपने दोनों हाथों से पूरी ताकत से काले दस्ताने वाले आदमी की कलाइयों को पकड़ा और अपने पैरों से उसे नीचे गिराने की कोशिश की। रिवॉल्वर उसके हाथ से फिसलकर कार के कोने में गिर गई थी।

आखिरकार वह अपने ऊपर से काला ग्लोवस वाले को उतारने में कामयाब रहा। वो कार की छत से टकराकर पिछली सीट पर गिर गया, लेकिन गलती से उसका हाथ रिवॉल्वर पर पड़ गया और इससे पहले कि दूसरी अनजान परछाई उसके जबड़े पर मुक्का मार पाती, उसने रिवॉल्वर का बट पकड़कर उसके सिर पर मार दिया। वह गोली चला सकता था, लेकिन उस हालत में खुली सड़क से निकलना मुश्किल हो जाता। झटका लगा और काली परछाई धड़ाम से नीचे गिर गई। वो मुड़ना चाहता था, लेकिन पीछे कार की हेडलाइट्स ने उसे चौंका दिया। उसने कार का पिछला दरवाज़ा खोला और तेज़ी से बेहोश परछाई को सड़क पर धकेल दिया और फिर स्टीयरिंग व्हील पर बैठकर कार को तेज़ रफ़्तार से चला दिया।

अगर पीछे वाली कार के ड्राइवर ने पूरी ताकत और पक्के इरादे से ब्रेक नहीं लगाए होते, तो सड़क पर बेहोश पड़ा आदमी उसके नीचे कुचल जाता। वो कार सिल्वाना की थी , उस ने जल्दी से कार रोकी और उस आदमी की तरफ मुड़ी जो गिर गया था। उस आदमी को सीधा कर जब उसने देखा तो चौंक गई , कैंप में देखे गए बेयरे को वो आसानी से पहचान सकती थी ।

"तो क्या यह भी कोई ...? वह मुश्किल से इतना कह पाई थी कि कार के अंदर से किसी ने उसका हाथ पकड़ा और उसे गले लगा लिया।

"जल्दी करो, वह निकल जाएगा। अंदर से एक भारी आवाज़ सुनाई दी, उच्चारण विदेशी था।

"मगर ये ---?

" गोली मारो , हमें फालतू चीज़ों की परवाह नहीं है,।"

"ठीक है," उसने कहा और कार में वापस बैठ गई। और कार उस कार के पीछे दौड़ने लगी जो पहले से भी ज़्यादा तेज़ चल रही थी।

रात के अंधेरे में, मामन बाड़ा इलाके में, 17वीं सदी का पुर्तगाली किला, जिसकी दीवार 6 फुट चौड़ी थी, , जंगली पेड़ों के बीच वीरान पड़ा था। सिर्फ़ दूसरे विश्व युद्ध के दौरान, किले के अंदर कुछ मिलिट्री बैरक बनाए गए थे और तटीय इलाके की रखवाली के लिए एक मिलिट्री बटालियन तैनात की गई थी, और युद्ध खत्म होने के बाद, बटालियन अपनी बैरक वीरान छोड़कर चली गई। तब से, न तो किले का कोई सरकारी इस्तेमाल हुआ और न ही लोगों ने इस पर कोई ध्यान दिया। इसके बनने में कोई ऐतिहासिक आकर्षण भी नहीं था, जिसकी वजह से लोग आते-जाते रहते , कम से कम इसे देखने के लिए तो ज़रूर आते ।

150

किला बहुत बड़ा नहीं था। यह मुश्किल से एक फर्लांग लंबा और सौ फर्लांग चौड़ा था। ज़मीन इसकी अंदर की सतह से ज़्यादा ऊँची थी, और इसकी दीवारें बाहर से जितनी ऊँची दिखती थीं, अंदर से उतनी ही नीची थीं - अंदर मिलिट्री की एक छोटी सी आर्मरी भी थी, हालाँकि किसी को नहीं पता था कि पुर्तगालियों ने इसका इस्तेमाल कब किया था। कुछ लोगों को लगा कि इसकी अंदर की सतह की ऊँचाई यह साबित करती है कि अंदर कोई अंडरग्राउंड आर्मरी या शेल्टर था। हालाँकि, इसकी खोज पर कोई ऑफिशियल

ध्यान नहीं दिया गया, न ही इसके आस-पास के लोगों ने कोई ध्यान दिया । और उन्हें पुर्तगालियों द्वारा छोड़े गए ऐसे मोन्यूमेंट्स में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

झाड़ियों से गुज़रती एक कार की हेडलाइट किले की पश्चिमी दीवार पर पड़ने लगी। और फिर ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर रेंगती हुई एक काली कार सड़क के बहुत पास आकर रुक गई। हेडलाइट बंद हो गईं और एक परछाई दिखाई दी, जिसके हाथों में काले दस्ताने भी थे और उसके चेहरे का एक हिस्सा अंधेरे में बहुत हल्की चमक दिखा रहा था।

वह कार से उतरा और किले की दीवार की तरफ़ बढ़ा। दीवार में एक दरवाज़ा था, जिसके पट बहुत पहले गायब हो चुके थे , लेकिन इस दरवाज़े के अंदर से किले तक जाने वाली सीढ़ियाँ थीं और पत्थर के टुकड़ों से ब्लॉक थीं। ऐसे में इस दरवाज़े का इस्तेमाल करने का सवाल ही नहीं उठता था। लेकिन वह परछाई इस दरवाज़े में घुस गई और सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। आगे का रास्ता गिरे हुए पत्थरों से ब्लॉक था। उसने अपनी टॉर्च निकाल ली थी और उसकी मदद से वह सीढ़ियाँ गिन रहा था। छठी सीढ़ी चढ़ने के बाद वह सातवीं सीढ़ी पर झुका। इन सीढ़ियों में पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े इस तरह से जुड़े हुए थे कि हर सीढ़ी में लगभग दो फ़ीट लंबे पत्थर के दो टुकड़े थे।

बीच में तीन फीट का एक बड़ा टुकड़ा दिख रहा था। उस आदमी ने दोनों हाथों की ताकत से बीच के बड़े टुकड़े को अपनी ओर खींचा और दो-चार बार ज़ोर लगाने पर पत्थर, सातवीं सीढ़ी के बीच के पत्थर के साथ बाहर आ गया, जो उससे जुड़ा हुआ था। उसके नीचे एक स्टील की प्लेट थी। पत्थरों के खिसकने से बने गैप में वह टॉर्च लेकर नीचे उतरा और अंदर से स्टील की प्लेट खींचकर सीढ़ियों का दरवाज़ा फिर से बंद कर दिया।

☆☆☆

रंगीन चक्र

आज सुबह के अखबारों में तीन सनसनीखेज खबरें छपीं। पहली, लोग पहले से ही पिछली घटनाओं से हैरान थे, और इस खबर ने और भी रोमांच पैदा कर दिया। यूनाइटेड स्टेट्स के कॉन्सुल जनरल के घर की अहाते में एक रहस्यमयी हत्या हुई। एक मशहूर मैक्सिकन ब्लैकमेलर को टारगेटेड किलिंग में मार दिया गया। एक अनजान कातिल गोली मारकर भाग गया। कॉन्सुल जनरल की अज्ञानता।

दूसरी खबर यह थी:

आई स्पेशलिस्ट, डॉ. पटेल, उड़ते हुए प्लेन के रहस्यमयी तरीके से गायब होने से जुड़े साइंटिफिक रिसर्च में बहुत दिलचस्पी रख रहे थे।

तीसरी खबर उस रात हुए धमाकों के बारे में थी। इसमें रडार मशीनों के नष्ट होने की खबर थी। लोगों को डॉ. पटेल के गायब होने और धमाकों की रिपोर्ट एक ही कड़ी लग रही थी, लेकिन मैक्सिकन ब्लैकमेलर के खून की बात समझ नहीं आई।

डॉ. पैरट CID हेडक्वार्टर के इन्वेस्टिगेशन रूम में सुपरिटेंडेंट एके खान और DIG देशपांडे के सामने बैठे थे। बाले भी एक तरफ कुर्सी पर चुपचाप बैठकर उनकी बातें सुन रहे थे। और कमरे के बाहर बेंच पर वह मिलिट्री ऑफिसर बैठा था जिसने पिछली रात साइंटिस्ट्स कैंप से निकलते समय डॉ. पैरट की कार रोकी थी और गाड़ी खड़ी कर दी थी।

" फौजी जमादार के बयान के अनुसार, आपको और डॉ. पटेल को एक सैनिक के साथ रात करीब 11 बजे कैंप से निकलते देखा गया था?’ खान ने डॉ. पैरट से पूछा।

"हम, मेरा मतलब है, मैं मौज-मस्ती के लिए शहर जा रहा था, इसलिए डॉ. पटेल भी मेरे साथ आए," डॉ. पैरट ने हिचकिचाते हुए कहा।

आप गलत बयान दे रहे हैं। खान ने उसे घूरा और कहा.

"नहीं, मैं सच कह रहा हूं।"

"लेकिन आप अभी-अभी कैंप लौटे हैं?"

"वो...डॉक्टर पटेल शहर में कहीं उतर गए थे।"

"मिस्टर पैरट, मुझे अफ़सोस है कि आपकी गलत बयानी से आप जैसे सम्मानित आदमी की इज़्ज़त गिरेगी।" खान का लहज़ा अभी भी गंभीर और इज्ज़तदार था।

" मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह पाऊँगा। --डॉक्टर का लहजा कुछ स्थिर लग रहा था।

"आप यह भी नहीं बता पाएंगे कि आप और डॉ. पटेल रात के 12 बजे यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका के कॉन्सुल जनरल के बंगले पर क्यों पहुंचे?"

खान के सवाल पर डॉ. पैरट का चेहरा पीला पड़ गया। उनकी आँखें झुक गईं। खान ने उनके खिलाफ कोई सख्त एक्शन नहीं लिया। और वैसे भी, पुलिस के पास किसी विदेशी गणमान्य व्यक्ति से पूछताछ करने की हद से आगे जाने का अधिकार नहीं था, चाहे उसका स्टेटस कितना भी संदिग्ध क्यों न हो। और अगर मामले खास तरह के नहीं होते, तो शायद यूनाइटेड स्टेट्स कॉन्सुलेट भी इस पर एतराज़ करता।

लेकिन, डॉ. पैरट ने आखिर में सब मान लिया। उन्होंने यह भी कहा कि डॉ. पटेल ने जो नई खोज की बात कही थी, अगर एक्सपेरिमेंट से वह सच साबित हुई, तो पूरी दुनिया के लिए एक ज़रूरी बात बन जाएगी। इसलिए, वह डॉ. पटेल की मेहनत के लिए उनकी सरकार से एक डील करना चाहते थे। लेकिन सही समय पर यह सब हो गया। यह बयान देते समय भी, डॉ. पैरट किसी तरह इस अंगूठी का ज़िक्र गोल कर ही गए। शायद उन्हें

लगा कि पुलिस को इसके बारे में पता नहीं है, लेकिन जब खान ने खुद उनसे उस रहस्यमयी अंगूठी के बारे में पूछा, तो वह चौंक गए।

"तो आप यह भी जानते हैं?" उसने आश्चर्य से कहा।

" आपको लग सकता है कि इंडियन पुलिस बेवकूफों का झुंड है, लेकिन असल में ऐसा नहीं है। जब से आपने इस धरती पर कदम रखा है, आपकी हर हरकत पर हमारी नज़र है।--- खान ने बिना किसी बुरे असर के, सीधे और गंभीर लहजे में कहा।

डॉ. पैरट से डॉ. पटेल के गायब होने के बारे में कुछ पता नहीं चला। और बाद में उन्हें साइंटिस्ट्स के कैंप में वापस भेज दिया गया। लेकिन उनके गायब होने के बारे में एक रहस्य ज़रूर था और यह नहीं कहा जा सकता था कि वे खुद से कहीं गायब हुए थे। डॉक्टर के जाने के बाद, डिप्टी कमिश्नर भी अपने ऑफिस चले गए और सिर्फ़ खान और बाले ही बचे थे। खान गहरी सोच में डूबा हुआ था और बाले अपनी कुर्सी पर आधा झुका हुआ था और उसके पैर दूसरी कुर्सी पर फैले हुए थे।

" आपने उस अंगूठी के बारे में तो सुना ही होगा जो अफ्रीकी जादूगर ने गुफा में भेजते समय अलाद्दीन को दी थी।- बाले ने कहा

"जी फरमाइए ।" खान उसकी ओर मुड़ा।

" यह अंगूठी भी उससे कम हैरान करने वाली नहीं है । कमाल की है- क्या कहा मैंने ? कमाल कमा ल -- वाह

"क्या आप इतनी देर से यही सोच रहे थे?"

" नहीं, और भी कई। उदाहरण के लिए, एक लड़की।

" फिर बकवास की "

"हे ईश्वर, नासमझ को समझ दे , क्योंकि तू ही सब जानने वाला है।"

" ठीक है, मैं समझ गया। आगे बको ।

" आगे बताया गया है कि काली चोंच और सफेद पंखों वाला मुर्गा एक परी का बाप था।

" मैं तुम्हारा भेज हिला दूंगा ,मरदूद ।

" वह एक लड़की है, साइंटिस्ट्स के कैंप में उसका नाम सिल्वाना मंगानों है।

"लगता है , अब शामत आई है।" खान बिगड़ गया।

:आई एम सॉरी - सिल्वाना मंगानों एक इटैलियन एक्ट्रेस हैं।इस लड़की का नाम सिल्वाना डी कार्बा है।--बाले ने असल बात पर आते हुए कहा।

"ओह, तो वह तुमसे प्यार करती है?"

" हे भगवान, आप जस्टिस वलीउल्लाह हैं। आप जान जाते हैं किसी के दिल में क्या है।

"वह लड़की काफी खतरनाक लगती है और अगर उसके हाथों तुम्हारी हजामत हुई तो मैं तुम्हारी डबल हजामत कर दूंगा ।

" मैं सिर्फ एरो हेयर कटिंग सैलून में ही अपने बाल कटवाता हूँ .....

" शट अप "

"मैं सोच रहा था कि वह लड़की रात में पैरट का पीछा क्यों कर रही थी और वह उस कार के पीछे कितनी दूर तक गई थी जिसने मैक्सिकन ब्लैकमेलर को गोली मारी और भाग गई।"

" इसलिए मैं कह रहा हूँ कि वह लड़की भी कम खतरनाक नहीं है। रात को जब तुम मुझे नेरे के लिबास में सड़क पर घायल पड़े मिले थे , उस समय ये लड़की उस कार का पीछा कर रही थी और उसके साथ एक और आदमी भी था। --------खान ने कहा।

"और आप कहाँ से देख रहे थे?"

" मुझे पहले से ही पता था कि वे कहाँ जा रहे हैं, इसलिए मेरी कार उस कॉन्सुल जनरल के बंगले के बाहर
सड़क पर उसका इंतज़ार कर रही थी।

"तो इसका मतलब है कि वो खून भी आपके सामने हुया है।"

" नहीं यह अचानक हुआ. मुझे नहीं पता था कि एक आदमी बरामदे की छत पर छिपा हुआ है.

मैं उस का पीछा करना चाहता था और पता लगाना चाहता था कि वह कहाँ रह रहा है और उसका मकसद क्या है, लेकिन जब वह बिल्डिंग से बाहर आया, तो मैं हैरान रह गया कि वह आदमी अचानक छत से कूद गया। उस समय, मैं कॉन्सुल जनरल के ड्राइंग रूम के पीछे कॉरिडोर में खड़ा था, वेंटिलेशन शाफ्ट से टेक लगाकर उनकी बातें सुन रहा था। वैन कुशनर मैन को भागते हुए और जब उस पर हमला होते देखा, और जब मैं वहाँ

पहुँच तो उस अनजान आदमी ने पहले ही उस को अपनी पिस्तौल से गोली मारकर मार डाला था। मेरे कदमों की आहट सुनते ही वह भाग गया। मैं उसे गोली मारने ही वाला था कि मैंने डॉ. पैरट और डॉ. पटेल को सीढ़ियों से नीचे भागते देखा। उस समय, मैं उनकी नज़रों से छिप गया और अंधेरे में कंपाउंड की दीवार की तरफ मुड़ा, लेकिन वहाँ भी कोई नहीं था। --खान बोलते-बोलते रुक गया।

" वो लड़की शायद .....

"हाँ। मैंने उसे दीवार से सड़क पर कूदते देखा, लेकिन तुम उसकी कार में कैसे पहुँचे?"

" यह बिल्कुल अनएक्सपेक्टेड था। मैं वैन कुशनर मैन की कार में आया था। वह 11 बजे कॉन्सुल जनरल के बंगले पर पहुँच गया था। उसकी कार के स्टेपनी में छिपे छिपे मेरी तो कमर टूट गई, उफ़।-----वो 12 घंटे बाद भी दर्द को बहुत ज़्यादा महसूस करते हुए बोला । --

आपने मुझे सिर्फ़ उसकि निगरानी करने के लिए कहा था, इसलिए मैं उसका पीछा कर रहा था, लेकिन जब वह बंगले में घुसा और गायब हो गया तो मैं बहुत परेशान हो गया। उसे ढूंढने की कोशिश करने के बाद, मैं आखिर में उसकी कार में छिप कर बैठ गया, यह सोचकर कि वह किसी भी हाल में यहाँ वापस आएगा। मुझे क्या पता था कि वह एम्बेसी के सिक्योरिटी ऑफिसर की जगह लेने अंदर मौजूद है ।

"नहीं, डॉ. पटेल और पैरट के आने की कोई खबर भी नहीं थी क्या ?"

"सच बात तो यह है कि मैं उसकी कार में मुझे नींद आ गई। जब कंपाउंड में पिस्तौल की गोली की आवाज़ गूंजी तो मेरी आँखें खुलीं। और तभी वह काले दस्ताने वाला आदमी कटर मैन की कार में घुस गया।"

मैं उस पल सीट के नीचे लुढ़क गया। मुझे सिचुएशन पूरी तरह समझ नहीं आई, लेकिन जब मुझे एहसास हुआ कि वह बिजली की तेज़ी से भाग रहा है और पीछे से कोई उसका पीछा कर रहा है, तो मैंने उसे रोक लिया।

" ऐसा लगता है जैसे किया धरा सब गोल हो गया ।"

"तो क्या आप ने भी कुछ नहीं किया?"

" मैं बच्चों के तमाशे नहीं करता , लेकिन मुझे नहीं लगता कि उस अनजान आदमी को एक खून करने के बावजूद यह अंगूठी मिली होगी ।"

" यह साली अंगूठी भी एक समस्या बन गई है। मेरे हाथ लगे , तो मैंने इसे चार आने में बेच दूँ ।

"अभी हालत यह है कि कुछ या बहुत से लोग डॉ. पटेल से यह अंगूठी और फ़ॉर्मूला पाने की कोशिश में लगे हुए हैं, और दूसरी तरफ़, मुझे समझ नहीं आ रहा कि इन चीज़ों से हमारा कोई सीधा कनेक्शन कैसे हो सकता है।"

"लेकिन डॉक्टर के गायब होने और उस कुशनर मैन के खून से तो कनेक्शन है?"

" हमारा ध्यान दो प्रकार की घटनाओं में बँटा हुआ है: इन लड़कियों का गायब होना और यह अंगूठी और फॉर्मूला "

"ओह, गई भैंस पानी में ।"

" क्या मतलब ?"

"अपनी छुट्टियां बिताने के लकये कितने प्रोग्राम बनाए थे, सब बेड़ा गर्क .....।

"चिंता मत करो, जल्द ही कुछ ना कुछ होने वाला है ।

" मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं।

"अगर मेरा शक गलत नहीं है, तो आज ही समझ आ जाएगा। हमें अब साइंटिस्ट्स के कैंप में जाना चाहिए, रशियन साइंटिस्ट्स ठीक 12:20 बजे अपना एक्सपेरिमेंट करेंगे। उन्होंने टाइम बदल दिया है। वे अपने एक्सपेरिमेंट और सूरज की सीधी किरणों के बीच कुछ कनेक्शन बनाना चाहते हैं," खान ने उठते हुए कहा।

ठीक 12:15 बजे साइंटिस्ट्स के कैंप में हलचल मच गई। सभी साइंटिस्ट्स अपने टेंट से बाहर निकले और उस टीले के पास पहुँचे जहाँ रशियन साइंटिस्ट्स ने अपनी मशीन लगाई थी। उनमें से एक रेडियोएक्टिव रिएक्टर (ऑटोमेटन) की अपनी खास जगह थी और, कम से कम दूसरे साइंटिस्ट्स के लिए, यह चीज़ न सिर्फ़ नई थी, बल्कि काफ़ी आकर्षक भी थी। वे एटॉमिक ऑटोमेटन की लिमिट तक पहुँच चुके थे, लेकिन इस नई मशीन का मकसद अभी उनके दिमाग में नहीं था, या अगर था भी, तो वे उसे पूरा नहीं कर पाए थे। इस रेडियोएक्टिव ऑटोमेटन में एक सख़्त चमकदार मेटल के कई रंग थे और उनके बीच मोटे शीशों से सजे कई बॉक्स थे, जो किसी एंगल पर एक-दूसरे को रिफ्लेक्ट कर रहे थे। बीच में एक सीधी प्लेट जैसी बहुत चमकदार प्लेट थी, जिसके कोर में बहुत चमकदार मेटल का एक पतला टुकड़ा धँसा हुआ लग रहा था।

पहले किसी को भी रूसी वैज्ञानिकों के प्रोग्राम की डिटेल्स नहीं पता थीं, इसलिए दूर से सभी वैज्ञानिक अब गंभीरता से अपने एक्सपेरिमेंट के नतीजों का इंतज़ार कर रहे थे। एक और मशीन, जो काले स्टील के खोल से ढकी हुई थी, अलग रखी गई थी और उसका बारे में अभी भी पता नहीं था।

जैसे ही सूरज दोपहर के करीब आया, रूसी वैज्ञानिकों ने प्रयोग शुरू कर दिया।

रेडियल ऑटोमेटन के घूमने वाले स्टार्टर को दबाते ही वे सभी रिंग अपनी-अपनी धुरी पर एक रेजोनेंस के साथ घूमने लगे और सूरज की तेज सीधी किरणें उस सीधी सतह पर ऐसे टिक गईं जैसे कोई दूसरा सूरज चमक गया हो। जैसे-जैसे यह सतह चमकदार होती गई,

उसका रिफ्लेक्शन उन रिंग्स पर पड़ने लगा और मोटे कांच से सजे बॉक्स इस रिफ्लेक्शन को तेजी से एक-दूसरे तक पहुंचाने लगे। उस समय, उस चमकदार प्लेट के कवर से जुड़ी एक गोट , पहले वह लाल हुई फिर इंद्रधनुष की तरह सात रंगों में बदल गई। और जैसे ही रूसी वैज्ञानिक बोलोव्स्की ने " ब्लो " (का ऑर्डर दिया, ऑटोमैटिक मशीन का एक बटन, जिसे शायद आवाज से कमांड किया जा सकता था, झटके से अंदर की ओर दब गया। और अगले ही पल, इंद्रधनुष की तरह सात रंगीन सर्कल की एक सीरीज उन रिंग्स से निकलकर आसमान की ओर उड़ने लगी। मशीन का एंगल सस्पेंडेड प्लेन की तरफ था और वो सर्कल आसमान में फैल रहे थे।

कुछ सेकंड बाद लोगों ने कुछ अजीब देखा। ये गोले हवा में मौजूद कोहरे को ढकने लगे और फिर आसमान में धुएं का एक बादल दिखने लगा, लगभग एक हल्के गोले जैसा। इस धुएं में, रंग-बिरंगे गोले बार-बार बिजली की तरह चमकते दिख रहे थे। यह हल्के भूरे रंग का बादल जैसा धुआं ऊपर उठकर लटके हुए प्लेन के चारों ओर नाचती लहरों तक पहुंच गया। उस समय कैंप में मौजूद सभी लोगों की नज़रें उन पर टिकी थीं, लेकिन प्रोफेसर दाऊद कभी-कभी पूरी भीड़ को एक सरसरी नज़र से देख लेते थे। एक तरफ सिल्वाना डे , अमेरिकी और फ्रेंच साइंटिस्टों के एक ग्रुप के साथ बैठी थीं, और उनके पास, मेकअप में सार्जेंट बाले , डॉक्टर के साथ खड़े थे। सिल्वाना के पास होने से उन्हें शैम्पेन के दो पेग का नशा महसूस होता, हालांकि खान ने उन्हें बताया था कि वह लड़की खतरनाक है। और फिर वह खतरनाक हो या न हो, उसकी सुंदरता और उसका आकर्षक सुडौल फिगर सार्जेंट बाले के लिए निश्चित रूप से खतरनाक था।

इस तरह की लड़कियां कभी-कभी उसे इमोशनली आधा पागल कर देती थीं। सिल्वाना में अपनी सुंदरता और बोल्ड नेचर से दूसरों को इम्प्रेस करने की ज़बरदस्त अट्रैक्शन थी, और अगर यह साइंटिस्ट्स के आधे-अधूरे माहौल के बजाय मिलिट्री या मज़ेदार शहरी माहौल होता, तो शायद सभी को वह बहुत खूबसूरत लगती।

जब उसने बाले को अपनी ओर घूरते देखा तो वह मुस्कुराई। ---"डॉक्टर, क्या आप यह एक्सपेरिमेंट नहीं देख रहे हैं?"

"हम देखने वालों की नजर देख रहे हैं ।" बाले ने आह भरी और कविता पढ़ी। वह हँसी, उसके अंदाज से उसका मतलब समझ गई।

सिलवाना ने मज़ाक में कहा, "एक साइंटिस्ट को सबसे ज़्यादा दिलचस्पी अपने पैशन यानि कि साइंस में होती है।"

" मैडम, पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होतीं। मुझे इन बकवास बातों से ज़्यादा आप में दिलचस्पी है," बाले ने बेशर्मी से कहा।

" ऐसे लोगों को निकम्मे कहा जाता है। --वह मुस्कुराई।

" ज़रूर कहा जाता होगा। जिस पर आपकी नजर पड़ जाए वो भला किस काम का रह जाएगा ? इस खुशामद पर उसने झुकती आँखों से बाले को देखा।

" मत ऐसे देखिए , मैं बेहोश हो जाऊंगा ।"

"क्यों?

"तुम्हारी आँखों में शराब तैर रही है।"

लेकिन जब पास खड़े डॉ. स्मिथ ने उनकी तरफ देखा तो उन्होंने बातचीत रोक दी।और विषय बदल दिया।

इस रूसी रिएक्टर बारे में क्या सोचते हैं? “ सिल्वाना पूछने लगी।

"कौन सा रूसी एक्टर?" बाले ने हैरानी से पूछा।

"होश में आओ, डॉक्टर। मैं रूसी रिएक्टर के बारे में पूछ रही हूँ।"

"मैं रूसियों के बारे में कुछ नहीं जानता।"

"ओफ , तुम कैसे साइंटिस्ट हो , तुम्हें तो इतना भी नहीं समझते ?"-- वह झुँझला गई । और यह टेस्ट बाले के लिए एक बुरा मौका था। वह किसी भी एंगल से साइंटिस्ट नहीं हो सकता था। अगर वह खान होता, तो अपनी बहुत ज़्यादा जनरल नॉलेज के आधार पर हर मामले को संभाल लेता, लेकिन बाले ने बचपन में अपने स्कूल में सिर्फ़ नेचुरल साइंस पढ़ी थी। जो हार्ट, लिवर तक ही लिमिटेड थी, जो हार्ट, लिवर, लंग्स और हेल्थ साइंस तक लिमिटेड थी। लेकिन उसने बड़ी चालाकी से इस मामले में खुद को बचा लिया। उसने सौ साल के लवर की तरह अपने चेहरे पर रोमांटिक एक्सप्रेशन बनाया, जिससे उसका टोन थोड़ा दर्द भरा हो गया।

" अपनी समझ इश्क के पागलपन का शिकार हो गई है मैडम। आपने अंकल ग़ालिब की वह कविता पढ़ी होगी।

" नहीं , मैंने सिर्फ़ उमर खय्याम की रुबाइयाँ पढ़ी हैं।"

" उमर खय्याम वाले सिर्फ़ तस्वीरें बनाते हैं। वैसे, किसी का भी नाम लेकर पढ़िए: " समझ समझ कर समझ ना पाए , वह नासमझ हमको खाक समझे ...., यानि कि.. ।

" अरे, वो देखो,------ सिल्वाना ने उसे अनदेखा किया और उस उड़ते हुए प्लेन की तरफ इशारा किया जहाँ रशियन रेडिएशन रिएक्टर से निकले धुएं के रंगीन गोले अब पहुँच गए थे और लोग बेसब्री से इस एक्सपेरिमेंट के नतीजों का इंतज़ार कर रहे थे। प्रोफेसर डेविड, हैरानी से, धीरे-धीरे भीड़ में से निकले और एक सफ़ेद दाढ़ी वाले बूढ़े आदमी के पास रुके। वह उसे भीड़ में पहली बार देख रहा था। वह मुस्कुरा रहा था। वह एक आम नागरिक जैसा लग रहा था, लेकिन खान का ध्यान उसके चेहरे पर गया, जो उसके सफ़ेद बालों की तरह बूढ़ा था।

उसके चेहरे पर कोई झुर्रियां नहीं थीं। ध्यान से देखने पर, वह जान पाया कि दोनों गालों पर मोटी झुर्रियां, जो दूर से दिख रही थीं और दाढ़ी के बालों तक पहुंचते-पहुंचते गायब हो गईं, बनावटी थीं। उन्हें मेकअप से बनाया गया था।

प्रोफेसर दाउद उनके बगल में अनजान से बन कर खड़े थे । वह बूढ़ा आदमी, जो अच्छी हाइट का और फिजिकली बहुत हेल्दी था, इस आसमानी नज़ारे को देखने में पूरी तरह खो गया था। शायद उसे प्रोफेसर दाउद के पास होने का एहसास भी नहीं हुआ। भीड़ में चार और आँखें प्रोफेसर दाउद और उस रहस्यमयी बूढ़े आदमी को घूर रही थीं। उनमें से दो, चमकदार और तेज़, सिल्वाना डे कोबा की थीं, जो साफ़ तौर पर इस एक्सपेरिमेंट में अपनी दिलचस्पी दिखा रही थीं, लेकिन जानबूझकर बेवकूफ़ी कर रही थीं और उनके मूवमेंट और पोज़ को देख रही थीं। और दूसरी शक्ल एक अनजान मिलिट्री गार्ड की थी, जो एक टेंट की रस्सी पकड़े खड़ा था और कभी प्रोफेसर दाउद और उस बूढ़े आदमी को देखता और कभी होवरक्राफ्ट को। फिर अचानक आपसी बातचीत से एक शोर हुआ, जब अनगिनत आँखों ने धुएं को होवरक्राफ्ट के चारों ओर दो घेरे बनाते हुए देखा। होवरक्राफ्ट अपनी धुंध में छिपा हुआ था। उसमें कभी-कभी सिर्फ़ रंगीन लहरें तैरने लगती थीं। फिर हवा में कुछ अजीब आवाज़ें सुनाई देने लगीं, ठीक वैसी ही जैसी रेडियो तरंगों में होने वाली अफ़रा-तफ़री की वजह से पैदा होती हैं। और एक बार, जब उन्होंने लटके हुए प्लेन को हिलते हुए देखा, तो एक साथ कई चीखें निकल गईं।

एक युवा रूसी साइंटिस्ट खुशी से चिल्लाया, लेकिन जब उसने धुएं को तेज़ी से हवा में फैलते देखा तो उसकी आवाज़ गले में अटक गई। उसनेरोशनी रंगीन गोले देखे। रंगीन गोले टूटे हुए धनुष की तरह टूटने लगे और अंतरिक्ष में गायब हो गए, और नीचे रिएक्टर में गुड़गुड़ाहट की आवाज़ सुनाई देने लगी।

" ऑपरेटर नंबर दो" रूसी वैज्ञानिक बोलोव्स्की गला फाड़ कर चिल्लाया, और इस टीले से कुछ दूर,

एक चट्टान के पास, उसका एक नौजवान स्टंटमैन, जो कंट्रोल बॉक्स पकड़े हुए था, हैरानी से बॉक्स पर झुक गया। उसने एक के बाद एक उसके बटन दबाए। जैसे ही उसने पहला बटन दबाया, दूसरी मशीन का काला स्टील का खोल ऊपर उठा और नीचे गिर गया। और उसी समय, फ्रेम के अंदर से एक चौकोर जगह से एक अजीब मशीन निकलने लगी, सिवाय रूसी साइंटिस्ट के, और इस अजीब मशीन के बारे में अब तक किसी को पता नहीं था। अमेरिकी साइंटिस्ट इसे ऑर्बिटल मिसाइल कह रहे थे, लेकिन वे भी इस मशीन को देखकर हैरान थे। यह एक नई तरह की न्यूक्लियर तोप थी, जिसके सिरे पर एटॉमिक

रिंग्स और एक लंबा अंडे जैसा खोल लगा हुआ था। जैसे ही एटॉमिक रिंग्स घूमने लगीं, तोप भी घूमने लगी और उसकी दिशा प्लेन की तरफ हो गई। लोगों ने इन आँखों से जो देखा वह एक चमकीली सोलर वेव थी जो रिंग्स का चक्कर लगाने लगी, और इस मशीन से एक बड़े इलेक्ट्रिकल ट्रांसफॉर्मर जैसी रेजोनेंस पैदा हुई। अचानक एक धमाका हुआ, और तोप के मुँह से बिजली से भी ज़्यादा तेज़ आग निकली, जो पलक झपकने जितनी तेज़ी से लटके हुए हवाई जहाज़ की तरफ़ बढ़ी। वह लंबा अंडाकार गोला तोप के मुँह से गायब हो गया था, और यह चमक शायद उसकी अपनी थी।

जैसे ही वह उड़ते हुए प्लेन के पास पहुंची , एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी, जैसे किसी ने स्टील शीट पर हथौड़े से मारा हो। लेकिन लोग यह देखकर हैरान रह गए कि प्लेन में कुछ भी खराब नहीं हुआ था। वह बस हवा में ही था, जैसे समुद्र में तैरती हुई नाव, और उससे एक हल्की नीली चिंगारी नीचे गिर रही थी।

"ब्लो ," प्रोफेसर फिर चिल्लाया। और उस जवान असिस्टेंट ने तीसरा बटन फिर से दबाया। इस बार भी रिएक्शन वही था। इस नए टाइप के न्यूक्लियर कैनन से एक दूसरा रेडियोएक्टिव शेल फ़ायर किया गया और फिर से प्लेन से टकराया। लेकिन दूरबीन से देखने पर, उसे लगा कि न्यूक्लियर शेल असल में प्लेन की बॉडी तक नहीं पहुँच रहा है। हालाँकि, अब उसे जो बात समझ आई थी, और

हैरानी तब और बढ़ गई, जब धुआं छंटने और रंगीन लहरें घुलने के बाद, उन्हें प्लेन के चारों ओर एक अजीब स्पेस शेल दिखने लगा। जैसे प्लेन के चारों ओर ट्रांसपेरेंट कांच की एक पतली शीट लिपटी हो, जिससे आंख तो गुज़र सकती थी, लेकिन न तो रेडियो शेल उसे तोड़कर प्लेन की बॉडी तक पहुंच सकता था, और न ही रंगीन गोले।

" यह कॉस्मा प्रोटेक्ट सोलो शेल्टर है। हम एक साइंस के अजूबे को हकीकत में देख रहे हैं। ---प्रोफेसर बोलोव्स्की अपने साथियों की तरफ मुड़े और चिल्लाए। फिर वह पागलों की तरह अपने स्टाफ़ को ऑर्डर देने लगे, " ब्लो' । और न्यूक्लियर तोप ने र गोले बरसाने शुरू कर दिए। इस टक्कर से हवा में रोशनी की चमकदार चिंगारियां बनीं, फैलीं और

गायब हो गईं, लेकिन क्योंकि इस एक्सपेरिमेंट से पहले, कैंप के रेडियोएक्टिव इंस्ट्रूमेंट्स (कंडेंसिंग वायर्स) में एब्ज़ॉर्प्शन रिड्यूसर लगे थे, इसलिए कैंप वाले इन खतरनाक न्यूक्लियर रेडीएशन के असर से सुरक्षित थे। इन रिड्यूसर और वायर्स ने हवा की टक्कर से बने और फैले न्यूक्लियर असर को भी सोख लिया। और उनके हवा के असर को आबादी में फैलने से रोकने के लिए, ट्रांसमीटर्स के ज़रिए रेडियो तरंगों का एक नेटवर्क पहले ही बिछा दिया गया था। इस एक्सपेरिमेंट से आधे घंटे पहले, कैरोल के कैंप की ओर जाने वाले सभी रास्ते ब्लॉक कर दिए गए थे।

☆☆☆

165

खतरनाक नीली तरंगें

इस कोशिश का नतीजा भी ज़ीरो रहा। असल में, अगर पहले से सुरक्षा के उपाय नहीं किए गए होते, तो यह काम खतरनाक हो सकता था। नई न्यूक्लियर तोपों के आने से, जब न्यूक्लियर शेल (अंडाकार शेल) धरती की सतह पर डिटेक्ट सोलो शेल्टर से टकराया, तो जो न्यूक्लियर धूल गिरी, उसने हवा की लहरों को भारी और ज़्यादा एक्टिव बना दिया। यह धूल कैरोल के सुनसान खेतों पर भी गिरी, जो धब्बेदार चट्टानों से ढके हुए थे, और इससे हवा में एक तरह की चमक पैदा हुई। हालांकि, रूसी एक्सपेरिमेंट ने उम्मीद ज़रूर जगाई। क्योंकि वे सोलर रेडिएशन तरंगों के उस कवर को कम करने में कामयाब रहे थे जिसने एयरक्राफ्ट को लटकाए रखा था।

प्लेन को हिलते हुए देखा गया था, इसलिए अगर उन्हें बड़े लेवल पर तैनात किया जाता, तो वे कवर तोड़कर अंदर जा सकते थे, लेकिन ऐसा करने में बहुत समय और मेहनत लगती।

ये एटॉमिक बम थे, जो आम एटॉमिक और एंटी-एटॉमिक तोपों से अलग थे, जिन्हें लड़ाई के मकसद से बनाया गया था, और बड़े पैमाने पर रेडियोएक्टिव रिएक्टर बनाना आसान

नहीं था। यह कमाल की मशीन, जिसके रिंग और प्लेट रेडियोएक्टिव चीज़ों की एनर्जी सोखकर उनका सार निकालते थे, और अलग-अलग एंगल पर इसके आग जैसे क्रिस्टल सेल, देखने में बनावटी लगते थे, लेकिन ऐसा रिएक्टर एक मील लंबी फैक्ट्री में लगभग डेढ़ फुट डायमीटर के नीचे एब्जॉर्बर के नीचे बनाया गया था, जिन्हें पांच साल तक लगातार चालू रखा गया था, जिसमें सूरज की सीधी किरणों से रेडियो तरंगों और अंतरिक्ष के तरल पदार्थ को बाहर निकाला जाता था। इन भट्टियों से, कई सौ

ट्रान्स्फ़ोर्मिंग पावर (बदलने वाली शक्ति) उस स्टेज से जुड़ी थी जो गर्मी को कम करती थी। इस फैक्ट्री के आस-पास कम से कम पंद्रह मील तक कोई आबादी नहीं थी, कोई पेड़-पौधे वगैरह नहीं थे। पूरा फैक्ट्री सिस्टम ऑटोमैटिक मशीनों से चलता था और हर नई भट्टी से जो मिलता था, बहुत पतले वैक्यूम फ्लेक्स इन फ्लास्क से डिग्री ज़ीरो फ़ारेनहाइट से नीचे के फ्रीजिंग स्टैंडर्ड की ट्यूब में से गुज़ारे जाते थे और पंद्रह मील दूर इस जगह पर पहुंचाए जाते थे, जहां इसके सुरक्षित इस्तेमाल के फॉर्मूले और मशीनें तैयार करने पर एक्सपेरिमेंट किए जाते थे और इस शक्ति के इस्तेमाल का कोई और मज़बूत एक्शन फॉर्मूला अभी तक इन वैज्ञानिकों को समझ नहीं आया था। दूसरे देशों के वैज्ञानिक अभी भी इस एक्सपेरिमेंट से अनजान थे।

इस आखिरी एक्सपेरिमेंट के बाद, साइंटिस्ट निराश होकर अपने-अपने टेंट में लौट गए। वे सोच रहे थे कि ये ऐसी कौन सी ताकत है जिसे कोई साइंटिफिक फ़ॉर्मूला हरा नहीं पा रहा था । हर दिमाग अपनी जगह पर एक ही सोच में डूबा हुआ था, लेकिन प्रोफ़ेसर दाऊद एक टेंट की आड़ में चुपचाप खड़े थे, उस रहस्यमयी बूढ़े आदमी की हरकतों को देख रहे थे, जो उस टीले के चारों ओर चक्कर लगा रहा था जिस पर रूसी मशीनें थीं, प्रोफ़ेसर बोलोव्स्की ने दूसरे साइंटिस्टों को इन कमाल के रूसी आविष्कारों को देखने की इजाज़त देने से मना कर दिया था। और रूसी साइंटिस्ट उनके लौटने का इंतज़ाम कर रहे थे।

बाले अभी भी सिल्वाना का पीछा कर रहा था। वे दोनों एक टेंट के सामने फोल्डिंग कुर्सियों पर बैठे हुये थे । सिल्वाना की नज़रें अब पक्की सड़क पर टिकी थीं, कैंप के रास्ते की ओर जा रही थी।

"हाँ, मैं यही कह रहा था। बाले ने अपनी बातचीत जारी रखते हुए कहा ---जब एटम टूटा, तो मैंने उसे देखा।

"तुमने एटम को तोड़ कर देखा ?" सिल्वाना ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

"आह...आह, हाँ , इसमें इतनी बड़ी बात क्या है?" बाले ने भौंहें चढ़ाईं।

"तो इसका क्या नतीजा निकला?"

" इसी में से निकले , भाई हराम मूंछ ।

"वॉट इस दिस ?" सिल्वाना ने कुछ भी समझे बिना गंभीरता से पूछा।

"एटम के साथ जो कुछ भी होता है, उसे कुछ हद तक अब्दुल रऊफ गम कहते हैं।"

"गम ? एटम? हाँ, यह छोटा तो होता है।" उसने तुलना करते हुए कहा, "लेकिन फिर?"

"फिर मैंने भी इसे तोड़कर देखा।"

"अरे, क्या सच ?" सिल्वाना का आश्चर्य और भी बढ़ गया।

“ सैन्सदान कभी झूठ बोलते हैं ? “

"तो फिर क्या हुआ?"

;’ इसमें से निकले तीन आली....

"क्या?

" इंग्लिश में क्या कहते हैं? मैं भूल गया।"

"इलेक्ट्रॉन?"

"हाँ, हाँ, बिल्कुल यही बात है।"

लेकिन बोलते समय वह चौंककर खड़ी हो गयी।

"क्या बात है?" बाले ने नकली हैरानी जताई।

"अरे, कुछ नहीं, मैं अभी आती हूँ। --- यह कहते हुए वह बिजली जैसी तेज़ी से मुड़ी और टेंट से बाहर चली गई।

रस्सी से दूसरी तरफ कूद गई।

बाले की तेज निगाहें उसे टेंट के पीछे से मिलिट्री टेंट की ओर जाते हुए देख रही थीं।

वह खुद अपने पंजों के बल पर उसके पीछे दौड़ रहा था। सिल्वाना अब मिलिट्री टेंट तक पहुँच गई थी। उसने उस सफ़ेद दाढ़ी वाले बूढ़े आदमी को देखा, जिसे टीले के पास देखा गया था, जो मिलिट्री टेंट के चारों ओर घूमकर दूसरी तरफ से बाहर आ रहा था। लेकिन

उसी पल एक गोली चली और बूढ़ा आदमी अपनी जगह से उछलकर ज़मीन पर मुँह के बल गिर गया। गोलियों की आवाज़ सुनकर सिल्वाना चीख पड़ी। वह दौड़ी और मरते हुए बूढ़े आदमी के ऊपर झुकी। उसकी दाढ़ी कुछ शक्की लगी , उसने उसकी दाढ़ी मुट्ठी में पकड़ी और उसे एक झटका दिया और सफ़ेद दाढ़ी बूढ़े आदमी के चेहरे से अलग होकर उसके हाथ में आ गई।

" बटलर? उसके मुंह से निकला।

"लड़की , तुम हट जाओ इसके पास से " ।" एक आदेश देने वाली आवाज़ ने सिल्वाना को चौंका दिया।

उसने पलट कर देखा । एक भारतीय सैनिक पीछे खड़ा था, उसके हाथ में राइफल थी। उसका रंग गोरा था, और उसका चेहरा कठोरता और नफ़रत से भरा हुआ था।

" गोरे जासूस, तुम हमारा रिएक्टर नष्ट करना चाहते थे। क्या तुमने हमें इतना बेवकूफ समझा है कि हम इन खतरों से अनजान रहेंगे। --------सिपाही ने घायल आदमी को तिरस्कार से देखा और ज़मीन पर थूकते हुए कहा। सिल्वाना हैरानी से उसे देख रही थी।

" यह कौन है? अरे, तुमने इस बेचारे को गोली मार दी , " च च " ? पीछे से बाले की आवाज़ सुनकर वे दोनों चौंक गए।

सैनिक ने कहा, "यह सफेद जासूस डायनामाइट लेकर आया था, जिसे उसने टीले की दरार में लगाया गया था जहां रूसी मशीनें हैं।"

"तो आप भारतीय सैनिक नहीं हैं?" बाले ने उससे पूछा।

उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के कहा, "मैं रूसी वैज्ञानिकों का बचाव करने वालों में से एक हूं।

" लेकिन आपको कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए था।"

"मुझे कोई परवाह नहीं है। मैं आपके कानून की हर सज़ा भुगतने के लिए तैयार हूँ।" उसने जवाब दिया.

169

" यह पुलिस समझेगी, हमें इससे क्या लेना देना ? । बाले ने खुद को छिपाते हुए बेपरवाह होने का नाटक किया,।

लेकिन उसी समय दूसरे सैनिक आ गए और रूसी गार्ड को गिरफ्तार कर लिया गया। उसने कोई विरोध नहीं किया।

बाले को हैरानी हुई कि उस समय खान कहाँ गायब हो गया था। उसे ज़रूर बूढ़े आदमी के भेष में छिपे सफेद जासूस के बारे में पता होगा।

घटना के एक घंटे के अंदर, रूसी रिएक्टर और न्यूक्लियर तोप को पैक करके एयरपोर्ट भेज दिया गया। उनके साथ भारतीय मिलिट्री गार्ड की एक टुकड़ी भी थी। कैंप खाली होने लगा। विदेशी साइंटिस्ट अपनी कारों में, जिनका इंतज़ाम उनके दूतावासों ने किया होगा, शहर की ओर चल पड़े।

एक बड़ी स्टील बॉडी वाली वैन रूसी रिएक्टर ले जा रही थी। मिलिट्री गार्ड वैन के आगे और पीछे जीप में सवार थे, और ये गाड़ियां अभी एयरोडरम तक पहुंचने वाले सूने रास्ते से गुज़र रही थीं ।

170

वैन को एक रशियन ड्राइवर चला रहा था और उसमें दो रशियन सिक्योरिटी ऑफिसर सवार थे। यह सड़क शहर की ओर जाने वाली सड़क से अलग थी। कभी-कभी इस पर सिर्फ़ एयर फ़ोर्स की गाड़ियाँ ही चलती दिखती थीं।

अचानक, तीनों गाड़ियां झटके से रुक गईं। अगली गाड़ी के गार्ड यह देखकर चौंक गए कि हवा में हल्की नीली लहरें भाप की पतली और दिखने वाली वाइब्रेटिंग लहरों की तरह तैर रही थीं और तीनों गाड़ियों के डायनमो ने बिजली बनाना बंद कर दिया था। वे सब घबराकर गाड़ियोंसे बाहर निकल आए। पिछले कुछ दिनों से वे जो देख रहे थे, वह उनके लिए किसी कल्पना या जादुई सीरीज़ से कम नहीं था। इस नई और हैरान करने वाली चीज़ ने उन्हें डरा दिया। अचानक, हवा में लगभग चार या पाँच फ़ीट की ऊँचाई पर रोशनी की एक मोटी नीली किरण दिखाई दी। और वे हैरानी और डर से चीख पड़े। क्या हो रहा था, और क्या होने वाला था, यह उनकी समझ से बाहर था। वे बिना किसी वजह के डर और उलझन की हालत में इधर-उधर भागने लगे। उसी पल, इस मोटी नीली किरण की एक छोटी किरण, तेज़ी से ज़मीन की ओर बढ़ी और गाड़ियों को हिलाने लगी। सड़क से दूर, यहाँ-वहाँ खाइयों में छिपे गार्डों की डरी हुई आँखें एक पल के लिए चौंधिया गईं, और फिर उन्होंने गाड़ियों को धुएँ या धूल के बादल में गायब होते देखा। यह हालत मुश्किल से एक सेकंड तक रही। उसके बाद, ज़मीन तक पहुँची नीली किरण की लहर शांत होकर वापस लौट आई, और उन्होंने वैन की जगह सड़क पर कुछ पिघला हुआ मेटल बहता हुआ देखा, जो तुरंत काला होकर वहीं जम गया। इस काले हुए मेटल में कुछ देर तक एक तरह की सुनहरी चमक देखी गई, जिसके बाद ज़मीन का वह हिस्सा कई फीट तक धंस गया। वैन के आगे और पीछे खड़ी जीपों में से, आगे वाली कार का पिछला हिस्सा कुछ मुड़ा हुआ था, जैसे उसमें आग लग गई हो, और पीछे वाली कार के अगले हिस्से का भी यही हाल था। रोशनी की वह मोटी नीली किरण आसमान में ऊपर उठ कर विलुप्त हो चुकी थी ।

****

171

" हेलो , सैली

एक जानी-पहचानी आवाज़ ने सिल्वाना को चौंका दिया।

वह शहर के दूसरे सबसे लग्ज़री होटल, ज़ेनिथ के एंटरटेनमेंट एरिया के पास एक प्राइवेट केबिन में बैठी एक मोटे तगड़े काले आदमी से बात कर रही थी। उनके सामने,

एक ट्रे पर दो ब्रांडी की बोतलें और कुछ तली हुई मछलियाँ रखी थीं। एक जवान और हैंडसम गोरा आदमी पास आया। उसे देखकर वह मुस्कुराई और उसने आराम से उसके पास एक कुर्सी खींची और बैठ गया।

"क्या तुम्हें कुछ पता चला?" सिल्वाना के पार्टनर ने उससे पूछा।

"हाँ, वह डॉकयार्ड में एक गंदे यहूदी कॉफ़ी शॉप में है," उसने कहा।

"तुम किसके बारे में बात कर रहे हो?" सिल्वाना ने पूछा, जिससे माहौल थोड़ा और खुशनुमा हो गया।

"नोर्क, वैन कैंटर मेन का हत्यारा," उस युवक ने कहा।

" ओह, तुम कितने बेवकूफ हो, जिमी। इस उठाईगीरे से हमारा क्या लेना-देना? यहाँ की पुलिस खुद इससे भुगत लेगी ।"

" लेकिन वह अंगूठी?'

"अगर वह उसके कब्ज़े में होती, तो क्या वह यहाँ नज़र आता ? हमें लगा कि तुम डॉ. पटेल की कोई खबर लाएंगे?"

" वो बूढ़ा आदमी कहीं नहीं मिल रहा है। अगर वह नोरक की कस्टडी में होता... तो , ----वह जवान आदमी

कुछ कहना चाहता था

"नोरक, जर्मन सीक्रेट सर्विस में एक पुराना जंगी जासूस है। वह इतना लापरवाह नहीं हो सकता कि डॉक्टर उसके कब्ज़े में हो और वह इस तरह भटकता फिरे ," सिल्वाना के साथी ने उसे बीच में टोका।

" फिर अब ? "

' हमें डॉ. पटेल को ढूंढना होगा। वह अंगूठी और डॉक्टर का फ़ॉर्मूला बहुत कीमती चीज़ें हैं।"

"वे सभी साइंटिस्ट रात 8 बजे यहां इकट्ठा हो रहे हैं। हो सकता है कि इस मीटिंग से हमें डॉक्टर के बारे में कुछ सुराग मिल जाए।"

"साहब आपको कुछ चाहिए?" एक वेटर ने अंदर आते ही विनम्रता से पूछा, वो एक हेल्दी आदमी था जिसकी बड़ी बड़ी मूंछें थीं।

उनके अचानक दखल से वे चौंक गए, लेकिन वेटर के चेहरे पर मासूमियत देखकर वे शांत हो गए।

"पेरी, तुम क्या पीना चाहोगे?"

" बस एक पेग. उसने ब्रांडी के पेग की ओर इशारा किया.

" ले आओ, वेटर।-- सिल्वाना ने खुद उसे ऑर्डर दिया और वह झुककर बाहर चला गया।

जब वह होटल की लॉबी से गुज़र रहा था, तो उसकी नज़र मैनेजर पर पड़ी जो काउंटर पर झुका हुआ था।

वह शायद बार टेंडर के साथ कोई डील कर रहा था। और बार के पीछे कॉरिडोर में, उसका ऑफिस का दरवाज़ा खुला था। वेटर दूसरों की नज़रों से बचते हुए अंदर चला गया । टेबल पर एक टेलीफ़ोन रखा था। उसने जल्दी से नंबर डायल करना शुरू कर दिया।

" हेलो, हाँ, मैं राउफ बोल रहा हूँ। वह लड़की, मिस सिल्वाना, यहाँ दो आदमियों के साथ है।

173

दूसरी तरफ से पूछा गया, "और कुछ?"

" सभी वैज्ञानिक आज रात आठ बजे यहां इकट्ठा होंगे।

" वो मुझे पता है ।"

वॉन केंटर मैन का हत्यारा, एक पूर्व जर्मन जासूस, नोरिक, डॉकयार्ड इलाके के एक यहूदी कॉफी हाउस में ठहरा हुया है ।"

" उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। लेकिन, तुम उसी होटल में ऐसे ही रहोगे।

" बेहतर है। --यह कहते हुए राउफ ने रिसीवर नीचे रखा और बाहर आ गया। मेनेजर, अब तक बार टेंडर के साथ कैलकुलेशन में बिज़ी था।

☆☆☆

174

आश्चर्यजनक कहानी

पैन अमेरिकन एयरवेज़ का प्लेन, जो पाँच दिनों से ज़मीन और आसमान के बीच लटका हुआ था, उसका पायलट अब सबको हैरानी भरी नज़रों से देख रहा था। एयरपोर्ट के वेटिंग हॉल में प्रेस रिपोर्टर, एविएशन डिपार्टमेंट के अधिकारी और सीक्रेट पुलिस अधिकारी उसे चारों तरफ से घेरे हुए थे।

' मैं सच कह रहा हूँ, आप सब को ---वह लगभग बैठी हुई आवाज़ में चिल्लाया। ---यहाँ के कैलेंडर पर पाँच दिन बाद की तारीख देखकर मैं खुद भी बहुत हैरान हूँ। जबकि मैं पिछले एयरपोर्ट से ठीक एक घंटा पाँच मिनट पहले निकला था। --------उसने उन्हें अजीब तरह से देखा। जैसे वह यह पता लगाने की कोशिश कर रहा हो कि वे सब पागल हो गए हैं या वो खुद ।

रात के सन्नाटे में, वेटिंग रूम की पीली लाइटों में, उसके आस-पास खड़े आदमियों के चेहरे पीले और डरावने लग रहे थे। उनकी बातें एक जैसी थीं। वे उसे यकीन दिलाने की कोशिश कर रहे थे कि वह पिछले एयरपोर्ट से पाँच दिन पहले निकला था, आज से ठीक एक घंटा दस मिनट पहले। हालाँकि उसकी अपनी राय में, उसके फ़्लाइट शेड्यूल में पाँच दिन तो दूर, पाँच मिनट का भी फ़र्क था।

"क्या रास्ते में आपका कोई एक्सीडेंट हुआ?" एक एयर ऑफिसर ने उससे सवाल पूछा।

" एक्सीडेंट? क्यों? क्या आप चाहते हैं कि मैं ज़बरदस्ती कोई बयान दूँ?”

' " अरे नहीं। असल में, हम जो कह रहे हैं वह भी सही है और आप जो कह रहे हैं वो भी ।

फिर भी, अगर आप हमारे सवालों का सही जवाब देंगे, तो इस रहस्य को समझना आसान हो जाएगा. -------ये शब्द कहने वाले खुद प्रोफेसर दाउद थे, जो अभी-अभी यहां आए थे.

इस अद्भुत प्लेन के, जो पाँच दिनों से कई फ़ीट की ऊँचाई पर हवा में लटका हुआ था, आज रात ठीक 11:55 बजे उड़ान भरने और अपने यात्रियों के साथ बखिरी एयरपोर्ट पर सुरक्षित उतरने की खबर तूफ़ान की तरह फैल गई और पूरे शहर को चौंका दिया।

फ़ोटोग्राफ़र, अब तक पहले ही प्लेन के सभी यात्रियों और क्रू की तस्वीरें ले चुके थे और अब अख़बार की रिपोर्ट के लिए उनके बयान और पायलट के जवाब नोट कर रहे थे ।

बहुत पूछने पर पायलट ने सिर्फ़ इतना कहा कि हवा में उड़ते समय उसे नींद आ गई होगी, लेकिन यह कुछ सेकंड तक ही रहा। हालाँकि, उसने शिकायत की कि लैंडिंग के समय उसे सिग्नल काफ़ी देर से मिला था। इतने सारे गंभीर लोगों के भरोसे के बावजूद, पॉयलट अभी भी गंभीरता से यह मानने को तैयार नहीं था कि कैलेंडर पर आज की तारीख सही थी।

हॉल के दूसरे हिस्से में और भी पैसेंजर थे, वे भी सवाल पूछने वालों को ऐसे देख रहे थे जैसे उन्हें पागलों के झुंड ने घेर लिया हो या जैसे कई समझदार लोग उनका मज़ाक उड़ाने की कोशिश कर रहे हों। एक कोने में, एक बूढ़ा पैसेंजर अपनी सीट पर बैठा बड़बड़ा रहा था।

" कोई और काम नहीं है, वेवकूफ लोग , बिना सोचे-समझे दिमाग चाट रहे हैं। पागल कहीं के ।"

हॉल में ऐसे लोग भी थे जिनके रिश्तेदार इस प्लेन में सफ़र कर रहे थे, और जो खुद प्लेन के समय पर न पहुंचने और हवा में फंसने की चौंकाने वाली खबर पढ़कर यहां आए थे।

आज, पाँच लंबे दिन और रात की निराशा के बाद अपनों को ज़िंदा और ठीक पाकर वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे, लेकिन इन खुशकिस्मत लोगों में एक जोड़ा भी था जिसमें एक बूढ़ा, शरीफ़ दिखने वाला अंग्रेज़ और उसकी भुलक्कड़ चेहरे वाली बूढ़ी पत्नी थी, जो हॉल के पश्चिमी छोर पर बंद कमरे के दरवाज़े पर बेचैनी से टहल रहे थे। कभी वे बाहर कुर्सियों पर बैठकर बंद दरवाज़े की तरफ़ देखते, और कभी घबराकर टहलने लगते।

"तुम मुझे बताओ कि तुम्हारे साथ क्या हुआ। ये लोग मानें या न मानें, मैं ज़रूर मानूंगा।"

गंदी सीट पर पालथी मारकर बैठी, लाल-सफेद यूरोपियन सुंदरी ने ये बातें सुनकर हैरानी से तीसरे आदमी को देखा। वह सुपरिंटेंडेंट खान था। उस समय कमरे में चार और आदमी थे, जिनमें से एक सिविल एविएशन अथॉरिटी का स्टेशन ऑफिसर था, दूसरा

इंग्लिश लाइजन ऑफिसर, और तीसरा PAA (पैन अमेरिकन एयरवेज़) का ट्रैवल डॉक्टर था जिसे खास तौर पर इस प्लेन के पैसेंजर्स की जांच करने के लिए भेजा गया था। और हालांकि वे उस गोरी लड़की की बातें गंभीरता से सुन रहे थे, लेकिन उनके बात करने के तरीके से लग रहा था कि उन्हें यकीन नहीं था कि वह लड़की ठीक है।

" मैं तुम्हें सच बता रही हूँ, मैंने वहाँ पाँच दिन गुज़ारे हैं ।"

" क्या तुम मुझे बता सकती हो कि वह किस तरह की जगह थी?" खान ने उससे पूछा।

"काश मैं इस जगह को शब्दों में बता पाती। जो भी था, वह हमारी दुनिया से बहुत अलग और अजीब था। मैंने... मैंने अक्सर अपने शहर के चर्च के पादरी को स्वर्ग की तारीफ़ करते सुना है, ऐसा लगा जैसे कि वह वही हो।"

"मुझे शुरू से बताओ।" खान उसकी ओर मुड़ा।

" आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, सुपरिटेंडेंट सर। ---लाइजन ऑफिसर ने बीच में कहा।

" मुझे अपने समय की कीमत पता है, तुम्हें चिंता मत करो । ---खान ने उससे यह कह कर टाल दिया ।

"अच्छा है। कम से कम मुझे तो माफ़ ही कर दो।" यह कहकर वह खड़ा हो गया। किसी ने उसे नहीं रोका। अब सिर्फ़ वे तीन और एक लड़की थी। लेकिन खान का पूरा ध्यान उसी पर था।

" इस घटना के समय, आधी रात से कुछ मिनट पहले ही हमारा प्लेन एयरपोर्ट के पास आ रहा था। उसी समय, मुझे अचानक नींद आने लगी और मेरी आँखें बंद होने लगीं। जब मैंने फिर से कोशिश की और आँखें खोलीं, तो मैं यह देखकर चौंक गई कि मैं प्लेन में नहीं था। क्या आप यकीन करेंगे कि मैं उस समय आसमान में तैर रही थी ? मेरे शरीर में उस समय हिलने-डुलने की भी ताकत नहीं थी।

ऐसा लगा जैसे मैं मर गई हूं और मेरी आत्मा को परलोक ले जाया जा रहा है।

मुझे लगा कि मेरे हाथ-पैर बंधे हुए हैं, लेकिन मेरी आँखें देख सकती थीं, और मुझे यह देखकर और भी हैरानी हुई कि मेरे चारों ओर ग्रे धुएं की लहरें फैल रही थीं और वे मुझे भी बांध रही थीं। इस ग्रे धुएं के ऊपर, मैं कभी-कभी आसमान का खालीपन देख पाती थी , जिसमें तारे टिमटिमा रहे थे, लेकिन इससे भी ज़्यादा हैरानी की बात यह थी कि आसमानी रोशनी की पतली, तेज़ लहरें थोड़ी-थोड़ी देर में इस धुएं से टकराती हुई लगती थीं। ऐसा लग रहा था जैसे मैं बाढ़ में तिनके की तरह तैर रही हूँ।

"एक मिनट," खान ने बीच में टोका। वह रुकी और उसे देखने लगी ।

"क्या तुमने देखा कि आसमान में तारे आम तारों से थोड़े अलग दिख रहे हैं?" खान ने पूछा।

बाकी लोगों को सवाल समझ नहीं आया, लेकिन वे चुप रहे।

"नहीं। जैसे दिखते हैं, वैसे ही," लड़की ने सरलता से कहा।

"तो फिर आगे क्या हुआ?"

" इसे सपना कहो या पागलपन, लेकिन यह सच है कि मैंने धुएं के इस बादल को दो बड़े पहाड़ों के बीच एक दर्रे में घुसते देखा और ऐसा लगा जैसे दर्रे के पार ज़मीन से एक धारा निकल रही हो। उसके बाद, ऐसा लगा जैसे इस भूरे धुएं की उड़ान नीचे की ओर झुकी हुई थी। और फिर मैंने चारों तरफ बड़े पहाड़ों से घिरी एक नई दुनिया देखी। ---------बोलते-बोलते वह रुक गई।

"नई दुनिया?" खान ने एक्सप्लेनेशन के लिए पूछा।

" एकदम नई, एकदम अजीब - खुदा गवाह हैं, मैंने यह सब अपनी आँखों से देखा है। मैंने इस दुनिया के चाँद और तारों को अलग-अलग तरह के देखा है। उस रात हमारे आसमान में चाँद के ऊपर निकलने का सवाल ही नहीं था, बल्कि मैंने वहाँ हमारे चाँद से भी ज़्यादा चमकदार एक चाँद देखा।

179

वो बहत तेज़ चाँद चमक रहा था। उसकी रोशनी इतनी तेज़ थी कि वह निचले इलाकों में फैली हर चीज़ एकदम बादलों वाले दिन में भी साफ़ दिखाई दे रही थी । और हैरानी की बात यह थी कि यह चाँद ज़्यादा दूर नहीं लग रहा था।

"शायद यह एक नकली चाँद था?" खान को उसकी बात में और भी दिलचस्पी हो गई।

" आर्टिफिशियल चांद? डॉ. चौंका।

" क्यों? क्या अमेरिकी रॉकेट का इस्तेमाल करके ऐसे चांद को स्पेस में लॉन्च करने के लिए एक्सपेरिमेंट की तैयारी नहीं कर रहे हैं?'-- खान ने खुद डॉक्टर से पूछा।

" ओह, हाँ, मुझे याद आया। लेकिन क्या यह मुमकिन है कि यह आसमान में लटका रहे और इतनी रोशनी दे?

खान ने हंसते हुए कहा, "विज्ञान के युग में सब कुछ संभव है।"

" तो क्या आप अभी भी इन अद्भुत घटनाओं को इस दुनिया से जोड़ रहे हैं?

"मैं जो समझ रहा हूँ, वह या तो कुछ ऐसा है जिसे सिर्फ़ मैं ही समझ सकता हूँ, या यह पूरी तरह से अलग है।"

"मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए। लेकिन, आपको यह समझना होगा कि कुछ समय के लिए मैंने भी मिस जूलिया की हालत को शेयर किया है।' --खान के अजीब जवाब ने उसे चुप करा दिया और जूलिया ने अपनी बात फिर से शुरू की। उसकी घनी पलकों वाली खूबसूरत आँखों के दोनों सिरे झपक रहे थे। वह अपने छोटे रूमाल से अपना और अपने माथे का पसीना पोंछ रही थी। खान ने अपना सिर पर चलते हुये बिजली के पंखे को देखा और उसने कमरे की खिड़की के दोनों पट भी खोल दिए।

जूलिया ने खान से पूछा, "क्या आपने कभी ऐसे घर देखे हैं जो सीधे, खड़े अंडों से बने हों, अंडे जैसे आकार के हों, और उतने ही चिकने और चमकदार हों?"

" हो सकता है कि सिनबाद नाविक को मिले रुख़ जानवरों के अंडे हों।" डॉक्टर से न रहा गया , उसने हंसी उड़ाने वाले अंदाज में कहा

"एटमी अटैक से बचने के लिए ऐसे घर बनाना भी मुमकिन है।" खान का जवाब उम्मीद से परे था।

" क्या आप भी साइंटिस्ट हैं? इस बार सिविल एविएशन ऑफिसर भी उनका मजाक उड़ाने से नहीं चूके।

" हालांकि मैं साइंटिस्ट नहीं हूं, लेकिन मैंने साइंस की गहराई से पढ़ाई ज़रूर की है। ऐसे "-हाउस" का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। --खान का जवाब फिर भी गंभीर और इज्ज़तदार था। और यह उनकी पर्सनैलिटी की एक अच्छी बात थी कि जब वे ज़्यादा गंभीर होते, तो जिनसे वे बात करते, वे खुद उनसे इम्प्रेस हो जाते। ऐसे मौकों पर उनका लहजा अचानक बदल जाता था।

" आप अपनी बात जारी रखें, मिस जूलिया। --------वह डॉक्टर और दूसरे ऑफिसर को नज़रअंदाज़ करते हुए लड़की की तरफ मुड़ा, जैसे उनके होने या न होने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

" यह बस्ती एक बड़े शहर की तरह फैली हुई थी, लेकिन मैंने अपनी आँखों से सड़कों पर लोगों की जगह अलग-अलग जानवर घूमते देखे। एक तरफ एक मैदान था, जिसकी ज़मीन चमकदार और मज़बूत थी, और उसके ऊपर ऊँचे मेहराबों वाले कई बड़े गुंबद थे। यह गाढ़ा धुआँ मेरे देखते-देखते इनमें से एक गुंबद के मेहराब में घुस गया। अंदर से, यह एक बहुत बड़े, बड़े हॉल जैसा लग रहा था। वह भूरा धुआँ एक तरफ से गुंबद में घुस रहा था और दूसरी तरफ से बाहर आ रहा था। और मुझे लगा कि मेरे हाथ-पैर खुल रहे हैं। मैंने ऊपर देखा, मेरा शरीर झटके से काँप रहा था। वह गाढ़ा धुआँ अब दूसरी तरफ मेहराब से बिखरा हुआ निकल रहा था, और मैं गुंबद के फ़र्श पर ऐसे खड़ी था जैसे कोई हवा मुझे कहीं से यहाँ उड़ा लाई हो।

अंदर काफ़ी रोशनी थी और यह रोशनी किसी खास जगह से नहीं आ रही थी, बल्कि गुंबद की दीवारें खुद अंदर से रोशन थीं। ऐसा लग रहा था जैसे बाहर की चांदनी इन दीवारों के अंदर रिफ्लेक्ट हो रही हो। इस तरह गुंबद की छत भी अंदर से ठंडी रोशनी दे रही थी। मैं मुश्किल से दो मिनट ही वहां हैरानी और डर की हालत में रही थी कि हंसी के कुछ झोंकों से मैं चौंक गई। वह फूलों की गाड़ी जो अंदर के आर्च से आ रही थी। वह मेरे पास आकर रुक गई। मैंने देखा कि वह एक नाव जैसी लग रही थी और उसमें कोई पतवार नहीं थी, कोई इंजन नहीं था, और उसे खींचने वाला कोई नहीं था। वह भी सफेद, लाल और गहरे नीले फूलों से बनी थी। उसमें से चार बहुत खूबसूरत लड़कियां उतरीं। उनके शरीर पर वही चमकदार और नाज़ुक कपड़े थे। उन्होंने मेरा स्वागत किया और मुझे इस फूलों की गाड़ी में बिठाया और फिर गाड़ी गुंबद से निकलकर एक चिकनी और चौड़ी सड़क पर दौड़ने लगी। इस सड़क के दोनों तरफ, करीब तीन गज की दूरी पर, ऊंची-ऊंची इंसानी मूर्तियां लगी थीं, जिनमें से हर एक के हाथ में एक काली चीज़ थी। कार में लगे फूलों में एक अजीब सी खुशबू थी। वे इतनी तेज़ थीं कि मेरा सिर चकरा गया। मुझे नहीं पता कि कार कहां से गुज़र रही थी, लेकिन मुझे याद है कि जब वह कई फीट ऊंचे एक बहुत बड़े आर्च में घुस रही थी, तो कई सफेद परछाइयां आर्च के दाएं-

बाएं घूम रही थीं। अंदर एक बड़ा हॉल था जिसका फर्श बहुत चमकदार लाल था, जिसमें वैसी ही कई फूलों की गाड़ियां खड़ी थीं। उन चारों ने मुझे कार से बाहर निकाला और अपने साथ ले गए। फिर हम एक ऐसे शानदार हॉल में दाखिल हुए कि उसे देखकर मेरा दिमाग चकरा गया। वे चारों मुझे उसके दरवाज़े पर छोड़कर वापस चले गए। मैंने हॉलीवुड फिल्मों में अलिफ़-लीला की कहानियों के मनगढ़ंत सीन देखे हैं, लेकिन यह जगह उनसे भी ज़्यादा शानदार और अजीब थी। यहां हॉल में, कुछ प्लेटफॉर्म थे, जिन पर खूबसूरत औरतों की मूर्तियां खड़ी थीं, जो कुदरती रंगों से खूबसूरती से रंगी हुई थीं। वे अलिफ़-लीला की

कहानियों की लड़कियों जैसे कपड़े पहने हुए थे। लेकिन मुझे हैरानी तब हुई जब इस हॉल में घुसते ही हॉल की ऊँची गोल छत से एक रोशनी दिखाई दी। मैंने ऊपर देखा, हॉल की छत के ऊँचे हिस्से के बीच में कुछ लाल और सफ़ेद गोले नाच रहे थे और उनके बीच में, लगभग आधा फ़ीट डायमीटर का एक रूबी रंग का चमकदार बर्तन, जिसके अलग-अलग साइज़ अंगूठी के गहने जैसे थे, दिख रहा था। इस बर्तन के चारों ओर शायद पिचकारी से बड़ी-बड़ी नुकीली पत्तियाँ बनी हुई थीं, जैसे वे इसे चारों तरफ़ से एक गोले में पकड़े हुए हों।

खान ने पूछा, "क्या ये पत्ते ऑक्टोपस के टेंटेकल्स जैसे दिखते हैं?"

" ज... जी हाँ, लेकिन आपको कैसे पता?" जूलिया हैरानी में खो गई। सवाल पूछने वाला खुद उसे काफी रहस्यमयी लगा। अपनी बात कहते हुए भी, वह सोचती रही कि वह उसकी अनोखी चीज़ों में इतनी दिलचस्पी कैसे और क्यों ले रहा है। एविएशन ऑफिसर और डॉक्टर अब इतने बोर हो गए थे कि उनमें से एक को नींद आने लगी थी और दूसरा सामने टेबल पर रखी ऐशट्रे की राख को माचिस की तीली से उठा रहा था।

खान ने उन दोनों की ओर देखा कर माफी मांगते हुए कहा, "अगर आप लोगों को इस इंटरव्यू से परेशानी हो रही है, तो आप घूमकर मज़े कर सकते हैं।"

"और कम से कम इस समय मैं खुली हवा में टहलना तो चाहूँगा," एविएशन ऑफिसर ने उठते हुए कहा। डॉक्टर भी उसकी नकल करते हुए खड़ा हो गया। उसी समय दरवाज़े पर दस्तक हुई, और जैसे ही डॉक्टर ने दरवाज़ा खोला, एक अख़बार के रिपोर्टर की खोपड़ी अंदर झाँकने लगी। वह लॉन्गफ़ेलो था। डॉक्टर को देखते हुए, वह फिर से दरवाज़ा बंद करने की कोशिश कर रहा था, और उसका वो अपना सिर फसा के खड़ा था गया।

" अरे अरे , मेरी गर्दन। "

183

"लड़की का बयान अभी रिकॉर्ड किया जा रहा है। आप लोग बाहर इंतज़ार करें," डॉक्टर ने दरवाज़े पर अपनी पकड़ ढीली करते हुए कहा।

" लेकिन इस बेचारी लड़की के माता-पिता बहुत परेशान हैं। ---लॉन्गफेलो ने उसे सिफ़ारिश की ।

" उन्हें बता देना, बस थोड़ी देर बाद वो मिल सकते हैं ।"

"लेकिन मैं, अरे, सुनैये तो ....," लॉन्गफ़ेलो ने कहना चाहा , लेकिन डॉक्टर ने उसे धक्का देकर बाहर निकाल दिया और दरवाज़ा बंद कर दिया।

 वह बाहर खड़ा बड़बड़ा रहा था। --साला जंगली है बिलकुल, मेरी नाक पूरी तरह से चपटी हो गई होती। साथ ही, वह अपनी नाक भी पकड़े हुये था ।

" क्या बात है, ऊंट भाई?’ पीछे से रऊफ की आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा। उसने अपनी ओरिजिनल मद्रासी टू-कॉटन काबिश शर्ट और ट्राउज़र पहना हुआ था।

"तुम यहाँ कहाँ से आए?" लॉन्गफेलो ने सख्त चेहरे से कहा। "अपना तो चोली दमन का साथ है, है ना?"

"धत तेरे की , तुम्हारी चोली मेरे किस काम की?" लॉन्गफेलो ने कहावत की टांग तोड़ी और राउफ इस तुरत जवाब से थोड़ा शर्मिंदा हुआ, क्योंकि पास में खड़ा एक एयर फ़ोर्स ऑफ़िसर इस जवाब पर बिना सोचे-समझे हँस पड़ा था।

"तुम बहुत बातूनी हो गए हो। क्या मैं बाले साहब को बुलाऊं?" रऊफ ने उसे किसी तरह का डर दिखाया था।

" बाले साहब कौन से लेफ्टिनेंट गवर्नर हैं, हैं? क्या पिद्दी क्या पिद्दी का शोरबा, --- लॉन्गफेलो ने बाले की गैरमौजूदगी में उसका मज़ाक उड़ाया ।

" हाथ दिखाऊं, तो सलाम करने लगते हो, और फिर इतनी बदतमीज़ी करते हो? जाओ, मियां , अपनी पत्रकारिता करो। पठानों के मुंह लगना ठीक नहीं है।

"अरे, मैंने ऐसे बहुत से अटेन्शन पठान देखे हैं।"

" दिखाऊं तुम्हें ?

" अरे न न नहीं, नहीं, फिर कभी। यह इजत वाली जगह है। यहां हर कोई इज़्ज़तदार है। ----यह कहकर वह दूसरी तरफ खिसक गया और रऊफ मुस्कुराया।

अंदर खान जूलिया से पूछ रहा था। "तो फिर?"

और डॉक्टर और एविएशन ऑफिसर पिछला दरवाज़ा खोलकर पीछे के बरामदे में खड़े हो गए थे।

" तभी एक अजीब सी आवाज़ आई और गोल लाल गमले के वो पत्ते, जिसकी तुलना आप ऑक्टोपस के टेंटेकल्स से कर रहे हैं, खुलने लगे और फिर, "हे भगवान!" उसने डर से कांपते हुए कहा।

" क्यों? क्या हुआ? खान ने बीच में टोका।

" उनके सिरों से आसमानी रोशनी की बहुत तेज़, बारीक लहरें निकलीं और घूमते हुए गोले में बदल गईं। ऐसे गोले हरे हो गए। हर चक्कर पर ऐसे गोले बनते गए। पहला गोला नीचे की ओर फैला और कुछ ही देर में दूसरा गोला भी उसके पीछे चलने लगा। जैसे ही मैंने देखा, ये गोले ऊपर से गिरे और फैल गए, हर मूर्ति को अपने-अपने घेरे में लेते हुए। और मुश्किल से कुछ सेकंड बीते होंगे कि मैं हैरानी और डर से चीख पड़ी । खूबसूरत लड़कियों की वे सभी मूर्तियाँ अपनी जगह से हिल रही थीं। वे मेरी तरफ बढ़ रही थीं, लेकिन मेरी हैरानी तो बनी रही, लेकिन मेरा डर तब दूर हो गया जब मैंने

मैंने देखा कि वे मेरा स्वागत कर रही थी । उन्होंने मेरे साथ एक राजकुमारी जैसा बर्ताव किया। उन्होंने प्यार से मुझे अपने घेरे में ले लिया और एक बंद दरवाज़े की तरफ़ बढ़ने लगी। फिर उनमें से एक दरवाज़े पर पहुँची और किसी से ज़ोर से साफ़ इंग्लिश में बात की।

" राजकुमारी ज़ांज़ीबार, -- और उस आवाज़ के साथ, दरवाज़ा अपने आप खुल गया।

" ज़ांज़ीबार की राजकुमारी कौन थी? और क्या इस समय में भी ज़ांज़ीबार में कोई राजकुमारी हो सकती थी? इस नए विचार से मेरा मन कन्फ्यूज़ हो गया। लेकिन जब मैं इस सजे-धजे कमरे में दाखिल हुई, जो अंदर से किसी मिडिल ईस्ट के खलीफ़ा या बादशाह के राजा की बेगम के घर जैसा लग रहा था, और वहाँ मौजूद दो-तीन नौकरों ने मेरे सामने झुककर मुझे ज़ांज़ीबार की राजकुमारी कहा, तो मैं कन्फ्यूज़ हो गई।

तो मैं हैरान होकर उसे जवाब नहीं दे सकी ।

"मैं किसी देश की राजकुमारी नहीं हूं, मैं बस एक अमेरिकी महिला हूं," थोड़ी देर बाद मैंने अपने पास खड़ी एक अधेड़ उम्र की महिला से कहने की कोशिश की।--

क्या तुम पागल हो गए हो? मैं ज़ांज़ीबार की राजकुमारी नहीं हूँ। मैं बस एक आम अमेरिकी लड़की हूँ।

"अमेरिका? यह क्या होता है?" उसने चौंकते हुए दूसरे से पूछा।

"हमने इस बारहवीं सदी में इस नाम की कोई चीज़ कभी नहीं सुनी।" दूसरे ने भी उस को देखते हुए धीरे से जवाब दिया।

" बारहवीं सदी? हे भगवान, यह सब क्या हो रहा है?” मैंने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं। मैंने अपनी चौड़ी आँखों से उनके चेहरों को देखा। मैं बीसवीं सदी की एक पढ़ी-लिखी अमेरिकन लड़की थी और यह बारहवीं सदी का

माहौल? यह क्या रहस्य है? क्या मैं किसी सपनों की दुनिया में तो नहीं हूँ? यह सोचते हुए जब मैंने अपनी उंगली दांतों से काटी तो मैं काँप गई। मैं पूरी तरह जागी हुई थी और अपनी खुली आँखों से सब कुछ देख रही थी ।

" आप भूल रही हैं। आप ज़ांज़ीबार की राजकुमारी सोफ़िया शाबान हैं। उसने अदब से उसे जवाब दिया ।

" तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है?" उसकी बेवकूफी से तंग आकर मैंने चीख कर पूछा ।

" राजकुमारी की तबीयत ठीक नहीं लग रही है। मूर्ति में से नील असल में दिख रही एक लड़की ने नरम लहजे में कहा।

"हजूर , नहा लें और कपड़े बदल लें। राजकुमार खावर ज़मान दरबार में आपका इंतज़ार कर रहे होंगे।" दूसरी ने मेरे सामने सिर झुकाया और विनती भरे लहजे में कहा।

"ओह, तुम लोग मुझे पागल कर रहे हो। क्या मैं रूहों की दुनिया में हूँ?"

"अगर आप यह समझना चाहते हैं, तो आप यह समझ सकते हैं। लेकिन, इस समय आप नेस्तान के राजकुमार, खावर ज़मान के यहाँ मेहमान हैं, और राजकुमारी सोफ़िया को पहचानने में किसी की आँखें धोखा नहीं खा सकतीं ।" हजूर , देखिये , इस तिल को देखिए। यह काला तिल उस समय की निशानी है जब बचपन में आपके साथ खेलते हुए राजकुमार हुज़ूर ने आपके मुबारक गाल पर एक गर्म पत्थर रख दिया था। यह कहकर, उन्होंने मेरे सामने एक अंडाकार शीशा रखा जिसके चारों ओर एक सुंदर फ्रेम था और जिसके नीचे लगा हैंडल इस नौकरानी के हाथ में था। और मैं हैरान रह गई, क्योंकि वह बिलकुल सही थी। मेरे दाहिने गाल पर एक छोटा सा काला तिल दिखाई दिया।

" जो अब नहीं है । ---खान ने उसे बीच में ही टोक दिया।

" हाँ, लेकिन उस समय यह दिख रहा था। हालाँकि, मुझे बताया गया कि मैं मिडिल एज की एक अरब राजकुमारी हूँ और छह सौ तीस साल बाद अपनी यात्रा से लौटी हूँ। उनकी बातचीत से मुझे यकीन हो गया कि मैं इस ज़िंदा दुनिया में नहीं हूँ, जहाँ बीसवीं सदी बहुत दूर की जगह है। उस समय, मेरे दिल में एक नया शक पैदा हुआ कि शायद मैं सच में 630 साल पहले ज़ांज़ीबार की राजकुमारी रहीं थी, और मेरी आत्मा कई बार इस दुनिया में पहुँच चुकी थी और इस समय तक एक अमेरिकन लड़की के रूप में पैदा हो चुकी थी। और इस अजीब एहसास के साथ, मुझे सच में ऐसा लगने लगा कि मैं ज़ांज़ीबार की

राजकुमारी हूँ। मुझमें वैसी ही शान और ग्रेस आ गई जैसी कुछ राजकुमारियों में होती है। यहाँ से, मुझे मेरे सबसे अच्छे कपड़े पहनाए गए और एक खूबसूरत हॉल में ले जाया गया जो सपनों के स्वर्ग जैसा खूबसूरत था। इसकी छत सफेद, चमकदार पत्थर से खूबसूरती से तराशे गए ऊँचे खंभों पर दिखाई नहीं दे रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे ये खंभे आसमान में लटके हों, क्योंकि यहाँ से चाँद मेरे सिर के ठीक ऊपर दिख रहा था और उसके आस-पास की नीली जगह में टिमटिमाते तारे साफ़ दिख रहे थे। नौकरानियाँ मुझे यहीं छोड़कर वापस चली गईं, और मैं हैरानी से इधर-उधर देखता रही थी कि अचानक मेरे आस-पास की दीवारों में कई छेद हो गए।

और... और उनमें से... यह कहते हुए वह खिलखिला कर हंस पड़ी -- "क्या आप लोग इस पर विश्वास करोगे?" उसने हंसते हुए पूछा।

खान ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मुझे अभी भी यकीन होने लगा है।"

" इन छेदों से आदमी निकले, लेकिन उनमें से कोई भी ढाई फीट से ज़्यादा लंबा नहीं था। उनके अजीब रूप देखकर, मैं ज़ोर से हंस पड़ी , जिसके साथ उनकी हल्की हंसी भी हॉल में गूंज उठी। फिर उन्होंने हाथ मिलाया और मेरे चारों ओर नाचने लगे।"

खान ने बीच में ही कहा, "अगर आप कम शब्दों में बात करें तो बेहतर होगा।"

" जी बेहतर। तो उसके बाद मैंने जो देखा, वह इन सब चीज़ों से भी ज़्यादा कमाल का था। हॉल के बीच में एक सुंदर प्लेटफॉर्म था, जिस पर सिंहासन जैसी एक बड़ी शाही कुर्सी रखी थी। इस कुर्सी के दोनों हाथ बहुत मोटे थे और किसी हार्ड मेटल के बने थे। यह इतना सुंदर था कि मेरा दिल उस पर बैठने को करने लगा। मैं प्लेटफॉर्म की तरफ बढ़ी, लेकिन जैसे ही मैंने सीढ़ियों पर पैर रखा, हॉल में एक अजीब सा म्यूज़िक गूंज उठा। मुझे इस म्यूज़िक में वेस्टर्न स्टाइल महसूस हुआ। और मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मैं इस तरह के म्यूज़िक से वाकिफ़ हूँ। तभी, हॉल में मौजूद ढाई फीट लंबा जीव अपने दोनों तरफ हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। इसी बीच, कई नौकरानियाँ हॉल में आईं और सिंहासन

के सामने सिर झुकाकर खड़ी हो गईं। म्यूज़िक की लहरें तेज़ होती जा रही थीं। मैं इसी सीढ़ी पर हैरान होकर खड़ी थी । मेरा दिमाग अब जवाब दे रहा था। अचानक, एक तेज़ रोशनी दिखाई दी और सबकी नज़रें इस खाली सिंहासन की तरफ उठ गईं। मैंने उन लोगों की भारी आवाज़ों में एक अजीब सा स्वागत गीत सुना। मुझे इसके बोल अच्छे से याद हैं। बोल थे:

हे वास्तविकता की दुनिया की सबसे शक्तिशाली आत्मा,

वह सूरज की रोशनी और हवा की लहरों पर राज करती है, जो प्रकृति की भरपूरता को दिखाती है।

आपकी सुंदरता शाश्वत है

तेरा अमर अस्तित्व है

हमारी उत्सुक आँखें आपकी उपस्थिति का इंतज़ार कर रही हैं,

आपका सिंहासन सूना है और हमारे दिल बेचैन हैं।

गीत खत्म ही हो रहा था कि अचानक सिंहासन पर बिजली से भी ज़्यादा तेज़ बैंगनी रोशनी दिखाई दी और रोशनी की एक इंसानी आकृति, जिस पर कोई अपनी नज़रें नहीं रोक पा रहा था, सिंहासन पर दिखाई दी। सबने आदर से उसके सामने सिर झुकाया। म्यूज़िक की लहरें तेज़ हो गईं और मेरी पलकें झपकने लगीं। फिर मेरे मुँह से चीख निकल गई जब मैंने देखा कि रोशनी की आकृति धीरे-धीरे एक इंसान में बदल रही है। और आपको यकीन नहीं होगा कि डर से मेरी आँखें कितनी चौड़ी हो गईं जब वह अस्तित्व में आया। जैसे-जैसे वह अस्तित्व में आया, वह चमक फीकी पड़ती गई। जब तक

वह चमक पूरी तरह से गायब नहीं हो गई और मैंने देखा कि वह सामने था... आह, मैं कैसे कहूँ कि वह क्या था? कम से कम मेरे पास उसकी मर्दाना सुंदरता की तारीफ़ करने के लिए शब्द नहीं हैं। जब वह मुस्कुराते हुए अपनी सीट से उठा और अपना एक हाथ मेरी ओर बढ़ाया, तो मैं उसकी सुंदरता देखकर दंग रह गई। शायद उस समय, अगर किसी ने मुझे तेज़ भाला मारा होता, तो मुझे झटका नहीं लगता। वह पास आया और मेरी आँखों में देखा, और मेरे कदम लड़खड़ा गए। मैं सच में गिर जाती अगर वह खुद आगे बढ़कर मुझे अपनी बाहों से सहारा न देता। और सच कहूँ तो, उस पल मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे अच्छे कर्मों के लिए मुझे मौत के बाद जन्नत नसीब हो गई हो। मुझमें उसकी पकड़ से छूटने की हिम्मत नहीं थी। उसने मुझे अपनी बाहों में लिया, मुझे तख्त पर ले गया, और अपने बगल में बिठा लिया।

" हम कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं, राजकुमारी? तुम्हें पता है कि तुम 630 साल बाद लौटी हो। -------उसने बहुत साफ़ और विनम्र अंग्रेज़ी लहजे में कहा। और मेरे होश उड़ गए। बस यही एक सवाल मेरे दिल और दिमाग में हलचल मचाने लगा। क्या मैं सच में 630 साल बाद इस दुनिया में लौटी हूँ? क्या मैं सच में ज़ांज़ीबार की राजकुमारी हूँ?

190

"और क्या यह राजकुमार, जो सपने या कल्पना से भी ज़्यादा सुंदर था, या यह सबसे शक्तिशाली और सुंदर आत्मा, सच में साढ़े छह सदियों से मेरा इंतज़ार कर रही थी?"

" मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा, शहजादे । ------डर के मारे मेरे मुँह से निकल गया।

" शायद तुम थक गई हो। ---उसने मुस्कुराते हुए कहा।

और खुदा ही जानता है कि उसकी उस मुस्कान में क्या था। मेरे दिल और दिमाग पर खुशी का एहसास छाने लगा और मेरा दिल अनजाने में ही पूरी तरह से भूल जाना चाहता था कि मेरा नाम जूलिया था और मैं बीसवीं सदी की एक अमेरिकन लड़की थी। मैं अपने इमोशंस पर कंट्रोल नहीं कर पाई और मेरे मुँह से निकल गया।

"मुझे भी ऐसा लग रहा है, शहजादे, जैसे मेरी आत्मा बहुत समय से आपसे मिलने का इंतज़ार कर रही है।"

जवाब में वह मुस्कुराया और मेरी आँखों में देखते हुए, नीचे झुका और मेरे होंठों पर एक लंबा किस किया।
बुरा नहीं मानिएगा , सुपरिंटेंडेंट साहब... मैं अभी भी उस सबसे नाज़ुक किस का यादगार मज़ा महसूस कर रही हूँ।

" देखो, ये बातें मेरा काम नहीं हैं, तुम बस वो हालात बताओ जो तुम्हारे साथ हुए," सुपरिंटेंडेंट खान उसके इमोशनल लहजे से चौंक गया और उसने कुछ कुछ रूखे लहजे में कहा ।

" उसके बाद मैं उनका मेहमान रही । चार दिन तक उन्होंने मुझे ऐसी जगहों की सैर कराई जिन्हें देखकर मेरा मन दंग रह गया । यहां मैंने हर तरह के आराम का आनंद लिया। मेरी हर इच्छा पूरी हुई।

"आपने ऐसी कौन सी चीज़ें देखीं जो आपके लिए अनजान थीं?"

"अनजान...? उन्हें अविश्वसनीय कहो। मैंने वहाँ अजीब मशीनें देखीं। ऐसी मशीनें जिनसे आग की लपटें निकल रही थीं । मेरे ठीक सामने, एक गुंबद जैसा घर आग जैसी रोशनी में घिरा और आसमान में उड़ गया, मुझे नहीं पता कहाँ। उस समय, मैं इस राजकुमार के साथ एक सीट पर बैठी यह अजीब नज़ारा देख रही थी ।"

खान ने कहा, "शायद वह गुंबद जैसा घर एक रॉकेट था?"

" आप ऐसे बात कर रहे हैं जैसे यह किसी जानी-पहचानी दुनिया की बातें हो, लेकिन मैं आपको सच बता रहा हूँ: वह दुनिया, वह माहौल, ज़िंदा इंसानों का माहौल, उसके बारे में पता भी नहीं था। हो सकता है कि वह आत्माओं की दुनिया रही हो।

" आगे ?"

"मैंने एक म्यूज़ियम भी देखा जहाँ अलग-अलग तरह के जानवर थे, लेकिन किसी को भी उनके पास जाने की इजाज़त नहीं थी। इसके चारों ओर मोटी कांच की दीवारें थीं, और इन दीवारों के अंदर रोशनी की अनगिनत पतली आसमानी लहरें हर तरफ़ दौड़ती हुई देखी जा सकती थीं।"

"यह अजीब है।" खान ने अपना सिर हिलाया।

"राजकुमार की बातें और भी अजीब थीं। उसने मुझे दूर से दिखा कर बताया था कि एक दिन ये बड़े, खून के प्यासे जानवर चींटियों जितने लगेंगे।"

खान ने शेखी बघारी, "वह ज़रूर कोई महान वैज्ञानिक होगा।"

" आपने फिर से आज की दुनिया के बारे में बात करना शुरू कर दिया। मैं 630 साल पहले की दुनिया के बारे में बात कर रही हूँ। ----------लड़की झुंझुला हो गई।

"हाँ, हाँ," उसने उसकी झुंझुलाती आवाज़ को अनसुना करते हुए कहा।

" और अजीब बात यह है कि मैं वहाँ लिन लड़कियों से मिली, वे बहुत सुंदर और बहुत शरीफ़ थीं। और उनमें से हर कोई बारहवीं सदी के इस रहस्यमयी और खूबसूरत शहर में

उस शहजादे पर अपनी जान छिड़कती थी। एक बार मैंने एक लड़की को श्रद्धा से उसके सामने झुकते हुए सुना और कह रही थी कि आपने, महान शक्तियों के मालिक, हमारे भयानक रूप बदलकर हमें सुंदरता और जवानी का कीमती तोहफ़ा दिया है, हम अपने खून की एक एक भी बूँद बहाकर भी आपकी मेहरबानी का बदला नहीं चुका सकते। और क्या आप जानते हैं कि राजकुमार ने उससे क्या कहा? उसने कहा कि यह सुंदरता अभी भी उस सुंदरता से कम है जो प्रकृति अपने कुछ जीवों को देती है और मैं प्रकृति का एक छोटा सा औज़ार हूँ।

" अजीब आदमी होगा।वो ’ खान ने उसकी बातों पर यकीन करते हुए खुद से आश्चर्य व्यक्त किया।

"लेकिन, चौथे दिन, तीन दिन की मेहमाननवाज़ी के बाद, जब मेरी भड़की हुई भावनाओं की तीव्रता कुछ कम हुई, तो मुझे उन्नीसवीं सदी की दुनिया और अपने माता-पिता की याद आई। उस पल, मैं रोने लगी।"

--तो पांचवें दिन मुझे अपनी दुनिया में लौटने की इजाज़त मिल गई। इस सबसे खूबसूरत इंसान को छोड़ने के ख्याल से ही मैं रोने लगी। लेकिन मैं तय नहीं कर पा रही थी ।

"मैं आखिर तक तय नहीं कर पाई कि इस अनजान दुनिया में हमेशा के लिए रहूं या अपने समय में लौटकर अपने माता-पिता से मिलूं, इसलिए मुझे वापस आना पड़ा।"

खान ने पूछा, "और यह वापसी भी उसी तरह हुई होगी जैसे तुम्हें ले जाया गया था?"

"बिल्कुल," उसने कहा। "लेकिन आपको कैसे पता?" वह चौंक गई और सवालिया निगाहों से खान को देखने लगी।

"यह मत मान लो कि मैं भी आत्माओं की इस बारहवीं सदी की दुनिया में विश्वास कर सकता हूँ।" खान का अचानक जवाब आया । जिस पर लड़की ने मुँह बनाया। वह अब

तक सोच रही थी कि उसका विरोधी सच में उसकी बात पर विश्वास कर रहा है, लेकिन यह जवाब बिल्कुल उल्टा था।

"तो अब तक आप मेरा मज़ाक उड़ा रहे थे?" वह फिर खड़ी हो गयी।

"अब तुम जा सकती हो।"-उसे खान का दूसरा अचानक जवाब मिला।

और वह झुझुला गयी , उसने तेज़ी से दरवाज़ा खोला और बाहर चली गई। खान मुस्कुराते हुए खड़ा हो गया। वह अब कमरे के बाहर लड़की की दिल से सिसकियाँ सुन रहा था। शायद वह अपने माता-पिता से मिल रही थी जो वहाँ बेचैनी से इंतज़ार कर रहे थे।

☆☆☆

194

कानून का हाथ

कार पिछले तीन दिनों से खान की सर्विस में थी और मोटरसाइकिल खराब थी, बाले के लिए टैक्सी का किराया बहुत महंगा लग रहा था। वह दोपहर में अपनी कार लेने के लिए अपने भोपाली जागीरदार दोस्त शौकत के ऑफिस और बंगले पर भी गया था, लेकिन उन दिनों शौकत से मिलना सिर्फ एक इत्तेफाक ही हो सकता था। उस समय वह या तो किसी फैंसी कैफे या मोनजिनी होटल वगैरह में जाकर जम जाता, या फिर अचानक किसी रोमांस की चाहत में उसकी कार समुद्र के किनारे धीरे-धीरे रेंगती रहती। कोई अच्छी लड़की इस छोटे कद और भैंस जैसी डील-डौल वाले पर कैसे मर सकती थी, लेकिन ऐसी लड़कियां कभी-कभी मिल जातीं, उसे मोटा मुर्गा समझकर अपनी एक्टिंग से बेवकूफ बनातीं। और एक दिन जब वह फुर्र से उड़ जाती तो उसे फिर अफसोस करता । शौकत को रोमांस का शौक था, इसके साइकोलॉजिकल कारण जो भी हों, लेकिन अपने परिवार से विरासत में मिला सामंती स्वभाव उसे हमेशा हर खूबसूरत चीज के पीछे भागने के लिए उकसाता था।

बाले और शौकत में गहरी दोस्ती थी। वे दोनों दोस्त थे और एक ही उम्र के थे, लेकिन शौकत को अपने एक बड़े बाजुर्ग की कही बात याद थी कि पुलिसवाले उसके बाप के भी नहीं होते, इसलिए वह अपनी पसंद की हर लड़की को बाले की नज़रों से बचाने की कोशिश ज़रूर करता था। वह पहले भी कई बार इतनी बेवकूफी कर चुका था कि उसकी किसी प्रेमिका को बाले से मिलवा दिया था और नतीजतन शौकत दूध से मक्खी की तरह बाहर ।

जैसे ही उसने सामने से आती टैक्सी में बाले को देखा, उसे अपनी मौत का फरिश्ता याद आ गया । अब इसे प्रेंड्स स्टोर्स के बाहर पानी की बोतल पकड़े खड़ी इस खूबसूरत गोरी लड़की के

बाहर निकलने का इंतज़ार कर रहा था , जो शायद शॉपिंग के लिए अंदर चली गई।

उसे यकीन था कि इस लड़की को इस जगह पर टैक्सी या बस नहीं मिलेगी। और ऐसे मौके पर, वह उसे लिफ्ट देकर उसके साथ जन पहचान बना लेगा। उसके जैसे हेल्दी और शरीर बीमार दिमाग वाले और सोच भी क्या सकते हैं। लेकिन बुरा हो इस कमबख्त सार्जेंट का जो बेवक्त नज़र आया ।

शौकत ने जल्दी से अपना सिर दुकान की तरफ घुमाया और उसका साइन बोर्ड बड़े ध्यान से पढ़ा।

फर्नांडीज स्टोर ...फरमांड। अरे नहीं ,..... फर्नांडीज नहीं हैं , शायद फ्रेण्ड्ज है। - लेकिन उसी वक़्त कोई बारीक सी चीज़ उसकी गर्दन में चुभती महसूस हुयी ।

"कौन है बे ...? वो अंजान बनाकर पीछे पलटने लगा ।

“ अबे साले बाप बनता है , क्या हो रहा है, बरखुरदार ? - बाले ने खुली हुयी सेफ्टीपिन बंद करते हुये कहा ।

अरे, बाले खान , तो.म .....? शौकत ने बहुत गर्मजोशी दिखाई।

भोपाल की आम सामंती भाषा, जो इसकी जातीय पहचान है, आज भी इसकी बातचीत के स्टाइल की पहचान है।

" तुम यहाँ झक मार रहे हो, जानेमन ?

" यार, मुझे ये भोंडे जुमले पसंद नहीं हैं।

" मैं जो पूछ रहा हूँ उसका जवाब दो।"

" झक मार रिहा हूँ ---। शौकत नाराज़ हो कर बोला ।

"मैंने भी यही कहा था। अच्छा, क्या कार खराब हो गई है?"

:" अरे कार नहीं खान, अपनी किस्मत खराब हो गई है, साली उसने गहरी सांस ली और कहा

"अबे क्यों , क्या घरवाली भाग गयी?"

" कौन भाग गई? जरा अपनी ज़बान संभालो।

"घरवाली"

" मियां , भागे तुम्हारी , मेरी काहे कु भागेगी , अइसा वियसा समझा है क्या? शौकत बिगड़ गया।

उस समय वह लड़ झगड़ कर भी बाले से पीछा छुड़ाने के लिए तैयार था।

"अबे अखरोट , दिमाग़ ठिकाने है कुछ ?"

" अरे वाह, क्यों नहीं ? तोम अपना देखो।"

" तुम्हारी तकदीर में कभी कोई घरवाली लिखी भी गयी थी कभी ?

" अरे हाँ, मैं तो भूल ही गया था , मगर लिखी कहे कु नहीं गयी होगी ? मैं दस घर वलीयन खरीद सकता हूँ ।

"रहे निरे उल्लू ।"

" मुझे गाली वाली मत देना मियां खान, आज अपना मूड बहुत खराब है।"

"ये बात है । -- बाले समझ गया कि वह क्यों बचने की कोशिश कर रहा था। उसने कार का दरवाज़ा खोला और अंदर बैठ गया। उसने पहले ही सड़क के उस पार एक टैक्सी बुला ली थी।

"अब मैं तुम्हारे साथ ही यहाँ से चलूँगा," उसने पीछे की सीट पर अपने पैर फैलाते हुए कहा।

" अल्लाह कसम , साली का ब्रेक फेल हो गया है , तोम टैक्सी लेकर निकल जाओ ।"

"नहीं, मैं इसी कार में जाऊंगा," बाले ने निर्णायक स्वर में कहा।

"कोई ज़बरदस्ती है क्या? मैं नहीं ले जाऊंगा , जाओ।"

"तुम्हारे फ़रिश्ते भी ले जाएंगे, नहीं तो जो अंदर से बाहर आएगी , मैं उससे कह दूंगा कि यह गैंडा एक दर्जन बच्चों का पिता है।"

:" अरे नहीं यार, असल बात तो यह है कि वह मेरी चाची है, हसनाबाद वाली,

"वह शॉपिंग के लिए आई है।" शौकत उसकी तरफ झुका और धीरे से बोला।

"यह और भी अच्छा है, मैं भी मिल लूँगा ।"

" हत्त तेरे की । अरे, वह भूत बिगड़ू औरत है। किसी गैर-मर्द की सूरत से बी नफ़रत करती है।

" क्या मैं कोई गैर-मर्द हूँ?

“ अबे नहीं तो क्या मेरे सगे हो ? अरे, वाह, मान न मान मैं तेरा मेहमान । "

"जब तक तुम झूठ बोलोगे , मैं तब तक यहाँ से नहीं जाऊँगा।"

" लो, और लो। गले ई पड़ गए हो, भाई।"

" ना बताओ"

" अच्छा । तो तुमहरे सर की कसम, वह अपनी पड़ोसन बेगम सदाकत हैं, उनकी उनकी भतीजी की मौसी की लड़की।"

“ रहे बौड़म तुम , ... वह भी भतीजी हुई।

" होगी भई, तुम्हें क्या ? शौकत का मूड खराब हो गया।

" ठीक है, बेटा भुगतोगे , अपने कर्मों की सज़ा , अपने को क्या । बाले कार से सिटी बजाते हुये बाहर निकला और शौकत के सीने से नौ मन भारी बोझ उतरा।

"मियां, अपनी कब्र, अपना जवाब," उसके चलते-चलते शौकत और भी बातें जोड़ता गया।

बाले टहलता हुया चौराहे की ओर चला गया और शौकत ने मन ही मन भगवान का लाख-लाख शुक्रिया अदा करते हुए उसी दुकान के दरवाज़े की ओर देखा।

लेकिन मुश्किल से दो मिनट ही बीते थे कि उसे अपने पीछे किसी के कदमों की आहट महसूस हुई।

198

उसने पलटकर देखा तो उसके पीछे एक पुलिसवाला खड़ा था.

"साहब, आप इतनी देर से यहां क्या कर रहे हैं?" कांस्टेबल ने उनसे पूछा।

" हम...? हम अपनी कार की रखवाली करते हैं। ---शौकत थोड़ा हकलाया।

" क्या मतलब ?" पुलिसवाले ने उसे शक से देखते हुए पूछा।

" मतलब वतलब क्या , कार यानि की ये वाली --- शौकत से कोई जवाब न बन पड़ा ।

"आप अपनी कार यहां पार्क कर के और खुद ही इसकी रखवाली करते हैं? "

कांस्टेबल की आवाज़ में नाराज़गी थी, और इसी अवसर पर शौकत को बाले की याद आने लगी ।

पुलिस अफ़सरों के साथ अपने अच्छे रिश्ते होने के बावजूद,वो नीली यूनिफ़ॉर्म पहने इस मज़बूत आदमी से डरता था, जिसे आम तौर पर कॉन्स्टेबल कहा जाता था, क्योंकि कॉन्स्टेबल पहले कानून तोड़ते हैं और बाद में आदमी को पहचानते हैं। यह पहली चीज़ थी जो एक अजीब आदमी की तरह वहाँ खड़े होकर, दुकान को देख रहा था , और यह दूसरी चीज़ थी जो उसने कर वहाँ खड़े की थी। ये बाद की बात थी की पता चलता कि उनका नाम शौकत है और वे एक सम्मानित व्यक्ति हैं, और कई पुलिस अधिकारियों के दोस्त हैं।

जैसे ही उसे कानूनी खतरे की भनक लगी, शौकत को एहसास हुआ कि इस समय इस कांस्टेबल की ताकत कम से कम एक सार्जेंट से ज़्यादा है। इसलिए उसने तुरंत अपना लहजा बदल दिया।

" वह, बात यह है कि हवलदार साहब .... जबरदस्ती सिपाही को हवलदार बनाते हुए उसने कहा, "मेरी वो ... यानि कि मेरी वाइफ समान खरीदने के लिए दुकान पर गई है और मैं कार की देखरेख कर रहा हूं।"

शौकत को उम्मीद थी कि इस जवाब के बाद मुसीबत टल जाएगी, लेकिन कांस्टेबल ने सिर्फ बेवजह दखल देने के लिए माफी मांगी और दो कदम दूर खड़ा हो गया।

शौकत की छाती पर साँप, या यूँ कहें कि अजगर रेंगने लगे। काश वह उसे कान से पकड़ कर

सड़क से परे फेंक सकता , लेकिन उसने जो नीली यूनिफॉर्म पहनी थी, कानून की औलाद,तो काम तो मुश्किल ही था .

इत्तेफ़ाक से, उसी समय वह लड़की दुकान से बाहर आ गई। एक सुंदर सफ़ेद नागिन, बल खाती हुई , जिसका पतला शरीर चमकीले आसमान में चमक रहा था।

"साहब , क्या आपको पता है कि सरकार ने सड़क पर चलती लड़कियों से छेड़छाड़ करने वालों के लिए एक नया कानून बनाया है?" कांस्टेबल ने अपनी जगह पर खड़े होकर अचानक उनसे पूछा।

"हाँ हाँ, सबको पता है, तुम अपनी ड्यूटी करते रहो। ----शौकत को गुस्सा आ गया। और ऐसे मौकों पर जब उसका सब्र कंट्रोल की लिमिट तक पहुँच गया हो, तो गुस्सा आना स्वाभाविक था।

"तो आपको मालूम है, ठीक है ।"--- कांस्टेबल ने दोनों हाथ हिलाए और मुस्कुराया।

वह लड़की अदा से उसकी तरफ़ बढ़ रही थी, और शौकत की बेताब आँखें उसे ऐसे देख रही थी जैसे हर कदम पर उनकी कुर्बानी हो रही हो। लेकिन, एक नज़र उसके सुंदर, सुडौल पैरों पर पड़े मज़बूत काले ऊँची हील वाले सैंडल पर भी पड़ती। ओखली में सिर डाल कर मूसलों को भूल जाना भी बेवकूफ़ी है।

वह शौकत की कार के पास रुकी और सड़क पर इधर-उधर देखने लगी। शौकत ने उसे देखकर ज़बरदस्ती अपनी कार का बोनट उठाया और देखने लगा। फिर उसने उसे नीचे गिरा दिया और कार के स्टीयरिंग व्हील पर आ बैठा।

कांस्टेबल अभी भी वहीं खड़ा था, उसकी हरकतों को ध्यान से देख रहा था। आस-पास कोई बस स्टैंड नहीं था, और न ही आज टैक्सी मिलना आसान था। छुट्टियों में टैक्सी शायद ही कभी खाली होती थीं। शौकत ने उस लड़की को एक प्राइवेट कार से उतरते देखा था जो उसे पीछे छोड़ गई थी, और इसीलिए उसके मन में आया कि उसके कज़िन ने उसे लिफ़्ट दी होगी, तो क्यों न मैं भी अपनी किस्मत आज़माऊँ?

" कहां जान है आपको ? -------शौकत ने हिम्मत जुटाई और उस से बात करना शुरू कर दिया।

"कहीं नहीं," उसने बेपरवाही से कहा और फिर चौराहे की ओर देखा।

"चलो, मैं तुम्हें पहुंचा देता हूं," शौकत ने हिम्मत से कहा।

" आपका दिमाग तो खराब नहीं है मिस्टर ? " वह गुस्से से उसकी ओर मुड़ी।

" देखो, तुम एक फ्रेश आदमी को... आई एम सोरी ----एक सज्जन आदमी को गलत समझ रही हैं । वह अपनी हकलाती हुई भाषा में बोला।

" नान सेंस, ---लड़की पटकती हुई आगे बढ़ी।

और उसी समय, वही कार दूसरी दिशा से सड़क पर आ गई, जिसने उसे पहले छोड़ा था। लड़की ने उसका दरवाज़ा खोला, उसमें बैठ गई, और कार चली गई।

" क्या वो आपकी पत्नी थी, साहब? -------पीछे से कांस्टेबल की आवाज़ शौकत को सुनाई दी। ----------आप उस लड़की को छेड़ रहे थे। आपको पुलिस स्टेशन जाना होगा और मुझे यह कार भी आपकी नहीं लगती ।

"अरे अल्लाह, कसंम , मेरी है यार। और वह... वह मुझसे नाराज़ होकर अपने दोस्त के साथ सिनेमा देखने चली गई।"

"ये सब तो पुलिस स्टेशन में आपको सब बताना पड़ेगा ।"

" अरे वाह, यह भी कोई ज़बरदस्ती है?-- शौकत ने उसे डराने की कोशिश की, लेकिन वह भी एक ज़िद्दी आदमी था। आखिर में, जब शौकत से और कुछ नहीं किया जा सका, तो उसने उससे दूर जाने के लिए अपनी जेब से पाँच रुपये का नोट निकाला।

"लो, जाओ कुछ मिठाई खाओ," उसने कांस्टेबल को डांटते हुए कहा।

"किस खुशी में?" कांस्टेबल ने गुस्से से पूछा।

" अरे यार, तुम आदमी हो या अफलातून ? क्या तुम्हें इतना भी समझ नहीं आता? एक अच्छी सिगरेट पियो" ।

"मैं सिगरेट नहीं पीता," कांस्टेबल ने शांति से जवाब दिया।

"तो पान खाओ।" शौकत नाराज़ हो गया।

"मैं पाँच रुपये का पान नहीं खा सकता।"

" अरे, इसे अपनी जेब में रखो और दफा हो जाओ यार ।

" ठीक है, तो आप मुझे रिश्वत दे रहे हैं। रिश्वत इंडियन पीनल कोड के सेक्शन 5 के तहत सबसे बुरा जुर्म है। अब मैं आप पर डील का चार्ज लगाऊंगा।

"दोस्त, तुम हवलदार हो या कोई अल्लाह से डरने वाले बुज़ुर्ग, पुलिस अफ़सर? तुम नौकरी छोड़कर कहीं अपनी मज़ार क्यों नहीं बना लेते?" शौकत ने उसमें पाँच रुपये का एक नोट और जोड़ा और उसकी तरफ़ बढ़ाया।

" सेक्शन 246: ड्यूटी पर देशद्रोह के लिए उकसाना - सेक्शन 406: ड्यूटी पर विद्रोह के लिए उकसाना वगैरह वगैरह। कांस्टेबल अपनी नोटबुक में लिखने लगा। और सेक्शन नंबर .....। और वो नोटबुक में लिखने लगा

"अरे, सॉरी यार, भगवान के लिए अब।"

" माफ़ी हज साहिब की हाज़िरी में, एक छोटी सी अदालत में मिल सकती है। ख़ाकसार तो बस एक पुलिस कांस्टेबल है जो अपना काम करता है, उसका काम पकड़ कर लाना है, छोड़ना नहीं ।" कांस्टेबल अब उसके गले पद गया , और शौकत को इस अजीब दुश्मन के सामने हार माननी पड़ी। वह उसे पुलिस स्टेशन ले जाने पर अड़ा रहा और शौकत को चिंता थी कि अगर यह खबर उसके दोस्त पुलिस अफ़सर तक इस लापरवाही भरे तरीके से, जिस तरह यह कानून का पाबंद पुलिस कांस्टेबल उसे रंग लगा रहा है, पहुँच गई तो उसे बहुत शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। उस समय उसे इस बात का अफ़सोस होने लगा कि उसने बाले से नाहक किनारा कर लिया। उसका दिल उस समय दुआ कर रहा था कि काश वह कहीं रास्ता भटक गया होता और फिर यहाँ निकल आया होता और शायद उसकी दुआ कबूल हो गई । जैसे ही उसने सड़क पर बाले की शक्ल देखी, वह अपने दोनों हाथ हिलाने और शोर मचाने लगा।

ओह... बाले भाई, बाले भाई।

202

जैसे ही कांस्टेबल ने बाले को देखा , उसका ध्यान उसकी ओर गया और वो ज़ोर से चिल्लाया

"क्या बात है? इतनी ज़ोर से गला क्यों फाड़ रहे हो?"

शौकत ने कांस्टेबल की ओर इशारा करते हुए कहा, "इस मुसीबत से छुटकारा पाओ।"

कांस्टेबल ने लड़के से कहा, "साहब , ये एक मीम को छेड़ रहे थे ।"

" लो और सुनो, अगर साहब मेम साहब को नहीं छेड़ेंगे तो क्या तुम्हें छेड़ेंगे ? ---शौकत बाले के सामने शेर बन गया और बोला।

" कानून में इस काम को गुंडागर्दी कहा जाता है और इसके लिए कम से कम छह महीने की सज़ा हो सकती है। --- बाले के अचानक इस जवाब से शौकत हैरान रह गया।

"अरे, तुम भी," उसने आश्चर्य से कहा।

"मैं पहले एक पुलिस ऑफिसर हूं और बाद में दोस्त।"

" ऐसा दोस्त गया तेल लेने । मुझे फांसी पर लटका दो। किसी ने सच कहा था कि पुलिसवाले किसी के भी बाप नहीं होते।--- शौकत को भी अब गुस्सा आ गया।

" तुम जाओ। ---बाले ने कांस्टेबल को इशारा किया।

उसने सैल्यूट किया और चला गया।

" और तुम कार में बैठो। --- बाले ने शौकत से आदेशात्मक लहजे में कहा।

‘‘क्यों?’’ शौकत ने स्टीयरिंग व्हील पर बैठते हुए कहा।

" मैं तुम्हें पुलिस स्टेशन ले जाऊंगा।"

' ऐसी की तैसी पोलिस की और तुम्हारी भी --- शौकत का दिमाग फिर से खराब हो गया ।

बाले ने धमकी दी, "रिवॉल्वर निकालूँ ।"

" अरे, जाओ, जाओ, जो काम अपनी उंगली से कर सकता हूं। वो ये भी नहीं कर सकती , तुम्हारी इस तमंचे से कौन डरता है ?

"ठीक है, चलो अपनी कार को उसके पीछे लगा दो ।"

" क्या सच ?

" हाँ"

" अरे वाह ,तो इस बार, ---इस बार जूते तुम खाओगे , है ना? चलो, अल्लाह के नाम पर, शौकत ने अपनी कार स्टार्ट कर दी, उसे उसे कोचवान का घोडा समझ कर उसे हड़काया ।

☆☆☆

पाँच जासूस

थोड़ी देर बाद उनकी कार उस अगली कार का पीछा कर रही थी जिसमें लड़की बैठी थी।

"वह आपके पड़ोसी की चाची की भतीजी की चाची है, है ना?" बाले ने रास्ते में कहा।

"अरे वो तो मैं तुम्हें टरका रह था , मगर मेरे दोस्त, लौंडिया ज़बरदस्त चीज़ है?"

"शौकत, तुम्हें अपनी ये आदतें छोड़ देनी चाहिए, नहीं तो एक दिन तुम जूते बुरी तरह खाओगे।

"मैं कोई हर एक के पीछे थोड़ी न लगता हूँ, ये तो बस मज़ाक टाइम पास है खाली खोली ," शौकत ने अपनी सफ़ाई पेश की।

आगे वाली कार की स्पीड बढ़ती देख बाले ने कहा, "तेज़ चलाओ , यार , और तेज़ ।"

"और अगर एक्सीडेंट वेक्सीडेंट हो गया तो ?

"तो तुम्हारे लिए एक शानदार मकबरा बनाया जाएगा और उस पर लिखा जाएगा, "भगवान तुम्हें माफ़ करे, बड़ा मरदूद था ।"

"मकबरा तो मैं तुम्हारे लिए बनाके मरूँगा , एक गफ्फार ने कहा था कि ..... ।

" जफ्फार ने ...

"अरे हाँ, वही साले जो सितारों वितारों को गिन के हाल बताते हैं , उसने मुझसे कहा था कि मैं 105 साल तक जिऊंगा। मेरी छह पत्नियाँ और 24 बच्चे होंगे। लेकिन बाले भाई, मैं छह पत्नियों को कहां रखूंगा?

"बेटा, पहले एक करो, फिर छह के सपने देखो।"

"अरे, गफ्फार ने जो कहा,,उसका क्या ?"

205

"अबे जफ्फार "

"होगा साला , अपने को क्या , । उसने मेरा जन्म पत्री भी देखा। था "

"जहन्नम पत्री?

"लानत है बाले भाई । अब जो बोले तो... ।"

"वो देखेंगे , लेकिन तुम बस गाड़ी को साइड में दबा लो ।"

अगली कार अब एक गोल चक्कर पे मोड़ ले रही थी और एक पतली सड़क पर आगे बढ़ रही थी।

"इस सड़क से कोई दूसरा रास्ता नहीं है, मुझे पता है कि तुम अपनी कार यहीं सड़क पर रोक लो "

"लेकिन घर तक पीछा करना बुरी बात है, बाले भाई। उसके मान बाप ने अगर देख लिया तो ?

"तुम यहीं रुको, मैं अभी आता हूँ," बाले ने कार से उतरते हुए कहा।

"अकेले ही ? मैं भी जाऊंगा।"

"मामला ख़तरनाक है, बरखोरदार, तुम यहीं रहो।

"मैंने उड़ती हुई चिड़ियों के पंख गिने हैं। मुझे मत उड़ाओ , ।"

"मौके की नज़ाकत को समझने की कोशिश करो , शौकत भाई ।

" काए की नज़ाकत वज़ाकत , आपण तो मर्द हैं, मियां खान , नज़ाकत तो उनकी होती है। --यह कहते हुए उन्होंने अपनी उंगली नाक पर रखी और खुद ही उनका मतलब समझाया।

जब शौकत ने मना कर दिया तो बाले ने उसे अपने साथ चलने के लिए मान गया , लेकिन इस शर्त पर कि वह पूरी तरह से और चुपचाप उसके पीछे रहेगा।

कार एक उजड़े हुए से कंपाउंड में घुसने के बाद साफ़ तौर पर नज़र से ओझल हो गई थी, लेकिन जब वे कंपाउंड की दीवार के पास पहुँचे, तो उन्होंने अंदर एक सुनसान बिल्डिंग का हिस्सा देखा।

कार लकड़ी की झोपड़ी के बगल की दीवार से सटी हुई दिख रही थी। बिल्डिंग का अगला हिस्सा खराब और टूटा-फूटा लग रहा था। और उसके सारे दरवाज़े बंद थे। उन्हें बरामदे तक पहुँचने में कोई दिक्कत नहीं हुई, लेकिन शौकत के लिए अपने पैरों के बल चलना और अपना वज़न उठाना बहुत मुश्किल हो रहा था। बिल्डिंग भाएं भाएं करती हुई लग रही थी। बरामदे के बाहर, एक पुराने पत्थर के बोर्ड पर, बेरन हाउस के शब्द धुंधले तरीके से खुदे हुए थे।

बिल्डिंग सिर्फ़ एक मंज़िल ऊँची थी, और निचला हिस्सा ऊपरी हिस्से से ज़्यादा मज़बूत लग रहा था। उसके आस-पास, कंपाउंड की घास सूखकर कांटों जैसी सख़्त हो गई थी। कुछ मिनटों तक, हर दरवाज़े से आने वाली आवाज़ें सुनने कि कोशिश की, कान लगाकर सुनते रहे

"यह एक गैर-कानूनी काम है। तुम मुझे भी जूते खिलवाओगे ।" शौकत आखिर न रहा गया।

जवाब में, बाले ने उसका पैर दबाया, उसे चुप रहने का इशारा किया।

उसी समय अंदर से एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ ने उन्हें चौंका दिया।

उसने एक दरवाज़ा खोलन चाहा , वह अंदर से बंद था। फिर वह बरामदे में गया और बिल्डिंग के दूसरे हिस्सों को देखने लगा। उसकी तरफ की दीवार में, जिसका प्लास्टर जगह-जगह से उखड़ गया था, एक पुराना दरवाज़ा था जो शायद कुछ समय से बंद था, क्योंकि बाहर दहलीज़ तक घास थी। या तो इस दरवाज़े का इस्तेमाल बिल्कुल नहीं होता होगा, या बिल्डिंग बहुत समय से खाली पड़ी होगी।

यह दरवाज़ा अंदर से बंद था और इसके ऊपर करीब एक फुट ऊंचा रोशनदान था, जिसमें लोहे की सलाखें लगी थीं। जब बाले ने पहली बार उसे दरवाज़े से टिककर थोड़ा झुकने को कहा ताकि वह पीठ के बल खड़ा हो सके और रोशनदान में हाथ डालकर बंद दरवाज़ा खोलने की कोशिश कर सके, तो शौकत का दिमाग घूम गया। । उसके लिए यह पहली बार था जब बलर ऐसी बेतुकी हरकत कर रहा था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस पुलिस हवलदार के दिमाग में क्या प्लान है। वह यहां क्यों आया था और उसे क्या चाहिए था, लेकिन जब बाले ने दोस्ती का वास्ता दिया, तो उसे मजबूरन स्टूल

बनना पड़ा। फिर भी, वह उस पल सोच रहा था कि बेहतर होता अगर वह उस कांस्टेबल के साथ पुलिस स्टेशन चला जाता।

बाले का तरीका कामयाब रहा। उसने इस बंद दरवाज़े की कुंडी खोली और अब वह एक छोटे से अंधेरे कमरे में खड़ा था, जिसका दूसरा दरवाज़ा एक बड़े कमरे में खुलता था। इस दरवाज़े के इस तरफ़ से हल्की आवाज़ें आ रही थीं, जैसे कुछ लोग आपस में कुछ बात कर रहे हों। बाले ने शौकत को वहीं छोड़ दिया और खुद दरवाज़ा पारकर उस दीवार तक पहुँच गया, जो इस दरवाज़े वाले दो कमरों के बीच पार्टीशन का काम करती थी।

अब वह इस दीवार पर मुंह के बल लेटकर आसानी से अंदर का माहौल देख सकता था। कमरा अंधेरा था क्योंकि चारों तरफ के दरवाज़े बंद थे।

इस अंधेरे में टेबल पर रखी मोटी मोमबत्ती की धीमी रोशनी में उनके पीले चेहरे काफी डरावने लग रहे थे। चुपचाप बैठे पांच आदमियों में एक औरत भी थी, और वह सिल्वाना के अलावा कोई और नहीं हो सकती थी। बाले के लिए उसे दूर से पहचानना भी मुश्किल नहीं था। और बेचारे शौकत को क्या पता था कि जिस लड़की का वह पीछा कर रहा था, वह इतनी खतरनाक है। वे पांचों टेबल के चारों ओर कुर्सियों पर चुपचाप बैठे थे और हर एक के सामने टेबल पर एक रिवॉल्वर रखी थी। उनमें एक मोटा आदमी था जिसके मुंह में सिगार था।

"सिर्फ़ एक घंटा बचा है, उसके बाद सभी साइंटिस्ट अपनी हार घोषित कर देंगे," बड़े आदमी ने टेबल पर आगे झुकते हुए गहरी आवाज़ में कहा।

दूसरे आदमी ने कहा, "यह पश्चिमी देशों के लिए बहुत शर्म की बात होगी, क्योंकि ये हैरान करने वाली घटनाएं पृथ्वी के पूर्व में हो रही हैं।"

"इसका मतलब होगा कि ईस्ट का पलड़ा भारी हो जाएगा," सिल्वाना की पतली आवाज़ सुनाई दी।

"और मैं इतने देर से क्या बक रहा था?" उस भारी-भरकम आदमी ने पूछा।

उसने साफ़-साफ़ कहा।

"बस एक घंटा," तीसरे आदमी ने कहा।

"इस सूअर ने पूरा मामला बिगाड़ दिया, नहीं तो हम पहले ही सफल हो जाते।"

"मुझे लगता है कि साइंटिस्ट्स के ग्रुप में कोई रहस्यमयी व्यक्ति डॉ. पटेल से भी ज़्यादा काम का साबित हो सकता है।"

"शायद आप डॉ. दाऊद की बात कर रहे हैं?"

"जी"

"मेरी भी यही राय है, लेकिन इस अंगूठी के बिना, ये कोशिशें ज़्यादा काम की नहीं होंगी।"

"मुझे हैरानी है कि क्या यह अंगूठी कोई मज़ाक या दिमागी कल्पना तो नहीं है?"

"आप भूल रहे हैं कि इसके लिए कितना खून बहा है।"

"अगर हम, पांच बड़े देशों के पांच सबसे बड़े जासूस, एक साथ काम करें, तो बड़े से बड़ा कारनामा किया जा सकता है ।-- भारी-भरकम आदमी ने मेज पर हाथ पटकते हुए कहा।

"लेकिन यहां की पुलिस?

"उनकी दिलचस्पी सिर्फ़ कुछ लड़कियों के गायब होने के मामले में है, जिसका इन घटनाओं से कोई लेना-देना नहीं है।"

"और अगर मैं कहूँ कि है तो ?" सिल्वाना की आवाज़ ने सबको चौंका दिया।

"वो कैसे ?

सिल्वाना ने कहा, "मैंने एयरड्रोम के एक कमरे में यहां एक सीनियर जासूस और मिस जूलिया के बीच बातचीत सुनी।"

"वह अमेरिकन लड़की जो उस होवरक्राफ्ट में सफ़र कर रही थी? --एक आदमी ने कन्फर्म करना चाहा ।

":हाँ, वही है। उसने बहुत ही अद्भुत घटनाएँ बताई हैं जिन पर शायद कोई विश्वास करे।

"जहां तक मुझे पता है, यह सुपरिंटेंडेंट खान अमेरिकी FBI चीफ इन्वेस्टिगेटर बर्कमैन से भी ज़्यादा खतरनाक और चालाक आदमी है।"

"मैंने उनकी ज़बरदस्त काबिलियत के बारे में भी सुना है।"

"बको मत" भारी शरीर वाला उन पर बिगड़ गया ।-- वह भारतीयों के लिए खतरनाक होगा,

"हमारी सीक्रेट सर्विस का एक मामूली सार्जेंट भी इससे बेहतर हो सकता है।"

यह बाले के लिए असहनीय हो गया। क्योंकि यह बात सिल्वाना ने कही थी ।

एक घटिया सी लड़की। वैसे, उसका दिल कर रहा था कि उस समय अकेले में उन सबको चैलेंज करे, कहे, "खान तो क्या , तुम पहले खान के किसी एक आदमी से निपट

क्यों नहीं लेते?" लेकिन हालत देखते हुये वह चुप रहा।

"हम बेकार की बातों में पड़ गए हैं। हमें अब इस बड़े खतरे का सामना करना होगा। भगवान न करे, अगर यह अजेय आविष्कार किसी अनजान पूर्वी वैज्ञानिक की छिपी हुई शक्ति का प्रदर्शन है, तो पश्चिम को किसी भी दिन विनाश के देवता का सामना करना पड़ सकता है। जो शक्ति एक हवाई जहाज़ को इस तरह हवा में लटका सकती है, जो रूसी ऑटोमैटिक मशीनों को राख में बदल सकती है, उसके लिए हमारी वैज्ञानिक शक्तियों को धूल में मिलाना मुश्किल नहीं है।" --भारी-भरकम शरीर वाले ने उन सभी को भाषण देने वाले अंदाज़ में संबोधित किया। उसने कारण और प्रभाव समझाया।

"ईमानदारी से कहूँ तो मुझे डॉ. पटेल और डॉ. दाऊद दोनों पर शक है। उनमें से एक ने जहा

"यानि ये सब इन का किया धरा है?" सिल्वाना हैरानी से कहना चाहती थी।

"हो सकता है कि दूसरे साइंटिस्ट का , उनके इस एक्सपेरिमेंट का रिएक्शन देखने के लिए वो इनमें शामिल हों गए हों । चौथे आदमी ने कन्फर्म किया।

"तो फिर क्यों न दोनों को पश्चिम के लिए हसीलों कर लिया जाए?"

ग्रैंडेल वाले आदमी ने कहा, "डॉ. दाऊद को आज ही उड़ाया जा सकता है, और मिस सिल्वाना की मदद से ये काम आसान हो जाएगा।"

"और हमें डॉ. पटेल को फिर से पूरी ताकत से ढूंढना होगा।

"और वह अंगूठी निश्चित रूप से उसके पास होगी।।"

"हम पक्के तौर पर नहीं कह सकते, हो सकता है वह खुद किसी की कस्टडी में हो।"

" तो यह तय रहा ।"

"हाँ, और हमारी दूसरी मीटिंग परसों फिर यहीं इसी समय होगी।-- यह कहकर वह खड़ा हो गया। बाकी लोग भी खड़े होने लगे।

शौकत भी बंद दरवाज़े पर कान लगाकर अंदर हो रही बातचीत सुनने की कोशिश कर रहा था, और जब अचानक ऊपर से बाले उसकी पीठ पर आकर गिरा तो वह ऐसे उछल पड़ा जैसे शिकार खेलते समय किसी तेंदुए ने उस पर हमला कर दिया हो।

"अरे, आह." उसके मुंह से निकला, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, बाले ने जल्दी से अपना हाथ उसके मुंह पर रख लिया। वे पंद्रह मिनट तक उसी हालत में खड़े रहे। बाले ने शौकत का मुंह खोला तो उसे बाहर कार स्टार्ट होने की आवाज सुनाई दी।

"यह कैसी हरकत है, यार? वाह, मेरा दम घुट जाएगा।"

"बेटा, मैं तुम्हें जासूस बनना सिखा रहा हूँ।"

"अपनी जासूसी अपने पास रखो , क्या मुझे कोई नौकरी करनी है क्या ? अल्लाह का दिया हुआ सब कुछ है।"

"अच्छा, अगर अल्लाह तुम्हें वो लड़की भी दे दे , जिसका तुम पीछा कर रहे थे, तो?"

"जाओ, मियां किसी और को बनाओ , काए कु मिलने लगी वो ?"

"कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

"खाओ कसम?

" तुम्हारे सर की कसम " - बाले का जवाब सुनकर शौकत सोच में पड़ गया।

"जानते हो वो उन लोगों के सामने क्या कह रही थी?"

"क्या कह रहे थी ?

"कि एक मोटा, भारी भरकम हिजड़े जैसा आदमी उसके पीछे पड़ा था, लेकिन जब मैंने उसे थप्पड़ मारा बेटे का सारा प्यार रफूचक्कर हो गया है।"

"उस ने झूठ बोला, उसने मुझे थप्पड़ मारा ई नही ।"

"मुझे क्या पता, वह कह रही थी , और तुम्हें पता है कि हिजड़ा का क्या मतलब है?"

" क्या मायने हुए ?

"हिजड़ा भी तो औरत से ही बना है।"

"क्या? अरे, इसकी तो ऐसी की तैसी बाले भाई, भले ही जेल चला जाऊँ।मैं लड़की को मज़ा चखाऊँगा। साली उल्लू की पट्ठी "

"बस वही करना है जो मैं कहूँ।"

"आगरीमेंट लिख लो ।"

बाहर जाते समय वे चुप हो गये।

उस समय रात के 8 बज रहे थे और ज़ेनिथ होटल का पार्टी हॉल

उस समय देश-विदेश के साइंटिस्ट्स से भरा हुआ था। प्रेस रिपोर्टर्स और फोटोग्राफर्स भी मौजूद थे। क्योंकि पब्लिक और अखबारों का ध्यान इन दिनों सस्पेंडेड एयरक्राफ्ट की अजीब घटनाओं और रोशी मशीनों के साथ हुए सुपरनैचुरल हादसे पर था। एक के बाद एक, अलग-अलग देशों के साइंटिस्ट्स पुलिस के सामने इस मुद्दे पर अपनी राय दे रहे थे और प्रेस रिपोर्टर्स की रिपोर्ट्स के पन्ने शॉर्टहैंड के कीड़ों मकौड़ों से काले हो रहे थे। चाय, कॉफी और केक-पेस्ट्री वगैरह का ज़माना बीत चुका था और अब वे एक-एक करके ट्रे में आइसक्रीम के कटोरे मांग रहे थे।

सिल्वाना उस समय डॉ. स्मिथ और प्रोफेसर दाऊद के बीच वाली सीट पर बैठी थीं, और वह शानदार आदमी प्रेस रिपोर्टरों के घेरे के पीछे खड़ा होकर उन्हें घूर रहा था। बाले और शौकत भी मौजूद थे, लेकिन शौकत का हुलिया साफ़ दिख रहा था। बाले ने ज़बरदस्ती उसे अपना हुलिया बदलने पर मजबूर किया था और उसे बिल्कुल कार्टून जैसा बना दिया था। उसने अपने चेहरे पर घनी मूंछें उगा ली थीं, , और तीन इंच लंबी दाढ़ी भी बढ़ा ली थी। बाले खुद अपने असली कपड़ों में थे, लेकिन उन्होंने शौकत को अपना प्रोग्राम समझा दिया था।

साइंटिस्ट्स ने आम तौर पर यही राय दी। उन्हें शक था कि वह ताकत कम से कम इस दुनिया की तो नहीं थी। ज़्यादा संभावना थी कि वह किसी अनजान ग्रह से आई हो, शायद मार्स, या शायद किसी और ग्रह से, जहाँ के जीवों के पास सुपरनैचुरल साइंटिफिक ताकतें थीं। क्योंकि वह एनर्जी जो पृथ्वी के ग्रेविटेशनल खिंचाव को किसी खास सेंटर या किसी खास प्लेनेटरी रिंग तक रोक दे, वह आज के साइंटिस्ट्स की पहुँच से बाहर है। इन साइंटिस्ट्स को इससे ज़्यादा कुछ नहीं पता था। उन्हें उस अद्भुत रिंग की घटना के बारे में भी नहीं पता था। यूनाइटेड स्टेट्स के कॉन्सुल जनरल के बंगले पर जो हालात बने थे। आखिर में, सब इस बात पर सहमत हुए कि हमला यूनिवर्सल था, और

वैज्ञानिक अभी कोई राय नहीं बना सकते।

करीब एक घंटे बाद मीटिंग खत्म हो गई। इस बीच, सिल्वाना ने कई बार प्रोफेसर दाऊद से खुलकर बात करने की कोशिश की, लेकिन वह अजीब तरह से रूखे आदमी थे। वह

हर बात का जवाब बहुत संक्षेप में देते थे और बातचीत के दौरान भी उन्होंने यह ध्यान नहीं दिया कि उनसे बात करने वाली एक बहुत खूबसूरत गोरी लड़की थी। शायद उन्हें इस तरह के इंसान से नफ़रत थी।

"क्या आप मेरे गरीबखाने में चाय के लिए मेरा इनविटेशन स्वीकार करेंगे, प्रोफेसर?"

सिल्वाना ने आखिरकार दूसरा तरीका अपनाया।

"मुझे यह न्योता स्वीकार करने का कोई कारण नहीं दिखता।"

"क्यों?

"क्योंकि मुझे चाय पीने की आदत नहीं है," प्रोफेसर का संक्षिप्त उत्तर था।

"तुम बहुत रूखे आदमी हो।" सिल्वाना ने यह बात इतने प्यार से कही कि अगर प्रोफेसर दाऊद की जगह कोई और होता, तो घायल हो जाता ।

"हे भगवान, इस आदमी को पुलिस सुपरिटेंडेंट होने के बजाय चर्च का पादरी होना चाहिएथा," बाले ने धीरे से कहा।

"धन्यवाद"-- प्रोफेसर दाऊदा ने अपना सिर थोड़ा झुकाकर रूखे अंदाज़ में कहा।

"लेकिन आपको मेरा न्योता स्वीकार करना होगा। मैंने आपकी बहुत तारीफ़ सुनी है।

"तारीफ़ दुनिया बनाने वाले भगवान की । --पीछे से सार्जेंट बाले की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन हिंदी में खा था इसलिए सिल्वाना ने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा, हालांकि प्रोफेसर दाऊद मुस्कुराए।

"मैं अभी आया --- यह कहते हुए प्रोफेसर माफ़ी मांगते हुए खड़े हो गए और लैम्ब लंबे काकाम उठता हुआ

बाहर की तरफ जाने लगा । जैसे ही वह निकला, सिल्वाना ने प्रेस वालों के पीछे खड़े उस ग्रैंडेल बड़े आदमी को इशारा किया और वो उठकर उसके पीछे चले गया । बड़ा आदमी अपनी सीट से खिसककर धीरे से दरवाज़े की तरफ जाने लगा , लेकिन जैसे ही वह जाने वाला था, किसी ने उसे लात मारी और वह ज़ोर से फ़र्श पर गिर गया। जिस आदमी ने उसे लात मारी थी, वह नीचे झुका और उसे उठा लिया।

"माफ़ कीजिए मिस्टर , मैं जल्दी में था।

ग्रैंडेल आदमी ने अपना सूट झाड़ते हुए उस स्टेलिन -ब्रांडेड मूंछों वाले भारतीय आदमी को घूरा। और फिर, "कोई बात नहीं," कहते हुए, वह बाहर चला गया।

लेकिन इतने ही समय में सिल्वाना और प्रोफेसर दाऊद उसकी नज़रों से ओझल हो गए।

"इस लड़की को रोको।-- प्रोफेसर दाऊद होटल के बाहरी हॉल में एक खंभे के पास रुके और सार्जेंट बाले से कहा, जो पत्रकारों की भीड़ में घुसकर उनके पास से गुज़र रहे थे।

"लेकिन आप तो उससे बचने वाले थे?"

"प्रोग्राम बदल गया है, उसे कहीं उलझा कर मेरे पीछे आओ ।"

"कोई नया मामला ?"

" हाँ"

यह कहकर वह आगे बढ़ा। इस समय तक सिल्वाना भी पास आ गई थी। और उसके पीछे शौकत। वह ग्रैंडेल आदमी अब हॉल से बाहर निकल चुका था। बाले ने दूर से आँख मारी और शौकत को इशारा किया। शौकत आगे बढ़ा और अचानक उसने सिल्वाना के हाथ पर हाथ रख दिया।

"लड़की, इधर आओ। उसने उससे धीमी, लेकिन गहरी आवाज़ में कहा। और लड़की चौंक कर उसे घूरने लगी।

"क्या बात है? तुम कौन हो?" उसने गुस्से में पूछा।

"मैं तुम्हारा दोस्त हूँ. तुम्हारे काम की बात है.

"मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा।

"आप मुझे इस रूप में नहीं पहचान पाएँगे। शौकत उससे टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में बात कर रही था , लेकिन वह उस समय झिझक रही थी। शायद वह सोच रही थी कि इस अनजान आदमी के साथ जाए या नहीं।

"आखिर ऐसी क्या बात है?" सिल्वाना ने अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए पूछा।

"डॉ. पटेल.- शौकत ने धीरे से कहा. और नहीं पता कि उस नाम में क्या जादू था, जो उसके साथ हुआ, उसने सावधानी से चारों ओर देखा. और उसके साथ हो ली , वह उसे हॉल से बाहर एक प्राइवेट कमरे में ले गया.

सिल्वाना ने घबराए हुए स्वर में कहा, "जल्दी बोलो, मेरे पास समय नहीं है।"

"तुम्हें जल्दी करने की ज़रूरत नहीं है। तुम्हारा मकसद आसानी से पूरा हो जाएगा, लेकिन ---शौकत ने एक ट्रेंड ब्लैकमेलर की तरह अभिनय किया। और बाले हॉल के दरवाज़े से यह सब देखकर मुस्कुरा रहा था । उसे उम्मीद नहीं थी कि शौकत ऐसा अदाकार होगा । उसने उससे बस इतना कहा था कि डॉ. पटेल के नाम पर उसे धोखा दे और सिल्वाना को ले जाए। क्योंकि उसे यकीन था कि इस मीटिंग के बावजूद, इन विदेशी जासूसों में से हर एक के दिल में एक मतलबी-भावना छिपी हुई थी। और अगर मौका

मिला, तो उनमें से हर कोई सिर्फ़ अपने और अपने देश के लिए सबसे ज़रूरी साइंटिफिक सीक्रेट्स हासिल करने की कोशिश करेगा, और वही हुआ। शौकत ने इस तरह से काम किया कि सिल्वाना जैसी चालाक लड़की को भी उसके कहने पर यकीन हो गया, लेकिन जो बात उसे अब तक यकीन नहीं हो रही थी, वह थी

कि डॉ. पटेल ने खुद उसे बुलाया था। शौकत ने बंद दरवाज़े की तरफ़ देखा। बाले अब खिसक गया था। सिल्वाना जैसी खूबसूरत और जवान लड़की की नज़दीकी शौकत को इमोशनली पागल कर रही थी, लेकिन वह मुश्किल से खुद को कंट्रोल कर पा रहा था।

वह खुद को कंट्रोल में रखकर बड़ी मुश्किल से छिपा रहा था।

"लेकिन डॉ. पटेल कहां हैं? और उन्होंने मुझे क्यों बुलाया है?"

" बता दूँ ? आप शायद बुरा मन सकती हैं"

"क्यों?"

"बात ही ऐसी है। जब से उन्होंने तुम्हें साइंस कैंप में देखा है, वे तब से तुम्हार दम भर रहे हैं ।"

" क्या मतलब ?

"भोली मत बनो , लड़की । यह सुंदरता और यह स्टाइल तकिसे पागल नहीं कर सकता।"

"ओह" , वह खिलखिलाकर मुस्कुराई। -" लेकिन? --कुछ सोचते हुए, वह फिर चौंक गई और शौकत को शक भरी नज़रों से देखने लगी।

"लेकिन तुम्हें कैसे पता चला कि मैं उन्हें ढूंढ रही हूँ ?"

"आप डॉ. पटेल को नहीं जानते, वह बहुत रहस्यमयी व्यक्ति हैं।"

"लेकिन मैं तुम पर कैसे विश्वास कर लूँ ?"

"डॉ. पटेल नहीं चाहते कि तुम्हें जरा सी भी कोई तकलीफ हो, क्योंकि वह तुमसे प्यार करते हैं । वरना, अगर उन्होंने ऑर्डर दिया होता, तो मैं तुम्हें ज़बरदस्ती उठा ले जाता। ये देखो, ऐसे।

यह कहते हुए शौकत ने अचानक उसे दोनों हाथों में उठा लिया। यह उसका अपना इमोशनल रिएक्शन था। लेकिन सिलवाना मुस्कुरा दी

"अरे, मैं गिर जाऊँगी । वो नाज़ भरे अंदाज में बोली , "चलो, मैं चलती हूँ।"

218

शौकत ने एक ठंडी सांस ली और उसे वापस ज़मीन पर उतार दिया।

वह उसे पिछले दरवाज़े से बाहर ले गया। प्रोग्राम के मुताबिक, एक रेंटल कार पहले से ही वहाँ खड़ी थी। सिल्वाना बिना किसी हिचकिचाहट के उसमें बैठ गई और शौकत खुद कार चलाने लगा ।

☆☆☆

219

किला ज़ोर्क

जैसे ही सिल्वाना का ग्रैंडेल साथी एंट्रेंस से बाहर आया, उसने अपने सामने लोकल पुलिस की यूनिफॉर्म देखी। वह किसी बहाने से वापस मुड़ने ही वाला था कि वही स्टालिन-टाइप मूंछ वाला आदमी जिसने उसके पैर में लात मारी थी, पीछे से आया। उसने उसका रास्ता रोक लिया।

"वाट इज दिस ?" ग्रांडेल आदमी ने हैरानी से इधर-उधर देखते हुए कहा।

"मिस्टर गेरार्ड, आप हमारे ऑफिशियल गेस्ट हैं। --बड़ी मूंछों वाले ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

" क्या मतलब है?"

"मतलब, आप अच्छी तरह जानते हैं कि इस धरती पर साज़िशें करने की अनुमति नहीं दी जा सकती।"

"कैसी साजिशें?
"इंडियन पुलिस को आप कितना भी बेवकूफ समझें, मागर हम लोग किसी को भी हद से आगे बढ़ने का मौका नहीं देते " बड़ी मूंछों वाले आदमी ने सीढ़ियों की तरफ इशारा करते हुए कहा। और जब वह आदमी नीचे आया, तो यह देखकर उसकी निराशा और बढ़ गई कि उसके तीन और साथी भी पुलिस कस्टडी में थे और उनके चारों ओर स्पॉटलाइट वाली पुलिस कारें थीं।

******

220

सामने के दरवाज़े से निकलने के बजाय, सुपरिंटेंडेंट खान, प्रोफेसर दाऊद का मेकअप पहने हुए, होटल के अंधेरे बरामदे में भाग गया। वहाँ पूरी तरह सन्नाटा था, क्योंकि वह ज़्यादातर विज़िटर्स के लिए बंद रहता था। उसे बीच में कुछ कुर्सियाँ पड़ी मिलीं, लेकिन वह उनके ऊपर से कूद गया। बरामदा उत्तर की ओर मुड़ा हुआ था और होटल के पीछे

की ओर जाता था। वहाँ एक चौड़ा आर्च था जिसमें बाहर ज़मीन तक पहुँचने वाली सीढ़ियाँ थीं। उसने एक कुबड़े इंसान को तेज़ी से सीढ़ियों से नीचे आते देखा। और उसके तुरंत बाद, उसने एक कार के स्टार्ट होने की आवाज़ सुनी। कुछ ही देर में, खान भी सीढ़ियों से नीचे आया और पीछे की गली में पहुँच गया। वह इतनी सावधानी से उसका पीछा कर रहा था कि स्टार्ट हुई और जा रही कार में बैठा कुबड़ा शायद इस बात से अनजान था कि उसका पीछा किया जा रहा है। खान ने जल्दी से अपनी जेब से अपना फाउंटेन पेन निकाला और उसे सीटी की तरह बजाने लगा। और उससे जो हल्की सी आवाज़ आ रही थी, वह चोहे के कुतरने जैसी थी। इस आवाज़ के साथ ही उसकी हरी कार , जिसका इस्तेमाल वह सिर्फ़ खास मौकों पर करता था और जिसकी स्पीड 110 मील की थी , अंधेरे से बाहर निकल आई ।

उस समय इसे इब्राहिम गाड़ी चला रहा था। वह तुरंत नीचे उतर गया।

खान ने स्टीयरिंग व्हील पर बैठते हुए कहा, "तुम यहीं रुको और डिसूजा का इंतज़ार करो।"

उसने एक्सेलरेटर दबाते हुए कहा।

"मैं भी आया। --उसने बरामदे से बाले के दौड़ते हुये कदमों की आवाज़ सुनी और अगले ही बाले उछलकर कार तक पहुँच गया ।

रात के सुनसान अंधेरे में, किला ज़ोर्क के बचे हुए हिस्से एक बार फिर एक कार की हेडलाइट से ज़िंदा हो गए। झाड़ियों में छिपे कीड़ों की धीमी आवाज़ एक कार के इंजन की आवाज़ में मिल गई, और फिर यह रोशनी दो ऊँची झाड़ियों के बीच गायब हो गई।

221

और इन खटपट की हल्की आवाज़ के बाद, माहौल का सन्नाटा फिर से गहरा गया।

इस घटना को पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि ज़ोरक के सुनसान किले के गेट की ओर जाने वाली सुनसान सड़क पर एक हरी कार तेज़ी से किले की ओर आती दिखी और गेट

के पास रुक गई। किले के बाहर भीलों की कुछ झोपड़ियाँ थीं जो शायद कोई और ठिकाना न मिलने पर यहाँ बस गए थे। ये लोग रस्सी वगैरह बनाने का काम करते थे और उन्हें शहर में बेच देते थे। उनकी झोपड़ियाँ किले के पुराने गेट से बस थोड़ी ही दूरी पर थीं जो हमेशा बंद रहता था।

रात के अंधेरे में अचानक एक कार का आना भी कम हैरानी की बात नहीं थी। उनमें से कई लोग अपनी झोपड़ियों से बाहर निकले और हेडलाइट की रोशनी में चौंधियाई आँखों से चारों ओर देखने लगे।

"उनसे पूछो कि क्या कोई कर भी इधर आई है ?" खान ने बगल वाली सीट पर बैथे हुये बाले से कहा ।

" बैथे बैठे ही पूछ लूँ या कार से उतर के ?"

खान ने कहा, "यह भी कोई ऐसा सवाल है जिसे क्लैरिफिकेशन की ज़रूरत है।"

"अरे भाई, अरे, ओ जरा आप --," उन्होंने कार में बैठे एक बूढ़े भील को पास आने का इशारा किया, जिस पर एक तो क्या कई भील पास आ गए।

"साहब , दारू यहाँ नहीं मिलती है। उनमें से एक ने इज्जत से दोनों हाथ जोड़कर कहा।

"पहचानते खूब हो , अरे हमारी तो सात पीढ़ियों से दारू से दुश्मनी हैं।" बाले ने इस सवाल का जवाब सुनकर मुँह बनाया।

"क्या कोई गाड़ी इधर आई है?" खान ने खुद बूढ़े भेल से पूछा।

"बैलगाड़ी हर दिन यहां से गुज़रती हैं।"

"बैलगाड़ी नहीं, मोटर - ऐसी वाली पों ... पों... बाले ने उनके साथ बच्चों जैसा व्यवहार किया और गाड़ी के बारे में बताया ।

"नहीं साहब , ऐसी गाड़ी पहले कभी यहां नहीं आई।"

"क्या कोई इस किले में गया है या कोई निकला है ?

"इस किले में?" भेल ने हैरानी से आँखें फैलाते हुए कहा। "कौन अंदर जा सकता है और क्यों जाएगा ? वही जाएगा जिसे अपनी जान प्यारी नहीं है?"

"क्यों ऐसी क्या बात है ?

"हुजूर, ये पुर्तगालियों का पुराना किला , सालों से खंडहर है। इस किले में पुर्तगालियों के सफेद बालों वाले आदमियों के भूत रहते हैं, वहां कोई नहीं जाता।

"हाँ, साहब , मैंने सुना है कि इस किले में कई सुआ पुर्तगाली सैनिकों को गोली मार दी गई थी ।दूसरे ने कहा, "ये सब उयनके ही भूत होंगे ।"

"क्या आपमें से किसी ने उन्हें देखा है?" बाले ने पूछा।

"हाँ, सर, कभी-कभी आधी रात को, मिट्टी की दीवार पर भूत चलता हुआ दिखाई देता है।"

"बेकार की बातों से क्या फायदा? वह कार ज़रूर इधर आई होगी। हो सकता है उसने कोई दूसरा रास्ता लिया हो। ऐसे लोगों को इससे बेहतर पनाह नहीं मिल सकती। खान ने इंग्लिश में कहा । फिर उसने भीलों को भेज दिया और किले के सामने कच्ची सड़क पर अपनी कार की लाइट बंद कर दी। कार अंधेरे में एक तरफ खड़ी थी। सुपरिटेंडेंट खान ने अपनी जेब से टॉर्च निकाली और जलाई। वह एक पिन टॉर्च थी जिसकी लाइट की रेंज दस कदम तक थी।

इसकी मदद से वे पुराने, बंद गेट पर पहुँचे। उन्होंने उसका दरवाज़ा खोला।

गेट थोड़ा ही खुला था, उसके दोनों पट काफी भारी थे और 35-30 फीट से कम ऊँचे नहीं थे। उन्हें अंदर जाने में कोई मुश्किल नहीं हुई, सिवाय इसके कि उन दोनों को दरवाज़े का सिर्फ़ एक पट हलका सा खोलने के लिए अपनी ताकत लगानी पड़ी। अंदर दोनों तरफ़ गार्ड रूम थे, जिनकी छतें और दीवारें अभी भी सही-सलामत थीं, सिर्फ़ दरवाज़े गिर गए थे। उनके बीच से गुज़रने के लिए एक छोटा सा रास्ता था, जिसमें ऊपर की दीवार तक पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनी हुई थी। यहाँ भी उन्हें किसी ज़िंदा आत्मा का कोई निशान नहीं दिखा।

उन्होंने अपना मुंह रूमाल से ढकते हुए कहा, "मुझे इस समय अपने भाई बदरुद्दीन कमरुद्दीन की बहुत याद आ रही है।"

खान ने कहा, "चमगादड़ की बीट की गंध सेहत के लिए फायदेमंद मानी जाती है।"

"वह ज़रूर सेहत का ध्यान रखने वाले हकीम रहे होंगे।

"श श श .... वशिष्ठ खान ने अपना हाथ अपने मुंह पर रख लिया। कान का निचला हिस्सा चौंके हुए खरगोश की तरह खड़ा हो गया। दूर कहीं पत्थर पर लोहे के गिरने की आवाज़ आई, जो थोड़ी देर बाद बंद हो गई।

किले के इस अंदरूनी हिस्से के बाद पीछे की ओर जाने वाले दो रास्ते थे और बीच में वह बिल्डिंग थी जिसमें शायद उस समय के पुर्तगाली मिलिट्री गवर्नर रहते थे। किले का स्ट्रक्चर अंदर से वेस्टर्न स्टाइल और बाहर से मुगल स्टाइल का था। हालांकि, दीवारों के किनारे चपटे और फैले हुए थे, और उनमें तोपों के मुंह के लिए छेद बने हुए थे।

अचानक, बाले ठिठक कर ठहर गया। हवा के झोंके की तरह, उन्होंने देखा कि एक काली इंसानी परछाई अंदर की बिल्डिंग के सामने छायादार जगह से गुज़री और पत्थर के हॉलवे के अंधेरे में गायब हो गई, जिसके ऊंचे खंभे अंधेरे में भी दिखाई दे रहे थे।

"इस भयानक माहौल से मुझे थोड़ा डर लग रहा है।"

"तुम तो चूड़ियां पहनकर घर पर बैठ सकते थे तुमने पुलिस की नौकरी क्यों की?"

"पुलिस की छोकरी ? वह कहाँ से है? मैं अभी भी कुँवारा हूँ..

"शटअप , चुप रहो"

"अगर आप मुझे डांटेंगे तो मैं चीख चीख कर दादरा गाऊंगा ताकि पुर्तगाली सैनिकों के भूत सुन लें और मेरी जान बच जाए।

खान ने दुबारा उसे चुप रहने का इशारा किया। दूर कहीं से आवाज़ सुनाई दी, जो किसी पत्थर पर लोहे की मोटी चेन के टकराने जैसी थी।

"मैं तो चला --. बाल पलटने लगा .

"तुम्हें यहीं दफ़न कर दूँगा मरदूद ।

"अमरूद दफन हो ही नहीं सकता।

लेकिन वही आवाज़ दोबारा सुनने के बाद बाले को भी चुप रहना पड़ा। वे बिल्डिंग के एक छोटे से हॉलवे जैसे हिस्से को पार कर चुके थे और अब एक पतले और अंधेरे कॉरिडोर से गुज़र रहे थे। वे अपने छोटे पंजों पर चलते हुए अपनी सांस भी रोक रहे थे।

"कौन है?" अचानक कॉरिडोर में एक बहुत भारी आवाज़ गूंजी। यह इतनी डरावनी थी कि बाले का दिल बैठ गया और दूर-दूर तक फैला सुनसान किला एक शांत शहर की तरह कांप उठा।

"क्या मैं आपको एक अच्छी सलाह दूं?" बाले ने धीरे से कहा।

"क्या?

"भाग चलिये यहां से, यहीं बेहतर होगा ।"

"अगर इस बार बोले तो मैं तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा।"

225

"आपकी मर्ज़ी "

" कौन है? ---फिर वही गहरी, गूंजती हुई आवाज़ सुनाई दी, लेकिन इस बार यह ज़्यादा दूर से सुनाई दी। आवाज़ इतनी गूंजी हुई थी, जैसे किसी स्पीकर से निकल रही हो, लेकिन ये शक भी गलत साबित हुआ जब कॉरिडोर से निकलने के बाद, उन्होंने एक लंबे, हॉल जैसे कमरे के दूर कोने में एक कीड़े जैसी इंसानी परछाई को घूमते हुए देखा। खान ने जैसे ही उसे देखा, वह भाग गया, लेकिन जब वे उस छोर पर पहुँचे , तो वहाँ कोई भी नहीं था।

" खुद आन फंसे" वाला आर्टिकल है ।"

"क्या मैं इस आर्टिकल को कोई टाइटल दूं?" खान की घूंसा उठा ।

" मैं शटअप हूँ " - बाले चुप हो गया। उस ने अपना मुंह बंद कर लिया।

खान ने अब अपनी दूसरी जेब से रिवॉल्वर निकाला, उसे हाथ में लिया और बड़ी टॉर्च जलाई। फिर वह बाले की तरफ मुड़ा और उससे कुछ फुसफुसाया।

"बाप रे मैं अकेला जाऊँ ? इस भूतों वाले घर में?" वह अपना हाथ अपने कान पर रखने लगा।

"क्या तुम इतने डरपोक हो?"

"डरपोक? और बाले साहब? लाहौर बड़ा शहर है। जाइए , आप जाइए , मैं अकेला किला जीत लूंगा।"

खान मुस्कुराया और बाले ने अपनी पिस्तौल हाथ में पकड़ी और अपनी टॉर्च लेकर, धीरे-धीरे उस अंधेरे पत्थर के गलियारे से नीचे चला गया जो इस मोड़ पर पूरब की ओर जाता था। खान ने अपनी टॉर्च बंद कर दी और धीरे-धीरे पीछे की दीवार में बनी सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा और बंद दरवाज़े तक पहुँचा, जो शायद एक बड़े हॉल में खुलता था। उसने दरवाज़ा धक्का देकर खोला। वह अंदर से बंद था। फिर वह सीढ़ियों पर दीवार से टिककर खड़ा हो गया और बाले की आवाज़ का इंतज़ार करने लगा। जैसे ही वह अंधेरे गलियारे के दूसरे छोर पर पहुँचा, बाले ने खुद को दीवार में छिपा लिया।

और फिर, दो-तीन लंबी सांसें लेकर, उसके गले से सियारों जैसी आवाज़ें निकलने लगीं। वह लगातार हुया हुया चिल्ला रहा था, और खान के अजीब निर्देशों का मतलब उसे उसी पल समझ आया, जब उसने कॉरिडोर के अंधेरे हिस्से में एक दरवाज़े के खुलने की चरमराहट सुनी। वह तुरंत वहीं ज़मीन पर लेट गया और अपना दाहिना कान ज़मीन से लगाकर आहट लेने लगा। उसे लगा जैसे कोई कॉरिडोर में बहुत धीरे-धीरे चल रहा है, लेकिन अंधेरे में कोई दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन फिर भी भूत की वही कल्पना उसे सिहरन दे रही थी। उसे अपनी हिम्मत पर बिल्कुल यकीन था, लेकिन ऐसे डरावने माहौल का उस पर कुछ साइकोलॉजिकल असर तो हुआ ही था। और अगर कुछ नहीं, तो कम से कम उसका खौफ तो था।

अगर बाहर से भील इस सुनसान किले में आने से डरते थे, तो यह उनकी गलती नहीं थी। इस किले की वीरानी असल में इतनी भयानक थी कि दिन में भी एक अकेला आदमी डर जाता। आखिर, अंधेरी रात थी। सावधानी से, बाले की पिस्तौल पर पकड़ मज़बूत हुई और वह धीरे-धीरे पीछे खिसकने लगा। लेकिन उसी पल वह हैरानी और डर से लगभग उछल पड़ा, उसे पता नहीं था कि ऊपर से उसकी पीठ पर क्या गिर गया है। वो घबरा गया , लेकिन कुछ देख कर उसको हँसी आ गई। वे दो चूहे थे जो लड़ते-लड़ते गिर गए थे, और यह उनकी हिम्मत की निशानी थी कि वे नीचे गिरने के बाद भी लड़ रहे थे। जब बाले ने अपनी छोटी गोल टॉर्च की रोशनी उन पर डाली, तो पहले तो उन्होंने पुलिस

सार्जेंट पर कोई ध्यान नहीं दिया। शायद उसे इंडियन पीनल कोड पर बिल्कुल भी यकीन नहीं था, लेकिन जब रोशनी चली गई, तो वह खुद ही भाग गये ।

खान कॉरिडोर के दूसरे छोर से भाग कर आ रहा था, उसके कदमों की आहट अब साफ़ सुनाई दे रही थी और वह परछाई, अब बाले को साफ़ दिखाई दे रही थी। एक छोटी, छोटी गर्दन वाली परछाई कॉरिडोर के मुहाने पर पैर फैलाए खड़ी थी। बाले ने अपना पैर फैला दिया, जैसे ही भागती हुई परछाई कॉरिडोर के आखिर में पहुँची, बाले ने अपना पैर और फैला दिया, लेकिन जो आया वह कूद गया।

और भले कि चालाकी बेकार गई। उसका हाथ ऊपर उठ जाता लेकिन वह "अररार र .. करके रह गया ।

कूद आकर जाने वाले व्यक्ति सुपरिटेंडेंट खान ही थे।

" ओ , ये आप हैं , मैं समझा कि .....”

"क्या वह बाहर नहीं निकला ?"

“"बिल्कुल नहीं। मैं पैर अड़ा के खड़ा हूँ। '

"तो फिर कहाँ गायब हो गया वो कमबख्त --- खान सोच में पड़ गया ।

"और यह किसी का भूत या आत्मा भी हो सकती है, आप उधर से आए और इधर मैं हूँ । तो फिर यह कहां गायब हो सकता है? कहीं आप को कोई गलत फहमी तो नहीं हुई ? ..

"मैंने खुद इसे इस ओर दौड़ते हुए देखा है।"

"तो फिर वह इंसान नहीं हो सकता," बाले ने किसी अनजान डर से प्रेरित स्वर में कहा।

खान ने पलटते हुए कहा, "इस कॉरिडोर में कहीं न कहीं कोई गुप्त दरवाज़ा ज़रूर होगा।"

टॉर्च की रोशनी में उन्होंने पूरा कॉरिडोर ढूंढ लिया, लेकिन जिस दरवाज़े से परछाई भागी थी, उसके अलावा कोई दरवाज़ा दिखाई नहीं दिया, और यह दरवाज़ा भी बाहर की बजाय अंदर से बंद था।

"मुझे लगता है कि यह ज़रूर कोई भूत है जो हमें परेशान कर रहा है," बाले ने कहा।

" बको मत "--खान ने उसे डांटा-- हो सकता है कि वह दीवार से चिपक गया हो और कहीं और से इस बंद दरवाज़े से.....। यह सोचकर, वह मुड़ा और वापस कॉरिडोर में भाग गया।

"चलो भई , तुम भी चिड़ी के गुलाम । --बाले ने खुद को धक्का दिया और अंधेरे में छोटी टॉर्च की रोशनी की मदद से वह भी खान के पीछे दौड़ने लगा। उसने देखा कि खान दरवाज़े के पास है और उसे अपने कंधे से ज़ोर से धक्का दे रहा है।

"बाले साहब के पास दस हॉर्स पावर है," बाले ने पास आते हुए कहा।

"तुम दूर रहो," खान ने कहा, और एक बार फिर पूरी ताकत से दरवाज़े पर मारा, और इस बार वह चरमराने की आवाज़ के साथ अंदर की ओर गिर गया। खान ने दीवार में उस अंधेरे गैप में रोशनी डाली जो उसके गिरने से बन गया था। यह कुछ सीढ़ियाँ थीं जो बड़े खंभों वाले एक हॉल में जाती थीं, और उस समय हॉल में हल्की रोशनी थी।

खान हाथ में पिस्तौल लिए अंदर आया। जब वह तीन-चार सीढ़ियाँ उतरा, तो बाले भी उसके इशारे पर अंदर चला गया। यह हॉल किसी पुराने चर्च के मुर्दाघर जैसा लग रहा था, जिसके बीच में एक चौकोर प्लेटफॉर्म पर क्रॉस के साथ जीसस क्राइस्ट की मूर्ति लगी थी और उसके ठीक ऊपर छत से एक बहुत पुराना झूमर लटका हुआ था। ऐसे झूमर

आज भी रोम के पुराने चर्चों में लटके हुए मिलते थे। इस झूमर के बीच में कांच की एक कैंडलस्टिक में एक मोटी मोम की मोमबत्ती जलाई हुई थी।

हॉल करीब 100 फुट चौड़ा और 60 फुट लंबा रहा होगा। इस झूमर के अलावा, हॉल में चार और झूमर थे, जो चार प्लेटफॉर्म पर झुके हुए थे, जिन पर धूल भरे ताबूत रखे हुए लग रहे थे। ये झूमर ज़मीन से ज़्यादा से ज़्यादा 80 फुट ऊपर लटके हुए थे और हर एक में सिर्फ़ एक मोमबत्ती जल रही थी। पूरा हॉल धूल से ढका हुआ लग रहा था, जैसे वे सालों से सो रहे आदमियों के बीच खड़े हों। हॉल की हालत देखकर ऐसा लग रहा था जैसे इसे सालों से खोला ही न गया हो, लेकिन चमकती मोमबत्तियाँ इस बात को गलत साबित कर रही थीं। यहाँ फिर से आत्माओं का ख्याल आया। यह इंसान नहीं हो सकता कि कोई परछाई देखे और फिर गायब हो जाए। मुर्दों का धूल भरा और सुनसान घर में

मोमबत्ती की रोशनी हूँ और फिर भी पत्ते की खड़खड़ाहट जैसी भी आवाज़ तक नहीं आती। यह दृश्य बाले के लिए ज़्यादा हैरानी वाला था। हालाँकि वो डरावने और शक्तिशाली इंसानों की परवाह नहीं करता था , लेकिन पता नहीं क्यों उसे मरे हुए लोगों से डर लगता था। अंधेरी रात में कब्रिस्तान में अकेले घूमते समय, या मुर्दाघर जाते समय, उसकी आत्मा मर जाती थी। पता नहीं, एक दोषी अपराधी की आत्मा उससे लिपट जाए ।

और जब खान के साथ हॉल में खोज करते हुए उसकी नज़र छोटे झूमरों के नीचे प्लेटफॉर्म पर रखे ताबूतों पर पड़ी, तो उसका आधा खून सूख गया। अगर वे न होते, तो दो सौ साल पहले के पुर्तगाली नेवी ऑफिसर्स की बॉडीज़ उनकी यूनिफॉर्म में सही पोजीशन में रखी होतीं। उस समय खान छत से लटकी लोहे की चेन खींच कर देख रहा था, तभी उसे भले की चीख सुनाई दी। जैसे ही वह चौंककर मुड़ा, उसने देखा कि भले दोनों हाथों से अपना गला दबा रहा है।

"यह क्या है ?" खान दौड़ा और उसके हाथ पकड़ लिये ।

"याद... यह... यह," भले ने अपने हाथों को और फिर ताबूत में पड़ी बॉडी को देखते हुए हकलाते हुए कहा। "वह अभी खड़ा हुआ और मेरा गला दबाने लगा था ।"

"अपना ही गला तुम खुद घोंट रहे थे।"

" वो तो मैं छुड़ा रहा था।" बाले ने ताबूत से दूर जाते हुए कहा।

यह बात सुनकर खान ने टॉर्च जलाई और ताबूत के पास गया। उसने अंदर पड़े शरीर को छुआ, उस पर किसी तरह का सूखा प्लास्टर लगा था। वह पूरी तरह सख्त हो गया था। जब खान ने अपना नाक पकड़कर उसे उठाया, तो वह सिर समेत आधा अकड़कर उठ गया। खान ने तुरंत उसे छोड़ दिया।

अचानक, खान के कानों में पत्थर पर चेन की वही खनक फिर गूंजी, और इस बार यह एक आवाज़

कुछ अलग तरह कि थी । पता नहीं क्यों, वह तुरंत फर्श पर लेट गया और एक कान लगाकर सुनने लगा। वो छनकार की आवाज़ अब साफ़ सुनाई दे रही थी।

इसी वक्त बाले को फिर से डर का दौरा पड़ा किसी के कराहने की आवाज़ सुनकर वह चौंक गया। आवाज़ दूसरे ताबूत से आ रही थी। जब वह डर के मारे उसके पास गया, तो उसकी आवाज़ गले में अटक गई।
उसे ताबूत में सिर्फ़ एक इंसानी कंकाल पड़ा था और आवाज़ वहीं से आ रही थी।

"हे भगवान, कहां आ फंसे ?" वह मुड़ा और खान की ओर भागा।

"धीरे चलो, अब क्या है?" खान ने कहा और उसे घूरा।

"और... वह, इस ताबूत में पड़ा हुआ मुर्दा , आपको कुछ कहाँ चाहता है ।

"क्या बकवास है?" खान उठा और ताबूत की तरफ आया, लेकिन कराहने की आवाज़ अब बंद हो गई थी।

231

"यह अभी अभी कराह रहा था," बाले ने उसे हैरानी से देखते हुए कहा।

"तुम्हारी खोपड़ी तो नहीं घूमी गई , उल्लू कहीं के ?" खान ने गुस्से भरी नज़रों से उसे देखा, लेकिन दूसरी बार उसे जोर का झटका लगा। ताबूत से फिर से कराहने की हल्की आवाज़ आई, खान ना ज़िंदा लोगों से डरत था न ही मरे हुए लोगों से। वह ताबूत के ऊपर झुका और उसे ध्यान से देखने लगा। आवाज़ फिर से सुनाई दी, लेकिन असल में वह ताबूत से नहीं आ रही थी। खान ने टॉर्च जलाई और ताबूत और उसके प्लेटफॉर्म को ध्यान से देखने लगा। फिर, थोड़ी देर सोचने के बाद, खान ने प्लेटफॉर्म को सिर की तरफ से धक्का देकर उठाने की कोशिश की और वह धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा। जब तक कि प्लेटफॉर्म और ताबूत दोनों सीधे खड़े नहीं हो गए। दूर कहीं एक रोशनी चमक रही थी, जिसकी रोशनी मिट्टी के रास्ते से सटी चौड़ी सीढ़ियों पर पड़ रही थी। वे इन सीढ़ियों से नीचे उतरे और एक बेसमेंट में गए जिसमें एक चौड़े रास्ते के दोनों तरफ छोटे-छोटे खंभे बने थे। इन खंभों में, उनकी जंग लगी सलाखों में दरवाज़े थे, और उनमें से एक में उन्हें कुछ रोशनी दिख रही थी।

खान ने धीरे से कहा, "शायद ये लोग यहां बेफिक्र हो कर बैठे हैं कि उन्होंने किसी आदमी को ऊपर चुअकीदारी के लिए अपॉइंट कर दिया है।"

"क्या हमारे कदमों की आहट और पिस्तौल की आवाज़ उन तक नहीं पहुंची?"

"नहीं, देखो, यह हिस्सा इस हॉल के नीचे नहीं है।"

बाले फिर चुप हो गया। उसने कहा, अब वो बैरक की मोटी, पथरीली दीवारों से चिपक कर आगे बढ़ रहे थे । इसी बीच, उसे फिर से पत्थर से टकराने वाली चेन की वही आवाज़ सुनाई दी, और वह गहरे अंधेरे कि तरफ खिसक गया और दीवार से चिपक गया। उसने देखा कि उसी रास्ते के दूसरे अंधेरे कोने से कोई आ रहा है। वह भारी कदमों से उसी तरफ आ रहा था। फिर वह उसी बैरक के सामने रुका, जिसके दरवाज़े से रोशनी आ रही थी।

खान और बाले ने उसे देखा, उसने मोटे कपड़े का गर्म काला सूट पहना हुआ था, उसका चेहरा आधा नंगा था और आधा स्पोर्ट्स कैप के पोर्ट से ढका हुआ था। फिर उसने दरवाज़ा खोला और अंदर चला गया। खान बाले को वहीं छोड़कर, खुद अपने पंजे जोड़कर दरवाज़े के पास कूद गया। अंदर उनकी जो बातें हो रही थीं, वे यहाँ से साफ़ सुनी जा सकती थीं। अंदर तीन आदमी थे।

"वह बहुत जिद्दी आदमी है," आने वाला कह रहा था।

"कुछ भी हो उसे सब कुछ बताना ही होगा, नहीं तो हम उसे मार देंगे। --यह कहकर दूसरा आदमी खड़ा हो गया।
खान ने देखा कि वह औसत कद का मोटा आदमी था। उसकी आँखें बड़ी और लाल थीं, और वह काफी चालाक और खूंखार लग रहा था।

फिर वे तीनों बैरक से बाहर आ गए। खान इस समय तक भले के पास पहुँच गया था, उनको कोई खतरा नहीं था, क्योंकि वे तीनों, इन जासूसों की मौजूदगी से अनजान, आराम से गलियारे में चलते हुए दूसरे छोर पर अंधेरे में गायब हो गए। शायद उन्हें यकीन था कि पुर्तगालियों के इस सीक्रेट मिलिट्री ठिकाने तक कोई नहीं पहुँच सकता। यह रास्ता आगे बढ़ा और बाईं ओर मुड़ गया और यहाँ दीवार में एक मशाल जल रही थी, जिसकी कांपती हुई धुंधली रोशनी में उनके पीले चेहरों ने कुछ भयानक इरादा दिखाया। कुछ कदम चलने के बाद, वे एक बंद दरवाज़े पर रुके। इस दरवाज़े में एक मोटा लोहे का गेट था और बाहर एक पत्थर पर शस्त्रागार के अक्षर खुदे हुए थे। पहले आदमी ने दरवाज़ा

खोला और वे तीनों बिना बंद किए अंदर चले गए। दरवाजा शायद अंदर से लात-मार कर भेड़ दिया गया था । यह एक चौकोर हॉल था, जिसमें पत्थर के खंभों पर बैसाखियों के साथ बंदूकें रखने के लिए स्टैंड बने थे। चौकोर पत्थरों से बनी मोटी दीवारों में अलमारियाँ बनी हुई थीं, जिनमें अभी भी बारूद पड़ा हुआ मिला। कमरे में सिर्फ़ एक मशाल जल रही थी, जो गन स्टैंड में लगी हुई थी, लेकिन उसकी धीमी रोशनी इस बड़े चौकोर कमरे के माहौल को हल्के से रोशन कर रही थी।

यह रोशनी के इतने बे कमरे के लिए काफी नहीं थी । कमरे के बीच में एक बड़ी टेबल थी, जो उस पुराने ज़माने के हथियारों के गोदाम का हिस्सा नहीं लग रही थी। इस टेबल पर वाइन की दो बोतलें और एक टूटा हुआ गिलास था, और एक आदमी उसके पास लेटा हुआ था। वह छोटा आदमी उसके पास आया, उसे नफ़रत भरी नज़रों से देखा, और फिर उसे ज़ोर से ठोकर मारी ।

"ए ..ओह, हो यो..." वह नशे में बिना आँखें खोले बुदबुदाया।

"सुअर , क्या तुम्हें शराब पीकर बेहोश होने के लिए यहां रखा गया है?" छोटे कद के आदमी ने उसे घूरा और गुस्से में कहा, उसका कॉलर पकड़कर उसे खड़ा कर दिया।

"शराब? सच , किसने पी? तुमने? नहीं ,मैंने , मैंने पी, हिच, जाओ पी ... जाओ और पीऊँगा। हिच.... किसके बाप का क्या जाता है?"

"होश में आओ।"

"मैं... हि च ... क्या तुम पियोगे ?" उसने उसकी आँखों के सामने अपनी उंगली हिलाते हुए, लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। "ले लो, टेक इट इजी .. आओ, ले लो... ले लो, टेक इट इजी... टेक इट ... टेक इट..... टेक इट - बवो झूम कर लड़खड़ाता हुया नाचने लगा ---- लारा बोमै लारा बोमै, ओ हिच , पिंग पोंग पिंग पोंग --बिंग बांग ,,, बिंग बांग .....काम ऑन , उ , काम ऑन यू हॅम्बल लेडीज "

नाचते नाचते वो लड़खड़ाया और चक्कर खाके नाटे आदमी के ऊपर गिरने लगा , मगर दूसरे ही पल उस आदमी ने एक जोरदार तमाचा इसको जमा दिया । और इसे दिन में तारे दिखाई देने लगे वो कुछ पल के लिए सन्न हो गया ।

"तुमने, तुमने..... मुझे मारा, ...तुमने ....मुझे -तुम सुअर के बच्चे , तुम ने मुझे मारा। --- यह कहते हुए उसने अपना मुंह बंद कर लिया और रोने लगा। छोटे कद का वह आदमी उसे फिर से थप्पड़ मारना चाहता था, लेकिन उसके साथी ने उसका हाथ रोक दिया।

"जाने दो, ग्रैडी, इसने अपने आदमियों को धोखा दिया है और हमारे साथ मिल गया है।वह इस समय नशे में है।"

234

छोटे कद के आदमी ने कुछ नहीं कहा। उसने नशे में धुत जिम्मी को एक तरफ धकेल दिया और सख्त चेहरे के साथ आगे बढ़ा। शस्त्रागार के पीछे एक और दरवाज़ा था, जो मुश्किल से साढ़े तीन फ़ीट ऊँचा और ढाई फ़ीट चौड़ा था, उसमें से सिर्फ़ एक आदमी झुककर या बैठकर अंदर जा सकता था। उन्होंने उसे खोला और एक के बाद एक अंदर गए। यह किसी तरह की जेल थी। इसकी छत ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह फ़ीट ऊँची थी और इसकी लंबाई-चौड़ाई पच्चीस फ़ीट रही होगी। यहाँ गहरा अँधेरा था। छोटे कद के आदमी के कहने पर शस्त्रागार से तीसरा आदमी अंदर गया।

उसने जलती हुई मशाल उठा ली।

☆☆☆

235

रोशनी का इंसान

जब टॉर्च की टिमटिमाती, धीमी रोशनी कमरे के एक कोने में घुटनों पर सिर रखकर बैठे एक इंसानी साये पर पड़ी, तो वह कराह उठा और उन्हें देखने के लिए सिर उठाया, फिर सिर झुका लिया। उसका चेहरा पीला पड़ रहा था और दाढ़ी बढ़ रही थी। उसकी आँखें धुंधली थीं और उसके बिखरे बालों की परछाई में काले घेरे दिख रहे थे। उसने एवरेज क्वालिटी का एक गर्म सूट पहना हुआ था, जिसका कपड़ा जगह-जगह से फटा हुआ था, और जो इस जेल की धूल और गंदगी से गंदा हो गया था।

"डॉक्टर". कमरे में एक छोटे कद के आदमी की आवाज़ गूंजी. "आप बहुत कमज़ोर हो गए हो."

":नहीं. उस आदमी ने अपनी कमज़ोर आवाज़ में भी मज़बूती से बात की. और फिर वह घुटनों के बल ज़ोर से खड़ा हो गया. उसके हाथों और पैरों में लोहे की भारी ज़ंजीरें पड़ी हुई थीं। .

"मैं बिल्कुल भी कमज़ोर नहीं हुआ हूँ, देखो तो।" यह कहते हुए उसने अपने हाथों की चेन को हिलाया और उसे चट्टानी दीवार पर ज़ोर से मारा , और उसकी आवाज़ दूर-दूर तक गूँज उठी।

"आप बहुत जिद्दी हैं, भले ही आपकी मौत और ज़िंदगी के बीच कुछ ही कदम बाकी हैं।

"और मैं तुम्हारे जैसे बदमाशों के सामने सिर झुकाने से बेहतर ऐसी मौत मरना पसंद करूंगा," डॉक्टर का जवाब था। वह उन भारी लोहे की जंजीरों में ज़्यादा देर तक खड़ा नहीं रह सका और फिर वहीं गिर पड़ा।

"आप चार दिन से बिना खाने-पीने के यहाँ पड़े हैं। क्या आपको ज़िंदगी का एशों आराम पसंद नहीं?" छोटे कद के आदमी ने पूछा।

"और मेरी पसंद से तुमको क्या लेना-देना? तुम अपने मतलब के लिए मर्डर भी कर सकते हो।"

"बिलकुल नहीं, अगर तुम अब भी वह अंगूठी हमें दे दो और हमारी पार्टनरशिप में शामिल हो जाओ, तो हम तुम्हारे लिए दुनिया की सबसे अच्छी लैब का इंतज़ाम कर सकते हैं। दुनिया की सबसे अच्छी सुख-सुविधाएँ तुम्हारे कदमों में होंगी।"

"मैं बदमाशों पर भरोसा नहीं करता।"

"तो तुम ऐसे नहीं मानोगे।" छोटे कद के आदमी का चेहरा अचानक डरावना हो गया।

"क्या तुम मुझे वह अंगूठी दोगे या मैं अपना एक्शन शुरू करूँ?" उसने उसे आखिरी धमकी दी।

"मेरे पास नहीं है। किसी ने इसे कॉन्सुल जनरल के बंगले से हो कोई ले उड़ा था ।

मेरे दूध के दांत टूट चुके हैं, डॉक्टर ---नोरिक बस एक नकली अंगूठी ले जा सका था ।"

237

मुझे पता था कि तुम्हारे जैसा आदमी इतना बेवकूफ नहीं हो सकता कि इतनी ज़रूरी चीज़ अपनी जेब में ऐसे रखे।”-- छोटे कद का आदमी एक कदम आगे बढ़ा और अपनी जेब से एक पतला तार का हंटर निकालकर बोला।

"मैंने पहले ही कह चुका हूँ कि मेरे पास यह नहीं है।"

"और मैं कहता हूँ कि ये है । ------ यह कहकर, उसने डॉक्टर पर हंटर की बारिश शुरू कर दी , कुछ देर डाक्टर ने बर्दाश्त किया लेकिन फिर वह इसे वो बर्दाश्त नहीं कर सका और कराह उठा। वह पहले से ही काफी घायल लग रहा था।

"आज मैं तुम्हारी ज़िंदगी या फिर वह अंगूठी दो में से एक चीज़ लूंगा ।

"मेरी ज़िंदगी के बिना, यह तुम्हारे लिए बेकार हो जाएगी, सुअर।" डॉक्टर दर्द से तड़प उठा।

"अहा, फिर तो वो तुम्हारे पास ही है।" छोटे कद के आदमी ने अपना हाथ रोक लिया।

"नहीं,”-- डॉक्टर चिल्लाया।

"मैं तुम्हें अब सिर्फ़ दस सेकंड देता हूँ। अगर तुमने एक से दस तक की गिनती में अपना मन नहीं बदला, तो अब तुम्हारी मौत को कोई नहीं रोक सकता।" ----छोटे कद के आदमी ने गुस्से से कहा।

लेकिन डॉक्टर ने कोई जवाब नहीं दिया। छोटे कद के आदमी ने अपनी जेब से एक अमेरिकन पिस्तौल निकाली, जिसे उसने डॉक्टर की छाती पर तान दिया। फिर उसने गिनती शुरू कर दूँ -- "एक , दो तीन ,

डॉक्टर तब तक वहीं बैठा रहा, कुछ बोल नहीं पाया, जब तक वह फिर से दरवाज़े पर नहीं पहुँच गया।

"डॉक्टर, मैं तुम्हें तीन किश्तों में मारूंगा। पहली दो गोलियों से तुम्हारी जान तो वापस आ जाएगी, लेकिन तीसरी गोली तुम्हारे सीने में लगेगी। ----यह कहकर उसने कुछ सेकंड डॉक्टर के जवाब का इंतज़ार किया और फिर "दस" कहकर गोली चला दी। गोली डॉक्टर के हाथ में लगी।

वह वहीं गिर पड़ा और तड़पने लगा।

"मार डालो, हरामजादो , कमीनो, पाजीओ ।-- वह कराह उठा और चिल्लाया।

"ग्रेडी ने कहा, ग्यारह, और दूसरी गोली चलाई। यह गोली डॉक्टर के फैले हुए पैर में लगी। उसने आह भरी और अपना पैर पकड़ लिया।

"तुम क्या कर रहे हो, ग्रैडी? क्या तुम इतनी मेहनत बेकार जाने दोगे?" छोटे कद के आदमी ने धीरे से पूछा, लेकिन इससे पहले कि वह जवाब दे पाता, डॉक्टर पहले ही घबरा गया।

वह अपनी उंगली पर ट्रिगर दबाने वाला ही था ---

" रुको, रुको, वह चिल्लाया,

और ग्रैडी मुस्कुराया और पिस्तौल जेब में रख ली।

"यह मेरे कोट की लाइनिंग में है।" यह कहते हुए डॉक्टर बेहोश हो गया।

"गधो !' ग्रैडी अपने साथियों की तरफ मुड़ा। --- क्या तुमने ऐसे ही इसकी तलाशी ली थी ?

यह कहकर उसने डॉक्टर पर हमला कर दिया। उसने अपने ज़ख्मों की परवाह किए बिना, बड़ी बेरहमी से उसका कोट फाड़ दिया, और फिर लाइनिंग फाड़कर अंगूठी ढूंढने लगा। उसे अंगूठी मिल गई। वह उसकी बगलों की सिलाई के बीच एक जगह में सिली हुई थी।

"यह रही ," ग्रैडी ने कहा, उसे चुटकी में पकड़कर और खुशी से उस पर अपनी नज़रें गड़ाते हुए।

"हुर्रे रे, --उनके साथियों ने नारे लगाए। -- अब हम इसकी करोड़ों की कीमत वसूल सकते हैं।

"वाह, इस पावर से हम पूरी दुनिया को हिला सकते हैं। अरे, तुमने देखा नहीं, दुनिया भर के साइंटिस्ट्स ने इस बारे में झख मारी है," ग्रैडी ने गर्व से कहा।

"लेकिन बिना डॉक्टर के?

"नहीं, वह हमारा प्यादा बना रहेगा।"

"और अगर यह अंगूठी सिर्फ़ दिखावा निकली तो?"

"गधे, क्या उसके पीछे भाग रही सारी ताकतें तुम्हारी तरह बेवकूफ हो सकती हैं? ग्रैडी ने यह कहा और अंगूठी अपनी जेब में रख ली। फिर वह डॉक्टर की तरफ मुड़ा।

"डेविड, तुम कार ले जाओ और एक अच्छे डॉक्टर को आंखों पर पट्टी बांधकर यहां ले आओ।

"ज़रूरत नहीं है, डॉक्टर यहाँ हैं,जनाब ," पीछे से तेज़ इंग्लिश एक्सेंट में आई आवाज़ ने उसे चौंका दिया। इससे वह चौंक गया। जैसे ही वह मुड़ा, ग्रैडी ने अपनी जेब से पिस्तौल निकालने की कोशिश की, लेकिन खान की रिवॉल्वर से निकली गोली उसके हाथ में लगी और उसने उसे पकड़कर सहारे के लिए दीवार का सहारा लिया। इस बीच, उसके दूसरे साथी डेविड ने अपनी रिवॉल्वर निकाल ली थी, लेकिन उसी समय बाले ने एक चमत्कार किया। खान डेविड को अपनी रिवॉल्वर निकालते हुए नहीं देख सका। जैसे ही डेविड ने गोली चलाई, बाले की पिस्तौल भी उसी समय चल गई और खान की आँखें अनायास ही फटी रह गईं जब उसने देखा कि उसकी बाले की पिस्तौल से निकली गोली डेविड की रिवॉल्वर के बीच में लगी है। ग्रैडी की रिवॉल्वर ऑटोमैटिक सिस्टम वाली थी, लेकिन उसे दूसरी बार गोली चलाने का मौका नहीं मिला। खान के दूसरे फायर ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया। तीसरे ने जवाब देने के बजाय अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लिए। बाले ने उन तीनों को अपने टारगेट पर रखा और खान आगे बढ़ा और ग्रैडी की जेब से अंगूठी निकाल ली।

"ए , तुम हाथ ऊपर उठा लो । एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ, बॉल को लगा कि उसकी पीठ पर कोई सख्त चीज़ लगी है। यह जिमी था जो नशे में धुत होकर वहाँ पड़ा था, गोलियों की आवाज़ से चौंक गया था। बाले को मजबूरन कहना मानना पड़ा। ऐसे समय में, खान गोली भी नहीं चला सका, वरना गोली जिमी के बजाय बाले को लग जाती । ग्रैडी को मौका मिलने पर, उसने अपने दर्द पर काबू पा लिया और

वह अपनी सीट से उछला और खान के हाथ पर, जिसमें अंगूठी थी, इतनी ज़ोर से मारा कि अंगूठी उसके हाथ फिसलकर नीचे सूखी घास प r गिर गई जो सालों से दरवाज़े के ठीक पास पड़ी थी।

"शुक्रिया, बहुत-बहुत शुक्रिया... ई... मुझसे----- यह कहकर जिमी नशे की हालत में भी नीचे झुका और अंगूठी उठाना चाहा। बाले ने इस मौके का फायदा उठाया और उसके मुंह पर इतनी जोर से मारा कि उसकी जीभ कट गई। वह दीवार से टकराया। लेकिन जैसे ही बाले अंगूठी उठाने के लिए नीचे झुका, उसने देखा कि काले दस्ताने पहने एक हाथ अंगूठी उठा रहा है।

"परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है, सार्जेंट," एक नरम और लचीली आवाज़ आई, और वह चौंक गया जब उसकी नज़रें उसके पीछे खड़ी सिल्वाना से मिलीं।

सिल्वाना के हाथ में एक रिवॉल्वर थी, जो बाले की खोपड़ी की ओर थी।

"मिस्टर खान, अगर आपने कोई हरकत की तो आपका यह असिस्टेंट खुद ही मौत के मुंह में चला जाएगा। --सिल्वाना ने खान को धमकी दी।

उन्होंने आँखें घुमाते हुए और सिलवाना को आँख मारते हुए कहा, "हरकत, जीवन का नाम है।"

"चुप रहो," उसने डांटा।

"ओह आईए , मिस्टर गेरार्ड," सिल्वाना ने दूसरे हाथ से पीछे की तरफ इशारा किया, और इसके साथ ही, वही ग्रैंडेल आदमी जिसे रऊफ ने ज़ीनत होटल के दरवाज़े पर रोक रखा था, मुस्कुराते हुए अंदर आया।

"सुपरिटेंडेंट, भारतीय कानून हम विदेशियों को हिरासत में नहीं ले सकता। खासकर उन हालात में जब हमारे खिलाफ किसी गंभीर जुर्म का कोई सबूत न हो। --उस ने खान को देखते ही कहा , और हंस पड़ा।अंदाज मजाकिया था ।

" हिरासत में नहीं, हमने आपको रानी बाग में रखने का प्लान बनाया था," बाले ने बीच में टोकते हुए कहना चाहा।

"तुम चुप रहो, बड़ों की बातचीत के बीच में छोटे बच्चों का आना बदतमीज़ी है।" उसने डांटा.

"अरे, बड़े भाई। खामोश !"

"डॉ. सिल्वाना, हमें इन जासूसों में कोई दिलचस्पी नहीं होनी चाहिए। ये बेचारे अपनी ड्यूटी कर रहे हैं। बस डॉ. पटेल को अपने साथ ले जाइए। हम उनका इलाज करेंगे।" यह कहकर गेरार्ड ने ताली बजाई, और तभी उसके बाकी तीन आदमी, जो आर्मरी में इंतज़ार कर रहे थे, भी अंदर आ गए।

"क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारा वह गैंडा मुझे बेवकूफ़ बनाकर रोक पाएगा?" सिल्वाना ने बाले को चुभती हुई नज़रों से देखा ।
"इस तबाही को कौन रोक सकता है?" बाले ने हिम्मत से कहा।

"मुझे पता था कि आपकी पुलिस बाहर है, इसलिए मैं उनके साथ गई , ताकि एम्बेसी को फ़ोन करके अपने साथियों को छुड़ाने और आपका प्रोग्राम भी चौपट हो जाए ।

"तुम्हारी निगहे- नाज़ ने हमें तो वैसे ही चौपट कर दिया है , डार्लिंग," बाले ने कहा, उसकी आँखों में एक सच्चे प्रेमी जैसा रोमांटिक भाव लाते हुए।

"मैंने आपकी जासूसी और एयारी की बहुत कहानियाँ सुनी हैं।"

"एयार तो केवल ख्वाजा उमर हुए हैं ।"

डॉक्टर को उठाओ," गेरार्ड ने अपने आदमियों को आदेश दिया। खान उस समय चुप खड़ा

 बाले के मूवमेंट देख रहा था। वह अभी भी पूरी तरह शांत और निडर लग रहा था। शायद बाले

वह जो भी कर रहा था, वह सही था।

जैसे ही सिल्वाना मुड़ने लगी, बाले ने उसका एक हाथ पकड़ लिया।

"सिल्वाना डारलिंग, मैं तुम्हारे बिना मर जाऊँगा।"

"शट अप "। सिल्वाना ने मुड़कर उसे डांटा।

"तो भले ही तुम मुझे गाली दो, मैं सच में तुमसे प्यार करता हूँ।"

तुम?" वह रुकी और मुस्कुराई।

"हाँ , मैं सच कह रहा हूँ। मुझे इस सुपरिटेंडेंट, इस नौकरी से कोई हमदर्दी नहीं है। यह सब पेट का मामला है। बस मुझसे प्यार करने का वादा करो, और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।

"किसी और को बेवकूफ बनाना लड़के ," उसने शौकत जैसे आदमियों को कत्ल करने वाली अदा से इतर कर बोली , लेकिन बाले कत्ल नहीं हुया ।

"चलो, सिल्वाना," सिल्वाना ने गेरार्ड की आवाज़ सुनी।

"अच्छा, तुम जाकर देखो, अगर मैं शहर में घंटाघर से लटक कर खड़कुशी ना कर जाऊं, तो मेरा नाम बदल देना

"मेरा दिल तोड़ कर मत जाओ , बहारों की नानी , आई एम सॉरी , रानी , मैं जिंदा खरगोश बन जाऊंगा। वह अपने प्यार का इज़हार करते हुए हिन्दुस्तानी बोलने लगा ।

"क्या बकवास है?" गेरार्ड रुका और सिल्वाना से पूछा।

"उसे मुझसे प्यार हो गया है," उसने मुस्कुराते हुए कहा।

"क्या अभी अभी हुया है?

"अरे नहीं, मैं तो पीड़ा होने से पहले से ही प्यार करता हूँ।--बाले को खुद ही बोलना पड़ा।

"चलो, जल्दी करो, उसकी बातों में मत पड़ो। अगर वह नहीं मानता, तो उसे गोली मार दो," गेरार्ड ने दरवाज़े से बाहर निकलते हुए कहा, लेकिन वह सिर्फ़ दो कदम ही चला था कि उसका एक आदमी घबराया हुआ बाहर से दौड़ता हुआ आया।

उस ने घबराए हुए स्वर में कहा, "पुलिस ने किले को चारों तरफ से घेर लिया है।"

"यह बहुत बुरा हुया है, ---गेरार्ड सोच में पड़ गया ।

"सुनो , अगर तुम मुझे भी शैल कर लो तो मैं तुम्हें यहां से निकाल सकता हूं," ग्रेडी ने कहा, अपने हाथ के घाव पर दबाव डालते हुए उनकी ओर बढ़ने लगा ।

"तुम?"हम तुम पर कैसे भरोसा कर सकते हैं? गेरार्ड ने उससे पूछा।

"सब कुछ तुम्हारे हाथ में है, मैं सिर्फ़ तुम्हें गाइड करूँगा। और मुझे अपने अरेस्ट होने का डर नहीं होगा?" उसने कहा।

"हाँ, ठीक है। चलो रास्ता बताओ," गेरार्ड ने कहा।

"ये लो" - यह आवाज़ अचानक बाले के मुँह से निकली और उसने बड़ी फुर्ती से सिल्वाना को अपनी बाहों में इस तरह जकड़ लिया कि उसकी पीठ दीवार की तरफ़ हो गई और सिल्वाना सामने की तरफ़। उसकी पकड़ इतनी मज़बूत थी कि सिल्वाना कोशिश करने पर भी उससे बच नहीं सकी।

"गोली मुझे नहीं लगेगी, लेकिन यह कोमल और नाजुक कयामत को लगेगी , मेरे प्यारे उल्लू के पट्ठे ।

बाले ने गिरार्ड और उसके आदमियों को चुनौती दी। और फिर वह धीरे-धीरे दीवार का सहारा लेकर उनसे दूर खिसकने लगा। यह देखकर, गिरार्ड ने पिस्तौल अपनी जेब में रखी और बाले पर कूद गया, लेकिन अगले ही पल सुपरिंटेंडेंट खान के एक ही मुक्के ने उसे दिन में तारे दिखा दिए। खान ने उसे मुक्कों पर रोके रखा। और यह सच था कि गिरार्ड और उसके चार आदमी एक खान से निपट नहीं सकते थे। जिमी एक ही मुक्के के बाद पहले ही बेहोश हो गया था।

और ग्रैडी के आदमी, वे तय नहीं कर पा रहे थे कि दोनों में से किसका साथ दें। लेकिन बाद में वे भी गिरार्ड के साथियों के साथ मिल गए और अब बाले और खान एक साथ

सात आदमियों का सामना कर रहे थे। खान को इस हाथापाई में अपनी पिस्तौल निकालने का मौका नहीं मिल रहा था, लेकिन उसी समय सिल्वाना चिल्लाई और गिरार्ड को इशारा किया, जो एक चट्टानी किनारे पर गिर गया था और जैसे ही गिरार्ड चौंका, उसने उस पर अंगूठी फेंक दी।

"धत्त तेरे की हमारी सगाई की अंगूठी किसी और को दे दी। ------यह कहकर बाले ने उसे दीवार की तरफ धकेल दिया। उसकी पिस्तौल पहले ही बहुत दूर गिर चुकी थी। सिल्वाना को धक्का देकर बाले तेज़ी से गेरार्ड पर कूदा, लेकिन अब एक अजीब सी रोशनी ने सबको चौंका दिया। गेरार्ड को लगने के बजाय, अंगूठी प्लेटफॉर्म पर इस तरह गिरी कि उसका लाल सिरा छत की तरफ था। उसके चारों ओर ऑक्टोपस के तनों की तरह फैले पत्ते चारों तरफ से उठकर एक कटोरा बन गए थे। और उनसे पतली, पतली, रेडियल लहरें निकलीं, जो छोटे, पतले नीले घेरों में बदल गईं, और भंवर की लहरों की तरह ऊपर उठ रही थीं।

वे सब अपनी लड़ाई भूल गए और इस अनोखी घटना को हैरानी और अचरज की आँखों से देखने लगे। छत के पास गोलों का वॉल्यूम मोटा होता जा रहा था। सिल्वाना और गेरार्ड और दूसरे लोग हैरानी से लगभग मूर्ति बन गए थे। इसी बीच, अंगूठी का बीच का रूबी टैग बार-बार जलने और चमकने लगा। और इसके साथ ही, ऊपर के रेडियल गोलों के वॉल्यूम में किसी तरह का काला रिफ्लेक्शन या खालीपन बन गया, जो धीरे-धीरे अंग्रेजी के SALAZ अक्षरों का रूप ले रहा था। हर दूसरे अक्षर के दिखने के साथ, पिछला अक्षर गायब हो जाता था। फिर उन्होंने दूर आसमान में एक धमाके की आवाज़ सुनी और उसके साथ जेल की दीवारें हिल गईं।

फिर उनकी आँखों ने उनके जीवन की सबसे अद्‌भुत घटना देखी। एक बहुत ही तेज़

रोशनी जो एक तरफ की दीवार से धीरे-धीरे रिस रहे हल्के रंग के धुएं की लहरों से बन रही थी, वह और तेज़ होती गई। जब तक जेल का वह हिस्सा हल्के नीले, चमकदार रोशनी से भर नहीं गया। और उसी पल, सिल्वाना और कई दूसरे लोग हैरानी से चीख पड़े जब उन्होंने उसमें से एक चमकदार इंसानी शरीर की आउटलाइन निकलती देखी, जैसे वह इसी रोशनी से निकल रहा हो। यह आसमानी लेकिन चमकदार रोशनी जैसी लग रही थी। फिर रोशनी धीमी हो गई और आउटलाइन इंसानी शरीर के रूप में काफी साफ

दिखने लगी। यह देखकर, सिल्वाना " ओह " की अपनी आवाज़ के साथ सिसक कर रह गई , और बाले की आँखें हैरानी से चौड़ी हो गईं। अगर वह कोई सुपरनैचुरल इंसान था, तो उसकी मर्दाना खूबसूरती एक ऐसी मिसाल थी जिसका कोई जवाब नहीं था।

उसी समय, एक अजीब सी हंसी ने उन्हें चौंका दिया और वे इस अजूबे की दुनिया में चले गए। यह आवाज़ रोशनी वाले आदमी के होठों से आ रही थी।

"जिस अंगूठी के पीछे तुम भाग रहे हो, यह सोचकर कि वह दुनिया की सबसे अद्भुत चीज़ है, वह तो बस मेरी तरफ़ से एक ट्रांसमिटिंग कॉल है। उसके होठों से एक भारी, लेकिन धीमी आवाज़ निकली।

"लेकिन तुम... तुम कौन हो?", सिल्वाना की आवाज़ फटी।

"मैं वही हूँ जिसकी ताकत की एक झलक तुम सब ने उस लटके हुए प्लेन में देखी थी।" उसके जवाब ने उन्हें और भी हैरान कर दिया।

"ओ महान शक्तियों के मालिक, हम बेकसूर हैं।" गेरार्ड ने डरते हुए कहा।

"सिर्फ़ प्रकृति में ही महान शक्तियों की मालिक हैं। मैं तो बस उसका एक छोटा सा रूप हूँ, सीधे-सादे इंसान।"

"हम आपको जानना चाहते हैं। बाले के मुंह से भी निकला।

मुझे भी अपने माहौल में तुम्हारे जैसे शैतानों की ज़रूरत है। तुम्हें बहुत जल्द पता चल जाएगा।- बाले को एक अजीब जवाब मिला।

"ये क्या बात हुई ?" बाले ने हैरानी से कहा। और जब उसने खान की तरफ देखा, जो हैरान होने के बजाय, वह इस रोशनी के इंसान को बहुत दिलचस्प नज़रों से देख रहा था।

"अरे, आप बिल्कुल हैरान मत होइए, यहां तो सैकड़ों बिजलियां गिर चुकी हैं । जो भी है, उसके पास कमाल की ताकत होने के साथ-साथ ऊंचे नैतिक मूल्य भी हैं।क्या तुम उसकी बातचीत नहीं सुन रहे हो?"

"मैं सुन रहा हूँ। मेरा डर भी गायब हो रहा है।"

"शायद मैं इसे पहचान रहा हूँ।

"खुद आपको हर बुराई से बचाए। एक सुपरिटेंडेंट के लिए पागल होना बड़ा हैरतनाक होगा," बाले ने धीरे से कहा।

"अपने साइंटिस्ट्स को बताओ। यह रिंग इलेक्ट्रॉनिक वेव्स के साथ रेडियोएक्टिविटी का एक छोटा सा चमत्कार है, लेकिन इसे कंट्रोल करने के लिए जो भी मैग्नेटिज्म इस्तेमाल किया गया है, वे अभी इसे खोज नहीं पाएंगे। ---इस रोशनी के आदमी ने उन सभी से बात करते हुए कहा।

"हे अद्भुत वैज्ञानिक शक्तियों के बनाने वाले, हम आपको आपके असली रूप में देखना चाहते हैं। गेरार्ड ने उसे फिर से कहा, लेकिन बाले चौंक गया, और उन सभी का ध्यान इस चमकदार परछाई पर था, लेकिन सुपरिंटेंडेंट खान का पता नहीं चला। फिर उसने इधर-उधर देखना शुरू किया, लेकिन उसने उसे रोशनी के इस घेरे के पास देखा। बाले चौंक गया। ज़रूर खान एक बड़े खतरे से खेलने वाला था। वह इसे बर्दाश्त नहीं कर सका और खुद भी उधर दौड़ पड़ा ।

"अभी दुनिया के सामने आने का समय नहीं आया है, लेकिन जल्द ही आप मुझे अपने बीच पाएंगे।"

यह वाक्य बोलने के बाद, उसने अपना एक हाथ उठाया और वे साफ़ देख सकते थे कि वह असल में एक काफ़ी चौड़ी कुर्सी पर बैठा था। वह कुर्सी भी बस रोशनी का एक हिस्सा लग रही थी।

तभी उनकी हैरान आँखों ने सुपरिंटेंडेंट खान की परछाई को अचानक रोशनी से टकराते हुए देखा और यह भी देखा कि खान डर के मारे पीछे हट गया। जिसके साथ ही इस

अनजान चमकदार जीव की एक और हंसी सुनाई दी। और खान ने टारगेट पर फायरिंग शुरू कर दी। फायरिंग जारी रही, रोशनी धीरे-धीरे गायब हो गई और इस अनजान ताकत की हंसी गूंजने लगी। आखिर में, उसकी धीमी आवाज जो सुनाई दे रही थी, वह कह रही थी।

"कुछ हासिल नहीं होगा , मेरे दोस्त। मैं अभी गुस्सा नहीं हूँ।"

और फिर वो नज़र से ओझल हो गया । रोशनी भी धीरे-धीरे गायब हो गई।

खान ने पलटकर देखा तो बाले पीठ के बल लेटा हुआ था और सब लोग बुत बने बहुत हैरान से खड़े थे ।

"आप पीछे क्यों हट गए?"

"इस रोशनी के दायरे में जो भी आता, वह जलभून कर राख हो सकता था । जैसे ही आग लगी, मैं पीछे हट गया। --यह कहकर जैसे ही वह मुड़ा, उसके मुंह से हैरानी भरी आवाज निकली--- " अरे "

और वे सब इधर-उधर बिखर कर भाग खड़े । बेसमेंट की दीवारें हिल रही थीं। खान दौड़कर गया और डॉ. पटेल को अपने कंधों पर उठा लिया और उनको इस बात पर हैरान होने का समय ही नहीं मिला कि डॉक्टर के पैरों में बंधी मोटी जंजीरें उनके हाथों से रबर की तरह उतर गई थीं। जब खान ने अपनी जेब में हाथ डाला तो पिस्तौल का भी वही हाल हुआ। फिर, जब वह दरवाज़े पर आया तो उसने देखा कि लोहे का दरवाज़ा ज़मीन पर पड़ा है, उसकी लोहे कि शीट मुड़ी हुई है।

सार्जेंट बाले को यह होश ही नहीं था कि वह किस तरह ऊपरी हॉल में पहुँच गया है। डॉ. पटेल को उठाए

खान उसके आगे दौड़ रहा था । इसी बीच, किले की अंदर की बिल्डिंग की दीवारें गिरने लगीं, और जब वह बाहर आया, तो उसने भागते हुए लोगों की चीखें सुनीं। बिल्डिंग के ठीक ऊपर, हवा में लगभग 500 फीट की ऊंचाई पर, एक आग का गोला लटका हुआ था, ठीक वैसा ही जैसा रूसी रिएक्टर के नष्ट होने के समय देखा गया था। उसकी रोशनी चमकीली बैंगनी-नीली थी, और उसकी एक निचली लकीर धीरे धीरे लंबी होते हुए बिल्डिंग की ओर बढ़ रही थी। जल्द ही, उन लोगों ने खुद को भूरे रंग के धुएं से घिरा पाया, जिसमें रोशनी की पतली लहरें तैरती हुई देखी जा सकती थीं।

कुछ सेकंड के बाद उन की आंखें बंद हो रही थीं और उसे लगा कि उसके पैर ज़मीन से ऊपर उठ रहे हैं।

पार्ट 1 खत्म हो गया है।

sjeet

टेनी मखलूक़- विचित्र प्राणी

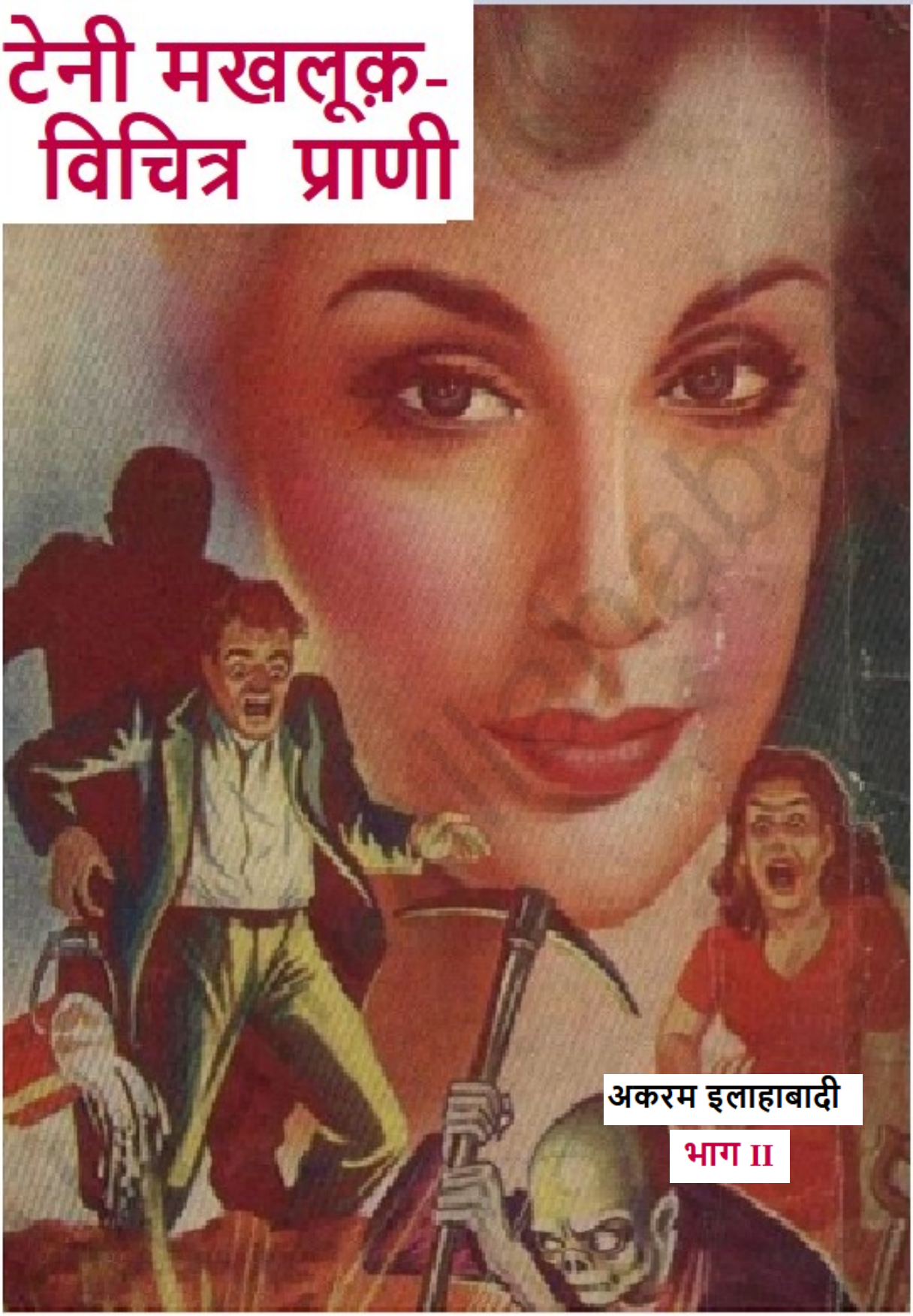

अकरम इलाहाबादी

भाग II

टेनी मखलूक़-

विचित्र प्राणी

---- **अकरम इलाहाबादी**

भाग II

249

एक रहस्यमय उपहार

संदेश एक

नागरिक उड्डयन मुख्यालय पूर्वी क्षेत्र कोलकाता:

फ्लाइट तेरह: जापान हाऊँड टोक्यो एयरलाइंस, लापता।

मुंबई से रवाना: 5 :20 PM - नागपुर के लिए आखिरी फ्लाइट, 5:23 PM.

इंजन एकदम सही हालत में है। बॉडी: जांची गई। मौसम: सही ।लोग: तीन क्रू, तीन जापानी साइंटिस्ट, एक फिलिपिनो साइंटिस्ट, दो गार्ड। तलाश के बाद भी कोई निशान नहीं मिला।

संदेश दो

नागरिक उड्डयन मुख्यालय ज़िया रथ ज़ोन चंडीगढ़:

फ्लाइट इलेवन वारसॉ विंड, USS उर्सोल A309 (A309)

प्लेन बॉम्बे से निकला: 3:35 PM - आखिरी फ़्लाइट: अमृतसर, 5:55 PM इंजन: ठीक - बॉडी ठीक मौसम: ठीक। लोग: साइंटिस्ट, तीन रशियन, दो पोल, एक अज़रबैजानी, एक ईस्ट जर्मन, गार्ड चार मिलिट्री ऑफ़िसर क्रू: तीन । तलाश नाकाम रही ।कोई निशान नहीं हैं

संदेश तीन

सिविल एविएशन हेडक्वार्टर साउथ पुणे।

फ्लाइट टाइटन (19) तेईस और चौबीस। जाने वाली: न्यूयॉर्क, लंदन और

250

स्ट्रासबर्ग पैन अमेरिकन एयरवेज़ स्काईमास्टर 137 ब्रिटिश एयरवेज़, ओवरसीज़ सर्विस स्पेशल 49 और एयर डी फ़्रांस, हेवनस्टार थर्टीन - तीनों एयरक्राफ्ट गायब हैं। डिपार्चर बॉम्बे: 3:50 PM, 4:10 PM और 12:40 PM - आखिरी फ़्लाइट: मुंबई इंजन: ठीक बॉडी: ठीक मौसम: ज़रूरत के हिसाब से - लोग: साइंटिस्ट, अमेरिकन चार, चिली एक, मैक्सिकन एक कैनेडियन दो, इंग्लिश दो, डच एक, यॉर्कशायर एक, वेल्श एक, ऑक्सफ़ोर्ड दो स्ट्रासबर्ग (फ़्रांस) तीन इटैलियन दो, स्विस एक क्रू: चार खोज नाकाम - ट्रेस: कोई नहीं

इन रेडियो रिपोर्टों से कम्युनिकेशन मिनिस्ट्री के एयर फ़ोर्स डिपार्टमेंट के हेडक्वार्टर में हलचल मच गई। लोकल लायज़न ऑफ़िसर, जो सुबह से अलग-अलग देशों की एम्बेसी के फ़ोन उठा रहे थे, परेशान हो गए। यह कोई आम बात नहीं थी। इस घटना की खबर रेडियो वेव्ज़ के ज़रिए दुनिया के सभी बड़े देशों तक फैल गई थी। और क्योंकि यह सब इसी देश में हुआ था, इसलिए बड़े-बड़े अफ़सर परेशान थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। अलग-अलग देशों के बड़े साइंटिस्ट को लेकर बॉम्बे से उड़े इन प्लेन के अपनी मंज़िल तक न पहुँच पाने से जो चिंता की स्थिति पैदा हुई थी, उसे अलग-अलग रीजनल हेडक्वार्टर से मिली इन रिपोर्टों ने कन्फ़र्म किया। हर रीजनल हेडक्वार्टर से गायब प्लेन को खोजने के लिए स्पेशल प्लेन भेजे गए, लेकिन उनकी खोज बेकार गई। यह साफ़ नहीं था कि इन विदेशी प्लेन को ज़मीन ने निगल लिया है या आसमान ने।

हैरान करने वाली घटनाओं का एक कभी न खत्म होने वाला और यकीन न करने वाला सिलसिला पहले से ही चल रहा था, और उनके गायब होने से हालात और भी मुश्किल और रहस्यमयी हो गए। अब तक, लटके हुए एयरक्राफ्ट, रहस्यमयी अंगूठी और लड़कियों के गायब होने से जुड़ी घटनाएं लोगों की नज़रों में किसी नॉवेल के जादुई चैप्टर की तरह

गुज़री थीं, लेकिन यह नई घटना ऐसी नहीं थी जिस पर सिर्फ़ हैरानी जताई जा सके। इसने सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया। यहां तक कि अखबारों ने भी, जो ऐसी घटनाओं को सबसे पहले सूंघा कराते हैं ।

251

यह जानकारी छिपी नहीं रह सकी, भले ही एयर फ़ोर्स डिपार्टमेंट इस बारे में पूरी सीक्रेसी बनाए हुए था। दोपहर को ही कई अख़बारों ने इस सनसनीखेज खबर के साथ अपने सप्लीमेंट छापे और यही बात हर गली, हर गली और हर घर में फैल गई। बुज़ुर्ग इसे नास्तिक साइंटिस्ट के लिए एक दैवीय झटका मान रहे थे। युवा वर्ग इसे किसी अनजान अलौकिक शक्ति का चमत्कार मान रहा था और अनगिनत लोग ऐसे थे जिन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था, लेकिन वे अपने अंदाज़ों में दूसरों से दो जूते आगे थे। यह मामला न तो एयर फ़ोर्स डिपार्टमेंट की ज़िम्मेदारी का लग रहा था, न ही किसी सीक्रेट या नॉन-सीक्रेट मिलिट्री सर्विस की। इसलिए, दोपहर में बड़े अधिकारियों की एक बंद कमरे में मीटिंग के बाद, इन अजीब हालात की जांच और छानबीन का काम केंद्र की सबसे बड़ी सीक्रेट एजेंसी CBI को सौंप दिया गया। यह एक आखिरी उम्मीद थी, क्योंकि CBI के पास टैलेंटेड जासूस थे जिन्होंने कई रहस्यमयी और हैरान करने वाले मामलों में अपनी काबिलियत साबित की थी।

यूनाइटेड स्टेट्स के फेडरल ब्यूरो ऑफ़ इन्वेस्टिगेशन की तरह, यह भारत की सबसे बड़ी सीक्रेट इंटेलिजेंस एजेंसी थी। और इस कदम ने सरकार और पब्लिक सर्कल में फैली सनसनी को कुछ हद तक कम कर दिया।

पुलिस, जनता और सरकारी संस्थाओं का पूरा ध्यान अब CBI पर था, जहाँ एक बहुत बड़े ऑफिस में डिपार्टमेंट के सबसे अच्छे लोग हालात को गहरी नज़र से देख रहे थे।

****

CIB के डिप्टी डायरेक्टर, माधोलकर, थके हुए अपने ऑफिस से निकले ही थे। वे अपने समय के सबसे बिज़ी आदमी थे। उनकी काबिलियत को पहचाना गया और यह बात आम तौर पर जानी जाती थी कि

चाहे वह कितना भी उलझा हुआ और समझ से बाहर क्यों न हो, किसी अनजान किस्मत की तरह, उसे माधोलकर ज़रूर सुलझाते थे। माधोलकर के साथ एक नाम उनके असिस्टेंट इंस्पेक्टर राज़ी का भी लिया जाता था, जो माधोलकर का दाहिना हाथ था और जिसने **जंक्शन बुलारा** जैसे केस में अपने शानदार काम से माधोलकर के साथ अपना नाम बनाया था। वह और माधोलकर हर काम साथ में करते थे। वे न तो एक-दूसरे के बिना आराम कर सकते थे और न ही एक-दूसरे की सलाह के बिना एक कदम आगे बढ़ा सकते थे। ऑफिस के अनुशासन के बाद, वे पक्के दोस्त थे। इतने कि उनके बीच कोई फर्क नहीं था।

"राज़ी आए? "माधोलकरने लापरवाही से अपना कोट उतारकर सोफे के पीछे फेंक दिया और अपने नौकर लोबो से पूछा। उसने पिछले साल इस अधेड़, मोटे और भरे-पूरे ईसाई नौकर को काम पर रखा था। वह एक भरोसेमंद आदमी था और माधोलकरउसे बहुत पहले से जानता था। वह पहले सर फ्रेडरिक का नौकर था, लेकिन जब वह अपनी जागीर के लिए चला गया, तो माधोलकरने उसे काम पर रख लिया। लोबो खुद माधोलकर को मालिक के तौर पर बहुत पसंद करता था। उस उम्र में भी वह एक मज़ाकिया और ज़िंदादिल आदमी था, और अगर उसे उसके जैसा मालिक मिल जाए, तो और क्या चाहिए? सर फ्रेडरिक की तरह लोबो को भी मुस्कुराते हुए चेहरे पसंद थे। वह अपने काम को करने में बहुत मेहनती और वफ़ादार था। माधोलकर के बंगले में कदम रखते ही वह अपना सारा काम छोड़कर दौड़कर उसका स्वागत करने लगता और माधोलकर , अपनी आदत के मुताबिक, अपनी टोपी हॉल में लगे स्टैंड पर फेंक देता, फिर अपना बैग ड्राइंग रूम की टेबल पर रख देता और अपना कोट उतारकर लापरवाही से किसी सोफे या कुर्सी के पीछे फेंक देता। इस बीच, जैसे ही वो ड्राइंग रूम में घुसता, लोबो उसके पीछे-पीछे आता, लंबा और सीधा, एक सैनिक की तरह, उसकी हर चीज़ को उठाकर ध्यान से उसकी सही जगह पर रखता। घर में दो और नौकर थे, लेकिन उनका काम किचन और घर की सफाई तक ही सीमित था।

"बस जल्द ही आने वाली होगे । उनका फ़ोन आया था।" लोबो ने कहा और माधोलकर का कोट उतारकर ब्रश से साफ़ किया। फिर उसने कोट अलमारी में टांग दिया और वापस आ गया

"अच्छा लोबो, ये बताओ , एक आदमी अपनी जेब में क्या-क्या रख सकता है?" माधोलकरने ट्राइपॉड पर पैर फैलाते हुए कहा। लोबो ने उसके जूते खोलने शुरू कर दिए।

"बहुत सी चीजें," लोबो ने शेखी बघारते हुए कहना शुरू किया। जैसे, सुई से ले कर , यहां तक कि एक हाथी भी।"

"हाथी?" माधोलकर ने उत्सुकता भरी निगाहों से उसे देखते हुए पूछा।

"यह एक खिलौना भी हो सकता है।"

"तो कुछ और भी बड़ा "

"रेलगाड़ी"

"ऊँहूँ , हवाई जहाज़.”

"हो सकता है , एक छोटा जहाज़।"

"लेकिन अगर कम से कम आधा दर्जन ज़िंदा आदमी जहाज़ पर हों?"

"लोबो अपने समय का सबसे बेवकूफ आदमी है, मेरे मालिक । आप ही समझा दीजिए ।"

"मान लीजिए एक प्लेन इस टेबल के ऊपर से उड़ता है और इस अलमारी तक पहुँचना है। हाँ, लेकिन वह नहीं पहुंचा ।

"तो कहीं न कहीं रास्ते में गड़बड़ हो सकती है ।

"लेकिन गिरी हुई चीज़ का कम से कम कुछ स्ट्रक्चर तो मिलना ही चाहिए। और कहीं न कहीं, कोई उसे गिरते हुए देख भी सकता है।"

"अगर यह सब काफी नहीं है, तो वह ज़रूर किसी जादूगर की जेब में चला गया होगा। क्योंकि वह किसी बिल में नहीं घुस सकता," लोबो ने बिना किसी झिझक के अपनी राय दी।

उसे माधोलकर के ऐसे बेतुके और अजीब सवालों की आदत हो गई थी और वह जानता था कि ऐसे सवालों के जवाब में माधोलकर बिना किसी झिझक के अंदाज़ा लगाना पसंद करता है।

"और अगर कोई जादूगर हो जिसके होने के बारे में किसी को पता न हो?"

"तब नौकर कहेगा कि प्लेन उड़ा ही नहीं।

नहीं - प्लेन उड़ा और गायब हो गया। एक नही तीन ।

"क्या आप कहाँ चाहते हैं तीन जहाज ? मतलब तीनों गायब ?"

"ठीक है, तुम जाओ, मुझे अभी कॉफी चाहिए, अभी।"

"वह हमेशा तैयार रहती है, मैं अभी भेज देता हूँ।

लोबो , यह जानते हुए भी कि माधोलकर के ऐसे वाक्यों का मतलब फुल स्टॉप होता है ।

उसने सिर हिलाया और बाहर चला गया।

"मधु, कोई तुमसे मिलने आया है।"

कामरे से आवाज़ राज़ी की थी। वह बाहर से सीधे इस कमरे में आ गया था।

"कौन है?" माधोलकर ने थके हुए स्वर में अपनी सीट से उठते हुए कहा।

"डील डोल से ऊँट जैसा लगता है, लेकिन नाम है... "लॉन्गफेलो।"

"ओह, मुझे पता है। मिस्टर खान ने एक बार मुझसे इस बारे में कहा था। वह एक पत्रकार हैं।" माधोलकर ने अपनी चप्पलें पहनीं और दरवाज़े की तरफ़ बढ़े।

"लेकिन तुम्हें यहाँ से जाना नहीं है , मुझे तुमसे कुछ काम है।" यह कहकर वह चले गए।

हॉलवे में उनका इंतज़ार कर रहा आदमी, हालांकि दिखने में अनजान था, लेकिन माधोलकर ने खान से जैसी तारीफ़ सुनी थी, लॉन्गफेलो ठीक वैसी ही तरह का आदमी था ।

255

माधोलकर उसे देख कर मुस्कुराया।

"बैठिए, बैठिए --इस औपचारिक अनुशासन की कोई ज़रूरत नहीं है। माधोलकर ने उसे उठते हुए देखा, और पास आते हुए कहा।

" जी हाँ, हम्म... मैं लॉन्गफेलो हूं।

"वो तो मैं वह देख रहा था। तुम्हें किसी भी तरह से छोटा नहीं कहा जा सकता। -- मधोलकर ने हॉलवे में एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा। लॉन्गफेलो ने कभी इतने सीनियर CBI ऑफिसर से इतनी साफ बातचीत की उम्मीद नहीं की थी। खासकर तब जब वे एक-दूसरे के लिए अजनबी थे।

"मैं खान की तरफ से आया हूँ," लॉन्गफेलो ने एक संदेश देते हुए विनम्रता से कहा।

"खान साहब का संदेश ?" माधोलकर चौंक गया, --लेकिन वह तो गायब है।

"गायब होने से पहले उसने यह मैसेज दिया था। उसने मुझसे कहा था कि अगर, भगवान न करे, मैं कहीं काम आऊं या शायद मैं गायब हो जाऊं, तो उस हालत में मैं उसकी तरफ से एक अमानत आपको इस तरह पहुंचा दूं कि किसी को पता न चले।"

"तो मुझे आपके बारे में अपनी राय थोड़ी बदलनी होगी। आप एक्शन वाले आदमी लगते हैं। अच्छा, अमानत और वह मैसेज क्या है?"

"संदेश यह पत्र है, और वह है और अमानत यह है। --यह कहते हुए उन्होंने दीवार से टेक लगा कर रखा दो फुट लंबा, एक फुट चौड़ा आबनूस का लकड़ी का बक्सा उठाया और माधोलकर के सामने रख दिया।

"अभी इसे मत खोलना आप , खान साहब ने मुझसे आपको फिर से कहने को कहा था कि 25 मार्च से पहले इसे नहीं खोला जाएगा । बाकी सब कुछ उनके लेटर में लिखा है। ये रहा संदेश ।----- लॉन्गफेलो ने अपनी जेब से एक सीलबंद लिफ़ाफ़ा निकाला और उन्हें दे दिया। जवाब देने के बजाय, माधोलकर ने लिफ़ाफ़ा फाड़ दिया और उसने पढ़ना शुरू किया। यह एक अर्थहीन वाक्य था।

256

हो सकता है मुझे मौका न मिले। सीक्रेट जियादा ज़रूरी है। मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। कई बहुत से नए अनजान दुश्मन । सावधान रहें । एक गिफ़्ट -जो पाँच साल पहले अमेरिका में सलाजार से मिला था। इसे ठीक पाँच साल बाद खोलने की हदायत । वह दिन 25 मार्च है। अगर मैं वहाँ नहीं हुआ... तो मदद मिलेगी। पाबंदी ज़रूरी है। वह वचन का पक्का है ----------खान

माधोलकर ने पत्र पढ़ा और उसे अपनी जेब में रख लिया।

" हम, वे इसे खोलने के समय होने से पहले ही गायब हो गए। माधोलकर बड़बड़ाया

"खान साहब ने मुझे बताया था कि यह कहाँ सुरक्षित रखा हुया था , भगवान न करे अगर खान साहब, उस समय तक, किसी दुर्घटना का शिकार हो जाएँ , तो मैं इसे आप तक सुरक्षित रूप से, पूरी तरह सही-सलामत, पहुँचा दूँ ,--- लॉन्गफेलो ने कहा।

माधोलकर खुद से पूछ रहे थे, "इसका मतलब है कि उन्हें होने वाले एक्सीडेंट के बारे में पहले से पता था।"

"वे कहते थे कि पिछले कुछ दिनों से अजीब घटनाएं हो रही थीं और यह एक अमानत थी , और उन्हें इसे इस सीक्रेट सेफ जगह पर ले जाना पड़ा क्योंकि उन्हें शक हो गया था कि यह कहीं खो सकती है।

"इसे परसों खोलना चाहिए, आज 23 मार्च है। मधु, बड़बड़ाया

"तो मैं चलूँ? मैंने अपनी ड्यूटी पूरी कर दी है। मुझे जाने दीजिए । --लॉन्गफेलो उठना चाहते थे।

"नहीं, नहीं। तुम्हें इजाज़त नहीं मिलेगी।--- माधोलकर अब आप से तुम पर आ गया । हो सकता है कि इस अमानत की वजह से तुम्हें भी कोई खतरा हो जाए। हो सकता है कि मुझे भी किसी वजह से तुम्हारी ज़रूरत पड़ जाए, तो क्या तुम्हारे लिए कुछ दिन यहीं रहना बेहतर नहीं होगा?"

लॉन्गफेलो ने कहा, "बेहतर है , मैं एक हफ़्ते के लिए पंजाब होटल के कमरा नंबर 21 में हूँ। आप जब चाहें मुझे फ़ोन कर सकते हैं।"

"कोई बात नहीं। खैर, अगर आपको ठीक लगे, तो दिल्ली में आपके खर्चे...

"धन्यवाद। --लॉन्गफेलो ने बीच में ही टोक दिया। होटल का मालिक मेरा पुराना दोस्त है। जहाँ तक मेरे दूसरे खर्चों की बात है, वह मुझसे कोई खास चार्ज नहीं लेता, जैसे कमरा और खाना। बिल्कुल नहीं।

"तुम बहुत जिद्दी आदमी हो, अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो पक्का एक हज़ार रुपये का बिल ज़रूर पेश करता । --राज़ी ने फिर अपनी समझदारी दिखाई।

"हर कोई तुम्हारी तरह मुफ़्तखोर नहीं होता। --लॉन्गफेलो की बजाय माधोलकर ने खुद उ से जवाब दिया.

"मैं कम से कम एक का उदाहरण दे सकता हूं, जो डिप्टी डायरेक्टर के पद पर बैठा हो।" राजी माधोलकर की ओर इशारा कर रहे थे, लेकिन माधोलकर जवाब में केवल मुस्कुराया।

" अगर कोई समस्या न हो, तो आज हमारे साथ भोजन करें। माधोलकर ने लॉन्गफेलो से कहा

"इसमें क्या समस्या हो सकती है? कहीं न कहीं खाना तो खाना ही पड़ेगा।" लॉन्गफेलो ने बेतकल्लुफी से जवाब दिया। "मैं सूरज डूबने के बाद वहाँ पहुँचूँगा।"

"ठीक है, तब तक, दिल्ली देख लो , लेकिन कश्मीरी गेट से जरा झुक कर गुजरना --- , " राज़ी ने कहा।

"राज़ी, नए मेहमान के साथ यह कैसी हरकत है?"

"अरे, ये तो पत्रकार हैं, मेरा क्या? बड़े-बड़े नेता भी इस कौम से इसी तरह बात करते हैं।"

"माधोलकर साहब , ये सही कह रहे हैं, हम सब को हर एक अपने परिवार का एक सदस्य समझता है।--- इस पर राजी ने जवाब दिया।

"खान साहब ने सही ही कहा था । बड़े मुंहफट होते हैं ये लोग ," राज़ी हँसे, लेकिन इस बार लॉन्गफेलो ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस मुस्कुराए और फिर हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उनके जाने के बाद, माधोलकर ने राज़ी को घूरा।

"मैं क्या करूँ ? इसे देखकर मेरी तबीयत ऐसी हो गई कि मज़ाक सूझ गया । और फिर मुझे नहीं लगता कि पत्रकारों से परेशान होना सही है। वे दाइयों की तरह हैं जिनसे आपने अपना पेट नहीं छिपाया जा सकता ।

"तो क्या तुम पेट… से ...!

" यह तो एक कहावत है।"

"खैर, इन बातों को छोड़ो , तुम इस नई मुसीबत के बारे में जानते हो ?

"विमानों के गायब होने के वाला केस ?"

“ हम म म....

"यह अधिकारियों की तानाशाही है, नहीं तो ऐसी घटनाओं से हमारा क्या लेना-देना ?

"क्यों नहीं? उनका इस तरह गायब होना कोई कम हैरानी की बात नहीं है।"

"लेकिन इस बारे में हम क्या कर सकते हैं? क्या आपने इसके बारे में सोचा है?"

" आओ मेरे साथ," माधोलकर उठ खड़ा हुया ।

259

“ साहब , कॉफी ---लोबो ने उन्हें दरवाज़े पर रोक दिया।

"इसे रीडिंग रूम में भेज दो। --माधोलकर ने कहा। वह डिब्बा राजी के हाथ में था।

फिर वे दोनों रीडिंग रूम में चले गए। माधोलकर ने दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया।

"पहले हमें इस बॉक्स को किसी सुरक्षित जगह पर रखना चाहिए।"

"मुझे लगता है कि यह फाइलिंग कैबिनेट ठीक रहेगी। इसके कम्पार्टमेंट बड़े हैं और इस तरफ कोई ध्यान नहीं देगा।"

"ठीक है। यह कहकर माधोलकर बड़ी टेबल के पास एक कुर्सी पर बैठ गए और राज़ी ने स्टील की अलमारी में एक खाना खोला जो लगभग डेढ़ फीट चौड़ा और डेढ़ फीट ऊंचा था और बॉक्स को उसमें रख दिया। बॉक्स की अंदर की लंबाई चार फीट थी, इसलिए बॉक्स को अंदर धकेलते हुए राज़ी ने उसके सामने कुछ फाइलें रख दीं। फिर वह भी माधोलकर के पास आया और दूसरी कुर्सी पर बैठ गया। माधोलकर ने दीवार से भारत का नक्शा उतारकर टेबल पर फैला दिया था, जिसमें हवाई, रेल और सड़क मार्गों का जाल बिछा हुआ था। वह नक्शे को ध्यान से देख रहा था और कुछ जगहों पर निशान बना रहा था। उसके हाथ में एक लाल पेंसिल थी।
☆☆☆

रोशनी का इंसान

पहले उन्होंने बॉम्बे से एक लाल लाइन खींची, जो नागपुर, इलाहाबाद और कलकत्ता को एक लाइन में जोड़ती थी, फिर उन्होंने बॉम्बे से एक लाइन खींची, जो नागपुर, दिल्ली, पेशावर, कामिल और अज़रबैजान के बॉर्डर वाले प्रांत तक जाती थी। ये दोनों लाइनें सिर्फ़ नागपुर में ही दिख रही थीं, लेकिन फिर कुछ सोचने के बाद उन्होंने अपनी पेंसिल नीचे रख दी और छत को घूरने लगे।

"शायद आप इस घटना के लिए एक सेंटर बनाने की सोच रहे हैं? ---राजी ने कहा।

"आइडिया तो यही था, लेकिन मामला कुछ और लग रहा है, क्योंकि इस तरह फ्रांस, ब्रिटेन और इटली के प्लेन का रूट सूरत और कराची से होना चाहिए, जबकि घटना की एक जैसी स्थिति को देखते हुए दोनों को ईस्ट से होना चाहिए।------ माधोलकर ने पेंसिल की नोक होंठों के बीच घुमाते हुए कहा।

"और हम यह भी भूल रहे हैं कि प्लेन का गायब होना रोज़ की बात है। तो फिर यह कैसे हो सकता है कि किसी ने उन्हें अपनी जेब में रख लिया हो?" राजी ने इस बात को खारिज करते हुए कहा।----------

"क्या यह संभव है?" राजी ने हैरानी से उसका चेहरा देखते हुए पूछा।

"जेब...? हाँ, यह संभव है। माधोलकर ने बड़बड़ाते हुए कहा।

"आप नशे में तो नहीं हैं?"

'धरती की जेब, --उसकी बातों पर ध्यान दिए बिना माधोलकर बड़बड़ाता रहा ।

"क्या? इसका मतलब है कि अब धरती में भी जेबें होने लगीं । तुम्हारी धरती अब पैंट पहनने लगी होगी ।

“क्यों नहीं? जैसे, घाटियाँ, गहरी गुफाएँ।"

"माधोलकर, मेरी अच्छी सलाह है कि तुम जासूसी का काम छोड़ दो और कविता लिखना शुरू कर दो।”

माधोलकर मुस्कुराए। ---

"दोनों काम किए जा सकते हैं।

"क्या ख़ाक हो सकते हैं? --राजी नाराज़ हो गया। --जो जी चाहा बोल दिया ।

"बेटा, वे प्लेन कोई खिलौने नहीं थे कि कोई चुराकर घर में छिपा दे। आसमान में भी ऐसे गैरेज नहीं दिखते कि उन्हें वहाँ ले जाकर रख दिया जाए। फिर अगर धरती की जेबों में नहीं, तो वे और कहाँ फिट हो सकते हैं?

"ठीक है, मान लीजिए कि आपका लॉजिक सही है। तो हमें ऐसे रेगिस्तानों की जाँच करनी चाहिए जहाँ छिपी हुई घाटियाँ या गहरी खाईयाँ हों। गुफा हो ।

"एक काम करो," राजी ने सलाह दी।

"तुम भी कह डालो “ ,

"पहले हम किसी लैला से प्यार करेंगे, और फिर बीच सड़क पर जूते खा लें ।फिर किसी सुनसान जगह की ख़ाक छानते फिरेंगे । "

"भई, ऐसा प्यार सिर्फ़ तुम्हारे लिए है, मैं तो बस लिंडोरा ही भला हूँ ।"

"सुनसान में घूमने की कोई वजह तो होगी ही, कुछ न कुछ, वैसे जो तुम चाहो।"

"कल मैंने एक डाइव प्लेन और एक पायलट का इंतज़ाम कर लेता हूँ । यह मुहिम भी काफी मज़ेदार होगी ।

"अच्छा है , सूत न कपास , जुलाहों में लट्ठम लट्ठी।

"वैसे, यह मेरा तो यही फ़ैसला है। हम एक और संभावना पर भी विचार करेंगे।

"अभी क्या प्रोग्राम है?"

"आज शाम देविको में बिताने में क्या हर्ज है?"

"आइडिया अच्छा है, मैं भी यही सुझाव देने वाला था।"

"आपका सुझाव बिना वजह नहीं होगा।

“ मैंने परसों कर्नल जाइडी के साथ एक खूबसूरत लड़की देखि थी वहाँ ।

"ओह, तुम उसकी भतीजी के बारे में बात कर रहे हो? "

भतीजी? तुम्हें कैसे पता?"

'मैं उससे आठ साल पहले कर्नल के साथ एक कॉकटेल पार्टी में मिला था। "मैंने इसे देखा, तब से मैं इसके बारे में जानता हूँ। लेकिन क्या आप इसमें दिलचस्पी लेने लगे हैं?"

"दिलचस्पी ? हूँ--...मैं किसी और ख्याल से कह रहा था।"

"बेटा, तुम मुझसे बचकर नहीं भाग सकते। वैसे, मुझे पक्का नहीं पता कि वो पुलिस वालों के बारे में अच्छे ख्याल रखती होगी ।

"हाँ. अपने बारे में कह लो , और मेरे लिए ? --मेरे लिए तो मेरे फरिश्तों के मन में भी अच्छे ख्याल हैं.

"अपने मुंह मियां मिट्ठू ।" ठीक है, चलो तैयार हो जाओ। मैं इस लंबे आदमी को भी देविको में बुला लेता हूँ , , ताकि मैं कुछ मज़ा कर सकूँ।" माधोलकरने कहा ।

****

देविको, दिल्ली का सबसे शानदार होटल कॉनॉट पैलेस में था, जिसके निचले हिस्से में महंगे कपड़ों की बड़ी दुकानें और कांच के सामान के शोरूम थे और ऊपर की दो मंजिलों पर बड़े शानदार हॉल थे। रहने का इंतज़ाम दूसरे सिरे पर था। और पहली मंजिल पर डांस, वोकल और वाइन का प्रोग्राम होता था। इस हॉल का फर्श कांच की तरह चिकना और चमकदार था। इसका काउंटर हॉल के बाहर लगा था, जहाँ सैनिकों के असिस्टेंट को भी पिन मिलते थे। हॉल के बीच वाले हिस्से को डांस प्रोग्राम के लिए छोड़कर, ऊपर के हिस्से में खिड़कियों की तरफ टेबल और कुर्सियाँ लगी होती थीं। काउंटर पर डांस और डिनर के टिकट मिलते थे। और रात के शुरुआती घंटों में नई वाहली के मनोरंजन पसंद हाई सोसाइटी के लगभग सभी जाने-माने लोग यहाँ जमा होते थे।

माधोलकर लापरवाही से कुर्सी के पीछे झुकी हुई कोला की हल्की चुस्कियों का मज़ा ले रहा था , लेकिन राजी की नज़रें बाहर किसी को ढूंढ रही थीं।

"और अगर कर्नल आज नहीं आए तो?" माधोलकर ने उसकी ओर झुकते हुए पूछा।

"उसे आज ज़रूर आना चाहिए। मेरा दिल यही कह रहा है। ---राजी ने बिना देखे जवाब दिया। फिर उसकी आँखें हैरानी से चमक उठीं। हॉल में कर्नल ज़ैदी ने एंट्री की। वह लगभग तीन फ़ीट चौड़े कंधे , रंग गेहुँआ और कद-काठी दोहरी थी।

उसके बाल खड़े थे और कानों के पास के बाल सफेद थे, लेकिन उसके चेहरे पर बुढ़ापे की झुर्रियां नहीं थीं। वह सीना ऊपर करके और गर्दन सीधी करके चलने का आदी था। चलते समय उसके एक हाथ की मुट्ठी बंद थी और दूसरा उसकी पैंट की जेब में था। उसने उस समय एक गर्म जैकेट पहनी हुई थी, जिसके दोनों तरफ एक गोले वाले दो तारे और हर कंधे पर एक अशोक कमल बना हुआ था। कर्नल की भतीजी इतनी खूबसूरत थी कि हॉल में मौजूद लोगों की नज़रें उसकी तरफ उठे बिना नहीं रह सकीं। उसने सफेद सूट पहना हुआ था, जिसमें एक घाघरा और एक अंबर-पीली फ्रॉक थी। सफेद स्वेटर और खाकी रंग के दुपट्टे में उसका लाल और सफेद चेहरा किसी ईरानी कलाकार की जीती-जागती कृति जैसा लग रहा था।

" ऐसे मत देखो, नहीं तो कर्नल का मूड खराब हो जाएगा," माधोलकर ने कहा और ज़ोर से राजी के पैर को ठोकर मारी ।

"कर्नल को भगवान से शिकायत करनी चाहिए कि उन्होंने ऐसे सुंदर तस्वीर क्यों बनाई जो, चाहे कुछ भी हो, दूसरों का ध्यान खींचती हैं।"

"तुम जानो , -- मधुलकर ने ये कह कर मुंह दूसरी तरफ कर लिया

लेकिन इत्तेफ़ाक से कर्नल सीधे उनकी तरफ़ आए और उनके बगल वाली टेबल पर खड़े होकर, उन्होंने मुड़कर मधुलकर की तरफ़ देखा। मधुलकर मुस्कुराए ।

"हेलो," उसने कहा, उसका मुंह सीटी की तरह सिकुड़ गया।

"नमस्ते कर्नल।-- माधोलकर ने हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

"और ये ? --कर्नल राजी की ओर इशारा कर रहा था।

"मेरे असिस्टेंट और दोस्त, इंस्पेक्टर राजी--- माधोलकर ने परिचय कराया। लेकिन जब राजी ने कर्नल से हाथ मिलाया, तो उन्हें मानना पड़ा कि पुराने कर्नल में पहलवान जैसी ताकत है, उसके पंजे फौलादी हैं।

"आजकल के युवा, ऐसे हैं?" कर्नल के शब्द, उसकी ज़हरीली मुस्कान में दबकर, राजी के कानों तक पहुँचे। वह निश्चित रूप से उसका मज़ाक उड़ा रहा था।

"कितना पिलपिला शरीर , सड़ती हुई लाश जैसा, -----करनल जरा ज्यादा ही खुल गया ।

“. क्या खाकसार के बारे में कुछ कह रहे हैं आप ? राजी ने गुस्से में कहा.

"मुझे खाकसार लोगों में कोई दिलचस्पी नहीं है, मुझे जोशीले फौजी पसंद हैं। --कर्नल के इस अचानक जवाब से राजी को थोड़ा गुस्सा आया। खासकर यह देखकर कि कर्नल की बेटी अपने पिता के बोलने के तरीके पर अपनी मुस्कान छिपाने की नाकाम कोशिश कर रही थी। लेकिन माधोलकर ने उसका हाथ दबाकर उसे रोक दिया।

"कर्नल, आप सच में बहुत दिलचस्प आदमी हैं। -- माधोलकर को खुद बोलना पड़ा।

"तुम्हारा क्या ख़याल है, ?" कर्नल ने राजी की तरफ़ मुड़कर मुस्कुराते हुए पूछा।

"क्या शक है?" राजी ने धीमी आवाज़ में कहा।

"खैर, खैर, मैं उसके धीरज का टेस्ट ले रहा था।-- कर्नल ने अचानक अपना टोन बदल दिया।
"ओह हाँ, शाहिना, तुम भी यहाँ आओ, बेटा। कर्नल ने अपनी बेटी को भी इस टेबल पर आने के लिए इनवाइट किया।

"नहीं, मैं यहीं ठीक हूँ, -------उसने वहाँ से कुछ घमंडी अंदाज़ में कहा। उस पल, राजी का मन किया कि इस नाज़ुक सी बच्ची को उठाकर देविको की किसी खिड़की से बाहर फेंक दे। क्या यह भी किसी तरह का नखरा था ।

"तो फिर हम लोग इधर आते हैं । -------कर्नल ने कहा --आइए , "मिस्टर माधोलकर।"

यह कहकर वो अपनी सीट अपनी सीट कि ओर चला ।

"नहीं, मैं ठीक हूँ। --माधोलकर मुस्कुराए और माफ़ी मांगी। "ये आपका साथ दे सकते हैं " उन्होंने राजी की तरफ़ इशारा किया, लेकिन राजी माधोलकर की बात का मतलब नहीं समझ पाया । शाहिना ने चेहरा बना लिया ।

"क्या सच में?, ---कर्नल ने हैरानी से राजी को देखा। उसे अभी भी समझ नहीं आया था।

फिर करनाल ने अपना हाथ आगे कर राजी को बगल से खुद ही उठा लिया।

"चलो, लड़के।------ उसने कहा। और राजी इस ज़बरदस्ती वाले हाथ पर झिझकते हुए उसके बगल वाली सीट पर बैठ गया। शाहिना ने गुस्से भरी नज़रों से उसे देखा और फिर अपना मुंह एक तरफ़ कर लिया। कर्नल हँस रहा था। उसके होंठों के दोनों सिरे और चौड़े हो गए थे। कर्नल के इशारे पर, वह एक कदम और पास आया। वह शायद कर्नल की शानदार पर्सनैलिटी से काफ़ी इम्प्रेस हुआ था। वह सिर झुकाए, हाथ में मेन्यू पकड़े खड़ा था।

"यह भी बहुत ज़िद्दी आदमी है।-- कर्नल ने बेयरे की तरफ़ इशारा करके मुस्कुराते हुए कहा, " अगर मैंने इसे पंद्रह मिनट में ऑर्डर नहीं दिया, तो यह कोलंबस की मूर्ति की तरह यहीं खड़ा रहेगा।"

"इस तरह के लोग शायद आपको काफी एंटरटेनमेंट दे देते हैं," राजी ने अपनी कुर्सी पर वापस बैठते हुए कहा। वह समझ गया था कि कर्नल के साथ बहुत ज़्यादा सीरियस होना उतना ही बेवकूफी भरा काम है जितना बेवकूफी करना।

रोड बिल पॉइंट शैम्पेन --- कर्नल ने उसे ऑर्डर दिया। और मुर्गी का .....।

"शैम्पेन?" राजी ने चौंक कर टोका ।

"वे लोग मूर्ख हैं जो इसे औरतों का नशा कहते हैं। सबसे अच्छा मज़ा इसी से आता है।

"लेकिन... राजी बीच में बोलना चाहता था।

"अब शायद आप शराबबंदी मंत्री जैसा चेहरा बनाकर लेक्चर देंगे।"

"सही है न? ---राजी कहना चाहता था। लेकिन वह बेचारी लड़की, एक मशीन की तरह, एक बोतल में चार पॉइंट और दो माप शैंपेन ले आई। एक ट्रे पर चीनी का कटोरा भी रखा था, जिसमें शायद एक भुना हुया मुर्गा था। उसके पास छोटी बोतलों में नमक और पिसी हुई काली मिर्च थी।

"डैडी?" शाहिना ने नफ़रत भरे अंदाज़ में कहा।

"यह बेवकूफ लड़की भी मौलवियों की सास लगती है। उसे लगता है कि इसे पीने वाले जन्नत नहीं जाएंगे। हालांकि, मुगल राजाओं से लेकर अब्बासी खलीफा तक, इसकी वजह से सेहतमंद रहे हैं।" कर्नल ने इतिहास के बारे में अपनी जानकारी दिखानी शुरू कर दी। शैंपेन की एक घूंट ने कर्नल के दिमाग पर असर करना शुरू कर दिया था। हालांकि वह तरह-तरह के चेहरे बना रहा था, यह सोचकर कि यह दिखावा है। कर्नल को कभी-कभी इस शानदार पर्सनैलिटी में एक विदूषक की आत्मा दिखाई देती थी, जो पीने से पहले ही बहकने वाली हरकतें करने लगता था।

राजी ने शाहीना के बारे में कर्नल की बात का कोई जवाब नहीं दिया। कर्नल अपनी बीयर पीते रहे जबकि शाहीना हॉल में इधर-उधर देखती रही।

" म .. मैं उसे ऐसी बेटी बनाना चाहता था जो पूरब की औरतों की तरह चारदीवारी में बैठे, लेकिन पढ़-लिखकर वह जिद्दी और आज़ाद ख्यालों वाली हो गई। पश्चिमी सभ्यता ने उसे

पार्टी गर्ल बनने का शौक बना दिया। डियर मिस्टर--------कर्नल अब अपनी ही बेटी को नफ़रत भरी नज़रों से देखते हुए राजी से कहने लगा।

डैडी शाहिना ने फिर भारी आवाज़ में विरोध किया, लेकिन कर्नल ने उसे अनसुना कर दिया।

:” राजी ---

"मुझे इस लड़की से नफ़रत है। मुझे उन सभी लड़कियों से नफ़रत है जो क्लब और डांस पार्टियों में जाती हैं। मैं सेंट पर सेंट उल्लू हूँ , इंस्पेक्टर पूरा उल्लू । ये लोग सोचते हैं कि हम सीधे साधे लोग पूरे उल्लू है. हैं, लेकिन नहीं.....। तो मैं क्या कह रहा था? -------कर्नल राजी ने पूछना शुरू किया।

राजी कर्नल की हालत में आए बदलाव को देखकर हैरान रह गए, जो शैम्पेन के एक पेग ने उनके मन में पैदा कर दिया था।

"आप अपनी लड़की के बारे में कुछ कह रहे थे।" राजी ने तीखी नज़रों से शाहिना को देखा और व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा। शाहिना का चेहरा अब गुस्से से लाल हो रहा था।

"हाँ, मैं उसे ज़बरदस्ती अपने साथ यहाँ लाया हूँ। इंस्पेक्टर, मैं ऐसा इसलिए कर रहाँ हूँ ताकि अपने बच्चों के साथ हो रही इस बदतमीज़ी को अपनी आँखों से देख सकूँ, ताकि मेरी अंतरात्मा मुझे उस बेवकूफ़ी के लिए पूरी तरह से धिक्कार सके जो मैंने उसे आज़ाद करके की है।"

"आप सही कह रहे हैं, कर्नल राजी का हमला भी शाहीना पर ही था।

"डैडी, अगर आपने मेरी और बेइज्ज़ती की, तो मैं उठकर यहाँ से चली जाऊँगी," शाहिना ने गुस्से में किसी नागिन अपनी कुर्सी पर बल कहते हुए कहा।

"शट अप ।" कर्नल की आँखें लाल हो गईं और राजी का मन कर्नल और उसकी लड़की के अजीब बर्ताव पर हैरान हुए बिना नहीं रह सका। उसने देखा कि कर्नल की लाल आँखों को देखकर शाहिना काँप रही थी। उसे नहीं पता था कि उस समय उसका अपना गुस्सा कहाँ चला गया था।

"आप पी तो नहीं रहे, इंस्पेक्टर?" कर्नल की नज़र अब राजी पर पड़ी।
"कुछ लोगों को पीना अच्छा लगता है और कुछ को दूसरों को पीते हुए देखना अच्छा लगता है। मैं भी उन्हीं दूसरे लोगों में से एक हूँ," राजी ने कहा।

तुम भी भगवान से डरने वाले बुज़ुर्ग लगते हो। ---कर्नल ज़ैदी ने चिढ़कर कहा, और राजी का कप अपनी ओर खींचा। ---------मैं अब भी कहता हूँ, कुछ बूँदें अपने गले में डाल लो, जन्नत की पक्की शराब तुम पुलिसवालों को कभी नहीं मिलेगी। असल दुनिया में जो कुछ भी है, उसे बाँटो।

"'फिर किसी समय, कर्नल, मैं आज मजबूर हूँ ।"

" मजबूर और आदमी ? लाहौल वाला कुवत - जाओ, जाओ, अपनी जगह पर बैठो, मुझे तुम्हारे जैसे नेक साथियों की ज़रूरत नहीं है। माधोलकर, तुम्हारे ये पादरी साहब, वापस ....। -------यह कहकर कर्नल ने पलटकर माधोलकर की तरफ देखा तो माधोलकर की सीट खाली थी। कर्नल की बातों और शाहिनी के किरदार को पढ़ते हुए राजी यह सोचना भूल गया था कि माधोलकर इतनी देर से इतने शांत और चुप क्यों बैठे थे। माधोलकर को अपनी सीट से गायब देखकर उसकी नज़रें पूरे हॉल में उन्हें ढूंढने लगीं, लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आए।

"वह कहाँ गया ? भगवान ही जाने कि तुम जैसे धर्मात्मा लोग इस हमाम में क्यों नहाने आ जाते हैं," कर्नल ने अपनी दूसर पेग खाली करते हुए कहा।

लेकिन उस समय राजी का दिमाग धीरे-धीरे चटक रहा था। ऐसे में, कर्नल ने इस प्रोग्रेसिव समाज और अपनी बेटी के बारे में जो बातें कहीं, वे एक समझदार पिता के जलते हुए दिल की बात भी हो सकती थीं। शाहीना की खूबसूरती से उतना ही इम्प्रेस होने के बावजूद, राजी के दिल और दिमाग में इस लड़की की इमेज बुरी हो गई थी। कर्नल की बातों ने शाहीना के लिए उसकी फीलिंग्स पर साइकोलॉजिकली एक ज़ोरदार चोट की थी। शाहीना के घमंड ने उसके दिल में शाहीना के लिए जो इज्ज़त थी, वह अब खत्म हो गई थी। अब, जिस नज़र से वह इस लड़की को देख रहा था, उसमें तारीफ़ के बजाय शक की झलक थी।

उस समय, वह शाहिना को कम और उस आदमी को ज़्यादा देख रहा था, जिसका आकर्षक चेहरा शाहिनाबड़े ध्यान से देख रही थी । वह एक लंबा, गोरा, जवान आदमी था जिसने काले डिनर सूट पहना हुआ था। और राजी ने चारों ओर देखा, न केवल शाहिना बल्कि हॉल में लगभग सभी लड़कियाँ और औरतें, ऊँचे समाज के सम्मानित लोगों की पत्नियों से लेकर उनकी बहनों और बेटियों तक, किसी न किसी तरह से उसे देख रही थीं। कुछ दूर से मुँह बना रही थीं, यह सोचकर कि अंगूर खट्टे हैं, कुछ उसे किसी खास इशारे से आकर्षित करने की कोशिश कर रही थीं, और कुछ उसे भूखी आँखों से देख रही थीं। उसे सच में मर्दाना सुंदरता का मास्टरपीस कहा जा सकता था। उस समय, वह एक टेबल पर बैठा था, उन सबसे बेपरवाह, हँस रहा था और लेडी नेल्सन के साथ किसी टॉपिक पर चर्चा कर रहा था। लेडी नेल्सन देविको के लिए नई नहीं थीं। वह इस होटल की बहुत पुरानी कस्टमर थीं और नई दिल्ली के सम्मानित और अमीर वर्ग में एक मशहूर महिला थीं। वह अंग्रेजी मूल की थीं, लेकिन भारत में पैदा होने के कारण उनमें बहुत सारे भारतीय नैन-नक्श थे। 35 साल की उम्र में भी उन्हें फैशन का बहुत शौक था और एक सीनियर मिलिट्री ऑफिसर की विधवा होने के बावजूद, वह हमेशा जवान और वर्जिन दिखना चाहती थीं। वह हैंडसम आदमी उनसे बिल्कुल कैजुअल तरीके से बात कर रहा था, लेकिन उसका तरीका बेपरवाही से भरा था। जब लेडी नेल्सन उनसे बात कर रही थीं, तो उन्होंने अपनी चंचल आँखों में सारे रोमांटिक गुण जमा कर लिए थे। वह कभी-कभी उनके लिए गाते हुए हल्की सिसकी भी ले लेती थीं। पता नहीं क्यों, उस समय कई लड़कियाँ लेडी नेल्सन को खाने वाली नज़रों से घूर रही थीं और कई तो उनकी बेइज्ज़ती को अपनी बातचीत का टॉपिक बना रही थीं। जैसे ही ऑर्केस्ट्रा का म्यूज़िक शुरू हुआ,

लोग बॉलरूम डांसिंग के पहले राउंड के लिए उठ खड़े हुए। रंग-बिरंगे ईस्टर्न और वेस्टर्न कॉस्ट्यूम में इंडियन कपल्स, जिनमें जवान और बूढ़े भी शामिल थे, लेडी नेल्सन की बस यही इच्छा थी कि वह इस हैंडसम जवान आदमी के साथ डांस करें, लेकिन जैसे ही डांस शुरू हुआ,

उसने माफ़ी मांगी और खड़ा हो गया। उसने इधर-उधर देखा और मुस्कुराया जब उसने देखा कि दूसरों के साथ डांस कर रही ज़्यादातर लड़कियाँ उसे चुपके से देख रही थीं। और वे लड़कियाँ जिन्होंने शायद अभी तक उससे शादी की उम्मीद में अपने पार्टनर नहीं चुने थे, वे अभी भी अपनी सीटों पर इस तरह बैठी थीं कि उन्हें आज के डांस में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं लग रही थी।

लेकिन वह सीधा करनाल कि मेज कि तरफ आया ।

"अब वह यकीनन तुम्हारा हाथ मांगेगा, जाओ नाचो --, कर्नल ने लड़की को सख्त चेहरे से देखते हुए कहा, लेकिन जैसे-जैसे वह करीब आ रहा था, शाहिना के चेहरे की लाली गहरी होती जा रही थी।

"क्या मैं ?" वह पास आया और शाहिना की तरफ हाथ बढ़ाया, इंग्लिश में बोला। हालाँकि शाहिना की आँखों में खुशी की चमक थी, लेकिन उसने कर्नल को सावधानी से देखा।

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं? सभ्य लोग हिचकिचाते नहीं। और अगर मैं यहाँ नहीं होता, तो क्या तुम हिचकिचातीं?, ------कर्नल ने शाहिना से हिंदी में कहा और जब उसने शाहीन को अपना हाथ दिया, तो वह दबी हुई सिसकी के साथ उठीं।शाहिना हाथ पकड़कर थोड़ी हिचकिचाहट से उसके साथ हो ली । राजी , जो उस समय सब देख रहा था , यही फैसला नहीं कर पाया कि मधोलकर के इस तरह कहीं काने के बाद अब वो क्या करे। राजी जानबूझकर डांस में शामिल नहीं हुआ।

उसके जाने के बाद वो करनल से बोला -= - "लेडी नेल्सन आपको बड़ी हसरत से देख रही हैं।"

“ क्या सचमुच ? - करनल चौंक गया - अधूरा फैशन तो बावकूफी है , मुझे भी इन बंदरों कि तरह नाचना चाहिए"
ये कहकर वो उठा और लेडी सेल्सन के पास जाकर अपना हाथ आगे किया ,

"आइये, लेडी सेल्सन?" और वो एक दाबी सी सिसकी लेकर उठ गई और उसके साथ चल दी , दोनों डांस करने लगे ।

बाले वहीं बैठ रहा , इसकि नजरें कभी कभी शाहीन और इस खूबसूरत आदमी पर जा पड़तीं , वो इसे पहचाने कि कोशिश कर रहा था ।

272

लेकिन यह आदमी ऐसा लग रहा था जैसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह अपने कपड़ों और शक्ल-सूरत से किसी राजकुमार जैसा लग रहा था। उसके बोलने का तरीका भी बहुत प्यारा था और उसका व्यवहार बहुत विनम्र था। उस समय शाहिना का चेहरा खुशी से चमक रहा था। वह अपनी खूबसूरत साथी की नशीली आँखों में देखती रही। भावनाओं की तेज़ी के कारण उसके कदम लड़खड़ा रहे थे और कई लड़कियाँ उसे जलन भरी नज़रों से घूर रही थीं।

": इस बंदर नाच में तुम्हें क्या मज़ा आता है, लेडी नेल्सन ? - करनल ने नाचते नाचते अपने डांस पार्टनर से पूछा।

“ व्हाट ? --लेडी नेल्सन ने कहा। "तुम्हें लगता है कि यह बंदरों का डांस है?" उसने अंग्रेजी में उत्तर दिया ।

"अंग्रेजों की वही पिटी पिटाई नकल, हूँ..... " कर्नल ने कहा और फिर से नाचने लगा। लेडी नेल्सन को शायद उसके मुंह से आती शराब की गंध पसंद नहीं आई। वह खुद भी एक इंडियन अंग्रेजनथी । डांस का पहला राउंड खत्म हो गया था और वह जवान आदमी अब कर्नल की टेबल पर बैठा था। राजी उसके और शाहिना के बीच रोमांटिक बातचीत बर्दाश्त नहीं कर सका। कर्नल अब अंग्रेज लेडी नेल्सन के बगल में जाकर बैठ गया था।

और वह इस हैंडसम आदमी को ऐसी नज़रों से देख रही थी जैसे उसे इस दुनिया से नफ़रत हो।

"तुम ने अभी तक अपनी पहचान नहीं बताई , ये आप ने अच्छा काम नहीं किया?" शाहीना उस से कह रही थी ,

राजी अपनी सीट पर आ बैठा था।

"लोग मुझे प्रिंस बाओ डिन कहते हैं।"

राजकुमार, ओह ---शाहिना आश्चर्य और खुशी से लगभग उछल पड़ी।

"आपकी स्टेट कहां है? शाहिना ने दूसरा सवाल पूछा।

" जहां धरती आसमान को चूमती है। मेरा मतलब है पहाड़ों की धरती में जन्नत।---

राजकुमार ने मुस्कुराते हुए कहा, "मेरा मतलब एक टुकड़ा है।"

शाहिना ने भावुक स्वर में कहा, "वह स्वर्ग होगा।"

"ठीक है, अब मुझे इजाज़त दो," प्रिंस ने अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा, और उसी समय राजी ने महसूस किया कि उसके कपड़ों से एक अजीब सी गंध आ रही है। ऐसी गंध जो बहुत आकर्षक थी लेकिन अनजानvथी ।

"क्या हम फिर नहीं मिलेंगे?" शाहिना का स्वर खुशी से भरा था।

"क्यों नहीं? जब भी तुम मुझे बुलाओगे, हम मिलेंगे।"

" मैं समझी नहीं"

; मैंने जो कहा है उतना काफी है , कभी आजमा कर देख लीजिएगा '

" मैं आपका यह तोहफ़ा अपनी जान से भी ज्यादा संभालकर रखूंगी-------- शाहिना का इशारा उस पेंडेंट की तरफ़ था, जो अभी उसके गले में सोने की चेन के साथ लटका हुआ था। राजी की नज़र चेन पर पड़ी: इससे पहले, जब शाहिना इस टेबल पर बैठी थी, तो यह पेंडेंट उसके गले में नहीं था। यह ज़रूर इस राजकुमार ने दिया होगा।

"मैं यह गिफ़्ट उसे ज़रूर देता हूँ जिसके साथ मुझे डांस करना पसंद है।" प्रिंस बौडिन ने मुस्कुराते हुए कहा।

"तो क्या और भी ? शाहिना की आवाज़ में शिकायत की झलक थी।

"मुझे गलत मत समझो, यह दोस्ती की निशानी है। इसके बाद जो भी होगा, वह हालात पर निर्भर करेगा," राजकुमार ने जाते हुए उससे हाथ मिलाते हुए कहा।

लेकिन इससे पहले कि वह जा पाता, राजी अपनी सीट से उठ चुका था। उसने कर्नल से इजाज़त माँगना भी ज़रूरी नहीं समझा और लंबे कदमों से हॉल के आखिर में बनी आधी-अँधेरी गैलरी की तरफ़ चला गया। यहाँ ऊँची छतों वाला एक लंबा गलियारा था।

इसकी प्लास्टर की हुई छत सफ़ेद खंभों पर टिकी थी। दाईं ओर होटल के अंदर के कमरों के बंद दरवाज़े थे और बाईं ओर एक ऊँची दीवार - राजी का अंदाज़ा सही निकला। प्रिंस बाओ दीन इसी तरफ़ आ रहे थे। राजी को शायद उनकी पर्सनैलिटी में इतनी दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन जिस तरह से उन्होंने अपनी जायदाद के सवाल को टाल दिया था और जैसा कि उनके नाम से उन्हें एक राजघराने जैसा दिखना चाहिए था, उनकी पर्सनैलिटी बाकियों से बिल्कुल अलग लग रही थी। राजी को इस बारे में कुछ शक था और वह इसे कन्फर्म करना चाहते थे। उन्हें लगा कि या तो यह कोई बहुत अमीर, अच्छे व्यवहार वाला बदमाश है या कोई रहस्यमयी विदेशी है जो अपनी असली

पहचान दूसरों को नहीं बताना चाहता। जब प्रिंस बाओ दीन इस कॉरिडोर जैसे हिस्से से तेज़ी से चलने लगे, तो राजी एक खंभे की आड़ में छिप गए। वह लापरवाही से तब तक चलते रहे जब तक वह कॉरिडोर के दूसरे छोर पर नहीं पहुँच गए। यहाँ रोशनी बहुत कम थी, शायद यह हिस्सा आमतौर पर इस्तेमाल नहीं होता था। इसके पीछे एक खुला मैदान था, जिसके एक तरफ झोपड़ी थी और उससे सटा हुआ किसी का बंगला था। हॉल के आखिर में उसे दाईं ओर मुड़ता देख, राजी अपने पैरों के बल दौड़ने लगा। उसे नहीं पता था कि देविको की छत तक जाने वाली एक सीढ़ी है, लेकिन जब राजकुमार सीढ़ी चढ़ने लगा, तो राजी को उसी पल इसका पता चल गया। सीढ़ी का दरवाज़ा खुला था और छत पर चांदनी पूरी तरह छाई हुई थी थी। जब राजी छत के पास पहुंचा, तो वह यह देखकर हैरान रह गया कि कैसे वह रहस्यमयी आकृति छत के पश्चिमी कोने पर, आसमान की ओर मुंह करके, अपने दोनों हाथ आसमान की ओर उठाए खड़ी थी। फिर उसी पल, वह हैरानी और डर के मारे बगल की दीवार से चिपक गया जब उसने अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों से एक अजीब सी चमक निकलती देखी। उसकी मुट्ठियों में जो कुछ भी था वह इतना चमकीला था कि वह उसे देखे बिना नहीं रह सका। ऐसा लग रहा था जैसे उसने अपनी मुट्ठियों में दो चमकीले तारे छिपा लिए हों, और जैसे ही राजी ने देखा, एक अजीब और हैरान करने वाली घटना हुई। आसमान में एक जगह पर वैसी ही नीली चमक दिखाई दी, और राजी को लगा जैसे कोई चमकीला तारा आसमान से गिरकर ज़मीन पर उसकी ओर आ रहा था।

वह पक्का उसी तरफ आ रहा था। राजी जल्दी से सीढ़ियों के दरवाज़े के पीछे छिप गया। जो वह देख रहा था, अगर वह अलिफ़-लीला का कोई सुपरनैचुरल सपना होता, तो वह उसे किसी काल्पनिक कहानी की मनगढ़ंत रचना मान लेता, लेकिन उसकी आँखों के सामने एक ऐसी सच्चाई थी जिस पर उसके फ़रिश्ते भी यकीन करने को तैयार नहीं थे। और फिर भी उसे यकीन करना पड़ा। वह देख रहा था कि धीरे-धीरे वह खूबसूरत आदमी एक आग जैसे जीव में बदल रहा था। उसका पूरा शरीर, उसके कपड़ों समेत, रोशनी के साँचे में ढल रहा था, और फिर राजी को अपनी आँखों के सामने लगभग आठ से दस फ़ीट के घेरे में सिर्फ़ एक तेज़ नीली रोशनी दिख रही थी। आसमान से गिरते तारे जैसी रोशनी इस तेज़ जीव पर पड़ रही थी, और राजी इस तेज़ चमक में सिर्फ़ यह देख पा रहा था कि ऊपर से उतर रही चीज़ रोशनी की एक भी किरण नहीं थी, जो इतनी तेज़ी से छत

तक पहुँची कि पलक झपकते ही वह आग जैसा जीव और वो तारा, दोनों राजी की नज़रों से ओझल होकर आसमान की अनंत जगहों में गायब हो गए।

करीब एक मिनट तक राजी हैरान होकर वहीं खड़ा रहा। उसने बूढ़े लोगों से दानवों और दूसरी चीज़ों की कहानियाँ सुनी थीं, पर वे सब एक जैसी ही थीं, पर वह उन्हें सिर्फ़ कल्पना की उपज समझता था। उसने आत्माओं और भूतों के बारे में भी कहानियाँ पढ़ी थीं, पर वह उन्हें सिर्फ़ कहानियाँ समझता था, और फिर आज उसकी आँखों ने जीते जी क्या देखा था?

उनका दिमाग बुरी तरह से चक्कर खा गया था । ये कुछ ऐसी बातें थीं जिनके बारे में अगर वो किसी से कहते भी तो मज़ाक बन जाता। लोग उन्हें या तो पागल या सनकी समझते। और आप और शायद माधोलकर भी इस मामले में उनकी दिमागी हालत पर शक किए बिना नहीं रह सकते।

जब वह हॉल में वापस आया तो उसने देखा कि करनल अपनी सीट पर वापस आ गया था और शाहिना उसके सामने सिर झुकाए बैठी थी। कर्नल उससे बात कर रहा था।

" बॉलरूम में नाचने का मतलब है हर दिन पति बदलना। उन उल्लुओं को धिक्कार है।

" धिक्कार है उन मर्दों पर जो अपनी बीवियों को दूसरे लोगों के पास भेजते हैं।" लेकिन शाहिना ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। राजी अपनी सीट पर चुपचाप बैठा रहा।

" मैं तो यही चाहूँगा कि तुम, अगर इंसान नहीं तो कम से कम गधे का बच्चा ही पसंद कर लो । अगर तुम्हें वह भी नहीं मिला तो सूअर का बच्चा, लेकिन मुझे तुम्हार शादी ना करना पसंद नहीं है ।मैं इस समाज को 100 प्रतिशत अनैतिक मानता हूं।"

" और आप .... --शाहिना, शायद गुस्सा हो गईं और बात करते करते रुक गई ।

" लड़की , मैं मर्द हूँ। और मर्द हद दर्जे के मतलबी और हसन फ़रामोश होते हैं । उनके लिए कोई नैतिक सीमा नहीं होती। अगर कोई आदमी सौ दिन में सौ अलग-अलग लड़कियों के साथ डांस करता है, तो उसे वैलेंटिनो कहते हैं। और अगर कोई औरत दस

आदमियों के साथ दस बार उनके साथ रहती है , तो उसे जानती हो उसे क्या कहते हैं? ----कर्नल ने दाँत पीसते हुए खुद शाहिना से पूछना शुरू कर दिया।

राजी के लिए कर्नल का कैरेक्टर किसी मिस्ट्री से कम नहीं था। वह एक अजीब तरह का पिता था जिसने अपने बच्चों को इस वेस्टर्नाइज़्ड प्रोग्रेसिव सोसाइटी में शामिल होने की आज़ादी तो दी थी और फिर खुद इस माहौल में आकर और इस सोसाइटी का मेंबर बनकर उसे इतनी हेय नज़रों से देखता था। वह खुद अपनी बेटी को बेइज़्ज़त और तुच्छ समझने लगा था, हालाँकि वह उससे एक पिता की तरह इतना प्यार करता था कि उसकी ज़िद को बर्दाश्त कर लेता था। और शायद वह भी अपने पिता के नेचर को अच्छी तरह समझ गई थी। वे दोनों! वे ऐसे माता-पिता और बच्चों के लिए एक बेहतरीन और जीती-जागती सीख थे, जो खुद वेस्टर्नाइज़्ड सोसाइटी के मेंबर होने के बावजूद अपने बच्चों को इस सोसाइटी में घुलने-मिलने नहीं देना चाहते थे, लेकिन बच्चों की ज़िद आखिरकार उनकी पसंद पर रोक लगा देती। वह कर्नल को हमदर्दी भरी नज़रों से देख रहा था। कर्नल, एक ताकतवर आदमी होने के बावजूद, एक ऐसा कमज़ोर बूढ़ा आदमी था जिसकी लाठी अंधेरे में गिर गई हो, और हो सकता है कि

वह अपनी कमजोरी के लिए उसे कोस रहा हो।

" जनती हो उसे क्या कहते हैं? कर्नल ने नफ़रत भरे अंदाज़ में फिर अपना सवाल दोहराया।

" क्या कहते हैं?" लड़की ने नाराज़ होकर पूछा।

“ वेशया , रंडी , प्रोस "उसने वे तीन शब्द धीरे-धीरे और अलग-अलग कहे।"

" डैडी --शाहीन लगभग चीख पड़ीं, फिर अपनी कुर्सी एक तरफ धकेलकर तेज़ी से हॉल के एंट्रेंस से बाहर चली गईं। कर्नल भी नशे में झूमते हुए खड़े हो गए।

:" तुमने सुना, इंस्पेक्टर। मैं किसी दिन उसे बीच चौराहे पर बेइज्जत करूँगा और तुम .....। ---उसने राजी की तरफ उंगली दिखाते हुए कहा। ----------और अगर तुम खुद पिता बनना चाहते हो, तो, --- हीच ----, कभी लड़की को जन्म मत देना और ऐसा हो गया तो .. तो --- फिर उसे घर की चारदीवारी के अंदर रखो... चिड़िया का पिंजरा... नहीं.. पिंजरे कि मैना बना कर -- मुझसे सीख लो , मैं उल्लू का पट्ठा हूँ... इस लड़की का बाप ।"

यह कहकर कर्नल ने हल्का सा कहकहा लगाया और दरवाज़े से बाहर चला गया।

राजी अब बहुत बोर हो रहा था। आज की घटनाओं पर विचार किया , माधोलकर ने भी उसे अकेले में बोर होने के लिए छोड़ दिया ।

लेकिन उस पल कुछ सोच कर वह यहाँ से उठा और सीधे घर चला गया।

सर, आपका फ़ोन

"अच्छा," उन्होंने कहा और सीधे हॉल में काउंटर पर चले गए।

फोन पर दूसरी तरफ माधोलकर बोल रहे थे।

"आप पंजाब होटल जाइए, मैं यहीं हूं।"

"ओह, तो तुम्हें इस लंबे ऊँट से इतना प्यार हो गया कि तुमने देविको का प्रोग्राम छोड़ दिया," राजी ने आराम से कहा।

" असल में, मुझे आपके प्रोग्राम में कोई दिलचस्पी नहीं दिखी। और फिर लॉन्गफेलो के टेलीफोन कॉल की वजह से मुझे यहां आना पड़ा। ---माधोलकरकर ने कहा।

यहाँ भी कुछ अजीब हुआ है। मुझे यह बिल्कुल समझ नहीं आ रहा है। राजी ने उसे बताया

"इधर आओ और मुझे अपनी राम कहानी सुनाओ, मैं इंतज़ार कर रहा हूँ।" यह कहकर माधोलकर ने रिसीवर रख दिया।

☆☆☆

279

राक्षस कौआ

राजी को नई दिल्ली से पुरानी दिल्ली के पंजाब होटल पहुँचने में मुश्किल से 35 मिनट लगे। नीचे होटल मैनेजर ने उन्हें बताया कि ऊपर वाले कमरे में शायद कोई आदमी उनका इंतज़ार कर रहा है । मैनेजर शायद इन बड़े CBI अधिकारियों को नहीं जानता था। ऊपर, माधोलकर एक कुर्सी पर बैठकर उनका इंतज़ार कर रहे थे। लॉन्गफेलो बड़ी बेबाकी से अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे। माधोलकर ने उन्हें बताया कि उनके सीने में थोड़ा दर्द है।

यहाँ राजी को एक और अजीब घटना बताई गई। मधुलकर के अनुसार, लॉन्गफेलो ने उस रात एक सपना देखा था, जबकि लॉन्गफेलो ने ज़ोर देकर कहा कि उसने जो देखा था, वह उसने अपनी जागी हुई आँखों से देखा था। घटना भी अजीब थी। मधुलकर ने बताया कि लगभग डेढ़ घंटे पहले की बात है जब लॉन्गफेलो ने बगल वाले छोटे से कमरे में खड़े होकर कुछ सुना, जहाँ उसका ट्रंक रखा हुआ था, और जब वह सिर्फ़ यह देखने के लिए कमरे में गया कि क्या हो रहा है, तो उसने पाया कि उसका अपना ट्रंक खुला

हुआ है। जैसे ही उसने अंदर देखा, ट्रंक से जो चीज़ निकली और बिजली की तेज़ी से खिड़की से बाहर भाग गई, जानते हो वह क्या थी? मधुलकर ने राजी से पूछा।

"यह ज़रूर कोई चूहा होगा," राजी ने लपरवाही से कहा। "या शायद कोई बिल्ली?"

"ओह नहीं," लॉन्गफेलो ने अपना सिर हिलाया।

"तो क्या वह फिर कोई ऊँट होगा ?" राजी ने गुस्से से कहा।

" देखो, तुम बेकार की बातें करने लगे हो --- लॉन्गफेलो बोला।-

" वह एक आदमी था। ------माधोलकर ने गंभीरता से कहा।

"एक आदमी? ट्रंक के अंदर से ?" राजी ने हैरानी से कहा।

"हाँ, एक आदमी, और सिर्फ़ 2/2 (ढाई फ़ीट) लंबा," लॉन्गफ़ेलो ने समझाया।

 "और फिर आप कहेंगे कि वह घोड़े पर भी सवार था और घोड़ा दो फ़ीट लंबा था।" राजी को फिर लगा कि यह एक मज़ाक है।

" मज़ाक नहीं , ये एकदम गंभीर हैं। ---माधोलकर ने लॉन्गफ़ेलो की ओर से जवाब दिया। -

"यह किस तरह का जीव था?"

" वह उन आम छोटे कद के लोगों में से नहीं थे, जिनको आप जोकर कह सकते हैं । मैंने उसे अच्छे से देखा है। वह बहुत हैंडसम लग रहा था और हर तरह से ठीक ठाक था ----- लॉन्गफेलो ने कहा।

"शायद पड़ोस का कोई शरारती बच्चा रहा हो ?"

" ईमपॉसिबल -। उसके चेहरे पर मूंछें भी थीं। और फिर जिस तरह से वह इस ट्रंक से गायब हुआ वह और भी हैरानी की बात थी।------ लॉन्गफेलो ने कहा। ---मैंने उसे बहुत ढूंढा, लेकिन वह नहीं मिला।

" और यह ट्रंक वही है जिसमें खान साहब का भेजा हुआ पार्सल यहां लाया गया था। माधोलकर ने मुस्कुराते हुए कहा।

"तो क्या वह यहाँ यही ढूंढने आया था?"

" बेशक। हो सकता है उसे पता न हो कि वह अमानत हमें मिल गई है और हमारे रीडिंग रूम में सुरक्षित है ।------ माधोलकर ने इस अनजान अमानत की जगह बताकर राजी को भी हैरान कर दिया, जिसे उसने इतनी सावधानी से छिपाया था।

" मधु, क्या तुम होश में हो? राजी ने उसे टोका।

" अरे, हम तीनों के अलावा यहाँ और कौन है? और हम तीनों को इसके बारे में पता है।"

"हाँ," मधुवलकर ने मुस्कुराते हुए कहा।

राजी भी उसकी बातों से काफी हैरान था। उसने कभी उम्मीद नहीं की थी कि माधोलकर इतनी लापरवाही से बात करेगा। वह उसे शक की निगाह से देखने लगा।

"मैं असली माधोलकर हूँ, उल्लू , नकली नहीं " माधोलकर ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा,
"तो हमें तुरंत इसकि खबर लेनी चाहिए ।"

" वहां तक कौन पहुंचेगा भला ? खैर, हम तो घर चल रहे हैं।--- माधोलकर ने उठते हुए कहा।

"ठीक है, मिस्टर लॉन्गफेलो, यहां से बॉम्बे वापस जाने के बजाय, आपको आगरा जाना चाहिए, मैं आपको टिकट दिला दूंगा।"

" इसका क्या मतलब है? लॉन्गफेलो भी इस अप्रत्याशित वाक्य से चौंक गए।

" आज आपने एक विचित्र प्राणी देखा है, कल आप कहेंगे कि शेर आपके बैग से निकला है ।--माधोलकर ने कहा ।"

" अल्लाह उसकी समझ पर रहम करे। ---राजी ने एक और वार किया ।

"क्या तुम लोग मेरा मज़ाक उड़ाने की कोशिश कर रहे हो?" लोंगफेल हैरान था।

और माधोलकर और राज़ी दोनों मुस्कुराते हुए बाहर चले गए।

लॉन्गफेलो को उस समय एक अजीब सी घबराहट महसूस हो रही थी। वह कुछ सोचते हुए उनके पीछे जाने के लिए उठा ही था कि तभी उसकी नज़र कुर्सी के सामने ट्राइपॉड पर रखे सिगरेट के पैकेट से फटे कागज़ पर पड़ी।

उस पर लिखा था, "शांत रहो और सब्र रखो। हम फिर मिलेंगे। माधोलकर।"

लॉन्गफेलो की हैरानी मुस्कान में बदल गई। उन्होंने कागज़ का टुकड़ा उठाया, उसे कई टुकड़ों में फाड़ा और खिड़की से बाहर फेंक दिया।

कार बाहर पोर्टिको में रुकते ही माधोलकर और राजी रीडिंग रूम की तरफ़ भागे। यहाँ, उन्हें लोबो बाहर खड़ा मिला।

" साहब , आपका टेलीफोन मुझे मिल गया। -- उसने कहा, "मैं तब से यहीं हूँ और पीछे खानसामों को ड्यूटी दी गई है।"

"क्या कोई आया?"

" जी नहीं।

"ठीक है, अब तुम अपना काम करो," माधोलकर ने अपना कोट उतारकर उसे देते हुए कहा।

फिर वे दोनों रीडिंग रूम में घुस गए। माधोलकर ने दरवाज़ा अंदर से लॉक कर लिया। अंदर जाकर उन्होंने एक साथ सारी लाइटें जला दीं। और वे यह देखकर चौंक गए कि बाहर से लॉक होने के बावजूद, कमरा अंदर से काफी बिखरा हुआ था। कमरे का बहुत सारा फ़र्नीचर अस्त-व्यस्त पड़ा था, किताबें एक तरफ़ लुढ़की हुई थीं। कुछ किताबें फ़र्श पर पड़ी थीं। इसी तरह, टेबल के सारे ड्रॉअर खुले हुए थे और उनमें फ़ाइलें और कागज़ उल्टे पड़े थे। ऐसा लग रहा था जैसे कोई उनसे पहले कमरे में आया हो और सारा फ़र्नीचर उलट-पुलट कर उसमें कुछ ढूँढ़ रहा हो। माधोलकर अब फ़ाइलों की तरफ़ दौड़ा। उसने जल्दी से फ़ाइलें निकालीं और एक तरफ़ फेंक दीं, लेकिन जैसे ही उसने अपना हाथ अंदर डालना चाहा, पहले किसी नुकीली चीज़ ने उसके हाथ में काटा और जब उसने झटके से अपना हाथ बाहर निकाला, तो खुली ड्रॉअर सेकोई ज़िंदा चीज़ टपक कर बाहर निकली ।

" मधु, वो बौना -------राजी चिल्लाया। लेकिन जब तक माधोलकर मुड़ा, तब तक यह 21.2 फुट लंबा, कमाल का आदमी बंदर जैसी फुर्ती से छलांग लगाकर रोशनदान से बाहर निकल चुका था। वह इतना छोटा था कि रोशनदान की लोहे की सलाखें भी उसे रोक नहीं पाईं। वह बक्सा भी अपने साथ ले गया था।

:" उसे पकड़ो ,

वह छत पर ज़रूर जाएगा, दौड़ो , राज़ी, देखो, निकल ना पाए बच कर । ----- माधोलकर ने कहा और खुद भी भागा ।

छत पर , वे पहले लगी लोहे की सीढ़ियों की मदद से पानी की टंकी तक पहुँच गए, और उन्हें ऊपर पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा, लेकिन पता नहीं क्यों, राजी को वहाँ इस विचित्र प्राणी को देखकर एक सिहरन सी हुई। उसका मन सोचने लगा,

"हे भगवान, यह क्या है?" लेकिन पता नहीं क्यों, माधोलकर को भी यहाँ पहुँचकर थोड़ा चक्कर आया। उसने देखा कि 2, 2.5 फुट लंबा आदमी स्टील की पानी की टंकी पर चढ़ गया था। रात के सन्नाटे में, इस छत पर इन दो बहादुर इन्वेस्टिगेटर के बीच यह छोटा, रहस्यमयी जीव अजीब, डरावना और समझ से बाहर लग रहा था। माधोलकर जैसा समझदार आदमी भी सोच रहा था कि इस जीव पर गोली चलाए या नहीं, लेकिन उसी पल वह फिर से चौंक गया जब उसने इस 2 फुट लंबे आदमी को आसमान की तरफ मुँह करके चिल्लाते हुए देखा। उसके गले से कौवे जैसी तेज़ आवाज़ निकल रही थी। और उसका रिएक्शन और भी हैरान करने वाला था। जब नीले आसमान के

अंधेरे में, खाली जगह से उन्हें बिल्कुल वैसी ही आवाज़ सुनाई दी। उसकी आवाज़ बहुत तेज़ और भारी थी, और उसका जवाब शायद काफी दूर से आया था , लेकिन फिर वह काओं काओं पास आती गई।

और अब जो उनकी आँखों ने देखा वह यकीन करने लायक नहीं था, या फिर वे इसे अपने दिमाग की खराबी ही कह सकते थे, क्योंकि मेसोपोटामिया में सबसे बड़ा कौआ अठारह इंच लंबा बताया जाता था, और जिस पक्षी को उन्होंने अंधेरे में आसमान से उतरते और इस छोटे आदमी के सिर के ऊपर चक्कर लगाते देखा, वह इतना बड़ा कौआ था कि उसे कौआ मानने का कोई सवाल ही नहीं था। वह लगभग एक बड़े शुतुरमुर्ग के आकार का था, या उससे भी थोड़ा बड़ा। और वह कोई और पक्षी नहीं था, बस एक कौआ था, चोंच से पूंछ तक।

"क्या यह वही पक्षी नहीं है जो सिंदबाद के साथ यात्रा करता था?" राजी के मुंह से निकला।

"हम अलिफ़ लैला का सपना नहीं देख रहे हैं, यह सच है, बेटा। ---माधोलकर ने अपनी पिस्तौल उस बड़े कौवे पर तान दी। एक और चीज़ जो ध्यान देने लायक थी। वे थीं कौवे की बड़ी, गोल और चमकीली पीली आँखें। ऐसा लग रहा था जैसे कांच की गोल प्लेटों में दो कोयले रखे हों। उसके पंजे भी चमकदार थे। छोटे कद के आदमी ने अपनी जेब से कुछ निकाला, उसे हाथ में लिया और आसमान की तरफ हाथ उठाया। उसमें भी कुछ चमक रहा था। डिब्बा अभी भी 2 फुट के आदमी के दूसरे हाथ में था, और भले ही वह उसके साइज़ का ही लग रहा था, वह उसे आसानी से ले जा रहा था।

"राज़ी, उन दोनों पर सारी गोलियां खाली कर दो, नहीं तो वे दोनों गायब हो जाएंगे।" जैसे ही वह आगे बढ़ा और पास आया , माधोलकर ने अपनी पिस्तौल से कौवे पर पहली गोली चलाई,। बड़े कौवे के गले से एक डरावनी "काओं" की दहाड़ निकली और उसकी चमकती हुई

डरावनी नज़रें मधुलकर की तरफ़ घूम गईं। राजी ने उस पर दूसरी गोली चलाई, लेकिन गोली लगने के बाद भागने के बजाय, उसने अपने पंजे सिकोड़ लिए और उन दोनों पर झपट पड़ा। मधुलकर इस अचानक हुए हमले से चौंक गया। और राजी ने, उस आदमी

को अपनी जेब से कुछ निकालते देखकर, उस पर दूसरी गोली चला दी। राजी या मधुलकर का निशाना चूक जाना नामुमकिन ही था, तो यह सिर्फ़ एक इत्तेफ़ाक ही हो सकता था। लेकिन, राजी की गोली उसके सीने में लगी और वह वहीं गिर पड़ा। यह भयानक कौआ झपटा और मधुलकर पर इतनी ज़ोर से लगा कि उसकी कमीज़ का कपड़ा और एक हाथ का मांस भी नोच लिया। कुछ दूर जाकर वह वापस मुड़ा और इस बार राजी का सिर मुश्किल से बचा, वरना उसकी लगभग एक फ़ीट लंबी चोंच इस दूसरे वार में राजी की खोपड़ी में घुस जाती।

अपने तीसरे हमले में, माधोलकर की चाल काम कर गई। उसने बड़ी फुर्ती से राजी को ज़मीन पर धकेल दिया और फिर मुँह के बल ज़मीन पर गिर गया। इस भयानक कौवे का हमला बेकार गया, लेकिन राजी और माधोलकर की ऑटोमैटिक पिस्तौल की सारी गोलियाँ उसके सीने में लगीं। वह थोड़ा ऊपर उठा, आखिरी बार नीचे गिरा, और फिर छत पर उड़ गया। उसके पेट, सीने और मुँह से खून बह रहा था।

"जल्दी से नीचे से टॉर्च लाओ।" माधोलकर ने राजी को कहा और खुद उस छोटे आदमी के पास दौड़ा।

"लोबो, टॉर्च लाओ, जल्दी से -- राजी सीढ़ियों से चिल्लाया ।

आवाज़ सुनते ही लोबो वहाँ पहुँच गया। जब उसने उन अजीब लाशों को देखा , तो वह चौंक गया और डर गया।

"इनकी लाशें यहां से ले जाओ।" माधोलकर ने लाशों पर टॉर्च की रोशनी डाली, और लोबो से कहा।

म म ... मालिक , यह क्या है? लोबो डरते डरते पास आया और बोला।

वो दोनों शव उठाने को तैयार हो गए , जब राजी 2 फुट के आदमी के ऊपर झुका, तो यह देखकर चौंक गया कि वह सांस ले रहा था।

"यह ज़िंदा है," उसने उछलते हुए कहा।

"लोबो, तुम जल्दी से कार को बाहर निकलो," माधोलकरकर ने आदेश दिया, और लोबो, भगवान का शुक्रिया अदा करते हुए, नीचे की ओर भागा। इन अलौकिक प्राणियों को देखकर उसके रोंगटे खड़े हो गए।

खासकर वह भयानक कौआ, जिसके पंखों ने ही उसे डरा दिया था।

माधोलकर ने कौवे की बॉडी को एक कमरे में बंद कर दिया और तुरंत 2 फुट लंबे आदमी को अपनी कार में बिठाकर वहां से चला गया।

"क्या तुम्हें बात समझ नहीं आई?" राजी ने चलती कार में माधोलकऱ से कहा।

" मैं भी जादू में विश्वास नहीं करता, लेकिन इस लटके हुए एयरक्राफ्ट से जुड़ी घटनाओं ने दुनिया के सामने कई नामुमकिन चीज़ें पेश कीं, और वैसे भी, सभी लोग इस बात पर सहमत थे कि ये सबसे महान साइंटिस्ट में से एक की अद्भुत रचनाएँ हैं।"

"ऐसा लगता है जैसे कोई महान वैज्ञानिक शक्ति अपने एक्सपेरिमेंट अलग-अलग तरीकों से कर रही है," माधोलकऱ ने गहरी, सोच-समझकर भरी आवाज़ में कहा, जैसे वह सपने में कुछ बुदबुदा रहे हों।

"तो क्या ये सब साइंटिफिक चीजें हैं? राजी ने यकीन ना करते हुए अपना सवाल दोहराया ।

"मैंने एक अमेरिकन मैगज़ीन में रेडिएशन पर एक आर्टिकल पढ़ा। उसमें दावा किया गया था कि नागासाकी के आस-पास जापान के समुद्रों तक पहुँचे रेडिएशन ने उन समुद्रों के जीवों में अजीब रिएक्शन पैदा कर दिए थे। इसके असर से उनके किनारों पर पाई जाने वाली मछलियाँ चार गुना बढ़ गई थीं।

और हिरोशिमा के जंगलों में पाए जाने वाले कुछ जानवर जो रेडिएशन के असर को झेल चुके हैं, वे हैरानी की बात है कि बहुत बड़े पाए गए हैं। उदाहरण के लिए, एक आम गिलहरी, जो पहले अपनी पूंछ के साथ ज़्यादा से ज़्यादा एक फुट लंबी होती थी, अब तीन फुट तक बढ़ गई है, जो बॉम्बे के पास नाविकों द्वारा देखे गए एक बड़े जानवर के आकार से भी ज़्यादा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह एटॉमिक धूल से भरी ज़मीन की उपज खा रही होगी। एक बड़ा जानवर भी देखा गया उनका मानना है कि यह एक पोलर बेयर है, क्योंकि पोलर बेयर समुद्र तल में तैरते हैं।"

"भालू राक्षस कैसे बन गया?" राजी ने पूछा।

"यह एक सफेद हाथी जितना लंबा था। दूर से देखने पर लोगों को पहले लगा कि यह कोई पुराने ज़माने का बालों वाला हाथी है।"

"वाह, यह सचमुच अजूबों का युग है," राजी ने धीरे से कहा।

इतना ही नहीं, रेडिएशन रिएक्शन का एक और सबूत भी है। जिन ज़मीनों पर यह एटॉमिक डस्ट गिरा है, वहां फसलें नॉर्मल से तीन से चार गुना ज़्यादा पाई गई हैं और फल अपने पिछले साइज़ से चार से पांच गुना बड़े पाए गए हैं।"

"तो आपका मतलब है कि इस विशालकाय राक्षस भी इसी वजह से बना होगा ?" राजी ने पूछा

"यह एक बात समझ में आती है। हो सकता है कि किसी तरह इसे एटामिकल कहना ज़्यादा खिलाया गया हो, और यह इतना बड़ा हो गया हो।"

"यह बहुत खतरनाक अनुभव था। क्या कोई इंसान इस तरह विशालकाय बन सकता है?"

" बेशक, ---मधुलकर मुस्कुराए।

"आपकी बातचीत और भी डरावनी होती जा रही है।"

" मैं एक संभावना बता रहा हूँ, मुझे और कुछ समझ नहीं आ रहा। मैं भी आपकी तरह एक इंसान हूँ, मैं जाम जमशेद नहीं हूँ।

" और यह विचित्र जीव?

"जैसे कोई रेडिएशन के बढ़ने की थ्योरी खोज सकता है, वैसे ही उसे उलटा भी हो सकता है। अगर यह एक कौवे को शुतुरमुर्ग के साइज़ तक बड़ा कर सकता है, तो कोई कारण नहीं है कि इंसान को ज़रूरी साइज़ तक छोटा न किया जा सके।

"तुम्हारा मतलब है कि यह ढाई फीट लंबा आदमी पहले तुम्हारे जैसा ही आदमी रहा होगा?"

"और कम से कम इस कौवे को देखकर तो यही कहा जा सकता है।"

" भगवान की कसम, तो वह आदमी जो देविको में रोशनी बनकर उड़ता है, वह भी सच हो जाएगा। तुमने पेंडेंट का भी ज़िक्र किया, है ना? माधोलकर ने धाराप्रवाह कहा।

" यही बात चौंकाने वाली है, वरना मैं ये सोचता कि सब भटकती आत्माएं हैं। --राजी ने कहा। --वह पेंडेंट अब भी शाहीना के गले में होगा।

" फिर मैं उसे देखने के बाद ही कोई राय बना पाऊंगा। और अगर ये बच गया , तो यह बहुत बड़ी बात होगी। ---माधोलकर ने पीछे की सीट पर लेटे घायल, छोटे कद के आदमी की ओर इशारा किया।

 खून बहना रोकने के लिए फर्स्ट एड के तरीकों से उनके सीने के घाव पर पट्टी बांधी गई। माधोलकर ने उस समय कार की स्पीड 50-55 mph रखी थी, इसलिए उन्हें किंग एडवर्ड

हॉस्पिटल पहुंचने में ज़्यादा समय नहीं लगा। उस हॉस्पिटल में हर समय ज़्यादा अनुभवी सर्जन मौजूद रहते थे। सिविल सर्जन डॉ. सोहन सिंह डॉक्टर जो हॉस्पिटल के गेट पर उन्हेंमिल गए ।

289

डॉ. मोहन सिंह इस 2-1.2 फुट के आदमी को देखकर हैरान रह गए। माधोलकर को पहचानकर, वे तुरंत बॉडी को ऑपरेशन रूम में ले गए और इस अजीब जीव का ऑपरेशन किया, गोली निकालकर गैस पर रख दी। उस बौने जीव ने आँखें खोलीं और पूछा।

" मैं कहां हूं?

"आप इस समय अस्पताल में हैं। ," मधुलकर ने जवाब दिया।

" क्यों? क्या मैंने अपना फर्ज पूरा नहीं किया?

"किस तरह का फर्ज ?" माधोलकर ने उसके ऊपर झुकते हुए पूछा। लेकिन इस सवाल पर उसका रिएक्शन हैरान करने वाला था। यह सुनकर, उईस जीव ने छत की तरफ देखा और चिल्लाया ।

" हे रोशनी वाले आदमी, मुझे अपने पास बुलाओ। "

और अगले ही पल, सब यह देखकर चौंक गए कि एक ही झटके में उसने अपने गले में बंधी पतली सोने की डोरी तोड़ दी। इस डोरी के दो टूटे हुए सिरों से आसमानी रोशनी की एक पतली लहर निकली और अगले ही पल, उनके सामने 2.5 फुट लंबा, पूरी तरह से काला इंसानी शरीर पड़ा था।

" सारी मेहनत बेकार गई।" डॉक्टर ने दोनों हाथ उठा कर कहा

"क्या तुमने सुना, मधु?" राजी चौंक कर उछल पड़ा ।

"हाँ। रोशनी वाला आदमी," मधुलकर ने उसके शरीर को घूरते हुए कहा। "मतलब लटके हुए प्लेन और ग्यारह लड़कियों की टोलियों का गायब होना भी इसी रोशनी वाले आदमी से जुड़ा है। वो आदमी जो इस बौने का बॉस लगता है, जो पक्का एक बड़ा साइंटिस्ट है।"

सिविल सर्जन मौत के इस तरीके से हैरान थे। और जब माधोलकर ने सिविल सर्जन को बड़े कौवे का ज़िक्र किया, तो डॉक्टर अपने आप बुदबुदाए, "किसी ने ज़रूर इस थ्योरी को सफल बनाया होगा।"

290

"कौन सी थ्योरी?" माधोलकर ने हैरानी से पूछा।

" एक बार, जब मैं अमेरिका में था, तो साइंटिस्ट्स की एक प्राइवेट मीटिंग में एक चर्चा हो रही थी। वे रेडिएशन के रिएक्शन पर चर्चा कर रहे थे, और इसी सिलसिले में, एक डॉक्टर ने सीरियसली बताया कि वह ऐसी एटॉमिक पिल्स बना रहा है, जिन्हें खिलाने पर बकरियां गाय जितनी बड़ी और गायें हाथी जितनी बड़ी हो जाएंगी। और जो दूध वे देंगी वह एटॉमिक होगा। और डॉक्टर ने यह भी डर जताया कि कोई डॉक्टर इस थ्योरी में सफल हो सकता है और एक्सपेरिमेंट भी कर रहा है। अब, इस बड़े कौवे का ज़िक्र सुनकर, मुझे डॉक्टर की बात पर यकीन हो गया।अब मैं भी यह सीखना चाहूंगा।

☆☆☆

291

वह कौन था?

इस दौरान, राजी ने बाहर जाकर एक जूनियर CBI ऑफिसर को बुलाया था। जब तक वह बाहर आया, वह भी आ गया था और उसने 2-1.2 फुट की जली हुई बॉडी को सुरक्षित रूप से डॉ. झाला के स्टडी थिएटर में भेज दिया था। डॉ. झाला मेडिकल साइंस में हाई

क्वालिफिकेशन के साथ-साथ न्यूक्लियर साइंस के एक्सपर्ट के तौर पर जाने जाते थे। अपने ज्ञान और प्रोफेशन को रोजी-रोटी का जरिया बनाने के बजाय, उन्होंने अपनी सारी काबिलियत पढ़ाई, रिसर्च और एक्सपेरिमेंट में लगा दी थी। वह दूसरे लोकल साइंटिस्ट के मुकाबले न्यूक्लियर साइंस में ज़्यादा शामिल थे। माधोलकर के साथ उनके रिश्ते काफी पुराने थे और तब, CBI के डिप्टी डायरेक्टर के तौर पर, माधोलकर के पास खुद ऐसे मौकों पर किसी से भी सलाह या मदद लेने का अधिकार था।

माधोलकर का ध्यान अब 2-1.2 फुट के बौने की बॉडी पर नहीं था, बल्कि उस सुनहरे तार पर था जिससे टूटकर उस छोटे आदमी की मौत हो गई थी। वह तार बॉडी से जुड़ा हुआ था। और माधोलकर ने उसे निकालकर अपनी जेब में रख लिया था। उस समय, CBI के इस टॉप जासूस का दिमाग अलग-अलग घटनाओं को जोड़ने में बिज़ी था। राजी भी उस समय अजीब तरह से शांत था।

 वे ऐसे पलों से गुज़र रहे थे जिन पर कोई आम इंसान ध्यान देना भी पागलपन समझेगा। हॉस्पिटल से लौटने पर, माधोलकर ने अपने कपड़े बदले और डाइनिंग टेबल पर बैठ गए। राजी ने भी देविको में खाने का इंतज़ार नहीं किया था , उसे भी उस समय भूख लगी थी, लेकिन जब

उन दोनों ने खाने के लिए ज़रूरी सारा सामान ड्राइंग रूम में रख दिया था और दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया था, तब लोबो और दूसरे नौकर भी परेशान थे। आज बंद कमरे में खाने का क्या मतलब था?

" मधु -- राजी ने अपनी बढ़ती भूख मिटाने के लिए जल्दी-जल्दी बर्तन साफ़ करते हुए उससे कहा, "जब तुम पत्रकार के साथ चल रहे थे, तो तुमने अपनी आवाज़ का टोन क्यों बदल दिया?"

"क्या अब तक तुम इतना भी नहीं समझे?" माधोलकर ने कहा।

राजी ने कहा, "यहां घर पर जो हुआ, उससे मैं समझ सकता हूं कि आप पहले से ही इसकी उम्मीद कर रहे थे।"

" बिल्कुल।-- माधोलकर बोला।-- असल में, अगर अनजान ताकत का यह छोटा सा जीव इस ट्रंक को खोलने के बाद भी लॉन्गफेलो के कमरे में उस चीज़ को नहीं ढूंढ पाया , तो वह गायब क्यों होता? इस बात के बावजूद कि इस होटल और इसके कमरों की बनावट से परिचित न होने के कारण हम उसे तुरंत नहीं ढूंढ पाए,। मुझे शक था कि अगर उसका मकसद पूरा नहीं हुआ तो वह यहीं कहीं होगा। अगर वह कोई आम आदमी होता, तो यह पहले से तय था कि वह इस हालत में वापस चला जाता, लेकिन यह रहस्यमयी छोटा सा जीव, मैंने अंदाज़ा लगाया कि वह किसी के पूरी तरह से अधीन होगा। मैंने लॉन्गफेलो की बात पर पूरी तरह से यकीन किया था। और इसी यकीन के साथ मैंने यह भी मान लिया कि वह रहस्यमयी जीव यहीं कहीं आस-पास होगा। वह चीज ढूंढे बिना उस लंबे आदमी का पीछा नहीं छोड़ेगा। इसलिए मैंने जानबूझकर अपने रीडिंग रूम में छिपे खजाने का ज़िक्र किया। और मैंने लॉन्गफेलो की बात का मज़ाक भी उड़ाया।--------- माधोलकऱ ने बताया

" और शायद वह ढाई फूटिया यह सुन कर हमसे पहले यहाँ पहुँच गया । --राजी ने मुँह बनाकर कहा। उसे हमारा पता भी मालूम होगा।

"तुम बहुत भोले हो, राज़ी । वो अमानत जो लाँगफेलो लाया था , वो उस डिब्बे में नहीं था जो हमें दिया गया था। तुम उसे जितना बेवकूफ़ समझते हो, वो उतना ही बड़ा अक्लमंद है।"

"और... और फिर तुमने भी इतनी सीरियस अदाकारी दिखाई ।"

"यह तो करना ही था। असल में, लॉन्गफेलो ने ओरिजिनल बॉक्स मुझे पहले ही एक अनजान आदमी से स्पेशल प्लेन से भेज दिया था। फिर वह डुप्लीकेट बॉक्स हमारे पास अजनबियों की तरह लाया ताकि वह खान साहब का मैसेज हम तक बोलकर पहुंचा

सके। और इन चीज़ों को गायब करने के पीछे जो भी ताकत है, उसे गलत मैसेज जा सके ।"

" तो असली डिब्बा कहाँ है? और एक छोटी सी बात के लिए हमने इस बौने की जान कुर्बान कर दी।

माधोलकर ने कहा, "मैं असल में इस अजीब जीव को ज़िंदा पकड़ना चाहता था, लेकिन आपने उसे गोली मार दी।"

" अगर ऐसा नहीं किया होता, तो वह पक्का इस तार के ज़रिए खुद को खत्म कर लेता। ----राजी ने कहा।

" खैर, जो भी हुआ, गोली मारो । अब हमें सोचना है कि आगे क्या करना है। क्योंकि सिर्फ़ सुपरिटेंडेंट खान और उनके असिस्टेंट ही नहीं, बल्कि ये डेढ़ दर्जन विदेशी साइंटिस्ट और बड़े आदमियों की करीब एक दर्जन बेटियां भी इस अनजान ताकत के कब्ज़े में आ गई हैं। असल में, अगर हम सावधान नहीं रहे, तो हम भी गायब हो सकते हैं।--

अगर ऐसा हुआ तो यह बहुत बेहतर होगा। इस तरह, हम उन तक पहुँच सकते हैं और कुछ कर सकते हैं" ।

आप गलत सोच रहे हैं। सबसे पहले तो, इस शक्ति तक उसकी इच्छा के बिना पहुँचना या उसका पता लगाना नामुमकिन लगता है। दूसरी बात, अगर इस तरह से उस तक पहुँच भी लिया जाए, तो हम यह नहीं कह सकते कि नतीजा क्या होगा।

"वह अमानत क्या है, और उसे कहाँ रखा गया है?"

"हम उसे कल सुबह देख सकेंगे।"

" और सुबह तक कुछ अंधेर हो गया तो क्या? आखिर हमें इस ताकत से सावधान रहना चाहिए, जिसकी बटेर और कौआ हमने मार दिया है।

"ठीक है, हम खाने के बाद इस पॉइंट के बारे में सोचेंगे, ।", मैं इन घटनाओं के बीच की बातों को जोड़ना चाहता हूँ।"

"ठीक है, तो अल्लाह के नाम से शुरू हो जाओ ।"

" इस लॉन्गफेलो और बॉम्बे रिपोर्ट से पता चले हालात के मुताबिक, इन कमाल की घटनाओं का सिलसिला कुछ बहुत खूबसूरत और पढ़ी-लिखी लड़कियों के अजीब पागलपन से शुरू हुआ। वे सभी अलग-अलग एक बहुत हैंडसम चांद के राजकुमार से प्यार करती पाई गईं। फिर, उनके गायब होने के साथ ही प्लेन के लटके होने की घटनाएं हुईं। और उसमें सफर कर रही मिस जूलिया के खान को दिए बयान से यह साफ हो गया कि प्लेन की ये कमाल की घटनाएं भी इन गायब लड़कियों के इन सपनों जैसे रोमांस से जुड़ी थीं।

" शायद आप इसी जूलिया की बात कर रहे हैं, जिसके बारे में खान साहब ने आपके साथ फोन पर चर्चा की थी ?" - राजी ने पूछा।

"हाँ, और उनकी इच्छा के अनुसार, मिस जूलिया के साथ होने वाली किसी भी नई और हैरान करने वाली घटना के बारे में हमें बताने का इंतज़ाम किया गया है।"

"अच्छा, इस चेन में और कौन सी कड़ी है?"

"खान की एक कॉन्फिडेंशियल रिपोर्ट देखने के बाद, यह नतीजा निकाला जा सकता है कि लड़कियों का गायब होना, प्लेन के लटकने की घटना, रशियन रिएक्टर का नष्ट होना और अजीब रिंग और फोर्ट ज़ोर्क की घटना, ये सभी एक ही चेन की कड़ियाँ थीं। और साइंटिस्ट्स के प्लेन का गायब होना भी इसी चेन की आखिरी घटना है।"

"और आपने इस छोटे जीव और राक्षस कौए को इस सीरीज़ में शामिल नहीं किया है?"

" कुछ बातें असल में एक जैसी हैं। जैसे, सलाजार का नेचर, जिसके बारे में सिर्फ़ सुपरिंटेंडेंट खान को ही सबसे अच्छी तरह पता था। वह उनके पीछे अमेरिका चला गया था। और अगर सलाजार ने अपनी सुंदरता और जवानी के लिए अमर होने की चाह में शुरू में ही अपना मांस और चमड़ी न खोई होती, तो दुनिया बहुत पहले ही एक महान साइंटिस्ट की साइंटिफिक कामयाबियों से जान-पहचान कर चुकी होती। लेकिन सलाजार तिब्बत से अमेरिका पहुँचकर अपने मकसद में कामयाब हो गया।
जहां उन्हें किडनैप हुए तिब्बती लामा के हड्डी के पिंजरे पर मांस को उसके असली रूप में वापस लाने का नुस्खा मिला, जिसे अमेरिकी मिशन ने इसी मकसद से किडनैप किया था।

"आखिर, क्या यह बताना ज़रूरी है?" राजी ने पूछा।

"बस आपको यह बताने के लिए कि सालाजार के स्वभाव में ऐसी क्या कमजोरी थी जिसने उसे एक महान वैज्ञानिक बनने के बावजूद कंकाल में बदल दिया।"

" मुझे पता है, खान साहब ने मुझे इसका पूरा इतिहास बताया था।

"वह इतना खूबसूरत था कि हर फ़्लर्ट करने वाली लड़की उसे चाहने लगती थी। और इसी पागलपन में, इस मस्कुलर आदमी ने अपनी सुंदरता और जवानी को अमर बनाने का एक्सपेरिमेंट किया था।"

"हालांकि, उन्होंने अमेरिका से बाहर जाते समय खान साहब को एक तोहफ़ा दिया था, इस शर्त पर कि वे इसे पांच साल बाद खोलेंगे।"

राजी ने कहा, "और उन्होंने खान साहब से यह भी वादा किया था कि वह कभी भी उनकी ज़मीन, यानी हमारे देश पर पैर नहीं रखेंगे।"

"हो सकता है कि वह किसी खास वजह से अपना वादा तोड़ रहा हो।"

"आप सालाजार सीरीज़ को इन घटनाओं से क्यों जोड़ रहे हैं?"

" खान साहब भी उसकी काबिलियत और साइंस के फील्ड में उसकी महानता के कायल थे। इसीलिए सबसे पहला ख्याल उसी की तरफ जाता है। वह बदमाश, जो कंकाल बन चुका था, खूबसूरत औरतों और लड़कियों को सिर्फ इसलिए मार डालता था क्योंकि वे उसे देखकर चीखकर भाग जाती थीं या बेहोश हो जाती थीं। तो फिर जिस इंसान की कमजोरी हर रूप में दिखती थी, क्या वही चांद का राजकुमार या तुम्हारा रोशनी वाला आदमी नहीं हो सकता?

" यानि इसका मतलब है सलाजार"

" हाँ, सलाजार, जो अब अपने असली और पूरे रूप में वापस आ गया है, और लड़कियों के ध्यान का केंद्र बन गया है। क्या तुमने शाहिना की हालत उसकी आँखों से नहीं देखी?"

"मैंने इसे देखा है, लेकिन सिर्फ़ इससे यह साबित नहीं होता कि यह सलाजर का काम है," राजी ने फिर कहा।

माधोलकर ने इसका विरोध किया।

" मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं। खान साहब की कॉन्फिडेंशियल रिपोर्ट की कॉपी जो मुझे सीधे मिली है, उसमें उन्होंने यह भी कहा है कि जिस समय डॉ. पटेल के

ऑब्ज़र्वेटरी में, वे रहस्यमयी रिंग की अद्भुत शक्ति देख रहे थे , उस समय, जैसे ही रिंग की लाल रोशनी रिंग से उठती नीली रोशनी के गोलों में चमकी और फीकी पड़ी, रोशनी के गोलों में अंग्रेजी अक्षरों SALAZ के आकार में एक जगह बन रही थी। इन अक्षरों से,

Salazar के अलावा कोई और नाम नहीं बन सकता था। अगर बन भी जाता, तो यह यकीन नहीं होता कि कोई दूसरा साइंटिस्ट इतनी भयानक अहमियत रखता।

"आप हर तरह से यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि इन सभी अद्भुत घटनाओं के पीछे काम करने वाली महान शक्ति सालाजार है।"

" असल में, यह खान साहब की राय है और मैं उनसे सहमत हूँ। क्योंकि वह सलाजार और उसके स्वभाव के बारे में ज़्यादा जानते हैं। इसलिए, उन्होंने यह उम्मीद भी जताई है कि अगर यह ताकत सच में सलाजार की है, तो कम से कम मेरी जान को खतरा नहीं है, क्योंकि वह स्वभाव से दयालु, ईमानदार और बहादुर आदमी है। और वह ऐसे लोगों का सम्मान करता है। और मैं भी स्थिति को उसी नज़रिए से देख रहा हूँ। यह शायद तब और साफ़ हो जाएगा जब हम देखेंगे कि इस रहस्यमयी जीव और इस राक्षस कौए की मौत पर क्या रिएक्शन होता है।

"अगर यह सब मान भी लिया जाए, तो हम क्या कर सकते हैं? अगर वह सच में इतना ताकतवर और अजीब है, तो हम उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते।"

" निराश होने की ज़रूरत नहीं है, इस दुनिया में हर प्रॉब्लम का कोई न कोई सॉल्यूशन ज़रूर होता है। लेकिन, यह सोचा जा सकता है कि किडनैप हुई लड़कियों का मून प्रिंस और आपका प्रिंस बाओ डिन एक ही इंसान हो सकते हैं। और इन दोनों पर्सनैलिटी में, जिन्हें हम एक ही मानते हैं, सलाजार के एस्थेटिक नेचर की झलक साफ़ दिखती है। इस बेसिस पर, हम यह पावर सलाजार को दे सकते हैं।

अगर हम आगे बढ़ें, तो पहली प्रॉब्लम आती है: वह कहाँ है? यहाँ हमें एक और बात कॉमन मिलती है: जूलिया ने खान साहब को जो स्टेटमेंट दिया था, उसमें उसने एक ऐसी दुनिया का ज़िक्र किया था जहाँ लूनर डेट्स न होने के बावजूद पूरा चाँद था। वहाँ के घर ओवल शेप के और ट्रांसपेरेंट थे, और इस सपनों के शहर में उतरते समय, उसे पहाड़ों से घिरा एक गड्ढा महसूस हुआ। उसने वहाँ एक आग छोड़ने वाली मशीन भी देखी।

' लेकिन ये तो बस सपने हैं, कौन इन पर यकीन करेगा? कई पागल लोग भी इसी तरह चांद और मंगल ग्रह से आने वाले मेहमानों की कल्पना कर सकते हैं।"

" मैंने कहा है कि साइंस के इस बढ़ते हुए ज़माने में कुछ भी नामुमकिन नहीं है। कल इंसान सोच भी नहीं सकता था कि उसकी आवाज़ आसमान में तैर सकती है और हज़ारों मील दूर तक सुनी जा सकती है। और आज रेडियो ने यह मुमकिन कर दिया है। रिमोट कंट्रोल से उड़ने वाले रॉकेट और भाप से चलने वाले स्टीमर कल शायद किसी पागल आदमी के सपने लगते होंगे, लेकिन आज वे हकीकत हैं। रेडियो से तस्वीरें भेजना, टेलीविज़न से हज़ारों मील दूर की चलती-फिरती घटनाओं को अपनी आँखों के सामने देखना, क्या पिछली सदी का कोई इंसान इन बातों पर यकीन कर सकता था?" --- माधोलकऱ ने उससे पूछा। लेकिन राजी का मन टेलीविज़न की बातों में ही अटका हुआ था।

" मधु, क्या यह मुमकिन नहीं है कि किसी ने टेलीविज़न का कोई और एडवांस्ड रूप इन्वेंट किया हो और वह कहीं दूर से स्क्रीन के बजाय एटॉमिक या रेडियो वेव्स की बीम पर अपनी इमेज दिखा रहा हो?”

"क्या?" मधुकर ने लगभग उछलते हुए कहा। "हो सकता है। यह मुमकिन है। हमें इस बारे में डॉ. झाला से सलाह लेनी चाहिए," मधुकर ने कहा।

"लेकिन इससे भी हमारी प्रॉब्लम सॉल्व नहीं होगी। हमें इसका क्लू कहाँ मिलेगा?" हो सकता है आप इस पेंडेंट के बारे में भूल गए हों, और फिर आपको इस दो फिट की बातें भी याद होंगी। उसने कहा था कि उसके मालिक की पावर हवाओं को कंट्रोल करती है। यह वाक्य प्लेन वाली घटना और रशियन रिएक्टर की तबाही से जुड़ा हो सकता है। आपको ट्रायंड्रम ब्लड क्लाउड्स का केस याद होगा, जिसमें गैस से भरी ट्यूब्स पर एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन रखकर उन्हें बादलों का शेप दिया गया था, लेकिन कहीं-कहीं इलेक्ट्रिक पावर का इस्तेमाल भी दिखता है। इसलिए, इस पावर की डिस्ट्रक्टिव पावर हमारे अंदाजे से कहीं ज़्यादा हो सकती है, वरना ऐसे दावे नहीं किए जाते।

"मुद्दे की बात करें , मुद्दे की।"उसने कहा।

" मैं मुद्दे पर आ रहा हूँ।--- माधोलकर ने अपना गिलास पानी से खाली किया और हाथ पोंछे।

" इस 21/2 फुट के आदमी ने यह भी कहा कि इस दुनिया में उसका अपना चांद निकलता है , इस वाक्य का ज़रा सोचिए और देखिए।मिस जूलिया का डिस्क्रिप्शन और इस बात में एक समानता है। "

"चलो मान लेते हैं, लेकिन इसका क्या मतलब है?"

" इतनी बड़ी और गहरी घाटियाँ: और गहरी घाटियाँ सिर्फ़ हिमालय की तलहटी में ही मिल सकती हैं? वहाँ ऐसी जगहें हैं जहाँ अगर पूरा शहर भी बस जाए, तो वह नज़रों से ओझल ही रहेगा --- माधोलकर ने कहा।

"यह कोई नई बात नहीं है, सरकार पहाड़ी जनजातियों पर पूरी तरह से कंट्रोल नहीं कर पा रही है, इसका एकमात्र कारण यह है कि उनके रहने की जगह ढूंढना मुश्किल है।"

"तो फिर वहां एक सपनों का शहर हो सकता है।"

राजी ने कहा, "इतने सारे सबूत अकेले काफी नहीं होंगे।"

" आपको शायद पता न हो, लेकिन ठंडे मौसम में रहने वाले पहाड़ी पक्षियों, खासकर कौओं के शरीर पर पंखों के साथ-साथ काफी बड़े रोयें होते हैं, और इस बाज जैसे कौए के शरीर पर भी काफी बड़े रोयें थे ।

"मैं कौओं का एक्सपर्ट नहीं हूँ," राजी ने व्यंग्यात्मक लहजे में जवाब दिया।

" अगर हम कल प्लेन का इंतज़ाम कर पाए, तो हम ऐसी ही दुनिया की तलाश में निकल पड़ेंगे। जहां आर्टिफ़िशियल चांद चमकता है।

"एक बनावटी चाँद?" राजी ने पूछा।

" इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। अमेरिकी लोग कब से आर्टिफिशियल चांद बना रहे हैं? और शायद एक या दो साल में वे इसके साथ एक्सपेरिमेंट करना शुरू कर देंगे।"

"तो फिर इस लॉकेट का क्या किया जाए?"

" तुम्हें किसी तरह वह पेंडेंट पाने की कोशिश करनी चाहिए, या कम से कम शाहिना के पास रहकर देखना चाहिए कि पेंडेंट के साथ क्या होता है।"

" और यह इस तरह से मुमकिन नहीं है। मुझे अपना भेस बदलना होगा और मेकअप करना होगा।

" तो फिर ऐसा ही करो, मैं तब तक डॉ. झाला से मिल लेता हूं। --- यह कहकर मधुवलकर खड़े हो गए।

" तो फिर वो बक्स?"

"उसकी चिंता मत करो, वह सुरक्षित रहेगा।"

"तुम जनों , मुझे डर है कि आज रात फिर कुछ ना कुछ होने वाला है।"

"ओखली में सिर दे कर मूसलों से डरना मूर्खता है।"

राजी ने कोई जवाब नहीं दिया. वह भी चुपचाप खड़ा हो गया. ड्राइंग रूम का जब दरवाज़ा खोला गया तो लोबो बाहर था।

" कॉफी ठंडी हो गई है, साहब । --------उसने कहा।

"तो गर्मी भी हो जाएगी " यह कहकर माधोलकर ड्रेसिंग रूम में चले गए।

☆☆☆

302

चाँद का शहर

जब सार्जेंट बाले ने अपनी आँखें खोलीं, तो वह उन्हें बहुत देर तक अपनी आँखें मलता रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह किस दुनिया में है। सबसे पहले, उसकी नज़र अपने कपड़ों पर पड़ी, वे हरे थे। और वे निश्चित रूप से वैसे नहीं थे जैसे वह अपने आस-पास पहनता था। वह इन कपड़ों में पीटर पैन जैसा लग रहा था। और जब उसने चारों ओर देखा, तो बात साफ़ हो गई। अगर यह सपना नहीं था, तो वह किसी दूसरी दुनिया में होगा।

" हो सकता है कि ...?

वह उन चारों लड़कियों के चेहरों को ध्यान से देखने लगा। वे बहुत खूबसूरत और गोरी-चिट्टी जवान लड़कियाँ थीं। उन्होंने उसे चारों तरफ से इस तरह घेर रखा था कि उनके

मुलायम और नाज़ुक शरीर का स्पर्श उसे ब्लड प्रेशर का मरीज़ बना रहा था और देने वाले का दिया हुआ तोहफ़ा ही काफ़ी था। उसे लगा कि वह एक नाव में बैठा है, जिसके दोनों तरफ़ एक बड़े से बाज़ के सफ़ेद पंख लगे हुए थे। यह नाव खुले चाँद के साथ आसमान में हवा में ऐसे चक्कर लगा रही थी, जैसे मोमबत्ती के चारों ओर तितली। जहाँ तक नज़र जाती, चाँद की ठंडी, आधी सुनहरी, आधी ट्रांसपेरेंट रोशनी ने एक रोमांटिक माहौल बना दिया था। इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, उसने नीचे भी देखा। नीचे पीली रोशनी थीं। उसे एक बहुत बड़े मैदान में बिखरे हुए बहुत सारे अंडे दिख रहे थे, जो हल्की पीली रोशनी से रोशन थे। धरती का कुछ हिस्सा काला भी नज़र आया । वह या तो जंगल था या पेड़। यह पाताल लोक लंबाई और चौड़ाई में लगभग एक मील तक फैला हुआ था, जो चारों तरफ़ पहाड़ों से घिरा हुआ था।

पहाड़ दीवारों की तरह थे , और उसे हैरानी हो रही थी कि चांद दूर भी नहीं लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे आसमान में एक हांडा लटका हुआ है और वह बहुत धीरे-धीरे एक ही दिशा में बह रहा है। इतना धीरे कि सेकंड की सुई को उसकी स्पीड महसूस नहीं हो रही थी।

यह सब देखकर, उसने फिर से नाव देखि जो चाँद से बहुत नीचे थी, लेकिन उसके चारों ओर उड़ रही थी। उसकी उड़ान से बिल्कुल वैसी ही आवाज़ आ रही थी जैसे कोई बड़ा पक्षी उड़ रहा हो। इस अजीब जगह, अजीब नज़ारे और अजीब हालात में उसे तुरंत अपना सारा अतीत या वर्तमान याद नहीं आ रहा था। बल्कि, इस माहौल के साइकोलॉजिकल असर ने उसके मन में एक नया विचार पैदा किया।

वह दुर्घटना, जो ज़ोराक कैसल में हुई।

और डर के मारे वह अपनी छाती और सिर टटोलने लगा।

" कहीं मैं मर तो नहीं गया ," वह बुदबुदाया। इस पर लड़कियाँ ज़ोर से हँस पड़ीं और उसने बारी-बारी से उनमें से हर एक की शक्ल देखने लगा ।

"क्या तुम आज मरे हो ?" एक लड़की ने हंसते हुए कहा।

"अरे, मारे हुये तो चौदह सौ साल हो चुके हैं , पूरे चौदह सौ ।" दूसरी लड़की ने हाथ से इशारा करते हुए कहा।

"चौदह सौ साल?" वह चौंक गया। "यह कैसा मज़ाक है?"

"इस दुनिया में कुछ भी मज़ेदार नहीं है।"

"तो यह कौन सी दुनिया है?"

"चाँद और तारों की दुनिया

" मतलब है आकाश?"

एक खूबसूरत लड़की उसकी तरफ झुकी और मुस्कुराई।

"तो क्या मैं चौदह सौ साल बाद जाग गया हूँ?"

"नहीं, तुम इस स्वर्ग में तो आज ही आये हैं।"

"हाए ..एं , अरे, तो इससे पहले मैं कहाँ भाड़ झोंक रहा था ?" उसने एक लड़की की आँखों में देखा और रोमांटिक लहज़े में कहा। वह लड़की हँस पड़ी , और उनकी फ़्लाइंग बोट ने चाँद के पास एक चक्कर लगाया और दूर निकल गई।

"तुम्हें अपने गलत कामों की सज़ा मिल रही होगी।"

"कौन , मैं ? हाँ, उन्हें नरक में भेज दो - बुरे लोग तो अपने IG, सुपरिटेंडेंट, वगैरह हैं। मैं उनके हुक्म का गुलाम था , जहाँ चाहा वहाँ रख दिया। अगर भगवान ने चाहा, तो वे सब नरक में जाएँगे।"

"इस दुनिया में हर कोई दूसरों को ऐसा ही कहता है।

"पहले मुझे बताओ कि मैं अभी किस आसमान में हूँ?"

"आप पृथ्वी की आठवीं परत में हैं।

"यह उल्टा मामला कैसे है? स्वर्ग और बाकी सब कुछ आसमान में हुआ करता था।"

"वह समय बीत चुका है, अब तो यहीं सब कुछ है ।"

"अच्छा, मुझे बताओ, मैंने कौन से अच्छे कर्म किए थे जिससे मुझे यह दिन देखने को मिला?

"तुम पूरी ज़िंदगी कुँवारे रहे।"

"इसीलिए मैं यहाँ हूँ। अरे, वाह-देने वाले, इस बार, फिर से कुँवारा ही पैदा करना ।"

उसकी बात सुनकर उनमें से दो लड़कियां ज़ोर से हंस पड़ी , जबकि बाकी उसे दिलचस्प नज़रों से देखते रहे।

"ठीक है, एक और बात बताओ?"

"क्या?" चारों ने एक साथ पूछा।

"क्या आप लोग मेरे कोटे में टेम्पररी हो या परमानेंट ?"

जवाब में, उन्होंने एक-दूसरे के चेहरे देखे। फिर उन्होंने अपना मुंह बिसूर लिया और रोन शुरू कर दिया । और बाले आँखें फाड़ फाड़ कर उन्हें देखने लगा।

"अरे, अब मैं फिर से मरने वाला थोड़े ही हूँ, जो तुम रो रही हो।

"नहीं, यह बात नहीं है। --उन्होंने एक साथ आँखें मलते हुये कहा।

"तो, क्या आपके किसी रिश्तेदार की मौत हो गई है? लेकिन स्वर्ग में रिश्तेदार कहाँ से आए?" उसने खुद से ही पूछा।

"हम इसलिए रो रहे हैं क्योंकि तुम हमें छोड़ कर चल दोगे।"

"इस वफ़ादारी के बारे में क्या कहने हैं ? अरे, तुम्हें कौन छोड़ेगा कौन कमबख्त ? अगर मुझे दो-चार दर्जन और मिल जाएं, तो मैं उन्हें भी कबूल कर लूंगा।"

"नहीं, यहां का रिवाज है कि कुछ दिनों तक खूब मौज-मस्ती करने के बाद आदमी को बकरा बना दिया जाता है।

"बकरा? लेकिन हमारे मौलवी ने तो कभी ऐसा नहीं कहा।"

"वे ज़रूर किसी दूसरे स्वर्ग के होंगे।"

"हाएँ , ये नहीं पता था कि तुम लोगों से मिलने के अदले में .... औंहहन ...।बदले में मुझे बकरा बनाना पड़ेगा । ”

"वह तुम्हारा इम्तिहान होगा, अगर तुम इसे सफलतापूर्वक पास कर लोगे, तो हम हमेशा के लिए तुम्हारे ।"

"अच्छा , बस इतना ही। ठीक है, ये बात फिर से कहो।"

" हम तुम्हारे रहेंगे .

"अब मैं आप लोगों को क्वार्टरली एग्जाम से लेकर एनुअल एग्जाम तक सब कुछ देने के लिए तैयार हूँ। बताओ, कौन सा होगा? BA का MA या BLLB का?"

"जो भी होगा, लोग खुद ही देख लोगे।" वह मुस्कुराने लगीं ।

लेकिन उसी समय, बहुत नीचे, एक बड़े चमकते गुंबद से रोशनी निकली, जो टिमटिमाकर नाव पर पड़ी।

"चलो, वापस जाने का समय हो गया है। --उन्होंने एक-दूसरे से कहा।

और इसके साथ ही नाव धीरे-धीरे नीचे उतरने लगी। वह एक चौकोर खेत में उतरी, जिसके चारों तरफ गोल गुंबद जैसे घर थे। उनकी ऊंचाई अंडाकार थी। जब वह ज़मीन को छूने लगी। उस समय बाले ने देखा कि खेत में एक कार खड़ी थी, जिसके बगल में 2 , 2.5 फीट का एक छोटा आदमी खड़ा था । बाले उसे सिर से पैर तक ध्यान से देखने लगा ।

"क्या तुम इस जन्नत के चिलगोजे हो?" उसने छोटे आदमी से पूछा।

"मुझे डॉक्टर कोबी कहा जाता है। मैं MD हूँ और मेरी उम्र तुम्हारे आदरणीय पिता से दस साल ज़्यादा होगी। इस छोटे आदमी ने बहुत अच्छे से जवाब दिया।

बाले ने उसका हाथ पकड़ा और उसे ऊपर उठाया और ध्यान से देखा।

"मिस्टर और तुम्हारे पापा यकीन से दो फीट के म्रहे होंगे ।" बाले ने एक उंगली से उसका नाक मरोड़ा। जवाब में, वह सिर्फ़ मुस्कुराया। बाले ने उसे फिर से नीचे उतारा, लेकिन जब उसने कार में जोते गए कुत्तों को देखा, तो वह चौंक गया। ये कुत्ते किसी तरह डेल डॉल में खच्चरों से कम नहीं थे।

वह पास गया और उन्हें हैरानी से देखा।

"यह क्या बला है?" उसने छोटे आदमी से पूछा।

"हमारे घोड़े," उन्होंने कहा।

"तो उनके पूर्वज कुत्ते ही रहे होंगे।"

"हमारे मालिक ने यह शक्ति कुत्तों को दी है।"

"मालिक ? अबे जनाब बटेर , स्वर्ग में आका और कुत्तों का क्या काम है?"

"वह महान शक्ति इस स्वर्ग पर राज करती है जो रोशनी से निकलती है और उसमें ही समा जाती है ।

"मुझे विश्वास नहीं होता, यह जादूगरों का शहर होगा।"

"आप इसे खुद मान लेंगे ।"

वे लड़कियाँ अभी भी अलग-अलग खड़ी थीं और एक-दूसरे खुसर फुसर कर रही थीं।

"आप बैठ जाइये।" 2 फुट लंबे आदमी ने कार की ओर इशारा किया।

"और ये मेरी चार परियाँ ?"

"ये आपको फिर से मिल जाएंगी ।"

"यानि की अभी अकेला ही ? हाये -- अरे, --वह उन लड़कियों की तरफ पलटा । --लाये थे क्या सर सिकंदर

 क्या ले चले यहाँ से ? उसने उदास होकर कहा, "तो फिर अलविदा, मेरी चार परियों "बाद में मिलते हैं, अगर भगवान ने चाहा।" यह कहकर वह कार में बैठ गया और लड़कियाँ वहाँ खड़ी मुस्कुरा रही थीं।

छोटा आदमी कार में आगे बैठा था।

"अरे भाई, गाड़ीवान, बस एक मिनट," उसने उससे कहा, और उस आदमी ने उसकी तरफ देखा। "क्या तुम्हें देवदास का वह गाना याद है जो उसने बैलगाड़ी पर गाया था?"बाले ने पूछा।

"अरे नहीं।" उसने मासूमियत से सिर हिलाया।

"अच्छा , अगर आप सब्र रखेंगे, तो मैं सादिक बाबू के रतन का अलविदाहिया गा लूँ ?"

जवाब में, छोटा आदमी मुस्कुराती आँखों से उसे देखता रहा, इसका मतलब था कि वह बताए गए तरीके से सब्र रख रहा था।

"भाई, हम तो चले प्रदेस , लगा कर भेस ...।" बाले ने इन लड़कियों को संबोधित करते हुए मसखरे पैन से गाया

और वे सब खिलखिला कर हंस पड़ीं ।

"भगवान तुम्हारी उम्र एक हज़ार साल और बढ़ा दे। तुम लोग कितने बेशर्म हो!हम जुदा हो रहे हैं , और तुम लोग हंस रही हो। चलो भाई, गिठमुठिए ।" उसने उस आदमी से कहा।

"हम समझते थे कि आप काफी समझदार होंगे ।"

“ ओ मिस्टर दो सवा दो फुट, जियादा समझदारी दिखाओगे तो उठा के जेब में दाल लूँगा , पिछले जन्म में मैं पोलिस का सार्जेंट था , समझे ? "

जवाब में, छोटे कद के आदमी की हल्की हंसी सुनाई दी।

" नाना " उन लड़कियों ने एक साथ हाथ हिलाते हुए बात की।

"क्या इस स्वर्ग की परियां भी अंग्रेजी बोलती हैं?" बाले ने आदमी से पूछा।

"यहां सब कुछ होता है," छोटे कद के आदमी ने टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा।

"तुम मुझे कहां ले जा रहे हो?"

" कसरे जमुर्द में (एमराल्ड पैलेस) में “

"क़स्र मुजरद? यह क्या बला है?"

"माननीय मेहमान, अब आप लोग चुप रहें तो बेहतर होगा। "

ओह, सुभान अल्लाह, क्या पिद्दी क्या पिद्दी का शोरबा ।

"आप जहां चल रहे हैं, वह बहुत इज्ज़त का स्थान है।

"कौन कौन से इज्ज़तदार वहां होंगे?"

"मैं अब आपकी किसी भी बात का जवाब नहीं दूँगा।"

"अच्छा, तुम ने कहा, 'ये लोग कौन हैं?'"

छोटा आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। बाले ने देखा कि कुत्ते हवा की तरह तेज़ी से भाग रहे थे और जिस सड़क पर गाड़ी चल रही थी, उसके दोनों तरफ कांच के अंडाकार जैसे खाली घर थे। उनमें दरवाज़े थे, लेकिन शायद बंद सड़क पूरी तरह चिकनी और बेदाग दिख रही थी और आसमान में तैरती चांदनी का रिफ्लेक्शन उस पर पड़ रहा था। आगे चांदनी की वजह से सड़क पर कुछ और कारें दिखाई दीं, लेकिन ये बिल्कुल अलग तरह की कांच की कारें थीं जो इस सड़क पर ट्राम की तरह दौड़ रही थीं।

"अरे भाई, यह कुत्ता गाड़ी में हमें ही क्यों जोता गया है ?" बाले ने फिर पूछा.

"आपको सम्मानित किया गया है।"

"क्या सम्मान मिला है। अगर जूते होते तो शायद सम्मान और बढ़ जाता ।"

"चूहे यहाँ हल जोतते हैं । "

"यहाँ क्या हो रहा है? बाले फिर से चौंक गया और उसका मन तेज़ी से अतीत को खंगालने लगा। उसे उन लड़कियों की बातें याद आने लगीं जो न्यू इंडिया लॉज में उसके सामने से गायब हो गई थीं। और जिन पर चाँद के सुंदर राजकुमार के प्यार का भूत सवार था। उसे उस लड़की, मिस जूलिया की बात भी याद आई, जो उसने सुनी थी। और जो उसने खुद खान के मुँह से सुनी थी। उसने उत्सुक आँखों से चारों ओर देखा, और एक लंबी

गहरी सांस लेते हुए उसने उस छोटे कद के आदमी को पीछे से पकड़ लिया।

"ओ मिस्टर," वह चिल्लाया।

"मुझे बहुत भूख लगी है, मैं तुम्हें कच्चा खा जाऊंगा ।" बाले ने उसे उठा लिया।

"अरे, अरे, क्या तुम पागल हो गए हो आप ?"

हाँ। इस अजूबों की दुनिया में, एक अच्छा आदमी पागल हो सकता है, मुझे तो बस भूख लगी है।

"आप जहां चल रहे हो, वहाँ सब कुछ मिलेगा।"

"मैं उम्मीदों का हलवा नहीं खाता। मुझे इंसान का मांस जियादा स्वादिष्ट लगता है।"

"आपको इसका पछतावा होगा।" उसने संघर्ष किया और उसकी पकड़ से छूटने की कोशिश की।

"मैं डकार लेने के बाद इसके बारे में सोचूंगा।"

"ए बी... ए बी."-- छोटे कद का वह आदमी ज़ोर से चिल्लाया. बाले उसकी बातों का मतलब तो नहीं समझ पाया, पर इतना तो समझ गया कि वह किसी को बुला रहा है. और उसी पल उसके हाथों की पकड़ ढीली हुई, जब एक डरावनी आवाज़ के साथ एक अजीब सा जीव साइड से निकलकर कार के सामने आ गया. बाले के फ़रिश्ते कूच कर गए. वह कम से कम नौ दस फ़ीट का कोई इंसानी बच्चा था, जो किसी पहलवान की तरह फूला हुआ था. बाले हैरानी से उसे देखने लगा. फिर उसे भी हँसी आई जब उसने देखा कि उसके मुँह में एक बड़ी सी दूध की बोतल है, जिसे वह एक हाथ से पकड़े हुए था और गोल-गोल आँखें करके उनके सामने खड़ा था. कार रुक गई थी और कुत्ते (घोड़े) इस दस फ़ीट के भीमकाय बच्चे को देखकर उसके पैर चाटने लगे थे. उनकी दुम हिलने लगी थी.

इस दस फ़ीट लंबे बच्चे के चेहरे पर न तो दाढ़ी थी, न मूंछ, और न ही जवानी का कोई निशान. बाले को अपनी खोपड़ी के सारे पेंच ढीले लगने लगे थे .

इस 2 फुट के आदमी को देखकर उसने अंदाज़ा लगाया था कि बौनों की कोई नस्ल होगी। इसी तरह, इतने बड़े कुत्ते भी कहीं पैदा हुए होंगे। उड़ने वाली नाव का आविष्कार किसी दूसरी दुनिया में हुआ होगा, लेकिन यह बच्चा? और वह भी एक नवजात। गायब हुई लड़कियों के बताए अनुसार, पहले तो उसने उनके बताए स्थान को कोई दूसरा ब्रह्मांड समझा था, लेकिन इस अजूबों के शहर के ऊपर आसमान में एक और चांद को तैरते देखकर उसके मन में यह बात पक्की हो गई कि वह चांद की दुनिया यहीं रही होगी और वे लड़कियां भी।

"अब अगर तुमने मुझे परेशान किया तो यह एटॉमिक बच्चा तुम्हारी हड्डी पसली तोड़ देगा," छोटे कद के आदमी ने उसकी पकड़ से छूटते हुए कहा।

" एटॉमिक बच्चे ? तो क्या यह एटम का शहर है?"

" काफी देर बाद समझ आया। वह मुस्कुराया।

"ठीक है, मैं तुम्हें और नहीं चिढ़ाऊँगा। बाले ने हार मान ली थी। इस पर, छोटे कद के आदमी ने अपनी जेब से एक गोल चीज़ निकाली, यह एक फल था, लेकिन इसका छिलका चमकदार था। आदमी ने इसे नए जन्मे बच्चे को दिखाया और एक तरफ फेंक दिया, और बच्चा उसके पीछे भागा, वो ज़ोर-ज़ोर से हँस रहा था। जब बच्चा मुड़ा, तो लड़के ने देखा कि उसकी पीठ पर अंग्रेज़ी में '.A.B' लिखा था। उसने दाँत भींच लिए, लेकिन उसे और भी हैरानी हुई जब कार एक चार दीवारों वाली बिल्डिंग के पास से गुज़री जिसमें एक गोल मेहराबदार दरवाज़ा था और उस पर चमकीले अक्षरों में लिखा था, 'एटमी चाइल्ड ब्रीडिंग फ़ैक्टरी'।

"यहाँ क्या होता है?" इस बार बाले ने उससे बहुत नरम लहजे में पूछा।

" एटॉमिक बच्चे यहाँ पैदा होते हैं।"

312

"क्या? "बाले का मुंह खुला रह गया। उसे इन अजीब चीज़ों से मज़ा आ रहा था।

"यह कैसे?" बाले ने पूछा।

"मांओं को न्यूक्लियर डस्ट फर्टिलाइजर से बने खाने पर पाला जाता है, जिस पर रेडिएशन का असर होता है। फिर उन्हें ट्यूब के ज़रिए प्रेग्नेंट किया जाता है और इस फैक्ट्री में ले जाया जाता है। उनके बच्चे यहीं पैदा होते हैं। और यहीं उन्हें न्यूक्लियर खाना खिलाया जाता है।

"तो यह बच्चा कितने साल का था?"

"केवल ढाई साल का "

"क्या? बाले को यकीन नहीं हुआ। --"और तुम्हारी उम्र?"

“75 वर्ष"

"हाँ, न....नामुमकिन " बाले बड़बड़ाया । "तुम सिर्फ़ पांच बित्ते के हो। यहाँ तक कि मुझे आधा लेटकर तुमसे बात करनी पड़ती है।"

"यह रोशनी के इंसान की इच्छा है। अपनी अजीब और अनोखी फैक्ट्रियों में , वह जिसे चाहता है कम कर देता है, और जिसे चाहता है बढ़ा देता है, ।"

"यह रोशनी का इंसान कौन है?"

"अब मुझसे कुछ मत पूछो। मैं पूरी तरह से मूर्ख हूं जो तुम्हें यहां कि बातें बता दीं।

"क्या तुम उसे नहीं जानते?"

"मैं अब एक शब्द भी नहीं कहूंगा।"

313

इस बीच, उनकी कार ऊपर कि ओर चढ़ने लगी। दोनों तरफ के गुंबदों के बीच से गुज़रते हुए, वे एक बहुत ऊँचे और सुंदर मार्बल के मेहराबदार दरवाज़े पर रुके। यहाँ, उन्होंने दरवाज़े पर कई खूबसूरत जोड़ों को टहलते हुए देखा।

बाले इस 2 फुट के आदमी के कहने पर कार से बाहर निकला। जैसे ही वह उसके नीचे गया, वह छोटा आदमी कार लेकर वापस चला गया और वह सोचने लगा कि अब उसे क्या करना चाहिए,

लेकिन इसमें ज़्यादा समय नहीं लगा। क्योंकि उसी समय, काले चमकदार कपड़े पहने दो आदमी अंदर से बाहर निकले। उनके हाथों में अनजान डिज़ाइन की छोटी पिस्तौलें थीं। उन्होंने बाले को दोनों तरफ से घेर लिया।

उनमें से एक ने कहा, "सार्जेंट, मालिक आप का अंदर इंतज़ार कर रहे हैं।"

"किस तरह का इंतज़ार? कौन इंतज़ार कर रहा है..?" बाले ने पूछा।

"और हमें किसी भी सवाल का जवाब देने का कोई अधिकार नहीं है।"

"तो फिर मैं भी नहीं चलता।" बाले पीछे मुड़ने को हुया

"हम हर तरह से इस महान आत्मा की हर आज्ञा का पालन करते हैं। दूसरे ने उत्तर दिया गया।

"क्या मैं यहां कैदी हूं या मेहमान?" बाले ने पूछा।

हमें कुछ नहीं पता। " --पहले वाले ने गंभीरता से कहा।

"तुम जाओगे , आपको चलना ही है ," दूसरे ने आदेश देने वाले लहजे में कहा।

"और अगर मैं नहीं गया तो?"

☆☆☆

महान सलाज़ार

315

जवाब में, उस आदमी ने अपनी पिस्तौल जैसी चीज़ एक सफ़ेद पत्थर के चबूतरे पर तान दी और उसका बटन दबा दिया। एक चटकने की आवाज़ के साथ, आसमानी रोशनी की एक मोटी लहर उसके पिस्तौल के होल से निकलकर चबूतरे पर गिरी और उसके टुकड़े उड़ गए।

बाले समझ गया कि इसका क्या मतलब है। और चुपचाप उसके पीछे चला गया। अगर इस अजूबों की दुनिया में अभी हालात ठीक नहीं होते, तो वह कहीं भी खत्म हो सकता था। खान ने जो दलीलें बताई थीं, वे उसके कानों में गूंज रही थीं और वह उनके बीच चलते हुए सोच रहा था कि अगर यह सच में किसी महान साइंटिस्ट का बनाया हुआ खेल है, तो यह खेल कभी बहुत भयानक मोड़ ले सकता है। अब वह एक बड़े गोल हॉल से गुज़र रहा था जिसका फ़र्श चाँद या चांद के रंग का चमकदार था, जिसके बीच में सफ़ेद खंभे इतने ऊँचे उठे हुए थे कि जब उसने ऊपर-नीचे देखा, तो उसे इन खंभों के सिरे अपने सिर के ऊपर नीले आसमान में गायब होते दिखे। आसमान में एक चाँद चमक रहा था और कई तारे घूमते हुए दिख रहे थे। मन ही मन वह कभी अपनी किस्मत को कोसता, कभी इस महान शक्ति की अद्‌भुत शक्तियों की तारीफ करता, और कभी इसे एक सपना या जादुई खेल समझकर टाल देने कि कोशिश करता वह दोनों के बीच में चल रहा था। रास्ते में जब कोई रेशमी कपड़ा उसके पास से गुज़रता तो उसकी खुशबू से उसका मन चौंक जाता। वह आँखें फाड़कर इन खूबसूरत लड़कियों को देखता और थोड़ा रुकता तो फिर गार्ड पकड़ आकर आगे ले जाते ।

कुछ देर बाद, वह एक हॉल में खड़ा था जहाँ उसने गोल सीटों के दोनों तरफ जाने-पहचाने चेहरे देखे। जिस आदमी ने उसे देखा, वह उसकी तरफ बढ़ा।

316

सुपरिटेंडेंट खान वहाँ थे। सिल्वाना भी वहाँ थी, और डॉ. पैरट के अलावा, उसने उन सभी साइंटिस्ट को देखा जिनसे वह साइंटिस्ट कैंप में मिला था। इस हॉल में रोशनी चारों ओर ऊपर नाच रही आग की लपटों की वजह से थी।

"तुम कहाँ गायब हो गए?" खान ने लड़के से पूछा।

"तो आप भी यहाँ हैं?"

हां, हम इस महान शख्सियत के मेहमान हैं, जिनके शक्ति प्रदर्शन ने तहलका मचा दिया है ।

"तो, क्या अंगूठी वाला वो आदमी ....? बाले कहता कहता रुक गया

"हाँ, लेकिन तुम .....”

"मुझे एक उड़ने वाली नाव में स्वर्ग की सैर कराई जा रही थी, जो चांद के चारों ओर उड़ रही थी। मेरे साथ चार लड़कियाँ थीं।

"मैंने यह नाव देखी है। यह एक नए तरह का हेलीकॉप्टर है, जो न्यूक्लियर पावर से उड़ता है।"

"और वो चाँद? वो परियाँ?"

"शायद तुम उस अजीब जीव को भूल गए हो जो नीले रंग कि रोशनी में एक बार पैदा हुया था ।मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि विज्ञान इतने बड़े काम कर सकता है।"

"तो यह इतना बड़ा अलिफ-लैला का संसार क्यों बनाया गया है?"

"शायद वह इसी तरह अपने एक्सपेरिमेंट पूरे कर रहा है।"

"लेकिन हम कहां हैं?

और शायद हिमालय की तलहटी में।

"आप कैसे जानते हो?"

"इस तरह की घाटियाँ हिमालय की तलहटी को छोड़कर कहीं भी नामुमकिन हैं, जहाँ एक पूरा न्यूक्लियर शहर बनाया जा सकता है। और फिर भी वे सालों तक बाकी दुनिया से कटे रहे और आम इंसानों की नज़रों से छिपे रहे।"

जब वे बात कर रहे थे, तो वे इन दो कुर्सियों की तरफ आए, जो अब तक खाली ही थीं । वो वहीं बैठ गये ।

"अब आप किसका इंतज़ार कर रहे हैं?"

"इस अनजान जीव का, जिसके हम मेहमान हैं।

लेकिन इससे पहले कि बाले कुछ कह पाता, कुछ चटकने की आवाज़ें सुनाई दीं और हॉल में एक अजीब सी आसमानी रोशनी फैलने लगी। यह रोशनी हॉल की दीवारों से निकल रही थी। फिर एक बहुत ही प्यारी म्यूज़िक की हल्की लहरें हवा में गूंजने लगीं और उसी पल, पता नहीं कहाँ से, इन दीवारों और खंभों के पीछे से, ढाई से साढ़े तीन फ़ीट लंबे कई छोटे-छोटे आदमी बाहर आ गए। वे हॉल के उत्तरी छोर पर बने सेमीसर्कल के आकार के प्लेटफ़ॉर्म के सामने अपने पैर मज़बूती से जमाए खड़े हो गए थे। गूंज बढ़ती जा रही थी। और हालाँकि खान उस समय भी पूरी तरह शांत दिख रहे थे, लेकिन इन साइंटिस्ट और उनके साथियों के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं। उसी पल, उस छोटे से जीवों ने अपनी पतली आवाज़ में स्वागत का गाना गाना शुरू किया और हॉल में बने उत्तरी प्लेटफ़ॉर्म पर रोशनी का रिफ़्लेक्शन बढ़ता गया। हॉल में, पतली आसमानी लहरें छत की ओर तैर रही थीं, जैसे स्पेस में तैरते हुए चमकीले नीले कीड़े। फिर, बढ़ती गूंज के साथ, उनकी आँखें चौंधिया गईं। कोई भी इस रोशनी पर अपनी नज़रें नहीं टिका पा रहा

था। फिर, जैसे ही उन्होंने देखा, रोशनी की चादर से एक बड़ी सिंहासन जैसी कुर्सी की आउटलाइन दिखने लगी, जिस पर एक आग जैसा जीव बैठा था। अब तक, वे सिर्फ़ उसकी चमकदार आउटलाइन ही देख पा रहे थे। वे सभी छोटे जीव श्रद्धा से उसके सामने झुक गए और

संगीत की लहरें तेज़ हो गईं। फिर वह साफ़ दिखाई देने लगा। वह बहुत सुंदर लेकिन चमकदार इंसान था।

वे सभी साइंटिस्ट हैरान होकर खड़े हो गए, लेकिन खान अपनी जगह पर ही रहा। वह उसे बहुत ध्यान से देख रहा था, और बाले भी।

"ये कौन जनाब हैं, है ?" बाले ने खान से पूछा।

"अभी पता चल जाएगा ।"

इस बीच, उसका वजूद और साफ़ होता गया। रोशनी धीरे-धीरे कम होने लगी और अब वह साफ़ दिखाई दे रहा था। इस सिंहासन जैसी कुर्सी पर चारों तरफ़ बटन थे। और सिंहासन पर बैठा हुआ वो आदमी ..... ?

" सलाज़ार "---खान के मुंह से निकला था।

"अरे, सच में, "---बाले की आँखों से भी हैरत टपकने लगी

शायद दूरी के बावजूद उनकी आवाज़ें उसके कानों तक पहुँच गईं। उसने उन्हें देखा और मुस्कुराया

"मैं अपने मेहमानों का स्वागत करता हूँ। उसकी भारी, गूंजती आवाज़ सुनाई दी , -- तशरीफ रखें ।
"

वे सब बैठ गए। खान ने अमेरिका में सलाज़ार का जो रूप देखा था, वह अच्छी तरह याद था। उसे पहचानने में उसने कोई गलती नहीं की थी। फिर वह भी अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

फिर सलाज़ार ने कुर्सी मे लगा एक बटन दबाया, और दीवार में एक तरफ एक गैप दिखाई दिया, और डॉ. पटेल बाहर निकले। उन्होंने एक चमकदार सूट पहना हुआ था और काफी थके हुए लग रहे थे। सलाज़ार को देखते ही वह घुटनों के बल गिर पड़े।

उन्होंने विनम्रता से कहा, "हे महान वैज्ञानिक, हम आपको सलाम करते हैं।"

"साइंटिस्ट?" दूसरे साइंटिस्ट चौंक गए।

"शायद आपको लगता है कि मैं कोई सुपरनैचुरल चीज़ हूँ या किसी दूसरी दुनिया का आदमी हूँ।--- सलाजार मुस्कुराया। -----बिलकुल भी नहीं , लेकिन मेरा एक पुराना दोस्त है, वह जानता है कि मैं कौन हूँ।
यह कहते हुए उसने खान की तरफ मुस्कुराते हुए देखा।

"क्या मैं बताऊं? बाले ने एक स्कूली छात्र की तरह अपना हाथ उठाया।

"बदमाहस लड़के , तुम नहीं ।"

डॉक्टर सलाजार---------- और अचानक खान खड़े हो गए। "आज, पहली बार, मैं आपकी महानता को मान रहा हूँ। जब तुम शुरू के कुछ एक्सपेरिमेंट में फेल हो गए थे , तो मुझे नहीं पता था कि आपकी काबिलियत इतनी बड़ी है। इतनी बड़ी.....।" खान की बातें दूसरों को हैरान करने लगीं। उनमें से कुछ ने ही अमेरिका में किसी से डॉ. सलाजार का नाम सुना था, लेकिन उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि उस ज़माने का कोई आदमी इतना महान बन सकता है।

"ओह... वो सब मेरी जल्दबाजी का नतीजा था।-- सलजार मुस्कुराया।

"उस समय मेरे एक छोटे से एक्सपेरिमेंट ने आपको हैरान कर दिया था ।- वो फिर कहने लगा -- लेकिन मैं यहाँ आपको खाली हाथ वापस नहीं जाने दूँगा । मैंने आपको यहां इसलिए बुलाया है ताकि मैं आपको साइंस की उस असीम ताकत की एक झलक दिखा सकूं, जिसका एक बहुत छोटा सा हिस्सा, यानी उस एटमी ताकत का , आप अब तक खोज पाए हैं।

सलाज़ार की इन बातों पर उनके चेहरों पर खुशी और संतुष्टि की लहर दौड़ गई। वे सब उत्साहित थे। वे पूरी तरह से मंत्रमुग्ध थे।

"मेरा नियम है कि जब तक कोई मुझे छेड़े नहीं, मैं अपनी शक्ति से किसी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता। मैंने अपने एंटी-ग्रेविटी (एंटी-ग्रेविटी, सुपर-मैकेनिकल, सुपर-मैग्नेटिक) कोस्मीक ऑर्गन को एक अमेरिकन प्लेन को हवा में लटकाकर टेस्ट किया था, लेकिन

इस एक्सपेरिमेंट को समझने की कोशिश करने के बजाय, रूसी साइंटिस्ट ने एक पावरफुल रेडिएशन रिएक्टर से इसकी रेंज तोड़ने की कोशिश की। मैं मानता हूँ कि मेरे रूसी मेहमान काफी एडवांस्ड हैं, लेकिन शायद उन्हें यह नहीं पता कि उनके सिर्फ पुराने एक्सपेरिमेंट के उलट, मैं दो सौ बरस से डायरेक्ट सोलर पावर पाने की कोशिश कर रहा था।

"दो सौ बरस से ? बाले हैरान रह गया।

"बदमाश बच्चे बड़ों के मामलों में दखल नहीं देते।" सलाजार का जवाब था। --- एक समय ऐसा आ रहा है जब इंसान साइंस के ज़रिए अपनी ज़िंदगी को दोगुना या तिगुना करना सिर्फ बेवकूफ़ी नहीं समझेगा। --------वह एक बूढ़े टीचर की तरह समझाने लगा। उसका लहज़ा बहुत नरम था और वह अपनी सीट पर शान से बैठ गया। ----------जीवों में एटॉमिक एनर्जी का थोड़ा सा हिस्सा मिलाने से इंसान की ज़िंदगी का समय बढ़ जाता

है, लेकिन उनमें सिर्फ़ वही एटम मिलाए जाते हैं जो ज़िंदा रहने और विकास के लिए ठीक हों।

और खान ने देखा कि दूसरे साइंटिस्ट बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी जेब से कागज़ के टुकड़े निकालकर पेंसिल और पेन से उन पर नोट्स बनाने लगे। पहली नज़र में हॉल एक स्कूल रूम जैसा लगने लगा। सलाजार मुस्कुराया।

"मैंने तो सिर्फ़ फ़ॉर्मूला दिया है, आओ और इसे खुद काम का बनाओ। इसे काम का बनाना तुम्हारा काम है। हाँ, मैं तुम्हें बताऊँगा कि ऐसे एटम को जीवों में शामिल करना, उन्हें पोषण देने वाले पानी को सूरज की सीधी किरणों की भट्टी में डिस्टिल करने के बाद किया जा सकता है। यह पानी मरकरी जितना भारी हो जाता है। मैं अब तक सिर्फ़ एक ऐसी भट्टी बना पाया हूँ, जो मेरे साथ जाएगी।"

" कहाँ जाएगी ?" खान ने पूछा, क्योंकि उसे इस साइंटिफिक सब्जेक्ट में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी।

"यह बाद में पता चलेगा।" उसने उसे जवाब दिया और फिर दूसरों की तरफ मुड़ा। "तो मैं कह रहा था कि अगर रूसी वैज्ञानिकों ने मेरे नुकसान न पहुँचाने वाले एक्सपेरिमेंट को समझने की कोशिश करने के बजाय उस पर हमला नहीं किया होता, तो मैं उन्हें सबक सिखाने के लिए उनके रिएक्टर नष्ट नहीं करता।"

"तो क्या आप वहाँ मौजूद थे? -------बाले ने फिर से पूछने की हिम्मत की। इस इंसान के नरम और मजाकिया रवैये से वह काफी फ्रैंक हो गया था। उस समय भी उसके दिमाग में पुराना सलाजार मौजूद था, जो अपनी गलती सुधारने के लिए पुलिस से दूर भागता था, लेकिन खान समझ गया था कि उस समय के सलाज़ार और इस सलाज़ार के बीच दुनिया भर का फरक है । उस समय वह अपनी खोई हुई पहचान वापस पाने की चिंता में बाकी सब चीजों से बेखबर था, लेकिन आज का सलाज़ार, जिसने अपनी खोई हुई पहचान वापस पा ली थी और अपनी साइंटिफिक ताकत को ऑर्गनाइज कर लिया था, अगर वह चाहता तो पूरी दुनिया के लिए एक बड़ा खतरा बन सकता था। यह और बात

थी कि उसका दिमाग साफ विचारों, ऊंचे आदर्शों, घमंड और जलन से मुक्त था, वरना उसकी ताकत का एक भी प्रदर्शन साइंटिस्ट्स की सारी ताकतों को बेकार कर देता।

"क्या आप देखना चाहते हैं कि मैं वहां कैसे था? -------सलाज़ार अपनी सीट से खड़ा हो गया, उसका शरीर अभी भी रेडिएशन से ढका हुआ था।

"वह कासमिक प्रोटेक्ट तरंगों के शेल में है।" एक रूसी साइंटिस्ट खान की तरफ झुका और धीरे से कहा। "इस समय, अगर कोई उसे नुकसान पहुंचाना चाहे, तो एटमी तोपें भी उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकते।"

सलाजार प्लेटफॉर्म से कुछ कदम नीचे उतरे और हॉल के बीच में रखे गोल, गुंबद जैसे कांच पर लगे छोटे सफेद बटनों में से एक को दबाया।

वे सब अपनी सीटों पर कांपने लगे। एक झटके के साथ, उन्हें एक अजीब सी गूंज सुनाई दी और जैसे ही उन्होंने देखा, हॉल के सफेद खंभे नीचे की ओर खिसकने लगे।

"यह हॉल ऊपर की ओर उठ रहा है। बाले ने खान से कहा।

"चुप चाप बैठे रहो ।" खान ने अपनी सीट के दोनों हाथों को कसकर पकड़ लिया।

उसी समय, एक छोटी बिल्डिंग के साइज़ की, अंडाकार, चमकदार चीज़, सफ़ेद बिल्डिंग से ऊपर उठी, जैसे तोप से निकली गोली। और फिर वह आसमान में वापस उड़ने लगी। इस एटॉमिक शहर में, उस समय जहाँ भी जीव चल रहे थे, वे इस उड़ने वाली चीज़ के सामने झुक गए।

अंडाकार इमारत उस ऊंचाई की तरफ थी जहां बहुत बड़े घेरे वाली एक बड़ी मशीन लगी हुई दिख रही थी। उसका मुंह एक बड़े सींग जैसा था, जैसे किसी मिल की चिमनी नीचे से पतली और ऊपर से फैल गई हो। इसकी लंबाई ज़मीन से लगभग दो या तीन सो फिट थी और इसके चारों ओर अजीब डिवाइस लगे हुए थे।

यह जगह बाकी सभी जगहों से अलग लग रही थी और लहरों की एक नीली दीवार से घिरी हुई थी। ऊपर आसमान में नीली लहरें उड़ रही थीं।

कुछ सेकंड बाद, हॉल में बैठे लोगों को लगा कि बिल्डिंग कहीं रुक गई है और उसका वाइब्रेशन बंद हो गया है। इसके बाद सलाज़ार अपनी सीट से खड़े हो गया ।

"आओ, मेरे साथ चलो।" वह उनके आगे-आगे चला गया और वे सभी लोग इस महान व्यक्ति के पीछे-पीछे गुलाम चूहों की तरह सिर झुकाकर चलने लगे। खान अब तक सलाज़ार को

ना जाने किस ख्याल से घूर रहा था, आस-पास देख रहा था, माहौल को समझने की कोशिश कर रहा था।

जब वे उस हॉल से बाहर आए, तो बाले को एहसास हुआ कि बाहर का हॉल जैसा बाहर कुछ नहीं था, जहाँ से उसे लाया गया था, और न ही वह मेहराबदार दरवाज़ा था। बाहर की ज़मीन पथरीली और ऊबड़-खाबड़ थी। वे उस पर आगे-पीछे चल रहे थे। उनमें से किसी को नहीं पता था कि आगे क्या होने वाला है और क्या किया जाएगा
सलाजार करीब 60-70 फीट ऊंचे एक स्टील के दरवाज़े के सामने रुके। यहां चमकदार काले कपड़ों में लोग भी थे। सलाजार को देखकर उन्होंने आदर से सिर झुकाया। भगवान जाने यह सलाजार की रहस्यमयी पर्सनैलिटी का असर था या कोई सिग्नल कि स्टील का दरवाज़ा अपने आप खुलने लगा। उसके दोनों तरफ से दो पट खुल गए। और ये साइंटिस्ट और जासूस उसे हैरानी भरी नज़रों से देखते रहे। उनके सामने मशीनों का एक बहुत बड़ा हाल था । अंदर बिल्डिंग के कई हिस्से दिख रहे थे, लेकिन सलाजार ने ध्यान नहीं दिया और दाएं-बाएं मुड़ता गया ।चलते चलते वे एक गोल कमरे के सामने रुके। शायद यह कोई लिफ्ट थी जो उन्हें ज़मीन से करीब 50 फीट ऊपर ले गई। फिर वे एक हॉल में दाखिल हुए जो चौकोर था, जिसका एक किनारा कांच की तरह चमकदार और काला था। बाकी तीन दीवारें पीली थीं और दीवार के एक तरफ एक अजीब सी मशीन थी, जिसमें कई मीटर और स्विच लगे थे। इस मशीन के दाएं-बाएं दो बड़े सिलेंडर थे जो चीनी के टुकड़े से बने थे, और जिनके चारों ओर चमकदार आधे इंच मोटे तार थे जो

टिमटिमाते हुए छत तक पहुंच रहे थे। इन सिलेंडरों के बीच ऊंचाई पर एक बड़ा कांच का गोला था और उसके ऊपर क्रॉसिंग ऑर्डर में न्यूक्लियर रिंग लगे थे। हॉल के बीच में कई घूमने वाली कुर्सियां लगी थीं। सलाज़ार के इशारे पर लोग इन कुर्सियों पर बैठ गए।

वह मशीन के पास गया। और जैसे ही उसने हैंडल घुमाया और स्विच ऑन किया, कुछ सेकंड की घड़ी की आवाज़ के बाद, उसके सामने की दीवार, जो कांच की तरह चिकनी और चमकदार और काली थी, चमक उठी। और उस पर कुछ धब्बे, जो पहले हल्के थे, दिखने लगे।

"मिस्टर खान - सलाज़ार ने वहां से खान को संबोधित किया। पहले अपना ही शहर लीजिए ।"

यह कहकर उसने दूसरा हैंडल घुमाना शुरू किया, जिसके साथ ही, लगभग 40 फीट लंबी और 25 फीट चौड़ी कांच की दीवार पर, अंधेरे के धब्बों से मुंबई शहर का मरीन ड्राइव तट उभरने लगा। उसने सांस रोककर उसे देखा।

"इसे ऑटो विज़न कहते हैं। यह मेरा पिछले साल का इन्वेंशन है। उसे पीछे से सीटी की आवाज़ आती रही। यह कोई बहुत हैरानी की बात नहीं है। इसे टेलीविज़न का एक एडवांस्ड फ़ॉर्म कहा जा सकता है। फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि इसे ब्रॉडकास्ट करने के लिए किसी विज़न की ज़रूरत नहीं होती। हमारी ऑब्ज़र्वेशन रेडियो वेव्ज़ जहाँ भी पहुँचती हैं या इलेक्ट्रॉनिक सपोर्ट से पहुँचती हैं, उस जगह की पूरी इमेज इस बड़ी स्क्रीन पर ट्रांसफ़र हो जाती है। यहा से मैंने इस प्लेन का सस्पेंशन और उस पर होने वाली सभी घटनाएँ देखीं।"

"तो आपने इसे यहीं, यहीं, बैठे यहीं लटका दिया?" एक साइंटिस्ट ने बिना उसकी ओर मुड़े पूछा।

'नहीं, उस समय मैंने पहला छोटा एंटी-ग्रेविटी सुपर-मैग्नेटिक कोसमिक ऑर्गन बनाया था। हालांकि इसकी रेडियस ऊंचाई में चौदह हज़ार मील तक पहुंच सकती थी, लेकिन चौड़ाई सौ मील से ज़्यादा नहीं थी। तो यह एक्सपेरिमेंट मेरे आदमियों ने वहीं किया था। वे प्लेन लटकाकर आए थे और मैंने इसे यहीं से रिलीज किया था।" सलाजार बोलता रहा और सब उसकी बातों को ध्यानध्यान से सुनते रहे और दिल ही दिल में उसकी ज़बरदस्त काबिलियत को मानटे रहे ।

325

लेकिन अब अगर मैं चाहूँ तो धरती के किसी भी हिस्से को लटका सकता हूँ। मैं उसकी ग्रेविटेशनल फोर्स छीनकर उस के ऊपर मौजूद हर चीज़ को, हर जीव को हवा में लटका सकता हूँ। ---सलाज़र ने दावा किया।

और इस दावे पर, दुनिया पर भविष्य में ऐसे खतरे के ख्याल से उनके दिल सच में काँप गए। उनके मन में ख्याल आने लगे, कितना अजीब होगा वह दिन जब अचानक हमारे घर, हमारी धरती पर मौजूद हर चीज़ और हम खुद धरती से उठकर आसमान की अनंत जगह में लटक जाएँगे और एक-दूसरे तक पहुँच भी नहीं पाएँगे। एक-दूसरे को कॉल भी नहीं कर पाएँगे। यह सोचकर ही कई लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। अब तक, बॉम्बे के अलग-अलग इलाके और उनकी हलचलें चमकदार स्क्रीन पर देखी जा सकती थीं।

"खान साहब, मैं आपको आपका ऑफिस घुमा लाता हूँ। मैं आपकी कई जगहों को जानता हूँ।-------- उस ने कहा। और सच में, कुछ सेकंड बाद, उन्होंने स्क्रीन पर बॉम्बे इंटेलिजेंस डिपार्टमेंट के हेड ऑफिस में हेड को कुर्सी पर बैठे देखा। वहाँ, एक बड़े कमरे में, टॉप अधिकारियों की मीटिंग हो रही थी।

"उनकी बातें भी सुनी जा सकती हैं।---यह कहकर सलाज़ार ने दूसरा स्विच दबाया। थोड़ी देर बाद घूर ---घूर कि आवाज़ सुनाई दी। फिर आवाज़ें साफ़ सुनाई देने लगीं।

"वे सभी इसी दुविधा में हैं कि वैज्ञानिकों के विमानों के गायब होने का रहस्य अभी तक सुलझा नहीं है और खान साहब और उनके असिस्टंट अभी भी गायब हैं।"

और सच में, वे लोग इस तरह की बातचीत कर रहे थे, जो साफ़ सुनाई दे रही थी।

"क्या हम इसमें अमेरिका की हालत देख सकते हैं?" एक ने कहा

"बेशक, लेकिन उस मामले में मुझे अपने ट्रांसमिशन पोस्ट से उन तरंगों को भेजना होगा," सलाज़ार ने जवाब दिया।

"लेकिन सिर्फ़ ये तस्वीरें इसकी पुष्टि नहीं करतीं, कि ये ताज़ा तस्वीर है । क्या यह पहले से रिकॉर्ड की गई फ़िल्म नहीं हो सकती ?" खान नेउसकी बात पर आपत्ति जताई।

"अगर किसी और ने कुछ कहा होता, तो मैं उसे पक्का सज़ा देता। मैं अपने बारे में ऐसी गलतफहमी बर्दाश्त नहीं कर सकता, लेकिन मिस्टर खान, मैं आपकी हिम्मत और आत्मविश्वास की तारीफ़ करता हूँ," सलाजार ने थोड़े गुस्से में कहा। "क्या आपको अपने हेड ऑफिस के इस कमरे में कैलेंडर दिख रहा है? लीजिए, और इसे ध्यान से देखिए। आज कौन सी तारीख है और घड़ी पर टाइम भी देखिए ?"

"मुझे अपनी ग़लतफ़हमीपर अफसोस है , डॉ. ---खान ने कैलेंडर पर नज़र डालते हुए कहा।

सलाज़ार सच कह रहा था।

:अरे ये हराम मूंछ--बाले सीट पर बैठे बैठे उछल पड़ा । फ्रेम में उन्होंने हेड ऑफिस के बाहर इब्राहिम को भी देखा। कुछ लोग एक जीप में बैठे थे, और जीप सामान से भरी हुई थी।

"इन मूर्खों को क्या हो गया है?" खान ने बड़बड़ाते हुए कहा।

" हराम का खा खा कर ये कहीं भाग रहे हैं," बाले ने धीरे से कहा।

"नहीं, कोई और इरादा मालूम होता है । खान ने डिसूजा को भी उनके साथ कार में बैठते देखा

"शायद वे हमें ढूंढने के लिए जा रहे हैं। ?"

"इनको अलविदा," सलाजार ने कहा, और वो अपनी ऑटो विज़न स्क्रीन पर कई जगह को दिखाता गया ।

 "अब दिल्ली को भी देखो," उन्होंने कहा।

सब वहीं बैठे रहे और उन्हें ऑटोविज़न पर अलग-अलग जगहों का टूर कराया। उन्होंने इन साइंटिस्ट्स को उनकी एम्बेसी भी दिखाईं, जहाँ अब तक लापता प्लेन का मुद्दा चर्चा का विषय था। फिर उस ने मशीन बंद की और सब खड़े हो गए।

"मुझे नहीं पता था, डॉक्टर, कि आपके पास इतना तेज़ दिमाग है," खान ने सलाजार के साथ अपनी पुरानी टोन बनाए रखते हुए कहा। हालाँकि दूसरे लोग उससे बात करएनबीई में हिचकिचा रहे थे।

"धन्यवाद," सलाज़ार मुस्कुराया।

फिर वह उन्हें उस हिस्से में ले गया जहाँ बड़ी मशीन लगी हुई थी। इस मशीन के चारों ओर एक अजीब चीज़ दिख रही थी। जैसे दोपहर में सूखी ज़मीन के ऊपर अंजीर उड़ते हुए दिखते हैं। और उनकी वजह से पीछे का नज़ारा काँपता हुआ लग रहा था।

"यह वह पौधा है जिससे मैं धरती के किसी भी हिस्से से हज़ार मील की ग्रेविटेशनल फ़ोर्स छीनकर उसका वजूद खत्म कर सकता हूँ," सलाजार ने दूर से इशारा करते हुए गर्व से कहा। उसके मुँह से यह सुनते ही एक फ्रेंच साइंटिस्ट उसे पास से देखने के लिए दौड़ा। सलाजार को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। जब उसने उस आदमी की आवाज़ सुनी तो वह चौंक गया। जैसे ही वह धूप जैसी लहरों की ट्रांसपेरेंट चादर के पास पहुँचा, एक आग पैदा हुई और वह वहीं जलकर राख हो गया। सिर्फ़ उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"यह सोचना बेवकूफी है कि इतने ज़रूरी पौधे को बिना देखभाल के छोड़ दिया जाएगा। सलाज़ार ने उदास चेहरा बनाया और मुँह फेर लिया।

खान देख सकता था कि उसका मूड खराब हो रहा है। वह बोलता रहा। उसे पता था कि उस पल उसकी जान एक ऐसे आदमी के हाथ में थी जिसे पिस्तौल की गोलियों से नहीं मारा जा सकता था और जो अगर पागल हो जाए, तो एक पल में तबाही मचा सकता था। बाकी सभी साइंटिस्ट भी हैरान थे। उनमें से किसी ने कुछ नहीं कहा - सलाजार उस स्टील के दरवाज़े से बाहर आया। और उसके पीछे वे लोग।

थोड़ी देर बाद, वह उसी अंडरग्राउंड हॉल में वापस आ गया। शायद वह एमरल्ड पैलेस वापस जा रहा था। और मुश्किल से पाँच या सात मिनट बाद, उसे अपनी जगह पर वापस आकर अच्छा लगा।

जिसके साथ ही, हर मंज़िल से उसके सफ़ेद खंभे निकलकर ऊपर उठने लगे। और ऊपर आसमान में पहुँचकर उनके सिरे गायब हो गए।

खान ने बाले से धीरे से कहा, "जिसे हम खला (स्पेस) मान रहे हैं....।"

"ऊपर? खाला (आंटी.) . कहाँ ? वो यहाँ कहाँ से आ गईं? "बाले बेवकूफों की तरह छत को घूर कर देखा और कहा

"चुप रहो , उल्लू कहीं के "

"अच्छा, मैं आपको बता दूं कि आप कह रहे थे कि यह खला चार सौ बीस है। असल में ऊपर एक छत है और चांद-तारे उससे लटक रहे हैं।------- बाले ने गंभीर स्वर में कहा।

" तुम्हें कुछ अक्ल आ गई है ?" वह हँसा।

"अक्ल ? वो तो मैंने यहाँ एक आदमी से इसे छीनी थी ।"

"यह हॉल एक न्यूक्लियर रॉकेट जैसा लगता है। पास में बैठे डॉ. स्मिथ ने खान से कहा

"रॉकेट नहीं, आप इसे एक अलग तरह का बहुत बड़ा हेलीकॉप्टर या प्लेन कह सकते हैं, या शायद यह एक न्यूक्लियर बैलून है।"

"हाँ, ये तो अंदाज ही है। दूसरी तरफ बैठे रूसी वैज्ञानिक ने समर्थन किया।

"पता नहीं कि गेरार्ड और दूसरों का क्या हुआ।---बाले उन के बारे में सोचने लगा।

"वे भी या तो सलाजार की कस्टडी में होंगे, या फिर वहां की पुलिस के हाथों में पड़ जाएंगे।"खान ने कहा।

सलाजार का मूड अभी भी ठीक नहीं हुआ था। वह अपनी कुर्सी पर बैठ चुका था। उसने कुर्सी पर एक बटन दबाया, और उसी समय, चारों ओर छोटी-छोटी घंटियाँ बजने लगीं।

और जैसे ही उन्होंने देखा, हॉल की दीवारों में छोटे-छोटे दरवाज़े दिखाई दिए, जिनसे वही दिखने वाले जीव बाहर निकल आए। वे औसतन 2, सवा 2 फ़ीट लंबे आदमी थे। और उनमें से कोई भी दिखने में नाबालिग नहीं लग रहा था। उनमें से कुछ के चेहरों पर दाढ़ी भी थी। वे सब सिंहासन के सामने अपने पैर मज़बूती से जमाए और सिर झुकाए खड़े हो गए ।

"ये लोग हमारे मेहमान होंगे। इनका इंतज़ाम होना चाहिए। -0000यह कहते हुए उसने अपनी उंगलियाँ अपनी कुर्सी के दूसरी तरफ़ लगे दो बटनों पर रख दीं। और प्लेटफ़ॉर्म पर आसमानी लहरें तेज़ी से उछलने लगीं। फिर, एक तरफ़ से दूसरी तरफ़, वह हिस्सा एक चमकदार आसमानी रोशनी से भर गया। और सलाजार अपनी कुर्सी के साथ इस रोशनी में एक ऑयल पेंटिंग की तरह डूब रहा था। एक मिनट बाद, जब रोशनी गायब हुई, तो सलाजार वहाँ नहीं था, न ही उसका सिंहासन, और वो छोटे आदमी अभी भी सिर झुकाए खड़े थे ।

उन्हें देखकर बाले जोर से हंस पड़ा ।

"हमें इन बित्ते भर के लोगों के हवाले कर दिया गया है। ----------वह बड़बड़ाया। लेकिन उसी समय उसकी नज़र इन छोटे कद के आदमियों के हाथों में पकड़ी चीज पर थी, जो एमरल्ड पैलेस के दरवाज़े पर दिखाई दी थी । पिस्तौल जैसी उस चीज की खतरनाक ताकत वो पहले देख चुके थे ।

☆☆☆

कंट्रोल बॉक्स

और बाकी लोगों को कहाँ रखा गया था, सुपरिंटेंडेंट खान और बाले को नहीं पता था, लेकिन जिस जगह उन्हें ले जाया गया था, वह नॉर्मल लेवल से थोड़ी ऊँची थी और उसका अंदर का हिस्सा जहाज़ के केबिन जैसा सजा हुआ था। उसका आकार भी एक अंडे जैसा था जिसका छिलका गायब हो गया हो। उसकी दीवारों और छत से नैचुरल पीली रोशनी अंदर आ रही थी।

"मुझे अभी भी यकीन नहीं हो रहा कि यह वही सलाजार है, वह कोई बहुत बड़ा जादूगर लगता है। ---बाले ने खान को अकेले में बताया। अंदर दो स्ट्रेचर थे जिन पर मुलायम गद्दे

रखे थे। और वह उन पर लेटे हुए थे । उसकी सेवा के लिए यहाँ एक 2 फुट का आदमी भी था, जिसकि शक्ल देखकर बाले को बार बनार हंसी आआ जाती थी और वह भी हंसने लगता ।

खान ने गंभीरता से कहा, "यह वही सुलाज़ार है, और अगर वह अपने असली रूप और ताकत के साथ दुनिया के सामने आया, तो पूरी दुनिया हैरान रह जाएगी।" "अगर वह चाहे, तो आज पूरी दुनिया को जीतने का दावा कर सकता है।"

"क्या बात है ....। क्या दुनिया खत्म करना बच्चों का खेल है?"

"उस ने उस शक्ति को खोज निकाला है जो धरती को प्रकृति ने दी है, जिसे दूसरे वैज्ञानिक अभी तक समझ भी नहीं पाएंगे। आपको पता है या नहीं, डॉ. पटेल ने एक बार हमसे प्रोटॉन की एनर्जी के बारे में कहा था?"

"तो क्या वही ?

: इस ताकत को इसने कंट्रोल कर लिया है , और ये सब जो भी .....

खान ने कहा, "ये घर, ये फैक्ट्रियां और महल वगैरह, जो हम को नजर आ रहे हैं , सब उसकी ताकत का हिस्सा हैं। और वह इन्हें इस सफेद खंभों वाले हॉल की तरह उड़ा भी सकता है।"

"और नहीं तो क्या ? एक पतली आवाज़ ने टोका। और बवाले ने झुक कर देखा. वही 2 फुट का आदमी नीचे खड़ा था और कह रहा था.

"वह जिसे चाहे उड़ा सकता है और जहाँ चाहे ले जा सकता है।

"कौन?" बाले ने बेध्यानी से पूछा।

"रोशनी का इंसान , वह महान आत्मा जिसने हम पर बहुत बड़ा एहसान किया है।"

"तुमको ऊंट से बटेर बना दिया है ? यही ? है न?"

"तुमने अभी फ्लाइट पार्क नहीं देखा, वो दुनिया के अजूबों से भरा पड़ा है " उस आदमी ने कहा।

"फ्लाइट पार्क .....? ये क्या बाला है ?

"वह हमारे साथ जाएगा। इसमें दुनिया के सभी जीव हैं। --- इस आदमी ने बताया ।

"हत तेरे की , क्या वह तुम्हारे साथ जाएगा? और तुम कहाँ जाओगे ?"

जहां हमारा मालिक जाएगा।"

"और अगर वह नरक में चला गया तो?'

"अगर तुमने उसके सम्मान में एक और शब्द भी गलत कहा, तो तुम यहीं राख हो जाओगे। वो बिगड़ गया और उस ऐटमी आदमी ने अपनी अजीब तरह से बनी फायर पिस्टल उस पर तान दी । और बाले कोसहम जाना पड़ा। उसने इस पिस्टल का जादू देखा था, लेकिन खान अचानक दूसरी तरफ से उस पर झपटा और एक हाथ से उसका मुंह बंद कर दिया।

और अपने दूसरे हाथ से उसकी पिस्तौल छीन ली। उसे लगा कि इस छोटे से जीव में बहुत ताकत है। वह मछली की तरह छटपटाया और खान की पकड़ से बच निकला, और अगर बाले ने भागकर उसका पैर नहीं पकड़ा होता, तो वह भाग जाता। खान ने उसे बाले की पकड़ से छुड़ाया और वह इनके बीच खड़ा होकर हांफने लगा।

"इस पवित्र जगह पर कोई भी बुरा बर्ताव बर्दाश्त नहीं किया जाता। यहाँ सभी सभ्य लोग रहते हैं।--- उसने अपनी पतली आवाज़ में लेक्चर देना शुरू किया। ----और जो लोग तहज़ीब और शराफ़त के दायरे से बाहर जाते हैं, उन्हें महान मालिक बहुत कड़ी सज़ा देता है। यहाँ कोई भी ऐसा काम नहीं करता जैसा तुम लोगों ने किया है।

"हमने आपसे यह हथियार सिर्फ़ इसलिए छीना है, ताकि आप किसी ग़लतफ़हमी में हम पर हमला न कर दें। खान ने अपना लहज़ा नरम करते हुए कहा, "हम सिर्फ़ इस फ़्लाइट पार्क का पता पूछ रहे हैं।"

"और अगर तुम हमें बताओगे कि तुम और तुम्हारे मालिक कहाँ जा रहे हो, तो हम तुम्हारे बड़प्पन और सभ्यता के बारे में विज्ञापन छापेंगे और उन्हें घर-घर बाँटेंगे," बाले ने अपने सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"हमें यह नहीं पता, लेकिन महान आत्मा कहती है कि हम ऐसी दुनिया में जाएंगे। ऐसी दुनिया में जहां हमारे अलावा कोई नहीं होगा। इस दुनिया में कोई झगड़ा नहीं होगा, कोई लड़ाई नहीं होगी, कोई युद्ध नहीं होगा। कोई बुराई नहीं होगी, कोई तिरस्कार नहीं होगा। वहां शांति, सुकून, आराम और खुशी होगी। और हम ऐसी पीढ़ियों के लिए प्रार्थना करेंगे जो वहां हमेशा खुश रहेंगी।

"आप क्या सोचते हैं?" बाले ने खान की ओर मुड़कर पूछा।

"मुझे भी यही शक है," खान ने गंभीरता से कहा और अपने कान खड़े कर लिए।

"अच्छा, मुझे एक बात बताओ, दोस्त। क्या तुम इतने छोटे पैदा हुए थे?"

"महान आत्मा कहती है कि हम जितने छोटे होंगे, हम उतना ही ज़्यादा जिएंगे।"

"जब तुम पैदा हुए थे तो तुम कितने बड़े थे?" बाले ने फिर पूछा।

मैं भी तुम्हारी तरह 51/2 फुट का बेकार आदमी था। --उसने गुस्से से कहा।

" 51/2 फीट? तो यह 2 फीट कैसे हो गया?"

"रिवरसिंग प्लांट में"

"यह क्या बाला है?"

"आप नहीं जान सकते। हम भी नहीं जानते, लेकिन वे इसे यही कहते हैं। यह हर समय हिलता रहता है। --वह

मासूमियत से बोला । जिस तरह से वह बोलता था, उससे लगता था कि वह सीधा-सादा है।

" ये तो ठीक है, तुम्हारी यह महान आत्मा कौन से घोंसले में रहती है? बाले ने फिर फिर उससे सवाल किया

"तुम एक बदतमीज़ आदमी हो.---- वह फिर से बिगड़ा .

"इसको तुम मत कहो, ठीक है? हाँ, आप मुझे बताओ। खान ने उसे खुश करने के लिए "आप" कहा । ऐसा लगा जैसे उसकी आत्मा को खुश कर दिया हो।

"जहां चाँद डूबता है।"

" चाँद डूबता है? कब?" खान ने हैरानी से पूछा।

उन्होंने सरलता से कहा, "जब सूरज का दौर आता है ।"

"और यह फ़्लाइट पार्क कहाँ है?"

"महान आत्मा के आदेश के बिना कोई भी वहां नहीं जा सकता। जहां आबादी की सीमा समाप्त हो जाती है,

यह वहीं से शुरू होता है।"

"पर कहाँ?

"मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा। अगर तुम यहां कानून तोड़ने की कोशिश करोगे, तो तुम्हें मार दिया जाएगा, और मुझे भी।"

"क्या दिन में यहाँ इतनी रोशनी रहती है?" खान ने दूसरा सवाल पूछा।

"यहां सूरज सीधे हमारे सिर के ऊपर से उगता है और सीधे हमारे सिर के ऊपर से डूबता है।

"यह कैसे? बाले ने फिर हैरानी जताई। "क्या यह भी नकली है?"

"नकली? उस ने गुस्से से बाले को घूरा, लेकिन खान ने बाले को आँख मारी और उसने जल्दी से पलटी मारी----अरे, मैं इस दीवार से बात कर रहा हूँ।"

"ये सभी शेल सीपियाँ अभ्रक से बनी हैं।

"अभ्रक से? बाले फिर से हैरान रह गया।

"ठीक है , खैर छोड़। चलो, सो जाओ, नहीं तो इसे भी मुफ्त में जागना पड़ेगा।" यह कहकर खान लेट गया।

"अच्छा भाई, 2 फुट 4 इंच, शुभ रात्रि, -- बाले भी यह कहकर लेट गया।

"गुड नाईट," छोटे कद के आदमी ने मुंह बनाते हुए जवाब दिया।

लेकिन करीब एक घंटे तक लेटे रहने के बाद भी उसे पता नहीं चला कि वह छोटा आदमी जाग रहा है या सो रहा है। सबसे पहले, बाले अपने बिस्तर से उठा। उसने पिस्तौल अपनी जेब में रखी और जैसे ही वह अपने पंजों पर आगे बढ़ा, धड़ाम से ज़मीन पर मुँह के बल गिर पड़ा।

छोटा आदमी स्ट्रेचर के नीचे से बाहर आया और उसके पैरों को घसीट लिया था । खान की हंसी निकल गई ।

लेकिन इस बार उसने ज़बरदस्ती उस छोटे आदमी को अपनी बाहों में पकड़ लिया।

बाले ने उससे पिस्तौल जैसा हथियार छीन लिया और उसे अपने हाथ में ले लिया, और अपनी जेब में पड़ा चाकू निकाल लिया।

उन्होंने जाने से पहले उसके हाथ-पैर एक पतले रेशमी कपड़े से बांध दिए और उसका मुंह टाई से बांध दिया। यहां सुरक्षा के इंतज़ाम बहुत मामूली लग रहे हैं।वो अपनी मशीनें कि सुरक्षा कैसे करता है ,

खान ने कहा, " तुम ने इस फ्रांसीसी वैज्ञानिक की मौत के साथ इसका एक उदाहरण देखा है। वैसे, इस न्यूक्लियर शहर में सुरक्षा उपायों की ज़रूरत पर शायद इसलिए विचार नहीं किया गया क्योंकि यह बाहर से सुरक्षित होगा।"

"क्या हमने अपनी ज़िंदगी में कभी सोचा था कि हम इन हालात से गुज़रेंगे?"

खान ने बाले से कहा, "कई अजीब चीज़ें होती हैं जो ज़्यादा अजीब नहीं लगतीं।"

वे ढलान वाली सड़क पर बहुत तेज़ी से दौड़ रहे थे जो चिकनी और सपाट थी और जिसके दोनों तरफ अभ्रक के एक जैसे अंडाकार गोले बने थे, जिन्हें घरों की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था। सड़क चिकनी और चमकदार थी, मिट्टी वाली, फिर भी उनके पैर नहीं फिसल रहे थे, क्योंकि, इत्तेफ़ाक से, उनके जूतों के सोल क्रेप के थे। वे बस अंदाज़ा लगाकर दौड़ रहे थे। वे पंद्रह मिनट तक ऐसे ही दौड़ते रहे। जब तक वे एक ऐसी जगह नहीं पहुँचे जहाँ सड़क खत्म हो गई और एक पहाड़ी दर्रे की ढलान से जुड़ गई और यहाँ उन्होंने दो लकड़ी के खंभों पर एक बड़ा बोर्ड देखा, जिस पर अंग्रेज़ी में लिखा था: “निषिद्ध इलाका ।”

"इलाका ? बाले ने बोर्ड पढ़ते हुए कहा, "यहाँ तो ये दर्रा है सिर्फ ।"

"शायद इसके पीछे कोई एरिया हो। चलो देखते हैं। मुमकिन है, शायद वही "लाइट पार्क।"

"लेकिन पता नहीं कि वहां किसी किस्म का कोई खतरा है या नहीं।

" फिर बकवास , दो दो रिवाल्वर किसलिए हैं?"

"ये एटमी शहर है, और फिर क्या होगा अगर मेरी वे चार परियाँ विधवा हो गईं?"

"गधे, यह बेवकूफी का समय नहीं है।--- यह कहते हुए खान ने उसे दर्रे गुफा की ओर धकेल दिया। यह एक लंबे डंडे पर खींचे गए धनुष की तरह थी। यह अंधेरे से ढकी हुई थी। फिर भी, आसमान में तैरते नकली चांद की हल्की रोशनी यहां तक पहुंच रही थी।

गुफा में कदम रखते समय उन्हें कोई खतरा नहीं मिला , सिवाय इसके कि रास्ता अनजान था, इसलिए उनके पैर इधर-उधर फिसल जाते थे। उस समय खान की पॉकेट टॉर्च काम आई, लेकिन जब बाले की नज़र उसी रास्ते की एक ढलान पर पड़ी, तो उसके फरिश्ते कांप उठे। उसे लगा कि यह कोई खेल है, लेकिन इस रास्ते के दाईं ओर इतनी गहर गड्ढा था कि टॉर्च से भी वह उसकि गहराई को देख नहीं पा रहा था।

"अरे बाप रे ," उसने कांपते हुए कहा।

"चुपचाप मेरा सहारा लेकर चलते रहो। खान ने उसे डांटा। ------खान अब बाईं ओर उभरी हुई चट्टानों के किनारों को पकड़कर आगे बढ़ रहा था। वह आगे के रास्ते और टूटती चट्टानों को पकड़कर आगे बढ़ा था, और अगर खान की होशियारी और सावधानी यहाँ काम न आती, तो वह ऐसी मुश्किल में फँस जाता कि न तो आगे बढ़ पाता, न ही लौट पाता। यहाँ तो पैर रखने के लिए भी जगह नहीं थी।

" अगर मैं यहाँ से गिर गया और मेरी हड्डियाँ टूट गईं तो क्या होगा?' बाले ने सिर को ज़ोर से झटका दिया।

और गहरी साँस लेते हुए कहा।

अब उसे बहुत ज़्यादा ठंड लग रही थी। उसे नहीं पता था कि अब तक उसे इस न्यूक्लियर सिटी में ठंड क्यों नहीं लगी थी, पर अब लग रही थी, लेकिन जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहा था, ठंड बढ़ती जा रही थी। धीरे-धीरे खान की उंगलियों में चुभन होने लगी, लेकिन उसने हार नहीं मानी। कभी-कभी उनके दांत बज जाते, लेकिन फिर वह अपनी डिफेंस पावर का इस्तेमाल करके दांतों का ध्यान रखता।

"भगवान ही जाने आगे क्या होगा?" वह बुदबुदाया।

"चुप रहो"

क .. क.. क ....क ....कैसे ....? और फिर उसके दांत किटकिटाने लगे।

"शायद यह बीच वाली जगह अपने असली मौसमी हालत में है।"

अब खान को भी ठंडी हवा के एक तेज़ झोंके ने चुप करा दिया।

उसी पल, बाले गिरते गिरते बचा , और अगर उसने खान की पीठ को न पकड़ा होता, तो उसकी रूह नीचे गहराई में फ़ना हो गई होती।

खान किसी भी खतरे का सामना करने के लिए पहले से ही तैयार था। जैसे ही झटका लगा, उसने एक खंभे को कसकर पकड़ लिया था । थोड़ी देर सांस लेने के बाद, वह फिर से आगे बढ़ने लगा।

कुछ पल बाद उन्हें ठंड थोड़ी कम होती महसूस हुई और हल्की ताज़ी हवा ने उन्हें हिम्मत और हौसला दिया। कुछ दूर चलने के बाद हल्की गर्म हवा आई और उन्हें अपने सामने एक हल्की रोशनी फैलती हुई दिखने लगी। वे अब दर्रे के दूसरी तरफ पहुँच रहे थे। यह इलाका, उम्मीद के उलट, घने जंगल वाला था। और उन्हें यह देखकर थोड़ी हैरानी हुई कि यहाँ भी, आसमान में बिल्कुल वैसा ही चाँद चमक रहा था। यह जगह अब तीन तरफ से पहाड़ियों से घिरी हुई थी और चौथी तरफ रास्ता था और इसी तरफ यह दर्रा था। जैसे ही उन्होंने दूसरी तरफ हरी घास पर पैर रखा, किसी की दहाड़ ने उन्हें चौंका दिया। फिर यह दहाड़ और तेज़ हो गई। खान ने अब अपनी जेब से अपना ऑटोमैटिक रिवॉल्वर निकाला।

उस समय बाले के पास सिर्फ़ उसी 2 फुटिये आदमी का हथियार था। वो वही पीले कपड़े पहने हुए थे, जो शायद उसे सलाजार के ऑर्डर से इन्हें पहने गए थे । सलाजार, जो एक बड़ा साइंटिस्ट था, उसे भी अपनी दिलचस्प पर्सनैलिटी का मज़ा लेना पसंद था। हालाँकि बाले की सारी शरारतें सही समय पर और काम की भी हुया करती थीं। वो खुद यहाँ ऐसा भोला बन रहा था, नहीं तो वह उड़ने वाली नाव में बैठकर किसी जन्नत की सैर नहीं कर रहा था, बल्कि फोर्ट ज़ोर्क में रोशनी की चादर से निकली रहस्यमयी चीज़ के एंटरटेनमेंट का एक कार्टून बना हुया था।

यहां चांदनी इतनी तेज थी कि वे दूर की चीजें आसानी से देख सकते थे, लेकिन दहाड़ने की समस्या भी तुरंत खड़ी हो गई, क्योंकि इसके साथ ही उन्हें शेर के दहाड़ने की आवाज भी सुनाई दी। आवाज धीमी थी, इसलिए उन्हें लगा कि यह बहुत दूर से आ रही है, लेकिन भले ने जैसे नीचे जमीन पर देखा।,

वह उछल पड़ा। यह दहाड़ सच में शेर की थी।

"तो, जरा देखिए उधर -- उसने आश्चर्य से कहा।

और खान ने भी झुक कर नीचे देखा, और उसके सामने एक नहीं, बल्कि दो बब्बर शेर खड़े थे, लेकिन वे किसी देसी बिल्ली या छोटे भारतीय कुत्ते से बड़े नहीं थे। वे बंदरों की तरह दांत पीस रहे थे, और उन में खुद इन इंसानों पर हमला करने की हिम्मत नहीं थी। उनके साइज़ को देखते हुए, खान और बाले उस समय उन से भी बड़े शेर थे।

"क्या यह क्या मजाक है ? कोई और जानवर तो नहीं है?" लड़के ने कहा।

"नहीं, ये शेर हैं और लगता है हम सचमुच फ़्लाइट पार्क में हैं।"

" सुभान तेरी कुदरत । अगर ये शेर हैं, तो हाथी तो बकरियों के साइज़ के होंगे। --और बाले का यह अंदाज़ा तब और पक्का हो गया जब वह करीब सौ कदम आगे बढ़ा और एक छोटे से मंदिर को पार करके एक हाथी को देखा। यह सच में एक अच्छे साइज़ के बकरे से थोड़ा बड़ा था, बल्कि गधे के साइज़ का था। पीछे से शेरों की आवाज़ें और दहाड़ें भी सुनाई दे रही थीं। जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो उसने देखा कि मंदिर के पास कई शेर खड़े होकर मीटिंग कर रहे हैं। ऐसा लग रहा था जैसे किसी कसाई की दुकान के सामने कई बिल्लियाँ जमा हो गई हों। किसी ने भी उन पर हमला नहीं किया। वे खड़े होकर दहाड़ते रहे। शायद इस अजीब बदलाव ने उनके खून के प्यासे स्वभाव को बदल दिया था, या वे अपने सामने इंसानों से डर गए थे। हाथी उन्हें देखकर उल्टे पाँव भाग गया, लेकिन उसी समय उसने दूसरे हाथियों को इधर-उधर झाड़ियों से निकलते देखा। और वे यह देखकर चौंक गए कि उनमें जिराफ़ भी थे जिनकी ऊँची गर्दन ज़मीन से ज़्यादा से ज़्यादा छह या सात फ़ीट ऊपर उठ रही थी।

"यह है अजूबों की दुनिया।"

"अरे, लेकिन ये देखो। --खान ने वहाँ पड़े कुछ समान की तरफ इशारा किया, जो वहाँ पड़े रह गए थे । उनमें हल्की नीली नीली चमक थी। बाले नीचे झुका और एक टुकड़ा उठाया। यह काफी भारी था, लेकिन इसमें कुछ अजीब सी गंध आ रही थी। उसने उसे फेंक दिया। और अब उसे अपनी हथेली में एक तरह की खुजली महसूस होने लगी।

खान ने कहा, "यहां की चीज़ों को मत छुओ, हम यहां से जल्द से जल्द निकलना हैं।"

"लगता है यह इस साइंटिफिक जादूगर का वर्कशॉप है। उसने शायद न्यूक्लियर एनर्जी रेडिएशन के असर को उलटकर बड़ी चीज़ों को छोटा करने का कोई फ़ॉर्मूला खोज लिया है। वह 2 , 2/.5 फ़ीट का आदमी भी उसी एक्सपेरिमेंट का शिकार लगता है।"

"और क्या होगा अगर हम भी इसी समस्या का शिकार हो जाएं?

"तो आपकी होने वाली पत्नी आपको बच्चा समझेगी और गले लगाएगी।"

"मैं आईसा होने के बजाय आत्महत्या करना पसंद करूंगा।"

लेकिन उनकी बातचीत अभी इस बिंदु पर पहुंची ही थी कि किसी ने बाले के पैर में टक्कर मार दी और उसे चोट लगी और वह उसे पकड़ कर बैठ गया। खान नीचे झुका और एक सूअर को देखा, दो फुट लंबा, जमीन से एक फुट से अधिक ऊंचा नहीं, अपने दांत निकाल रहा था और बाले को एक और धक्का देने के लिए अपनी जगह बदल रहा था। खान नेबाले को एक तरफ धकेल दिया। इस प्रक्रिया में छोटा सूअर बछड़े के पैर के बजाय एक पत्थर से टकराया और चिंघाड़ता हुआ भाग गया। वे सावधानी से आगे बढ़े। यहां उन्हें सभी प्रकार के जानवर मिले: घोड़े जो शिकारी कुत्तों के आकार के थे, भालू जो छोटे बंदरों के आकार के थे। बारह सींग जो एक बच्चे की बकरी के आकार के थे और हिरण जो नेवले से थोड़े बड़े थे। और साथ ही, उन्होंने यह भी देखा कि यह क्षेत्र चट्टानी मंदिरों के साथ अलग-अलग भूखंडों में विभाजित था और प्रत्येक भूखंड पर एक बोर्ड था जिस पर लिखा था 1/4 .AT.R - ये बेटे कहीं (1/4) हैं और

इसके अलावा (1/3) और (1/2) भी थे.

"ये बोर्ड्स क्या बला हैं?" बाले ने पूछा।

"मुझे लगता है कि न्यूक्लियर प्रोसेस की रिड्यूसिंग थ्योरी ऑफ रिडक्शन है। और ये बेटे रिडक्शन के क्राइटेरिया को साफ़ करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर हाथी 2 फीट चौड़ा और 8 फीट लंबा है, तो वह उसका (1/4) है। तीन फीट लंबा और (41/2) फीट लंबा और यह लगभग सब का ऐसा ही साइज़ है।

"क्या यह सब आप मानते हैं ?"

"क्यों नहीं? यह एक दिन का काम नहीं है, इसमें कम से कम तीन या चार साल तो लगे ही होंगे। क्योंकि इन बोर्ड पर बनी पेंटिंग बहुत पुरानी लगती है।

"और इसका मतलब है कि यह प्रोसेस इन गरीब लोगों के साथ तीन या चार साल से लगातार हो रहा है?

"तो क्या वे चुटकी बजाने पर सिकुड़ जाएंगे?" मुझे डर था कि कहीं चलते-चलते हम बौने न बन जाएं।

खान ने कहा, "चिंता मत करो, यह सब रातों-रात नहीं होगा, लेकिन यहां के असर निश्चित रूप से हमारे लिए अच्छे नहीं होंगे।"

जैसे ही यह एरिया खत्म हुया , वे वापस लौटने के बारे में सोच ही रहे थे कि बाले की नज़र पेड़ों के पीछे से आ रही रोशनी पर पड़ी।

"कुछ और भी है. उसने खान का हाथ हिलाया और कहा. और खान भी इधर-उधर देखने लगा.।

वहाँ एक छोटी सी सफ़ेद बिल्डिंग थी, जिसके ऊपर एक गोल फ्रेम लगा था, जो चारों तरफ़ घूम रहा था। कभी-कभी उसमें एक तेज़ चमक दिखाई देती थी, और उसमें से कुछ नीली चिंगारियाँ धूल की तरह निकलती थीं, हवा में फैलती थीं और गायब हो जाती थीं।

"चलो, थोड़ा और करीब से देखते हैं।" खान उस दिशा में बढ़ने लगा।

"जल तो जलाल तू .....” बाले बड़बड़ाता रहा

341

वे अंधेरे में झाड़ियों से होते हुए उस बिल्डिंग में पहुँचे जहाँ वो घर था, लेकिन दूर से उन्हें उसके दरवाज़े पर लोमड़ियाँ बैठी हुई दिखीं। वे लोमड़ियाँ ही थीं। लेकिन यह भी कम हैरानी की बात नहीं थी कि उनके हाथों में बंदूकें थीं और वे दरवाज़े की रखवाली कर रही थीं। खान ने इस बिल्डिंग की रोशनी में दरवाज़े के ऊपर लिखे अक्षर पढ़े। यहाँ लिखा था: ब्रेन और वोकल ग्लैंड ऑपरेशन थिएटर

- (ब्रेन और वोकल ग्लैंड्स ऑपरेशन थिएटर)

"अब हम जरूर कोह निदा पहाड़ पर पहुँच गए होंगे। मौत हमें यहाँ खींच लाई है," बाले ने धीरे से कहा। लेकिन जब उसने कहीं से दो लोगों की बात करते हुए आवाज़ सुनी, तो वह चौंक गया। उनमें से एक कह रहा था,

"मुझे यह गार्ड ड्यूटी पसंद नहीं है। कितना अच्छा होता अगर मैं फिलॉसफी का प्रोफेसर होता।

"हाँ, मिलिट्री लाइफ फिलॉसफी का बाप है। फिलॉसफर निराशावादी होते हैं और सैनिक प्रैक्टिकल होते हैं।"

"तुम क्या जानो ?"

"तुम बेवकूफ़ हो"

"तुम खुद बेवकूफ हो। और फिर ऐसा लगा जैसे वे लड़े हों, लेकिन खान और बाले अपनी समझ पर यहाँ-वहाँ पूरी गंभीरता से अपना काम करने लगे। जब उन्होंने इंसानों के बजाय इन लोमड़ियों को लड़ते देखा।

"क्या ये लोमड़ियां कोई ज्ञानवर्धक चर्चा कर रही थीं?

"क्या तुम ऊपर नहीं देख रहे हो? यह एक ब्रेन ट्रेनिंग ऑपरेशन थिएटर है। भगवान जाने इस कंबख्त ने क्या अजीब चीजें बनाई है "

उस समय, खान ने भी ज़ार की बेमिसाल ताकतों की तारीफ़ करनी शुरू कर दी।

खुशकिस्मती से, इन लोमड़ियों के बीच झगड़ा इतना बढ़ गया कि वे आपस में इंसानों की तरह लड़ने लगीं।

और गुथमगुथा हो गईं , और खान ने बाले को दरवाज़े को धक्का देकर अंदर खींच लिया।

"हे भगवान, रहम करो। चाहे यह पागलखाना हो या म्यूज़ियम, यहाँ अपनी कब्र मत बनाना। -------बाले ने गंभीरता से प्रार्थना करना शुरू किया। ऑपरेशन थिएटर में कई कमरे थे। उन सभी में कांच के दरवाज़े थे। जब उसने एक दरवाज़े से झाँका और अंदर देखा, तो वह चौंक गया। दो आदमी अंदर बंद थे और वे लोमड़ियों की तरह एक-दूसरे से लड़ रहे थे। उनके गले से निकलने वाली आवाज़ें भी एक जैसी थीं।

"मुझे यह बात समझ नहीं आती। मैंने बंदर के इंसान बनने की कहानी देखी है।

"मैंने सुना है, लेकिन यह लोमड़ियों का मामला है।"

"शायद ऐसा ऑपरेशन संभव हो गया है।"

लेकिन उसकी नज़र एक दूसरे कमरे पर पड़ी। यहाँ से कोई उसे बुला रहा था। उसमें एक छोटी सी खिड़की थी। जब वह उसके पास गया और अंदर देखा, तो उसे रोशनी में एक गोरिल्ला खड़ा दिखा। वह अंदर से सिगरेट माँगने लगा और खान ने उसकी माँग पूरी की। उसने खिड़की से सिगरेट ली और उसे जलाया और एक फ़िल्म एक्टर की तरह एक पैर पर खड़े होकर पीने लगा। फिर, कुछ देर सोचने के बाद, उसने खान से उसका फाउंटेन पेन माँगा, जो उसके लिखने के तरीके का इशारा था। खान ने कागज़ का एक टुकड़ा और अंदर रखा फाउंटेन पेन बढ़ाया। गोरिल्ला ने उस पर कुछ लिखा और पेन और कागज़ वापस कर दिया। खान ने देखा कि उस पर अंग्रेज़ी में लिखा था कि मैं एक फ़िल्म का हीरो बन सकता हूँ।

हाथी के मुंह से बिना किसी वजह के हंसी निकल गई, जिस पर गोरिल्ला ने पहले मुंह बनाया, फिर अपना सिर पकड़कर दीवार से सटकर बैठ गया।

वे इस गैलरी में अलग-अलग कमरों से गुज़रे। फिर उन्हें कुछ सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं। अब वहाँ एक बंद दरवाज़ा था, जिस पर लिखा था:

"एटामिक रिडिउसिंग रोटेशन स्टिफ़नर"

उसके नीचे एक वॉर्निंग बोर्ड था और दाईं ओर लिखा था, किसी को भी अंदर आने की इजाज़त नहीं है, दिक्कत यह थी कि इस दरवाज़े में सिर्फ़ एक ही दरवाज़ा था, जो कहाँ से खुलता था? किसी नए आदमी के लिए यह पता लगाना लगभग नामुमकिन था। उसने कई तरीके आज़माए, लेकिन वह नहीं खुला। वह शायद कोई और तरीका आज़माता, लेकिन उसी समय किसी के कदमों की आहट ने उसे चौंका दिया। वह अपने पंजों के बल पीछे हटा और अंधेरे में गैलरी की दीवार के सहारे खड़ा हो गया। जो दो आदमी आए थे, उन्होंने चमकदार काले कपड़े पहने हुए थे। ये कपड़े गोताखोरों जैसे लेदर के थे और उनके सिर पर उनकी टोपियाँ थीं। जिसके सामने एक शीशा था। उनमें से एक अपने कंधे पर किसी को उठाए हुए था। जैसे ही वह खान और बाले के पास से गुज़रा, इवनिंग इन पेरिस की खुशबू ने बाले को चौंका दिया। वह तुरंत समझ गया। यह वही खुशबू थी जो

उसने कुछ घंटे पहले सलाजार के सफ़ेद खंभों वाले हॉल में अपने पास महसूस की थी। और जब दो काली परछाइयाँ बंद दरवाज़े तक पहुँचीं, तो बाले ने उन्हें रोशनी में पहचान लिया। वे सिल्वाना को ले जा रहे थे। सिल्वाना शायद बेहोश थी। खान धीरे-धीरे दरवाज़े के पास पहुँचा। एक आदमी ने अपनी जेब से टॉर्च निकाली और दरवाज़े पर रोशनी डाली, जिससे रोशनी में S का निशान बन गया। उसी समय, दरवाज़ा ऊपर उठा और एक गैप दिखाई दिया। उसके सामने सीढ़ियाँ थीं, और उनके पीछे एक बड़ा गोल हॉल दिखाई दे रहा था, जिसका अंदर का हिस्सा अजीब तरह से बना हुआ था। वह दूर से उसे साफ़ नहीं देख पा रहा था, लेकिन जब सिल्वाना को ले जा रहे दो आदमी दरवाज़े से अंदर आए और सीढ़ियाँ उतरने लगे, तो वे दोनों पहली सीढ़ी पर पहुँच गए।

उन दोनों आदमियों को अंदाज़ा भी नहीं था कि महान साइंटिस्ट के इस एटॉमिक शहर में कोई उनकी किसी फैक्ट्री में घुसने की हिम्मत कर सकता है। वे लपरवाही से सात सीढ़ियाँ नीचे उतरे और एक धुंध में घुस गए जो हॉल और सीढ़ियों के बीच एक गंदी कांच की दीवार की तरह थी। वे उसमें ऐसे चल रहे थे जैसे कोई पानी में तैर रहा हो।

दूसरी सीढ़ी से कोहरे के अंदर का नज़ारा साफ़ दिख रहा था। हाँ। और यह थोड़ा अजीब था। यह एक गोल हॉल था, जिसके बीच में चांदी जैसी अजीब बनावट की एक बड़ी मशीन थी, जिसके चारों कोनों पर चार लंबी रॉड लगी थीं और उनके चारों ओर पतले और मोटे सुनहरे, चांदी, चमकदार और लाल तारों का जाल बिछा हुआ था। ये चारों रॉड एक लहरदार पतले तार से एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं। बीच में एक गोल छेद था, जिसमें एक ग्लोब जैसी चांदी की गेंद थी, जो तिरछी घूम रही थी। इस कोने के ऊपर दो एटॉमिक रिंग थे, जो इसके ऊपर एक किरण के उल्टी दिशा में घूम रहे थे। जैसे ही बीच वाली गेंद घूमती, हर रॉड से गुनगुनाने की आवाज़ आती और उसके नीचे से नीले रंग का करंट उसके ऊपरी सिरे तक लहरदार होकर गायब हो जाता। जिसके तुरंत बाद एक पतला, लहरदार तार, जो इस रॉड और दूसरी रॉड के बीच लगा होता, पलक झपकने जितनी छोटी सी चिंगारी निकालता, लेकिन उसकी चमक ऐसी थी कि आँख उसकी रोशनी को देखना बंद नहीं कर पाती थी। और वह रुक नहीं सकती थी। और इन एटॉमिक रिंग्स के बीच में भी, एक लंबी, पतली रॉड ऊपर की ओर मुंह करके खड़ी थी, जिसके नीचे एक गोल चैंबर था। इस रॉड की जड़ से, रोशनी की एक चमक के साथ, एक

गोल आकार में एक चमकदार नीली लौ निकलती और ऊपर की ओर फैलने लगती। इस रॉड के ऊपरी सिरे पर, एक कई पहलुओं वाला सर्कल जुड़ा हुआ था, जो इस रॉड के साथ तेज़ी से घूमता था और इससे, वही

चमकीली नीली किरणें निकलकर चारों ओर बिखर रही थीं। हॉल के इस बीच वाले हिस्से से कम से कम 20 कदम दूर, चारों तरफ कांच के बड़े-बड़े कमरे थे, जिनकी ऊंचाई औसतन 8 फीट और चौड़ाई मामूली थी। और हैरानी की बात यह थी कि इनमें से हर कमरे में एक बहुत ही खूबसूरत और जवान लड़की थी। ये कमरे हॉल में छत और फर्श के साथ एक-दूसरे से कम से कम आठ फीट की दूरी पर थे, और बहुत तेज़ी से घूम रहे थे। इस बीच वाली रॉड के ऊपरी सिरे से निकलने वाली किरणें जितनी बार उन पर पड़तीं, उतनी ही ज़्यादा वे चमक उठते ।

इन कमरों में उन्होंने जो देखा, वह बहुत हैरान करने वाला था। इनमें से हर कमरे में एक खूबसूरत लड़की थी, जिसका शरीर भरा-पूरा, गोरा और सुडौल था, जिसकी जवानी और सुंदरता पहली नज़र में ही भावनाओं को जगा सकती थी। कमरे के घूमने के साथ-साथ इन लड़कियों के शरीर भी घूम रहे थे।

"अरे, मैं क्या देख रहा हूँ?" बाले के मुँह से हैरानी से निकला। "ये तो वही लड़कियाँ हैं।

"कौन?

"जिनको मेरे जंतर मंतर खाने से किडनैप कर लिया गया था। जो चांद के हैंडसम राजकुमार के प्यार में पागल हो गई थी।"

बाले बड़बड़ा रहा था और खान देख रहा था कि सिल्वाना को भी इन खाली कमरों में से एक, सुप्रीम चैंबर में धकेल दिया गया। यह सीन उसके लिए इतना रोमांचक था कि सन्न रह गया । सुंदर, सुडौल गोरी लड़कियाँ और आधे नंगे लेकिन जवान शरीर। एक नहीं, दो, तेरह, चौदह, इन कमरों में उसके सामने घूम रही थीं।

"हाय , सिल्वाना भी चली गई," भले ने धीरे से कहा।

346

"पीछे हटो," खान ने धीरे से कहा।

नहीं, मैं इसी जगह पर अपनी मज़ार बनाऊंगा--- भले वहीं जाम गया ।

"उल्लू , वे लोग लौट रहे हैं।" खान ने यह कहा और पीछे हट गया।

सातों सीढ़ियों पर एक से सात तक नंबर लिखे थे। जब दोनों आदमी दरवाज़े पर पहुँचे, तो बाले और खान गैलरी के अंधेरे कोने में चले गए। जब वे बाहर आए, तो दरवाज़ा अपने आप बंद हो गया। वे दोनों लापरवाही से गैलरी के दूसरी तरफ चले गए।

"अब?--- बाले ने दरवाज़ा बंद देखकर कहा, लेकिन खान को शायद इसकी परवाह नहीं थी। उसने अपनी टॉर्च निकाली और अपने नाखून से S जैसा एक कागज़ फाड़ा। फिर उसने उसे अपने मुँह की लार से टॉर्च के शीशे पर चिपका दिया और जब उसने उसकी रोशनी दरवाज़े पर डाली, तो दरवाज़ा सच में ऊपर उठ गया और वह अंदर आ गया।

"आप काफी चालाक हो गए हो। --बाले ने खान पर टिप्पणी की।

"अगर तुम्हारी चोंच बंद नहीं रही तो मैं तुम्हें भी इनमें से किसी एक कमरे में बंद कर दूँगा "

सातवें कदम के बाद वही कोहरा था। उन्हें अपनी आँखों के सामने चिंगारियाँ उड़ती हुई दिख रही थीं। और वे लड़कियाँ उन गोल कांच के कमरों में एकदम शांत और ठीक खड़ी थीं। उनके दोनों हाथ ऊपरी कड़ों में लटके हुए थे, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे वे खुद उन कमरों में बंद हों। क्योंकि उनके चेहरों पर कोई चिंता या बेचैनी नहीं थी, और न ही ऐसा लग रहा था कि उन्हें खड़े होने के लिए मजबूर किया गया है। और खान और बाले उनमें से हर एक को पहचानने की कोशिश कर रहे थे। उनमें से, नवाब सूलत जंग की लड़की से लेकर आखिरी लड़की सिलवाना तक, अब दिखाई दे रही थीं, लेकिन सिलवाना के मुकाबले वे सब छोटी लग रही थीं। यह चीज़

कुछ सेकंड तक उन्हें ध्यान से देखने के बाद यह साफ़ हो गया कि लड़कियां अपनी औसत हाइट से बहुत छोटी लग रही थीं।

"अरे, कहीं उन्हें छोटा तो नहीं किया जा रहा? ---बाले बोला।

"मुझे लगता है कि अब तक वे कम से कम 1/4 छोटे हो गए होंगे। ---खान ने कहा।

" अजीब आदमी है ? आखिर इसका क्या फायदा?" वह बड़बड़ाया।

खान ने सोचा और कहा, "अगर हम इस सेंट्रल प्लांट को हटा दें, तो शायद हम इन लड़कियों को बचा सकें।"

तो, देखिए , कम से कम दुनिया की ये खूबसूरतियां हमार एहसान तो मानेंगी ।" खान ने उसे आगे जाने से रोक दिया। उस समय, वे तीसरी सीढ़ी पर थे। खान ने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला और उसे कोहरे की तरफ फेंक दिया जो चिंगारियों जैसा दिख रहा था और हॉल और सीढ़ियों के बीच एक रुकावट बना हुआ था। रूमाल उसके पास पहुंचने से पहले ही एक झटके में आग पकड़ गया। और बाले की आंखें खुली की खुली रह गईं।

"सारी कोशिश बेकार है ," खान बड़बड़ाया। लेकिन बाले अचानक झोंक में लड़खड़ाकर सीढ़ियों से नीचे गिर गया। अगर खान ने दौड़कर उसे नहीं पकड़ा होता, तो उसे पता भी नहीं चलता। वह कोहरे से टकरा जाता, लेकिन इसी जद्दोजहद में वे दोनों छठी सीढ़ी पर पहुँच गए। जैसे ही उन्होंने छठी सीढ़ी पर पैर रखा, उन्हें ऐसा झटका लगा कि वे खुद को संभाल नहीं पाए। किस्मत अच्छी थी कि वे आगे गिरने के बजाय पीछे की ओर गिरे। उन्हें अपने पूरे शरीर में सुइयां चुभती हुई महसूस हुईं। उसी पल, उन्हें कदमों की आहट सुनाई दी और अगले ही पल, चमकदार काले कपड़ों में दो आदमी उनके सिर के ऊपर खड़े थे। उनमें से एक ने दूसरे से कुछ कहा और दूसरे ने एक नया हथियार लहराते हुए उनकी

तरफ़ मुड़कर गोली चला दी। यह सब इतनी तेज़ी से हुआ कि खान बाले को इसकी उम्मीद नहीं थी।

348

वे कुछ नहीं कर सके। उन्हें लगा जैसे उनके हाथ-पैर सुन्न हो रहे हैं। इस हथियार से वेल्डिंग स्टोव जैसी नीली लहर निकल रही थी और खान और बाले को सिर्फ़ उसकी चमक महसूस हो रही थी। खान ने अपनी पिस्तौल वाला हाथ उठाना चाहा, लेकिन उसे लगा कि उसका हाथ सुन्न हो गया है। बाले के साथ भी यही हुआ। उसके बाद, उसे बस इतना दिखा कि कोई उसे हाथ से पकड़कर ऊपर उठा रहा है, लेकिन वह होश खो चुका था, इसलिए उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। बस दूर कहीं से एक आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"उसे ज़िंदा मेरे पास लाओ।"

☆☆☆

348

वे कुछ नहीं कर सके। उन्हें लगा जैसे उनके हाथ-पैर सुन्न हो रहे हैं। इस हथियार से वेल्डिंग स्टोव जैसी नीली लहर निकल रही थी और खान और बाले को सिर्फ़ उसकी चमक महसूस हो रही थी। खान ने अपनी पिस्तौल वाला हाथ उठाना चाहा, लेकिन उसे लगा कि उसका हाथ सुन्न हो गया है। बाले के साथ भी यही हुआ। उसके बाद, उसे बस इतना दिखा कि कोई उसे हाथ से पकड़कर ऊपर उठा रहा है, लेकिन वह होश खो चुका था, इसलिए उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। बस दूर कहीं से एक आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"उसे ज़िंदा मेरे पास लाओ।"

☆☆☆

विचित्र प्राणी

जब उसने आँखें खोलीं तो वह एक अजीब जगह पर था, चारों तरफ खुला आसमान था। उसकी दीवारें, उसके दरवाज़े सब उसी हल्के आसमानी धुंध में दिख रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आँखों के सामने अंजीर के पत्ते फैले हों और वह उनसे घिरा हुआ हो, लेकिन जब उसने अपने सामने जो देखा तो वह चौंक गया। उसके सामने एक बहुत ही हैंडसम आदमी, जिसके चेहरे और शरीर पर हल्की चांदी जैसी चमक थी, एक लेदर की कुर्सी पर बैठा झूल रहा था। वह अपने दोनों हाथों के पंजों को चुटकी में आपस में जकड़ रहा था। और उसकी मुस्कुराती आँखें खान और बाले की हालत देख रही थीं। उस जगह पर उन तीनों के अलावा कोई और नहीं था। खान और बाले एक गद्देदार सोफे पर थे।

"सलाज़ार -------जैसे ही खान ने उसे पहचाना, वह चौंक गया और उछल पड़ा।

"खान साहब --सलाज़ार ने अपनी कुर्सी उसकी ओर घुमाते हुए कहा, "चोरी करना तुम्हारे जैसे जासूस को शोभा नहीं देता।"

"मुझे आपकी वैज्ञानिक महानता का यकीन है, सलाजार, लेकिन क्या यह आपको शोभा देता है कि आप कई माता-पिता को उनके बच्चों से दूर करके अपना खुद का लग्ज़री घर बनाएं?" खान ने बिना किसी हिचकिचाहट के पूछा।

सिर्फ़ उन्हें ही क्यों, मैं तुम लोगों को भी अपने साथ ले जा रहा हूँ।

"मान न मान ....." बाले कहना चाहता था।

"इसीलिए मैंने तुम्हें यहां बुलाया है, नहीं तो यहां से कोई भी ज़िंदा नहीं निकलता।" सलाज़ार ने गंभीर स्वर में जवाब दिया।

"मैं कुछ भी नहीं समझा ?

"क्या तुम्हें लगता है कि मैं ये सब तरह के जानवर ..... शायद तुम लोगों को नहीं पता कि जब तुम वहाँ बैठे थे तो मुझे तुम्हारी सारी हरकतों का पता था। और मैंने खुद तुम्हें यह जानने का मौका दिया कि मेरा प्रोग्राम क्या था।"

"तुम्हारे इस न्यूक्लियर शहर में, मैं अब किसी भी नामुमकिन चीज़ पर यकीन करने को तैयार हूँ।" खान अपनी लाचारी और बेबसी को मान रहा था।

"हाँ, तो मैं अपने साथ हर प्रोफेशन और काबिलियत के आदमी, ब्रीडिंग के लिए खूबसूरत लड़कियां , हर तरह के जानवर, और हर तरह के ज़मीन के प्रोडक्ट के सैंपल ले जाना चाहता हूँ।

और मैंने तुम दोनों को इन साइंटिस्ट के साथ यहाँ पहुँचने का मौका दिया क्योंकि मुझे वहाँ तुम्हारी स्किल्स की ज़रूरत पड़ सकती है। कम से कम तुम्हारा यह असिस्टंट तो अच्छा मुल्ला दो पियाजा साबित हो सकता है। वह बाले को देखकर मुस्कुराया और बाले का खून खौल उठा ।

"बेइज्जती," उसने विरोध किया।

सलाज़ार ने खुशी से जवाब दिया, "मुझे भी अपनी कंपनी में खुशमिजाज साथी पसंद हैं, जिनकी मौजूदगी से माहौल उदास न हो।"

"लेकिन तुमने यह सब खेल क्यों रचा है? खान ने उसने पूछा। " क्या तुम इंसानियत के साथ बुरा बर्ताव नहीं कर रहे हो?" खान ने कहा।

"बिल्कुल नहीं," सलाजार ने शांति से कहा, "जानवरों को छोड़कर, जितने भी जीव आप यहाँ देख रहे हैं, वे सब अपनी मर्ज़ी से मेरे साथ चलने के लिए राज़ी हुए हैं, और उन्होंने इसके लिए हर तरह की कुर्बानी दी है।"

"और वो बेचारी लड़कियाँ? बाले ने चैंबर में फंसी लड़कियों की वकालत की।

वह गरीब नहीं है, वह जिद्द कर के जा रही है, वो मुझसे अलग नहीं होना चाहती ।

"क्या मतलब ?" खान ने पूछा।

"एक मिनट रुको, मैं तुम्हें दिखाता हूँ। यह कहकर वह अपनी कुर्सी से उठा और अपने सामने गोल मेज पर एक बटन दबाया। इसी समय बगल में कोहरे में हल्की नीली लहरें पैदा हुईं और वह बीच से ऐसे फटने लगी मानो उसे हटाया जा रहा हो। खान और बाले ने देखा कि एक लंबी, ऊँची काउंटर जैसी मेज बिछी हुई थी जिस पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर तीन तीन फुट ऊँचे कांच के जार, जार जैसे कक्ष रखे हुए थे। और वे यह देखकर हैरान थे कि छोटे कद, ढाई, ढाई फुट की खूबसूरत लड़कियाँ इन जार में बंद थीं। जैसे ही उसने सलाज़ार को देखा, वह मुस्कुराने लगी। सलाज़ार अपनी जगह से उठा और एक कक्ष के पास गया और विशेष रूप से विनम्र भाव से इस मूर्त प्राणी, एक छोटी लड़की के सामने थोड़ा झुका, जो उसके अंदर बंद थी।

"मैडम सायर निया, क्या आप मुझे इज्ज़त देंगी?

और इस मौके पर बाले भी हंस पड़ा, यह देखकर कि कमरे में बैठी खूबसूरत 21/2 फुट की लड़की, जो दिखने और साइज़ में काफी जवान लग रही थी, शरमाने लगी। वह सलाजार को किन नज़रों से देखकर मुस्कुरा रही थी? सलाजार ने लंबी टेबल में कमरे के नीचे एक हैंडल घुमाया, जिससे गोल कमरा बंद दरवाज़े की तरह खुलने लगा, और वह लड़की चलते हुए बाहर आ गई। खान और बाले यह नज़ारा हैरानी से देख रहे थे। सलाजार ने उसे बड़े आदर से उठाया और खान और बाले के सामने टेबल पर ले आया। फिर वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

"राजकुमार, --यानी छोटी महिला ने अपनी नरम लेकिन तीखी आवाज़ में उससे बात की।

"यह तो हो गया। हम अपनी नई दुनिया में कब चलेंगे?"

"अब समय हो गया है, लेकिन मुझे अफसोस है.... ," उन्होंने रुककर खान और बाले की तरफ़ देखते हुए कहा।

"अफसोस किस बात का ? कैसी सॉरी?" गुड़िया जैसी लड़की परेशान हो गई।

"ये लोग तुम्हें तुम्हारी दुनिया से ले जाने आए हैं। और मैं किसी को यहां रुकने के लिए मजबूर नहीं करना चाहता। ---------सलाज़ार ने खान और बाले की तरफ इशारा किया। जिस पर लड़की ने उन दोनों को बहुत नफ़रत से देखा और मुँह फेर लिया।

"मैं नहीं जाऊँगी, राजकुमार। आप चाहें तो मुझे मार डालें, लेकिन भगवान के लिए मुझे अपने से अलग न करें।

"मैं मजबूर हूँ,मैडम ---------सलाज़ार ने सीधे जवाब दिया, जिस पर वह टेबल से कूद गईं और सलाज़ार के पैरों पर लेट गईं।

"भगवान के लिए, राजकुमार, मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकती। उसने विनती की।

"अब मैं भी सलाज़ार बनूंगा," बाले फर्श पर बैठते हुए बुदबुदाया।

"चुप रहो, वह ज़्यादा बदतमीज़ी बर्दाश्त नहीं करेगा।" खान ने उसका पैर दबाते हुए धीमी आवाज़ में कहा।

सलाज़ार ने उस छोटी लड़की को दोनों हाथों से उठाया और उससे वादा किया कि वह उसके साथ रहेगी, और उसे कमरे में ले गया। वह उसे बहुत खुश और शुक्रगुज़ार आँखों से देख रही थी। जब उसने दूसरा बटन दबाया, तो कोहरे ने फिर से रास्ता रोक दिया।

"आप देखिए, यहां कोई भी ऐसा नहीं है जिसे मजबूर किया गया हो। हालांकि, कुछ ही लोग हो सकते हैं जिन्हें मैं कुछ समय के लिए जबरदस्ती अपने साथ ले जा सकता हूं।

उसने कहा, "मेरा इशारा उन साइंटिस्ट्स की तरफ है जो आपके साथ मेरे मेहमान हैं। मुझे अपनी नई दुनिया में उनकी मदद और सहयोग की ज़रूरत होगी ।"

"मैं बस यही पूछ रहा हूं कि यह सब किसलिए है?"

"इस दुनिया के रिसोर्स और इसके माहौल मेरे साइंटिफिक टेस्ट के लिए लिमिटेड हो गए हैं। इसलिए, मैंने मार्स पर बसने का फैसला किया है। और ये सभी लोग, छोटे या बड़े, वो हैं जो आपकी दुनिया से थक चुके हैं और यहां की ज़िंदगी, यहां के मतलबी माहौल से तंग आ चुके हैं। ऐसे दुखी लोगों की तकलीफ दूर करने के लिए मैंने पांच साल पहले अमेरिका और दूसरे देशों में ऐड दिया था। ये लोग तब मुझसे मिलने आए थे। और जब मैंने उनसे कहा कि मैं यह दुनिया छोड़कर मार्स पर एक नई दुनिया बनाना चाहता हूं, तो मेरी साइंटिफिक पावर को देखने के बाद, वे हर कीमत पर मेरे साथ जाने को तैयार हो गए। वे मान गए। तब से वे इन तैयारियों में पूरे दिल से मेरी मदद कर रहे हैं। ------- सलाज़ार ने कहा।

"तुम्हारा मतलब इस 2.2 फुट के आदमी से है?"

"मैंने तीन साल की कड़ी मेहनत से एक रिड्यूसिंग न्यूक्लियर प्लांट के ज़रिए रिडक्शन की थ्योरी को एक चौथाई तक कम कर दिया है, और इन औरतों ने भी जो मेरी खूबसूरती पर फ़िदा हैं, मेरे बिना खुद को खत्म करने के लिए तैयार थीं ।

"यह सब बनावटी सुंदरता है जनाब का ...," बाले ने धीरे से कहा, लेकिन सलाजार ने सुन लिया

"नहीं। यह मेरा असली रूप है। मैं आज भी वही इंसान हूँ, जब मैंने अकाउंटेबिलिटी का फ़ॉर्मूला आज़माया था। मैं उस तिब्बती लामा को श्रद्धांजलि देता हूँ जिन्होंने मुझे यह सिखाया।

"मेरा खोया हुआ स्वभाव वापस लाकर उसने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है।"

"तो ये सारी तैयारियां मंगल पर जाने के लिए हैं?"

"हाँ। मैं अपने रॉकेट को मंगल ग्रह तक पहुँचाने के लिए एक स्पेस स्टेशन बनाने की सोच रहा था। और इस अमेरिकन प्लेन को लटकाने का एक्सपेरिमेंट इसी चेन की एक कड़ी था। इसके लिए मुझे जितनी मेहनत करनी पड़ी, शायद दुनिया के सभी साइंटिस्ट भी नहीं कर पाते। दुनिया के लोगों ने तीन साल पहले आसमान में एक कॉमेट देखा था, लेकिन असल में वह मेरा रॉकेट था, जिसमें मैं अपने दो वफ़ादार साथियों के साथ, पृथ्वी के ग्रेविटेशनल फील्ड को पार करके स्पेस में बहते इस लिक्विड को फाड़ने गया था, जिससे यह सूरज की किरणों की सुपरमैग्नेटिक फोर्स को एब्ज़ॉर्ब करके पृथ्वी तक पहुँचता है। इन किरणों का उद्गम स्थल, जहां हर कोई नहीं पहुंच सकता।

खान ने पूछा, "इस स्पेस फ्लूइड को क्या कहते हैं?"

"यह ग्रह बादलों के ऊपर पानी की तरह स्पेस में तैर रहा है और इसमें इतनी न्यूक्लियर पावर है कि इसकी थोड़ी सी मात्रा दुनिया बदल सकती है। इसे तोड़ने के लिए मैंने प्रोटोनिक गैस के गोले इस्तेमाल किए, जिनमें से अगर एक भी धरती पर फट जाए, तो यह हज़ार मील तक धरती को राख में बदल देगा। आपकी दुनिया के साइंटिस्ट अब तक एटम को तोड़कर इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन खोज पाए हैं, लेकिन प्रोटॉन के न्यूक्लियस की

खोज उनकी कल्पना और सपनों से भी परे है। मैंने दुनिया की यह सबसे एडवांस्ड साइंटिफिक पावर अमेरिका में खोजी थी। एक बहुत छोटे से इत्तेफाक से, मुझे बिकिनी आइलैंड्स में किए गए न्यूक्लियर एक्सपेरिमेंट के एटॉमिक पार्टिकल्स मिल गए थे। और उन्हें तोड़ने के लिए मैंने दोपहर के समय सूरज की सीधी किरणों की पावर का इस्तेमाल किया, जो दस हज़ार डिग्री के कॉन्वेक्स रिफ्लेक्टर में कंसन्ट्रेटेड होने के बाद न्यूक्लियर फर्नेस से भी ज़्यादा गर्म हो जाती हैं। लेकिन शायद आप ये बातें न समझ पाएं।

असल में, कई साइंटिस्ट शायद इसे न समझें, और मैं इस फ़ॉर्मूले को पब्लिक नहीं करना चाहता, नहीं तो इस दुनिया के लोग इस एनर्जी को खोजने की उम्मीद में पागल हो जाएंगे और एक-दूसरे को खत्म कर देंगे। इसीलिए मैंने कल इन साइंटिस्ट को नहीं बताया, नहीं तो मैं बिल्कुल भी मतलबी नहीं हूं। ------यह कहते हुए सलाज़ार सांस लेने के लिए रुक गया ।

उस समय, खान जैसा जिद्दी जासूस भी सलाज़ार की महानता से इम्प्रेस होने लगा था। वह उसकी बातचीत से काफी इम्प्रेस हुआ लग रहा था।

"और जो आप देख रहे हैं, ," सलाज़ार ने फिर कहा। "यह सब उनका करिश्मा है।"

"क्योंकि मुझे सूरज की सीधी किरणों के कॉन्वेक्स रिफ्लेक्शन से प्रोटॉन का एसेंस मिला था, मुझे यकीन था कि प्रोटॉनिक एनर्जी के फैलने से स्पेस फ्लूइड फट सकता है। यह फ़ॉर्मूला असल में ऐसा है जैसे किसी दूसरे इंसान के खून के अलग-अलग पार्टिकल्स को किसी इंसान के खून में मिलाना, दूध फट जाता है, जब आप दूध में थोड़ी सी खटास मिलाते हैं।"

खान ने कहा, "काश आप अपनी यह ताकत इस देश के लोगों की भलाई पर खर्च करते।"

"मैं," सलाज़ार मुस्कुराया। "मिस्टर खान, मुझे यहां के लोगों का सबसे अच्छा अनुभव है।"

"अगर इन्हें यह मौका मिले, तो सबसे पहले अपने भला करने वालों का गला काट दें । मैं अपनी खुद की बिना स्वार्थ वाली और शांति वाली दुनिया बसाना चाहता हूँ। और इसीलिए मैं मंगल जैसे सुनसान ग्रह को अपना घर बनाने जा रहा हूँ। वहाँ की ऑक्सीजन थोड़ी ज़्यादा मिली-जुली है। मैं उसे सूरज की किरणों से साफ़ करूँगा। और मैंने इन इंसानों को एटॉमिक रिडक्शन फ़ॉर्मूले से तीन-चौथाई छोटा कर दिया है, ताकि जो ऑक्सीजन मैं अपने साथ ले जा रहा हूँ, वह उन्हें वहाँ कम से कम दस साल तक ज़िंदा रखे। इस दौरान, उनके फेफड़ों को भी वहाँ की हल्की ऑक्सीजन की आदत हो जाएगी। और मैं इसका कोई इलाज भी ढूँढ लूँगा। इसके अलावा, उन्हें छोटा करके, मैं अपने रॉकेट में उन सभी के लिए जगह भी बना पाऊँगा।" सलाजार ने इस बौने जीवों या विचित्र प्राणियों के अस्तित्व का कारण बताया।

"और ये काले कपड़े पहने बड़े आदमी?" बाले ने पूछा।

"वे मेरे रॉकेट के क्रू हैं। यह क्रू ऐसे ही रहेगा।---- सलाजार ने उत्तर दिया.

"मैंने एक नौ फीट लंबे परमाणु बच्चे को भी बोतल से दूध पीते देखा।--बाले ने कहा।

सलाज़ार ने कहा, "ये मेरे एनलार्जमेंट फ़ॉर्मूले का एक एक्सपेरिमेंट है। मैं ऐसे कुछ ही बच्चों को अपने साथ ले जाऊंगा। मुझे उन्हें टेस्ट करना है कि वे मंगल ग्रह के मिले-जुले एटमॉस्फियर को झेल सकते हैं या नहीं।"

"भाई, मेरा मानना है कि आप जादूगरों के भी पिता हैं।"

"बिलकुल कोई जादू नहीं है, यह तो बस उन शक्तियों का सही इस्तेमाल है जो प्रकृति ने अपनी रचनाओं में डाली हैं। यह उनका इस्तेमाल है। यह उनका फ़ायदा है: उनके साथ कुछ करना है या नहीं करना है, यह इंसान का काम है।" ऋषि ने जवाब दिया।

"क्या आपको यकीन है कि मंगल ग्रह पर जीवन नहीं है?"

सलाजार ने कहा, "कोई भी चीज़ पहली बार नहीं हुई है, और अगर वे संयोग से हुई भी हैं, तो वे बहुत कम और मामूली होंगी।"
"वैसे, मेरी स्टडी के अनुसार, ऐसे निशान नहीं मिले हैं। हो सकता है कि वे कभी मौजूद थे और फिर गायब हो गए और फिर अपनी ही नाकाबिलियत की वजह से गायब हो गए," सलाज़ार ने कहा।

"अच्छा, उस पौधे का क्या नाम था जिसे आपने हमें नहीं दिखाया?"

"मैंने तुमसे कहा था कि मैंने स्पेस मैटर को फाड़कर सीधे सूरज की वर्जिन किरणों की पावर हासिल की है। उनमें इतना ज़्यादा मैटेरियल अट्रैक्शन और इतना ज़्यादा ग्रेविटेशनल खिंचाव होता है कि उनका सार पृथ्वी को उसके एक्सिस से खींच सकता है। उसे टुकड़े-टुकड़े कर सकता है," उसने कहा।

"तो फिर भगवान के लिए, जितनी जल्दी हो सके यहाँ से चले जाओ। भगवान न करे, अगर तुम्हारी नियत बदल गई, तो यह दुनिया तबाही की चपेट में आ जाएगी," खान ने मुस्कुराते हुए कहा।

"हैरानी की बात है, खान साहब। आप अभी भी मुझे नहीं पहचाने? मैं इंसान हूँ। मेरे दिल में कोई नफ़रत, कड़वाहट, घमंड, खुद पर घमंड या झूठी शान नहीं है। वैसे, मेरे जाने की तैयारी अब पूरी हो गई है। थोड़ा गैप था, सो पूरा हो गया। अब जब चाहूँ, इस बड़े प्लांट के ज़रिए धरती के इस हिस्से के रोटेशनल और मैग्नेटिक अट्रैक्शन को न्यूट्रलाइज़ करके मार्स की तरफ़ उड़ सकता हूँ। इस तरह, मेरे रॉकेट्स को स्पेस तक पहुँचने में कोई एनर्जी बर्बाद नहीं करनी पड़ेगी और स्पेस मटीरियल को चीरती हुई मार्स की हमारी फ़्लाइट ठीक वैसी ही होगी जैसी इंडिया से लंदन होते हुए अमेरिका पहुँची थी।

"और अगर कोई बाहर से यहाँ आकर आपका प्रोग्राम खराब कर दे तो?"बाले फिर बि बाज नहीं आया ।

"ये न्यूक्लियर सिटी, जो हिमालय की तलहटी में काफी नीचे लद्दाख से 600 मील उत्तर में बसा है, चारों तरफ से पहाड़ों से घिरा है। और आप इसके आर्टिफिशियल चांद के

ऊपर नीला आसमान देख सकते हैं, और जो लोग बाहर से आएंगे उन्हें दूर से सिर्फ पहाड़ों को ढके बादल ही दिखेंगे। इसलिए, शायद सदियों तक किसी को इस शहर के होने का एहसास नहीं होगा, लेकिन वैसे भी। सिर्फ वही लोग यहां पहुंच सकते हैं जिनको मैं चाहूँगा वरना इस न्यूक्लियर सिटी और इस फ्लाइट पार्क के बाहर जहां मैंने जानवरों की प्रजातियों को मंगल ग्रह पर ले जाने के लिए रेडियो भी रखे हैं, वहां जंगल की सीमा है। और यहां आपको बिल्कुल अलग दुनिया दिखेगी। --------वह बाले की ओर मुड़ा और बोला। अपनी पुरानी आदत के अनुसार, वह आज भी खान को तुम कहकर बुलाता था। और खान, भले ही वह उसके महान व्यक्तित्व से प्रभावित था, फिर भी हमेशा की तरह उसे तुम कहकर बुला रहा था।

358

बाले ने कहा, "भगवान के लिए, इस एक दुनिया में कितनी दुनियाएँ घुस चुकी हैं ?"

"वहाँ मैंने इस शहर को बचाने के लिए, उन घटिया जीवों को रखा है जिन्हें इंसान हमेशा सताते आए हैं। वे निश्चित रूप से किसी भी इंसान से हमदर्दी नहीं रखेंगे जो उनके सामने आएगा।

"तुम्हारा क्या मतलब है?" खान ने धीरे से पूछा।

सलाजार ने कहा, "मैंने जानवरों के स्वभाव को एनालाइज़ किया। मैंने छोटे जानवरों को, जिन पर इंसान ज़ुल्म कर रहे थे, ऐसे बड़े फ़ॉर्मूले से उनसे बड़ा बना दिया, कि उनहीने गुस्से में इंसानों के पुतलों को फाड़ डाला । और जब मैंने बड़े और खून के प्यासे जानवरों को देखा, तो वे इंसानी रूप से डरकर भागने लगे, या उसके आगे झुक गए।"

उस ने खान से पूछा, "क्या आपने फ्लाइट पार्क में शेर और हाथी नहीं देखे जो आपको देखकर भाग गए?"

"लेकिन एक सूअर ने मेरी पिंडली को काट खाया था। "

"सुअर तो फिर सुअर ही है।" सलाज़ार मुस्कुराया।---

-----लेकिन, मैंने इंसानों के सताए हुए सभी घटिया जानवरों को बड़ा करके बाहरी सुरक्षा एरिया में रखा है, ताकि अगर अनजान लोग अंदर आ जाएं, तो वे इस बॉर्डर को पार न कर सकें। और उनके अलावा, मैंने जानवरों के बॉर्डर के सामने हवा में एक प्रोटेक्टिव न्यूक्लियर वेव विंग बनाया है, जो ज़मीन से दो हज़ार फ़ीट की ऊंचाई तक है। और ज़ाहिर है, कोई भी प्लेन इससे ज़्यादा ऊंचाई पर लैंड नहीं कर सकता। नतीजतन, अगर कोई प्लेन से आता भी है, तो वह इस कोहरे की चादर से टकराकर धूल में बदल जाएगा। इसमें पांच हज़ार डिग्री से ज़्यादा गर्मी की आग जैसी लहरें तैरती हैं और न्यूक्लियर शेल भी उनकी चादर को नहीं तोड़ सकते।

"तो ऐसा लगता है कि आप हर तरह से सुरक्षित हैं।"

"ऐसा होना भी चाहिए। मैं किसी को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता, और न ही मैं चाहता हूं कि कोई मुझे ऐसा करे।"

फिर ये लड़कियां? बाले ने फिर से वकालत शुरू कर दी।

"मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूं कि वह मुझसे प्यार करती है और मेरे लिए तरसती है।------

----------मैंने उनको प्यार करने के लिए मजबूर नहीं किया है। क्या मुझे उसके लिए अपनी सूरत को बिगाड़ लेना चाहिए? या उसे आत्महत्या करने देना चाहिए? शायद तुम ने एक लड़की का हश्र देखा भी है इसीलिए मैंने इनको अपने पास बुला लिया । -- सलाज़ार ने बताया।

ओह, तुम्हारी खुश किस्मत --बाले ने एक लंबी, ठंडी सांस ली।

"और शायद तुम्हारी गर्लफ्रेंड केटी भी उनमें से एक है। क्योंकि वह तुम्हारा नाम लेकर तुम्हें गालियां दे रही थी। वह कहती थी, "बंदर के रूप में एक पुलिस सार्जेंट मुझ पर मरता था।" सलाजर मज़ाक के मूड में आ गया और बाले के टन बदन में आग लग गई।

"वह ऐसा क्यों कहेगी ?"

"मैं कभी झूठ नहीं बोलता। और शायद कल मैं तुम्हें उससे मिलवा दूँ, खुद ही उससे पूछो।--- सलाज़ार ने हंसते हुए कहा.

इसी बीच, दो छोटे कद के आदमी अंदर आए। उनके हाथ में चाय की ट्रे और कुछ पेस्ट्री थीं। उन्होंने ये चीज़ें खान और बाले के सामने टेबल पर रखीं और चुपचाप वापस चले गए।

"और हाँ, तुम रोशनी के साथ कैसे दिखते और गायब होते हो?" खान ने यह पूछा

यह कोई बहुत मुश्किल समस्या नहीं है। यह बिल्कुल टेलीविज़न की तरह है, फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि मैं या मेरे आदमी खुद इन तरंगों पर उड़ सकते हैं। आसमानी तरंगों की यह हालत किसी भी चीज़ को उड़ा सकती है।

यह आपको मनचाही जगह पर ले जा सकता है। लेकिन, मेरी कुर्सी, जिसे आप सिंहासन समझते हैं, एक ट्रांसमिशन कुर्सी है। यह मुझे सुरक्षा देने वाली तरंगों के पर्दे में एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है। यह जादू नहीं है। यह सिर्फ़ कांच है। कांच की तरह पारदर्शी, बारीक एटॉमिक तरंगों का एक जाल, इसके अंदर की चीज़ों को दूसरों की नज़रों से बचाता है। और इसके चारों ओर रेडिएंट वेपर्स की चादर इसे हर बाहरी खतरे से बचाती है। क्या आप यह नहीं समझ सकते कि जो एटॉमिक लपटें एक रॉकेट को ज़मीन से उड़ाकर आसमान में ले जा सकती हैं। वे एक आदमी या कुर्सी को एक जगह से दूसरी जगह नहीं ले जा सकतीं।"---
सलाज़ार ने कहा।

"खूब लेकिन . दुनिया के लोग इसे तिलिस्म-ए-होशरूबा के जादू से कम नहीं समझेंगे.- बाले बोला

"हो सकता है कि वह किताब किसी महत्वाकांक्षी काल्पनिक वैज्ञानिक ने लिखी हो।-- साइंटिस्ट दो तरह के होते हैं। एक वो जिन्हें किसी चीज के बारे में जानकारी नहीं होती, लेकिन उनकी दिमागी ताकत उन्हें इसकी अलग-अलग संभावनाओं के बारे में बताती रहती है। और एक वो होते हैं जो प्रैक्टिकली इससे वाकिफ होते हैं, लेकिन उनमें नई चीज़ें सोचने की काबिलियत कम होती है। और भगवान की कृपा से, मुझमें ये दोनों काबिलियत हैं।

"अज्जी जनाब , वह किताब अफीम की गोली से ज़्यादा कुछ नहीं है।" बाले ने कहा।

उस ने कहा, "हो सकता है, मैंने इसे पढ़ा न हो, लेकिन मुझे पता है कि पहले लोग कई अजीब घटनाओं को जादू और तिलिस्म समझते थे, लेकिन आज साइंस ने उन्हें सच बना दिया है।"

"मैं भी इसे यही कहता हूं, लेकिन इसके दिमाग में तो भूसा भरा है। खान ने मुंह बना कर बाले को घूरा।

" लानत है जो अब कुछ पूछा, --बाले का मुंह लटक गया और सलाजर हंस पड़ा ।

" हां, मैंने तुम्हें यही पूछने के लिए बुलाया है कि मेरे साथ मंगल ग्रह पर जाने के लिए तैयार हैं? --सलाज़ार ने खान से पूछा।

" क्या ख्याल है बाले ? खान ने उससे पूछा।

"तौबा कीजिए, अपनी दुनिया सबसे भली । वहां आपको नए नए चौखटे कहां मिलेंगे? -- बाले ने जवाब दिया।

"खैर, मैं इन साइंटिस्ट्स को उनकी मर्ज़ी से या ज़बरदस्ती अपने साथ ले जाऊँगा। वे अपने ज्ञान से इस दुनिया में देशद्रोह और गड़बड़ी फैलाते हैं और वहाँ मैं उनके साथ शांतिप्रिय नागरिकों जैसा बर्ताव कर पाऊँगा। लेकिन, तुम लोगों के पास सोचने का एक और मौका है, कल तक मंगल की दुनिया एक ऐसी दुनिया होगी जहाँ सब कुछ हमारा होगा और जब तक मैं वहाँ हूँ, मैं किसी भी तरह का अन्याय, भेदभाव या नफ़रत पैदा नहीं होने दूँगा। ---------सलाजार खड़ा हो गया। खान और बाले तब तक अपनी चाय खत्म कर चुके थे और बाले ने भूख के कारण सारी पेस्ट्री प्लेटें खाली कर दी थीं।

"और हाँ, मिस्टर खान---सलाज़ार को अचानक कुछ याद आया। "मैंने तुम्हें पाँच साल पहले एक गिफ़्ट दिया था, और शायद उसी समय उसकी ओपनिंग डेट भी थी, उसका क्या हुआ?"

"मैंने इसे माधोलकर को दे दिया है क्योंकि मुझे डर था कि मेरे साथ कोई दुर्घटना हो जाएगी।’ खान ने खुलकर कहा।

"उफ़, तुमने क्या किया तुमने? मैं इस दुनिया को अपना कोई राज़ नहीं बताना चाहता, मैंने तो डॉ. पटेल को भी यहाँ बुलाया था क्योंकि उनके पास प्रोटो-टिक एनर्जी के बारे में कुछ जानकारी थी। तुमने अच्छा नहीं किया, मिस्टर खान। ------सलाजार की आवाज़ में नाराज़गी दिखने लगी। उसमें एक छोटी सी कैनेडियन गिलहरी थी, अब तक वो न्यूक्लियर अनाज खाते-खाते

इस पूरे डिब्बे जितनी बड़ी हो गई होगी , यह बहुत सुंदर चीज़ थी।"

"मुझे अफसोस है , लेकिन मैं इसे बर्बाद नहीं करना चाहता था।--- खान ने अफसोस किया ।

"यह ठीक नहीं हुआ, मुझे इसे वापस लेना होगा । ---वह बुदबुदाया। और जैसे ही वह मुड़ने लगा, बाले को फिर से कुछ याद आ गया।

"वो आपका हथियार , मुझे इससे भी डर लगता है---- बाले ने कहा। और खान ने भी इस सवाल को ध्यान दिया।

"ओह, यह मेरा एयर अटैक वेपन है। कल आपको ब्लो-अप प्लांट के पास एक बड़ी तोप जैसी मशीन दिखेगी, यह रेडियो कंट्रोल से एक नीली इलेक्ट्रॉन बीम छोड़ती है। इसके मुंह में पांच प्रोंग हैं। हम जहां चाहें इन लपटों को रोक या फेंक सकते हैं, और जहां चाहें इनकी रिकॉइल फोर्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। ----------यह कहकर सलाज़ार ने सांस ली और फिर बाले की तरफ देखकर कहा।

"अब मैं थक गया हूं और कोई सवाल मत पूछो।" यह कहकर वह कोहरे में घुस गया और नज़रों से ओझल हो गया, जिसमें अगर कोई और पैर रखता तो वह कोयले में बदल जाता। खान और बाले वहीं खड़े कुछ सोचने लगे कि पीछे से वही काले चमकदार कपड़ों में गार्ड आ गए।

"तशरीफ़ ले चलिए , आपको रहने की जगह पर ले चलते हैं। उनमें से एक ने थोड़ा झुककर प्यार से बाले को कहा।

"क्यों नहीं?”

बाले और खान चुपचाप पीछे-पीछे चले ।

जब वे इस अजीब बिल्डिंग के लॉन में पहुँचे, तो वे यह देखकर चौंक गए कि डूबता हुआ चाँद, बिल्डिंग से ज़्यादा से ज़्यादा दो सौ गज की दूरी पर, एक बड़े टैंक के मुँह में जा रहा था। यह लगभग 20 फ़ीट डायमीटर का एक चमकीला गोला था।

☆☆☆

आश्चर्य दुनिया

एक दिन और एक रात....माधोलकर, राज़ी को दिल्ली फ्लाइंग क्लब के स्पेशल डकोटा में उड़ते हुए हो चुके थे ।

बीच-बीच में, वे इंजन और बॉडी चेक करने, फ्यूल लेने वगैरह के लिए अलग-अलग एयर बेस पर उतरते और फिर उड़ना शुरू करते। उनके फ्लाइट सेंटर ज़्यादातर हिमालय की तलहटी और उत्तरी तलहटी में थे। उनके साथ तीसरे आदमी डॉ. झाला थे, जो एक छोटा डिटेक्टर और रेडियोएक्टिव असर का पता लगाने के लिए एक और मशीन रखते थे। चौथे आदमी दिल्ली फ्लाइंग क्लब के पायलट ऑफिसर अमर नाथ थे, जो भी उतनी ही दिलचस्पी से उनकी मदद कर रहे थे, जितनी दिलचस्पी डॉ. झाला और ये दोनों जासूस उसी मामले में ले रहे थे।

आज रात अंधेरी थी। सिर्फ़ टिमटिमाते तारे आसमान में हल्की रोशनी फैला रहे थे। नीचे, जहाँ तक नज़र जा सकती थी, सुनसान जंगल औ सुनसान पहाड़ी इलाके थे, और आसमान की सख़्त ठंड ने उन्हें अपने कान बंद करने पर मजबूर कर दिया था।

पायलट ऑफिसर अमर नाथ ने भी हार नहीं मानी थी । वह माधोलकर कि जिद पर लद्दाख घाटी के उत्तर की तरफ जा रहे थे। कभी वह डकोटा रूट को ब्लॉक करने वाले पहाड़ों को पार करने के लिए बहुत ऊंचाई पर उड़ते, तो कभी इतने नीचे आ जाते कि सर्चलाइट से नीचे के माहौल का अंदाज़ा लगाया जा सके। अब तक उन्हें कोई कामयाबी नहीं मिली थी।

"मधु, चाँद का वह शहर ज़रूर दूसरे या तीसरे आसमान में कहीं होगा। तुम बेकार में मेहनत क्यों कर रहे हो?" राज़ी ने थके हुए स्वर में कहा।

"ठहरिए जनाब । अचानक डॉ. झाला ने बीच में टोका। उनकी नज़र बहुत देर से टेलिस्कोप से नहीं हटी थी। " नीचे दूर पहाड़ों की वो लाइन," उन्होंने खुद से कहा। "उन पहाड़ों की चोटियों पर रोशनी कैसी दिखती है?"

"कहाँ?" माधोलकर ने उसके हाथ से दूरबीन ले ली और वह खुद भी उछल पड़ा।

पहाड़ों की चोटियों के ऊपर सफ़ेदी सी दिख रही थी।

"लाओ, मैं देखता हूँ।" राज़ी भी पीछे नहीं रहा, लेकिन अगले ही पल उसने लाहुल पढ़ना शुरू कर दिया। "अरे, यह बर्फ़ है, या बादल होंगे , यह आपको सफ़ेद नहीं दिख रही ? "

"बरखोरदार, इतनी दूर से बादल इतने चमकीले नहीं दिखते, और ना ही बर्फ । ---------
माधोलकर ने फिर दूरबीन छीनी और अमरनाथ की ओर झुके।

"ऑफिसर, चलो उन पहाड़ों पर चलते हैं," उसने धीरे से कहा।

ओके , --उसके कमांडिंग आफिसर ने अपनी स्पीड बढ़ा दी।

जैसे-जैसे उनका प्लेन इन ऊंचे पहाड़ों की तलहटी के पास पहुंचा, वे और ज़्यादा सफेद और साफ़ होते गए।

"वे सच में बादल लगते हैं।" डॉक्टर ने निराशा से कहा।

"लेकिन इतने चमकदार और वो भी अंधेरी रात में?", माधोलकर ने पूछा।

अचानक, डॉक्टर की डिटेक्टिंग मशीन का लाल बल्ब चमका और टेलीफोन के तार से टिक-टिक की आवाज़ आई।

"मिस्टर माधोलकर ! डॉक्टर ने हैरानी से कहा। --आगे हवा में ज़रूर रेडियोएक्टिव चीज़ तैर रही होगी।

"तो फिर?

उन्होंने कहा, "शायद हम किसी अनजान और खतरनाक जगह की ओर बढ़ रहे हैं।"

"तो हम यहीं क्यों नहीं उतरते?" धोकर ने पूछा।

"भगवान जाने क्या खतरा आ जाए। धीरे चलो, ऑफिसर--- डॉक्टर ने कहा।

अमरनाथ ने कहा, "मैं डकोटा को कहीं भी डाइव करा सकता हूं, चिंता मत करो।" फिर प्लेन को कम स्पीड पर किया गया।

अब, क्या यह उनकी खुशकिस्मती थी या इत्तेफ़ाक कि जैसे ही वे इन पहाड़ों के पास फैले जंगल के पास पहुँचने लगे, आसमान में कलाबाज़ी कर रहे एक चील या बाज़ या जो भी था, उसने प्लेन को देखा और उस पर झपट्टा मारा। जैसे ही वह पास आया, राजी की चीख निकल गई ।

"हम बिल्कुल ठीक आए ," वह चिल्लाया।

क्योंकि पास आ रहा बाज असल में उस बड़े कौवे से थोड़ा बड़ा लग रहा था जिसे माधोलकर और राज़ी ने अपने बंगले की छत पर मारा था। बड़ा बाज अचानक प्लेन के सामने आ गया और अमरनाथ को लगा जैसे बादल का कोई काला टुकड़ा प्लेन से टकराने वाला है। उसने जल्दी से प्लेन को थोड़ा झुकाया और बाज उड़ गया।

"राज़ी, इस बार तुम उस पर मशीन गन से गोली चलाओ, और हाँ, कैप्टन। उसने हाथ हिलाते हुए कहा, "तुम एक बार फिर प्लेन को उसके पास से गुज़ार दो।"

"अच्छा।-- अमरनाथ ने कहा और प्लेन को घुमाकर एक लंबा चक्कर लगाना शुरू कर दिया। जब तक चक्कर खत्म हुआ, तब तक विशाल चील, जो अपने फैले हुए पंखों से हवा में उड़ते हुए विशालकाय जानवर की तरह दिख रही थी, उसके सामने और फिर प्लेन के

पास पहुँच चुकी थी और इस बार अमरनाथ ने बड़ी फुर्ती से प्लेन को घुमाया और उसके पास से गुज़र गया - राज़ी की मशीन गन डकोटा की खिड़की से लगातार फायरिंग करने लगी और एक भयानक "चिक-चिन" की आवाज़ के साथ, वह इतना देख सका कि वह

यह बड़ा पक्षी घूमकर आगे की ओर भाग रहा है। शायद यह घायल था और बहुत तेज़ी से उड़ रहा था।

"आगे कितना घना कोहरा है?" अमरनाथ ने और भी धीरे करते ते हुए पूछा। क्योंकि इस जंगल के बाहर वाकई कोहरे की एक दीवार खड़ी थी, लेकिन यह देखकर वे सब लगभग हैरानी से उछल पड़े जब उन्होंने देखा कि घायल चील इस कोहरे में घुसते ही आग की लपट बन गई। कोहरे को छूते ही वह जल गई और उसकी सिर्फ़ दूर से चीं-चीं ही सुनाई दीं। इस बीच, डॉक्टर झाला के डिटेक्टर की टिक-टिक तेज़ हो गई।

"भगवान के लिए, प्लेन रोक दो, यह कोहरा नहीं है।" डॉ. चीखा ।

"तो फिर क्या है ?

"यह एक न्यूक्लियर प्रोटेक्टिव शेल है। इसमें जो भी चीज़ जाएगी, वह जल जाएगी। देखा नहीं ? -- उसने घबराकर कहा और कैप्टन अमरनाथ ने तेज़ी से प्लेन घुमा दिया। वे सब अपनी सीटों पर पलट गए और प्लेन टूटी पतंग की तरह नीचे गिरने लगा। ज़मीन से करीब हज़ार फ़ीट ऊपर। फिर अमरनाथ ने उसे बहुत सावधानी से संभाला और दक्षिण की ओर आधा चक्कर लगाकर, उसे लैंड कराने के लिए नदी या साफ़ मैदान ढूंढने लगे।

डॉक्टर ने डिटेक्टर पर नज़र रखते हुए कहा, "मुझे लगता है कि यहां एक न्यूक्लियर वेव ट्रैप है, हम इसके अंदर नहीं जा सकते।"

माधोलकर ने कहा, "हमें किसी तरह इन सीमाओं के अंदर जाना होगा, डॉक्टर। यह कई कीमती जिंदगियों का सवाल है।"

"लेकिन मुझे नहीं लगता कि कोई भी इन तरंगों की दीवार को तोड़ सकता है। शायद परमाणु हथियार भी ऐसा नहीं कर सकते," डॉक्टर ने निराशा में कहा।

"तो फिर?" माधोलकर ने सोचा।

"सिर्फ़ एक ही सिनेरियो हो सकता है।" यह सोचकर डॉक्टर का चेहरा खिल उठा।

"जल्दी कह डालो , मेरे पेट में चूही कूद रहे हैं है," राजी ने कहा।

डॉक्टर ने सुझाव दिया, "हो सकता है कि लहरों की यह दीवार बहुत ऊंची न हो, तो क्यों न हम जितना हो सके उतना ऊपर उड़कर इसे पार कर लें?"

बिल्कुल। माधोलकर ने चुटकी ली। और कैप्टन अमरहथ तुरंत ऊंची उड़ान के लिए तैयार हो गए।

"लेकिन मुझे यह कैसे पता चलेगा?"

डॉक्टर ने कहा, "डिटेक्टर से देखो और बंदूक से गोलियां चलाओ।"

तो कैप्टन अमरनाथ ने डकोटा को दक्षिण की ओर लंबी उड़ान में मोड़कर ऊपर उठाना शुरू किया और दूसरे और तीसरे राउंड में डकोटा लगभग 1500 फीट की ऊंचाई पर उड़ने लगा। लेकिन डिटेक्टर अभी भी टिक-टिक कर रहा था। चौथे राउंड में डकोटा की ऊंचाई 2000 फीट हो गई और टिक-टिक अभी भी चल रही थी। लेकिन पांचवें राउंड में वह खुशी से उछल पड़े, क्योंकि अब डकोटा तीन हजार फीट ऊंचा था और कोहरे की वह दीवार बहुत नीचे दिखाई दे रही थी। डिटेक्टर की टिक-टिक बहुत धीमी हो गई थी, इसलिए राजी ने एक सीधी गोली चलाई और गोली आराम से सीमा पार कर गई।

"बस सीधा," कैप्टन माधोलकर ने खुश होकर कहा, और इस तरह उनका डकोटा, सुरक्षित रूप से बॉर्डर पार कर गया।

माधोलकरने कहा, "अब हमें कहीं न कहीं उतरना ही होगा। रात में आगे जाना खतरे से खाली नहीं है।"

मधु. चौंक गए --"राज़ी. , वो देखो, चोटी पर छाए हुए वो सफ़ेद बादल.

"मुझे कितनी रोशनी दिख रही है?"

माधोलकर ने कहा, "शायद वही चांद का अनजान शहर है।"

कुछ समय बाद, अमरनाथ डकोटा को एक काफी चौड़ी पहाड़ी नदी के पास ले गए।

उन्होंने प्लेन से दो सफ़ेद टेंट निकाले और उन्हें नाले के किनारे कुछ झाड़ियों के बीच लगा दिया। इस जंगल में एक पहाड़ी के किनारे से काफ़ी रोशनी दिख रही थी। शायद यह फ़्लाइट पार्क का इलाका था। राज़ी को कॉफ़ी पीने की लत थी, वह कॉफ़ी बनाने लगा। ठंड ज़्यादा महसूस होने पर, डॉक्टर ने एक पिंट ब्रांडी ली और लेट गया। और अमर और माधोलकरने अपने टेंट के सामने अलाव जलाया और खुद को गर्म करने बैठ गए। वे इसी टॉपिक पर बात कर रहे थे। माधोलकर ने उन्हें इस अजीब इन्वेस्टिगेशन के संभावित पहलुओं के बारे में पहले ही बता दिया था, राज़ी बोर हो गया था। उस समय उसे शाहीना याद आ रही थी। काश वह रोशनी वाला इंसान होता, तो उसकी जेब में ऐसी कितनी लड़कियाँ होतीं। उसने अपना बैग पास में रखा था जिसमें उसने अपने पसंदीदा जेपी संघा राम बिस्किट, एक कार्टन और पोलसन बार का एक पैकेट रखा था। उसने उसे खोलकर कुछ बिस्किट निकाले और अमरनाथ की तरफ़ बढ़ाये , और दो कप कॉफ़ी भर ली।

"क्यों, मक्खन नहीं है क्या?’ माधोलकर ने पूछा

"डॉक्टर ने कहा था कि मक्खन सिर्फ़ मैं ही खा सकता हूँ, राज़ी ने बच्चों जैसा मुँह बनाया।

"गलत, मैंने ऐसा कब कहा? डॉ. झाला - ब्रांडी में नशे में लेटे हुए बुदबुदाए। और माधोलकर और अमरनाथ हंस पड़े । लेकिन जैसे ही राज़ी पोलसन का पैकेट उठाने के लिए मुड़े, पैकेट गायब था और राज़ी की आँखें चौड़ी हो गईं। उनके ठीक पाँच कदम पीछे एक अजीब तरह का शेर खड़ा था और पोलसन पैकेट का कोरा कागज़ उसके पंजों के पास घास पर पड़ा देखा गया।

"हम्म, बुरा हुआ।" राज़ी हकलाया। माधोलकर हैरान दिखे। और तुरंत अपनी पिस्तौल निकाल ली।

अमरनाथ ने बंदूक ले ली, लेकिन खाकी रंग का शेर वहीं खड़ा रहा। वह राज़ी को घूर रहा था, लेकिन खास बात यह थी कि उसका मुंह भारतीय शेरों से छोटा था और उसकी पूंछ मुलायम थी। अमरनाथ उस पर बंदूक चलाने ही वाला था कि शेर ने पहले अपनी आंखें बड़ी कीं और फिर उसके मुंह से आने वाली म्याऊं ने उसे चौंका दिया।

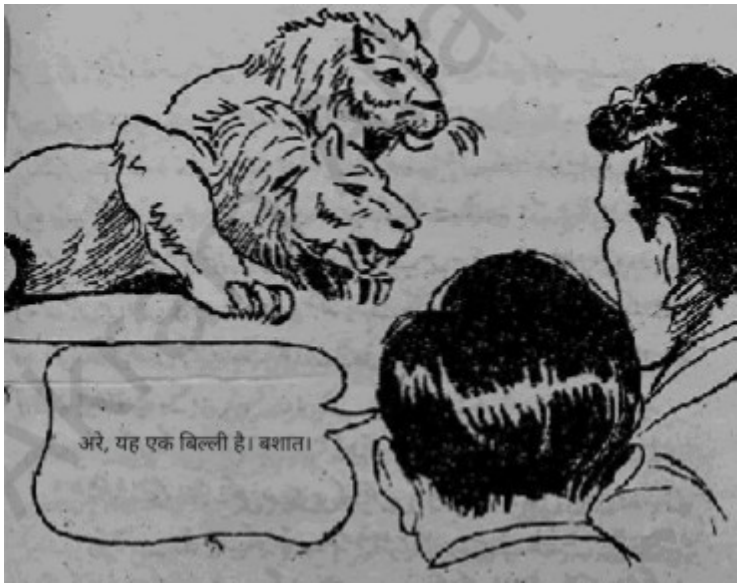

"अरे, यह तो बिल्ली है," राज़ी उछल पड़ा, और जैसे ही वह कूदा, बिल्ली ने मैयाऊँ कि आवाज करते हुए अपने दांत दिखाए, फिर उछलकर राज़ी पर इतनी ज़ोर से पंजा मारा कि उसके नाखून उसके ओवरकोट की आस्तीन में उलझ गए।

अब एक अजीब मुसीबत थी। राज़ी-- हशत हशत --चीख रहा था, और यह बिल्ली जो शेर जितनी ऊंची थी बार-बार फूस फूस कर के उसे डरा रही थी। आखिर में, अमर आगे बढ़ा और

बंदूक का बट उसके सिर पर इतनी ज़ोर से मारा कि वह लटक गई जिससे उसका कोट फट गया और वो ज़मीन पर गिर पड़ी, वह उठते ही भाग गई।

लेकिन वे आराम से नहीं बैठ सके। इस शेर जैसी बिल्ली की आवाज़ सुनकर कई दूसरी बड़ी बिल्लियाँ वहाँ जमा हो गईं, और उन्हें शेर के आकार की बिल्लियाँ अपनी चमकीली पीली आँखों से चारों तरफ़ से उन्हें घूरती हुई दिखने लगीं।

बात यहीं खत्म नहीं हुई। थोड़ी देर बाद, उन्होंने अपने आस-पास कुछ नई चीज़ें इकट्ठा होते देखीं। उनमें लाल और काली चींटियाँ थीं, हर एक एक फुट लंबी, मुर्गे के साइज़ के गिद्ध, और शिकारी कुत्तों के साइज़ के चूहे। कीड़ों में, उन्होंने कछुए के साइज़ के बिच्छू देखे। पेड़ पर बैठा बंदर एक पशुपालक से ज़्यादा समझदार, बड़ा और बूढ़ा लग रहा था। गधे के साइज़ के बंदर और मगरमच्छ के साइज़ के गिरगिट थे। और वे उन्हें अपनी डरावनी आँखों से घूर रहे थे और अपनी जीभ निकाल रहे थे। शायद वे तय नहीं कर पा रहे थे कि इन इंसानी मेहमानों में से पहले किस ग्रुप को चुनें। इसी बीच, एक बंदर, जो गोरिल्ला से भी लंबा था, एक टहनी से नीचे उतरा और बिस्किट का डिब्बा लेकर जाने लगा। अमरनाथ ने गोली चलाना चाहा, लेकिन माधोलकर ने उसे रोक दिया। गोली चलाने का मतलब था अपनी मौत को बुलावा देना।

उसी समय, उन्होंने डॉक्टर को कराहते हुए सुना। वे पलटे। एक चूहा डॉक्टर की मोटी मूंछें खींच रहा था और डॉक्टरउसे हटा रहा था, और एक खरगोश ज़ोर-ज़ोर से उसके पेट को कुतर रहा था।

" अरे, बचाओ --डॉक्टर उठकर चिल्लाने लगा। चूहा और खरगोश दोनों भाग गए, लेकिन एक बंदर उनके सामने खड़ा हो गया। वह डॉक्टर को चुनौती देने लगा।

कुछ मिनटों के बाद, उन्हें लगने लगा कि ये जानवर उन पर हमला करने वाले हैं, और मशीनगन भी इस चार-तरफ़ा हमले को नहीं रोक पाएगी।

डॉ. झाला भी नशे में थे। वे घबराकर इधर-उधर देख रहे थे। सबसे डरावनी चीज़ गिद्ध थे, जिनकी खून की प्यासी आँखों में तेज़ भूख थी।

"मधु, आज खैर नहीं है," राज़ी ने धीरे से कहा।

"मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।-- माधोलकर निराशा से बोला ।

लेकिन उसी समय, आसमान में एक तेज़ नीली चमक दिखाई दी और जानवर डर के मारे पीछे हट गया। यह एक उड़ने वाली नाव थी जो तेज़ रफ़्तार से धरती की ओर आ रही थी। यह उनके पास आई और ज़मीन पर गिर गई। उसमें से जो दो आदमी उतरे, उन्होंने काले चमकदार कपड़े पहने हुए थे। उनके हाथों में पैरालाइज़िंग रे पिस्तौलें थीं। उन्हें देखकर अमर ने उन पर गोली चलानी चाही, लेकिन काले कपड़े पहने एक आदमी के हथियार से निकल रही नीली लपटों की लहर ने उसके हाथ-पैर सुन्न कर दिए। वह पीछे की ओर गिर गया। माधोलकर और राज़ी भी कुछ नहीं कर सके। ये हथियार उनके लिए बिल्कुल अनोखे थे।

☆☆☆

नीची उड़ान

महान सलाजर अपने सफेद खंभों वाले हॉल में गुस्से से खड़े थे, उनके हाथ पीठ के पीछे थे, और वो माधोलकर और राजी को घूर रहे थे। डॉक्टर और अमरनाथ एक तरफ खड़े थे।

"मिस्टर माधोलकर, छोटी सी जान लेकर आपने कितना बड़ा तीर मार लिया ? क्या वह आप पर कोई क्रिमिनल अटैक करने गया था? वह एक ऐसी अमानत वापस लेने गया था जिसका आपसे कोई लेना-देना नहीं था।

\

"लेकिन वह अमानत का भार मुझे सौंपा गया था, --------माधोलकर ने निडरता से कहा।

"मुझे फिर भी तुम्हारी जान पर तरस आया, वरना अब तक वे जानवर तुम्हारी हड्डियाँ आपस में बाँट चुके होते। सलाजार ने दाँत पीसे।

माधोलकर ने एक तरफ़ खान को सीट पर देखा। बाले राज़ी को आँख मार रहा था और खान की सीट खाली थी, हालाँकि उसने अभी-अभी उसे देखा था।

"और इन साइंटिस्ट और इन मासूम लड़कियों को किडनैप करके आपने कौन सा अच्छा काम किया है, डॉ. सलाज़र? --------माधोलकर ने भी उतना ही अजीब जवाब दिया।

"मैं तुम्हें जवाब नहीं दूंगा। तुम में से किसी एक को मेरे आदमी के खून की कीमत चुकानी होगी। मैं अपने वफ़ादारों की जान को बेकार नहीं समझता।" सलाजार ने फैसला सुनाया , और हॉल में मौजूद बाकी लोग उसकी बातों से कांप उठे।

"तो मैं तैयार हूं," राज़ी की आवाज़ सुनाई दी।

"तुम हम दोनों पर अपनी ताकत का दिखावा करो , घमंडी इंसान --माधोलकर ने नफरत से जवाब दिया

माधोलकर ने फिर चुनौती देते हुए कहा, "काश मैं यहां पहले पहुंच गया होता, तो मैं तुम्हारा सारा घमंड चूर-चूर कर देता।"

":तुम...? ज़ोरदार, डरावनी हँसी सुनाई दी।

"आपकी गर्लफ्रेंड में कम से कम एक ऐसी है जो तुम्हारी वफ़ादार नहीं है।"मधू ने उसे बताया ।

"क्या..? उसने आँखें निकलते हुए कहा।

"वह लड़की जिसे परसों तुम्हारी चांद की दुनिया में लाया गया था। ---माधोलकर ने जवाब दिया
और इस बार सलाजार भड़क गया ।

"वह लड़की कहाँ है? उसे यहाँ लाओ, मैं उसे अभी दिखाये देता हूँ। "सालज़ार ने काले रंग के कपड़े पहने एक आदमी को ऑर्डर दिया।

"उसका नाम शाहिना है। मधुलकर ने मुस्कुराते हुए उस बाहर जाते काले आदमी से कहा ।

"तो शायद वह तुम्हारी शरारत थी।" सलाजार ने उसे घूरा। उस पल, गुस्से में, वह बहुत डरावना लगने लगा था।

लेकिन उसी समय एक बहुत ज़ोरदार धमाका हुआ और पूरा महल हिलने लगा।

"यह कौन है? सलाज़र ज़ोर से चिल्लाया। और साथ ही, उसका अपनी ट्रॉस्मिशन कुर्सी पर बैठ गया। जैसे ही उसने कुर्सी पर एक बटन दबाया, आसमानी रोशनी की किरणें

चटकने की आवाज़ के साथ कुर्सी के सामने फैलने लगीं, और फिर उसका सिंहासन चकाचौंध भरी रोशनी की चादर में छिप गया।

जैसे ही वह निकला, अचानक साइड की दीवार में एक गैप आ गया और सुपरिंटेंडेंट खान घबराकर अंदर आ गए।

"मिस्टर माधोलकर, जल्दी कीजिए । तुम सब इस रास्ते से भाग जाओ। खान ने

उस हॉल के दरवाज़े की तरफ़ इशारा किया जिससे वे अभी-अभी अंदर आए थे। अपनी सीटों पर बैठे सभी साइंटिस्ट घबराकर खान के पीछे भागे। माधोलकर और राज़ी, बाले और डॉ. झाला भी भागे। उन्हें बैठकर इस छोटे से दरवाज़े से निकलना पड़ा। दूसरी तरफ़ एक पतला गलियारा था और फिर एक गोल दरवाज़ा था जो एक बड़े पाइप के मुँह जैसा दिखता था।

"और तेज़ "--खान चीखा "-- वो हम सबको एक मिनट में खत्म कर देगा।

और वे बेतहाशा गिरते हुए किनारे पर चले गए। पहले खान उसमें से निकला और कूद गया, फिर एक के बाद एक वे सब उसमें से निकले और कूद गए। नीचे एक पानी का चैनल था, जिसका पानी बर्फ़ जितना ठंडा था, लेकिन इतना ठंडा था, लेकिन वे ठंड सहते हुए अपनी जान बचाने के लिए तैरने लगे। आखिरी आदमी एक जापानी साइंटिस्ट था, जो किनारे पर रह गया था। उसी पल, इलेक्ट्रिक गाड़ियों की एक सीरीज़ शुरू हुई, जिसमें फ़्लाइट पार्क से छोटे जानवरों से भरे बड़े पिंजरे थे, जिनकी ऊंचाई कम कर दी गई थी। ये गाड़ियां एमराल्ड पैलेस में भी घुस गईं। उसी पल, वह भी उड़ती हुई दिखाई दी, जिसमें फ़्लाइट पार्क बिल्डिंग की लड़कियां थीं। बिल्कुल आखिर में, उन्होंने सलाज़ार को देखा, वह एक आग की लपट जैसा लग रहा था। वह नीली किरणों के बवंडर पर सवार था। वे छोटे कांच के जार जैसे चैंबर भी उसके साथ थे, जिनमें छोटी उड़ने वाली नावें और लड़कियां बंद थीं। यह सब इतनी तेज़ी से हुआ कि वे हैरान रह गए और हर चीज़ एमराल्ड पैलेस में घुस गई।

सभी साइंटिस्ट, माधोलकर, डॉ. झाला, वगैरह शहर के किनारे खड़े होकर यह सब हैरानी भरी नज़रों से देख रहे थे।

बाले खान के पीछे गया था, लेकिन कुछ मिनट बाद वे दोनों वापस आ गए।

"हम उन्हें नहीं बचा सकते, मि माधोलकर ----खान ने हांफते हुए कहा।

"किसे ?" राज़ी बीच में बोला।

"ये लड़कियां, जिनका न्यूक्लियर डीकंटैमिनेशन हो रहा था। फ्लाइट पार्क वाली बिल्डिंग खाली है। शायद सलाज़ार ने पहले ही सारे इंतज़ाम कर लिए थे।--- खान ने कहा।

"ठीक है, हमने साइंटिस्ट्स को बचा लिया है और फिर वे लड़कियां अपनी मर्ज़ी से उसके साथ जा रही हैं," बाले ने जीत का झंडा ऊंचा उठाते हुए कहा।

"लेकिन यह सब हुआ क्या है ?" माधोलकर ने पूछा।

खान ने कहा, "मैंने उसका ब्लो-अप प्लांट उड़ा दिया है। मैं आज बस उसका कुछ हिस्सा देखने आया था और उस समय मुझे काले सूट वाले सिक्योरिटी गार्ड के भेष में अंदर जाकर सब कुछ देखना पड़ा। मुझे अंदर लगे एक सीलबंद कांच के ब्लोइंग स्विच को तोड़ने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी।"

"अरे, वो देखो," उन्होंने डॉ. झाला की हैरान आवाज़ सुनी, और वे सब हैरानी से इधर-उधर देखने लगे।

एमरल्ड पैलेस, अपनी मोटी नहरों और नीचे और चारों ओर से निकलती नीली रोशनी के शिखरों के साथ, आसमान की ओर उठ रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे इस शानदार इमारत को कई आग उगलती आत्माओं के कंधों पर उठाया जा रहा हो।

"मिस्टर माधोलकर, हमें जल्द से जल्द इस ज़मीन से कम से कम एक हज़ार फ़ीट दूर जाना होगा। ---खान ने कहा, "क्योंकि जैसे-जैसे प्लांट का दायरा फैलेगा, इस इलाके में धरती का ग्रेविटेशनल खिंचाव खत्म हो जाएगा। उस ने मुझे पहले ही बता दिया था ।" खान ने कहा।

"यह तो बहुत मुश्किल होगा।"

भले ने कहा, "थोड़ी देर बाद, हम सब उड़कर आसमान में लटक जाएंगे।" इस पर साइंटिस्ट और भी डर गया।

"लेकिन ऐसा नहीं होगा. -----एक आवाज़ ने उन्हें चौंका दिया.

वह हांफ रही थी। खान उसे देखकर मुस्कुराया और माधोलकर भी, लेकिन राज़ी ने उसे हैरानी से देखा। बाले को भी कुछ समझ नहीं आया। वह शाहिना थी। वह अभी-अभी न्यूक्लियर कार से उतरी थी जो कांच की नाव की तरह था।

"यह यहाँ कैसे आई ? ---- राजी के मुंह से निकला।

"इस पेंडेंट की मदद से. वह सलाज़ार तक पहुंचने वाला रेडियो मेसेज था . सलाज़ार ने इसे बुलवा लिया -
- माधोलकर ने कहा।

"क्यों, ऐसी क्या बात हो गई , क्या हुआ?" खान ने शाहिना से पूछा।

"इन वैज्ञानिकों के प्लेन फ्लाइट पार्क के एक बड़े शेड में रखे गए हैं।--शाहिना ने जवाब दिया, "मैं खुद देख कर आई हूँ ।"

"तो जल्दी करो, ---खान सबसे पहले भाग गया।

"लेकिन तुम थी कहाँ ?" माधोलकर ने शाहिना से पूछा।

"सलाजार ने खान साहब को मुझे रेडियोसिंग चैंबर्स ले जाने का काम सौंपा था, यह सोचकर कि वही काले कपड़ों वाला आदमी है। फिर हम दोनों ने उस रेडियोसिंग चैंबर्स को उड़ाने का प्लान बनाया।
 जैसे हीप्लांट हरकत में आए और , चैंबर की सतह पर डिटेक्ट वेव्स के साथ कोहरे की चादर हटे , मैं रिड्यूसिंग प्रोजेक्टर बंद कर के और इन लड़कियों को बाहर निकाल लाओं । --शाहिना ने कहा।

"लेकिन लड़कियाँ तो उसके साथ चली गईं।"

"इन कमबख्तों पर चांद के राजकुमार सलाज़ार के प्यार का भूत सवार था। वह मेरे साथ आने को तैयार नहीं थी, लेकिन उसी समय सलाज़ार आ गया। और मुझे छिपकर भागना पड़ा। --शाहिना ने बताया।

वे दौड़ते हुए बातें कर रहे थे और राज़ी ठीक से दौड़ नहीं पा रहा था। वे बातें कर रहे थे और राज़ी हैरानी से सब सुन रहा था।

तो इसका मतलब है कि बाहर कोहरे की दीवार भी गायब हो गई होगी। ---माधोलकर ने कहा

"बेशक," डॉ. झाला ने बगल से कहा।

लेकिन उसी समय, उनके पीछे धमाके होने लगे। उन्होंने मुड़कर देखा तो कुछ अंडाकार घर जैसे दिख रहे थे। वे एक के बाद एक धमाके के साथ ज़मीन से आसमान की ओर उड़ रहे थे। ब्लो-अप प्लांट अभी भी चालू था। उसके अंदर की रोशनी की लपटें दिन में भी गर्मी फैला रही थीं।

आखिरकार, वे दस से पंद्रह मिनट में फ़्लाइट पार्क पहुँच गए। उस समय पार्क में अंधेरा था। उन्हें पार्क के पीछे एक खुले शेड में प्लेन खड़े मिले। वे पूरी तरह से सुरक्षित थे।

इस शेड के पीछे एक छोटी सी पत्थर की बिल्डिंग में उन्हें इन जहाज़ों के क्रू और गेरार्ड वगैरह मिले। सलाजार ने इन बेकार लोगों को यहीं कैद कर रखा था, और शायद गार्ड की जगह कोहरे का वही पर्दा उनके लिए गार्ड बना दिया था, जिसके लिए सूरज ढलते ही ये लोग बाहर निकलकर इधर-उधर घूमने लगते थे।

****

जब तक वे इन प्लेन में टेक ऑफ करने लगे, तब तक सलाजार का एटमी शहर साफ हो चुका था। सिर्फ ब्लो-अप प्लांट ही दिख रहा था। माधोलकर और खान और उनके साथी जापानी प्लेन में चढ़ गए।

"और मेरा डिकोटा?" कैप्टन अमरनाथ ने कहा।

"हम इसको बाद में हासिल कर लेंगे , अभी के लिए, इन जानवरों के साथ उलझना समय की बरबादी है

माधोलकर ने कहा, "ऐसा लगता है कि यह इलाका तब तक रहने वाला है जब तक पृथ्वी की ग्रेविटी खत्म नहीं हो जाती।"

"लेकिन, माधोलकर, ये जानवर क्या तबाही मचाएंगे?" राजी ने कहा।

"वे अपने आप नष्ट कर हो जाएँगे और हवा में तैरते रहेंगे, और जब सलाजार का रॉकेट स्पेस के फ़्लूइड मैटर को तोड़ेगा, तो यह अट्रैक्शन वापस आ जाएगा।

"और क्या जानवर भी वापस आ जाएँगे?" बाले ने कहा। ऊंचाई से अचानक गिरने पर बच पाएंगे? और अगर कुछ पक्षी बच भी गए, तो उन्हें बाद में खत्म किया जा सकता है।"

"अब बस एक ही बात बची है, यानी, लटके हुए प्लेन के यात्रियों को पांच दिन , पांच सेकंड जैसे क्यों लगे?"

"अब, क्या मुझे इतना समझाना पड़ेगा? इन किरणों के घेरे में आने वाली हर चीज़ स्थिर हो गई थी, इसके अंदर के इंसानों के लिए यह एक शेल पीरियड था। एक पूरी लंबी खामोशी, बिल्कुल रबर के पुतले की तरह।--- खान ने कहा, "अगर वे पाँच महीने बाद भी निकलते, तो उन्हें इस गैप का पता या एहसास नहीं होता।"

"उनके प्लेन उसी तरह आगे-पीछे उड़ते रहे, जब तक कि वे उस जगह से करीब सौ मील दूर नहीं हो गए। अचानक, एक ज़ोरदार धमाका हुआ, जो काफी दूर से सुना गया था, जिससे वे चौंक गए।

"यह क्या है?" राज़ी ने पूछा।

"अब, अपना काम खत्म करके, सलाजार का ब्लो-अप प्लांट खुद ही उड़ गया है। सलाजार अपने कोई भी राज़ पीछे नहीं छोड़ना चाहता था। ------खान ने बीच में टोककर जवाब दिया।

"इस जगह का ग्रेविटेशनल खिंचाव कम होना शुरू हो गया होगा, और यह तब तक ऐसा ही रहेगा जब तक सलाज़ार स्पेस पार नहीं कर लेता । -------शाहिना ने भी बात की।

"आपसे कौन पूछ रहा है, मैडम?" राज़ी ने चिढ़कर उसे टोका।

"तुम्हारे फ़रिश्ते भी पूछेंगे, और वे बहुत इज्जत से पूछेंगे। ---माधोलकर ने उसे घूरते हुए कहा।

"आपका क्या मतलब है?"

खान ने माधोलकर की ओर से राजी को जवाब दिया, "यह दूसरी बार है जब डिप्टी डायरेक्टर ऑफ इंटेलिजेंस मिस नायर के सामने तुमने बेइज्ज़ती की है।"

" क क .. कौन..? राज़ी और बाले दोनों एक ही समय पर बाहर आए। "मिस.....नायर ?-- राज़ी के गले में आवाज़ अटकने लगी।

"अल्लाह ने मुझ पर रहम किया , मैं भी इन से प्यार करने का प्लान बना रहा था," बाले ने खान से धीरे से कहा।

"अबे, चुप हो जाओ। खान ने उसे डांटा।

"और वह कर्नल कौन था?" राजी ने माधोलकर से चुपके से पूछा।

माधोलकर ने उत्तर दिया, "खान साहब का एक असिस्टंट - राऊफ - मैंने उसे बुलाया था।"

"अरे भाई, हराम ,....." बाले ने कुछ कहना चाहा ।

"शट अप , ।" खान ने उसे डांटा और बाले शट अप की तस्वीर बन के रह गया ।

***** समाप्त *****

sjeet